दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूज्यनीय गुरूदेव

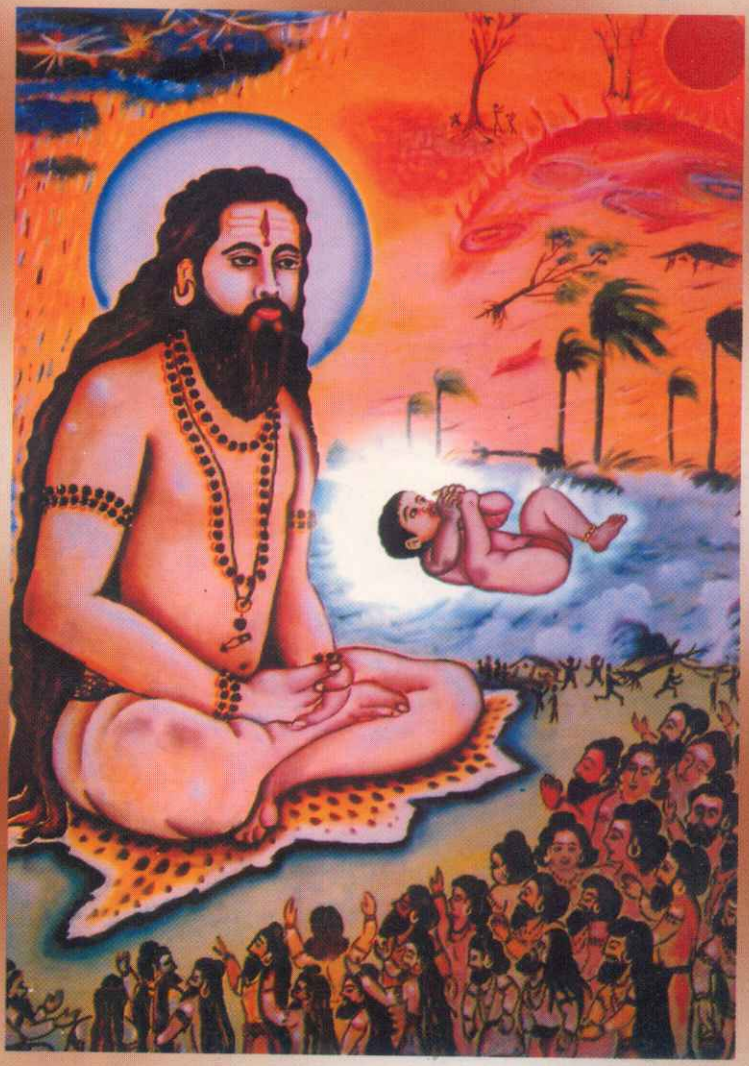

श्री गुरू चरणों में समर्पित

ॐ श्री बाबा मस्तनाथाय नमः ॐ श्री बाबा मस्तनाथाय नमः

ॐ श्री बाबा मस्तनाथाय नमः

बाबा आपकी बगिया की यह दिव्य सुमन माला लाई।
इसे बनाकर बड़े प्यार से हूँ अर्पित करने आई ।
इसे दयामय कर कमलों से प्रसन्न हो स्वीकार करो।
इस अबोध शिष्या पर बाबा कृपा करो आनंद भरो।

ॐ श्री बाबा मस्तनाथाय नमः

ॐ श्री बाबा मस्तनाथाय नमः ॐ श्री बाबा मस्तनाथाय नमः

दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर
एवं पूजनीय गुरूदेव

प्रकाशक
महन्त चाँदनाथ योगी
लेखिका
शिवानी शर्मा
विशेष सहयोग-योगी विलासनाथ

मठाधीश्वर मठ अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)
सर्वाधिकार सुरक्षित
८ मार्च सन् २००६ (फागुन) शुक्ल पक्ष नवमी

प्रथम संस्करण - २००० प्रति
मूल्य -

इस पुस्तक के किसी भी भाग एवं अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा ।

आशीर्वचन

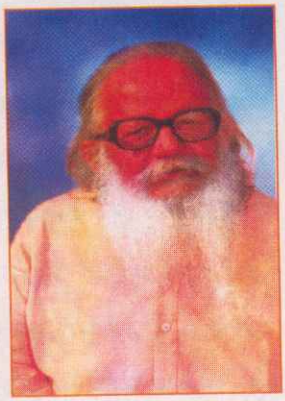

प्रिय शिवानी शर्मा जी,

हमें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपने **दिव्य भूमि मठ अरथल बोहर एवं पूजनीय गुरूदेव** नाम से एक महत्वपूर्ण और उपयोगी पुस्तक प्रकाशन करने जा रहे हैं। अरथल बोहर हमारे नाथ सम्प्रदाय का एक प्रमुख केन्द्र रहा है और यहाँ के नाथ सिद्धों, सन्तों और आचार्यों ने सदा सद्धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ समाज के सुखी सम्पन्न वर्गों के अलावा दीन-दुखियों और पीड़ितों की उल्लेखनीय सेवा की है। पुस्तक की विषय वस्तु की अनुक्रमणीय देखकर यह कह सकता हूँ कि प्रकाशित हो जाने के पश्चात नाथ सम्प्रदाय इसके भक्तों अनुयायियों सहित शुद्धि जिगासुओं और शोधार्थियों के लिये भी अवश्य पठनीय तथा संग्रहणीय ग्रन्थ

होगा, क्योंकि इसमें आदिनाथ से लेकर महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ, महायोगी गोरखनाथ श्री भर्तृहरिनाथ, श्री गोपीचन्द, श्री चौरंगीनाथ, श्री मस्तनाथ, श्री तोतानाथ, श्री मेघनाथ, श्री मोहरनाथ, श्री चेतनाथ,श्री पूर्णनाथ, श्री श्रेयोनाथ सहित वर्तमान पीठाधीश्वर श्री चाँदनाथ जी और अस्थल बोहर मठ का इतिवृत्त न केवल अंकित किया गया है, बल्कि नाथ सम्प्रदाय की साधना उसके दर्शन, दीक्षा और भेष सहित सैद्धान्तिक बातों का भी सम्यक् ज्ञान और परिचय दिया गया है। इस कृतज्ञतापूर्वक इस अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण कार्य को करने के लिये पुनः पुनः साधुवाद देते हुये ग्रन्थ के प्रकाशन की सफलता के लिये नाथ जी से प्रार्थना करते हुये अपनी हार्दिक शुभकानायें प्रेषित करता हूँ।

सधन्यवाद!

शुभेच्छः

(महन्त अवेद्यनाथ)

आशीर्वचन

प्रिय शिवानी शर्मा जी,

शुभ आशीर्वाद।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आप द्वारा लिखित पुस्तक **दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरूदेव** प्रकाशित होने जा रही है। भारतवर्ष के आध्यात्मिक जगत में नाथ पंथ की गौरवशाली परम्परा रही है। जब पृथ्वी पर योग का प्रचार व प्रसार धूमिल होने लगा तो भगवान आदिनाथ ने स्वयं गोरक्ष स्वरूप धारण करके उत्तप्त संसार को योग रूपी काम धेनु प्रकट करके आध्यात्मिक जगत में एक क्रान्तिकारी कार्य किया। योग को जन-जन तक पहुँचाया और योग को आम आदमी से ऐसा जोड़ा कि भक्त कवि तुलसीदास जी को भी यह कहने को मजबूर होना पड़ा गौरख जगायो जोग, भक्ति भगायो।

गुरू जनों के पावन चरणों की पावन रज जहाँ दिव्यता बिखेरती हो उसी के आलोक में ज्ञान, वैराग्य, तप, शुचिता, ब्रह्म-चिंतन आदि दैवीय गुणों की कल्लोलिनी पाप विनाशनी योग-भक्ति-ज्ञान की त्रिवेणी

निरन्तर बहती रहे। ऋषि परम्परा अक्षुण्य है, प्रकृति अनादि है, ब्रहम आदि-अनादि तथा अनन्त है। ज्ञान सागर अथाह - अपार, कितनी सरितायें आकर उसमें समाहित होती हैं। चाहे किसी दिशा में प्रवाह हो अन्ततः वह सागर में ही विलीन होती है। संसार में जितने भी धर्म सम्प्रदाय हैं किसी भी दिशा से हो कर बहे परन्तु एक दिन सभी को उस अपार बह्म आन्दमय सागर में ही लीन होना पड़ेगा।

योग का आश्रय लिए बिना जीवन का कल्याण नहीं है। जब तक शिशु का योग माँ के दुग्ध पान से नहीं होगा उसकी रक्षा तथा परिवर्द्धन आगे की अवस्थाएँ नहीं आ सकती। माँ का वात्सल्य लसित स्तन पान उस का रक्षण करता है। उसका जीवन पनपता है। सन्त जन ज्ञान रूपी अमृत का पान कराकर इस लोक से इतर लोक में पहुँचाने की सामर्थ्य रखते हैं। जहाँ आनन्द का पारावर, सांसारिक द्वन्द्वो से रहित जीवन-मरण की वेदनाओं से परे, वहां मैं और तू, मेरा और तेरा, मान-अपमान आदि समस्त वासनाओं का नामोनिशान नहीं रहता। सब कुछ ब्रह्ममय, आनन्दमय, ज्योतिर्मय लोक है। जिस की सार्थक कल्पना ही नहीं प्रामाणिक आरव्यान ही हमारी भावना को बलवती बनाते है।

मार्ग-पथ-पंथ अनेक हैं। किन्तु जो साधक जिस पंथ या मार्ग से लक्ष्य की प्राप्ति, बह्म चिंतन-मनन निदिध्यासन से कर चुका है वही उस पंथ तथा मार्ग का अनुगमन करने की सद् प्रेरणा दे सकता है। उस बताये मार्ग का अनुगामी लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है।

ब्रह्म सनातन है, धर्म सनातन है, सन्त परम्परा

सनातन है, आत्मा सनातन है। जिस ने उस का साक्षात्कार किया, एकाकार हुआ उसने उसका मार्ग प्रणीत किया। नाथ परम्परा, योग की परम्परा अनादि है, सनातन है, आदिनाथ अनादि है, अनन्त है, उसके अनेक रूप हैं। जिस ने जाना उसी ने पाया। स्वयं आदिनाथ भगवान द्वारा जो स्वयं गोरक्ष अवतार में अवतीर्ण हुऐ और विलुप्त योग की पुर्नस्थापना तथा शाबरी मंत्रों का सृजन किया। जिस से लोक - परलोक तथा उभय लोकों की दिव्य भावनायें संग्रहीत है। महायोगी गुरू गोरक्षनाथ की सार्वभौम सत्ता रही। उसी दिव्य परम्परा में स्वयं गोरक्षनाथ ने बाबा मस्तनाथ जी का स्वरूप धारण कर इस परम्परा को और अधिक पुष्पित और पल्लवित किया। दिव्य भूमि अस्थल बोहर नाथ सम्प्रदाय का पावन धाम है। महातपोधनों की तपस्थली है। यहीं पर महासिद्ध चौरंगीनाथ जी ने महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी के योग को अपनी सिद्धियों तथा चमत्कारों के द्वारा आम जन मानस तक पहुँचाया। इसी दिव्य भूमि से प्राचीन काल में योग तथा धर्म प्रचार के लिए सिद्धों की ३६० पालकियाँ जाती थीं। ऐसी दिव्य भूमि अस्थल बोहर में गोरक्ष स्वरूप दिगम्बर वेषधारी श्री बाबा मस्तनाथ जी ने तप साधना कर योग की महानतम शक्ति को पुनर्जागृत किया। यह बाबा मस्तनाथ जी का योग धाम या स्वयं श्री मस्तनाथ धाम योगियों तथा साधकों के लिए योग साधना भूमि प्रदान करता है।

मैं कुछ अपने विषय में कहूँ तो आत्म श्लाधा का दोष लगेगा फिर भी भक्ति भावना को देखते हुए मेरा रोम-रोम, मेरे जीवन का हर पल-पल, हर क्षण-क्षण है !

अस्थल बोहर, हे ! मस्तनाथ धाम तेरे कण-कण को समर्पित है। भूत-वर्तमान एवं भविष्य में तू ही केवल रहा था, रह रहा है और रहेगा। इसका लाँघना किसी के वश की बात नहीं परन्तु दृढ संकल्प से किया प्रत्येक मानव कल्याण कृत दीर्घकालीन परिधि को भी पार कर अनुकरणीय बनाता है। ऐसे कुत्सित भाव वाले जो सदा धर्म, धर्म स्थलों और धार्मिक कृत्यो के विरुद्ध प्रपंच रचते रहते हैं। किसी भी सृजनात्मक बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय के दुश्मन हैं जो साधुओं, सज्जनों, महान पुरुषों की निंदा करने में संकोच नहीं करते हैं उनका हर कदम विनाशकारी होता है। भगवान उन्हें सद्बुद्धि और सद्विचार प्रदान करे। जन-जन का कुलषित मानस निर्मल हो, लोग सन्मार्गी हों, उनमें सत्यवादिता, प्रेमादर तथा भ्रातृत्व के भावों का उद्रेक हो, लोग वैमनस्य, ईर्ष्या-द्वेष, क्रोध आदि से दूर रहें। समाज में, परिवार में, राष्ट्र में, शान्ति-समृद्धि और हर प्रकार का समन्वय स्थापित हो। भगवान गोरक्षनाथ एवं श्री बाबा मस्तनाथ जी मानव मात्र का कल्याण करें।

''दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरू देव'' नामक धर्म प्रकाशन परम श्रद्धालु, भक्त रूपा लेखिका शिवानी शर्मा ने अपनी लेखनी को सन्तों की कीर्ति से सजाया। साधु चरित्र अगाध और बुद्धि की पहुँच थोड़ी, पार नहीं पाया जा सकता है फिर भी लेखिका ने हमारे महान सन्तों, जिनके दिव्य चरित्र के अध्ययन, पठन, श्रवण, कीर्तन से पापों का विनाश होता है और उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलने से जीव कल्याण

का भागी होता है। ग्रन्थ में शोधार्थियों के लिए भी अच्छी सामग्री है। इस श्रम साध्य पूर्ण किए गए कार्य के लिए लेखिका विशेष रूप से बधाई की पात्र है।

लेखिका के भव्य भावों के पुष्प पुस्तक वाटिका को सुवासित करते रहें। भगवान गोरक्षनाथ जी तथा बाबा मस्तनाथ जी सदा तुम्हारे मानस में मराल रूप धारण कर विहार करें। उनका चिंतन सदैव तुम्हारा कल्याण करे। दीर्घजीवी हो। परात्परपर ब्रह्म जगत् नियन्ता भगवान आदिनाथ का स्मरण करते हुऐ कृति के प्रति तुम्हारे कृतित्व और व्यक्तित्व की सराहना करते हुए कल्याण की कामना करता हूँ। तुम्हारा जीवन सुखमय और मंगलकारी कार्यों में सदा संलग्न रहे। भविष्य में भी माँ शारदा आप से और भी मंगलकारी ग्रन्थों की रचना कराने का आशीर्वाद दे। सदैव मेरा शुभार्शीवाद तुम्हारे साथ है। सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी से ग्रन्थ के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभाकांक्षी

फाल्गुन शुक्ल नवमी
वि. सम्वत्-2062
बुधवार, 8.3.2006

(महन्त चाँदनाथ योगी)
गद्दी नशीन महन्त
गददी मठ अरथल बोहर
रोहतक, हरियाणा

शुभ आशीर्वाद

प्रिय भक्त,
शिवानी शर्मा

दिव्य भूमि मठ अरथल बोहर ग्रंथ के विषय में श्री गुरू गोरक्षनाथ जी एवं श्री बाबा मस्तनाथ जी से लेकर श्री बाबा चाँदनाथ जी महाराज तक जो आपने प्रयास किया है। वह अत्यन्त सराहनीय है। कारण की गवर्नन्मेंट सर्विस करते हुये समय निकालकर मठ अरथल बोहर तपस्थली की खोज करते हुये अनुभव सिद्ध वाणी का प्रयोग किया है। जिसमें यद्किन्चित भी बनावटी शब्द नहीं है। क्योंकि आस्था, श्रद्धा एवं समर्पण भाव के परिपक्व होने के करण जो भी शब्द अंकित किये गये हैं। वह मोतियों की तरह चुन-चुन कर एक माला के रूप में गठित किये गये हैं। जिसको देखकर ज्ञानी-अज्ञानी सभी भक्तजन उसका उपयोग कर सकते हैं। जिसकी जैसी श्रद्धा हो उसके अनुसार प्राप्त होने जैसे उपदेश पर वाक्य चुन सकते हैं। एवं भक्तियुक्त अन्तःकरण से सर्व सामान्य जीवन में उपयोग करते हुए निर्वाण पद की प्राप्त

करने तक मार्गदर्शक के रूप में उपयोग हो सकता है

सतगुरू कृपा प्रासादिक स्वयं अनुभव प्राप्त कर अन्य भक्तों के हितार्थ अक्षरवाणी रूप प्राप्त करते हुये पूर्णकृपा गुरूदेव से प्राप्त कर यह पुष्प उन्हीं के चरणों में अर्पित करके निष्काम भाव प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। इसलिए दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर बाबा मस्तनाथ जी की तपस्थली एवं बाबा चाँदनाथ जी तक कर्मस्थली जिसको कोई भी व्यक्ति भूलाने से भी नहीं भूला सकता। इसलिए आप शुभ आशीर्वाद के आलौकिक पात्र हैं।

आगे भी यह अपेक्षा करते हैं, कि आपके द्वारा अनेकों अनेक सिद्ध सम्प्रदाय का वर्णन करते हुये समपर्ण करते रहेंगे।

इति शुभम्
शुभेच्छुक

योगी आनंदनाथ जी (महामंत्री)
अखिल भारत वर्षीय अवधूत भेष
बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार

दो शब्द

दिव्य सिद्ध भूमि श्री बाबा मस्तनाथ मठ की प्राचीनता नाथ पंथ के अनुसार लगभग २००० वर्षों पूर्व की है। इस सिद्ध भूमि में श्री बाबा मस्तनाथ जी के द्वारा इस मठ का जीर्णोद्धार आज से लगभग २५० वर्षों पूर्व किया गया। पंथ की मान्यता अनुसार सिद्ध श्री बाबा मस्तनाथ जी महायोगी श्री गोरक्षनाथ जी के अवतार है। आपकी साधना एवं भक्ति से योग मार्ग को एक दिव्य प्रणाली प्राप्त हुई जिससे निर्गुण सगुण सभी तरह के भक्त योग मार्ग में अनुप्रामाणित होते रहे। आधुनिक युग में दुनिया भर के लोग इस तरफ आकर्षित हो रहे है। अतः इस विषय की प्रासंगिता बढ़ती जा रही है।

विदुषी शिवानी शर्मा के द्वारा विरचित बांगमय साहित्यिक ग्रंथों एवं शोध प्रबन्धों के साथ साधक, संत, भक्त जनों के लिए एक अक्षय भंडार के सदृश है जो जीव को शिव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

सिद्ध श्री बाबा मस्तनाथ जी के महानतम परम्परा के दिव्य अवतरण परमपूज्य गुरू जी के अलौकिक शक्तियों से प्राप्त ज्ञान के द्वारा आपने जिस **दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरू देव** नामक

पुस्तक को लिखकर इस समाज को एक अमूल्य निधि भेंट किया है जो आपकों युगों तक इस भूलोक में श्रेय देते हुए यशस्वीयों की पंक्ति में लाकर खड़ी करने में सक्षम है।
इस महान कृति के लिए आपको कोटिशः साधुवाद।

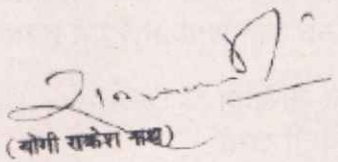

महामंत्री
श्री बाबा मस्तनाथ मठ अस्थल बोहर
एवं सहायक मंत्री,
योगी महासभा

आशीर्वचन

प्रिय लेखिका
शिवानी शर्मा
शुभ आशीर्वाद

आपका 'दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर' यह ग्रंथ अवलोकन करते हुये बड़ी प्रसन्नता हुई है। जो कि आपने नाथ सिद्ध सम्प्रदाय सम्बन्धित एक नये ग्रंथ की रचना की है। जिसमें नाथ सिद्ध सनातन धर्म, संस्कृति एवं परम्परा तथा विशेष रूप में पंथ आई परम्परा का वर्णन तथा बाबा मस्तनाथ तपस्थली का यथा उचित वर्णन इतिहास रूप में बड़े ही अच्छे ढंग से किया गया है। आदि गुरू आदिनाथ से लेकर मत्स्येन्द्रनाथ गुरू गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ जी से लेकर महन्त जी बाबा चाँदनाथ जी जो मठ अस्थल बोहर जैसी भव्य दिव्य तपस्थली तक सभी का सविन्मय ऐतिहासिक वर्णन किया है। रचनाओं में उनके जीवन चरित्र, सिद्ध चमत्कारिक घटनायें तथा सिद्ध कर्म योग, योग, ज्ञान, भक्ति आदि को उजागर किया है। तथा आपने अपने भक्तियुक्त समर्पण व्यक्त किये हैं। जो सभी

भक्तजनों, सेवकों के भाव भक्ति को चेतनामय सिद्ध होंगे।

आपने अपने व्यक्तिगत सर्विस जीवन का अनमोल समय इस ग्रंथ रचना में वितीत किया। आपकी यह भक्ति समपर्ण सेवा के लिए आप बधाई के पात्र हैं।

सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी से इस ग्रंथ की सफलता के लिए कामना करते हुए शुभ आशीर्वाद देता हूँ।

इति शुभम्

शुभेच्छुक

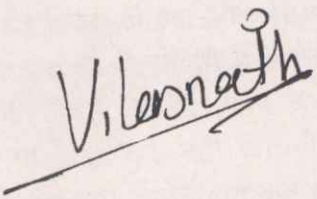

योगी विलासनाथ
हरिद्वार

भूमिका

पुरूषार्थ से ही जीवन सफल है अच्छे ज्ञान से समाज में ऐसे कार्य करने से जिससे जन मानस उसको सदा सर्वदा स्मरण रख सके। सन्तों का जन्म देश के लिये, राष्ट्र के लिये होता है सन्त वह जो सदैव परमार्थ की बात कहे। सन्त अपने सुख के लिये नहीं बल्कि राष्ट्र के लिये, मानव कल्याण के लिये उसका जीवन अर्पण है। मन से काम, क्रोध और लोभ का परित्याग करना पड़ेगा। भगवान भाव का भूखा है, आप में सच्ची श्रद्धा होनी चाहिये जब तक दृढ़ विश्वास, श्रद्धा रूपी नींव नहीं है सुन्दर मन्दिर का निर्माण नहीं हो सकता है। श्रद्धा, आस्था और दृढ़ता को सन्त और सच्चा परमार्थ गामी गुरू ही दे सकता है। अतः ऐसे सत् सन्त की चरण शरण में पहुँचना चाहिए। जब तक हमारे आचरण में सुधार नहीं होगा, शुचिता नहीं आयेगी। समाज में अनाचरण की वृद्धि होगी, भटकाव आयेगा, समाज के सामञ्जस्य, ताना - वाना में विखराव आयेगा। कान-आँख ऐसे पथ हैं कि हम जो श्रवण करते हैं, देखते हैं उनकी छाप हमारे मन पर पड़ती है। हमारा संस्कार बदलता है इसलिये सत् सन्तों की शरण में जाना चाहिये। संसार के प्रदार्थों का मनन न करके आत्म तत्व, परमात्मा तत्व का चिन्तन करना चाहिये। चिता पर पहुँचने से पूर्व चित्त को चेतन करके चैतन्य से जोड़ लेना चाहिये। धन और वैभव से लौकिक सन्तोष और अहंकार तो मिल सकता है किन्तु शाश्वत सुख की प्राप्ति नहीं। निर्लिप्त भाव से किया गया कार्य परमार्थ गामी होता है। अतः हमारा

मन, हमारा कार्य और वाणी में यह भाव भगवत्कृपा से, साधु संगति से प्राप्त हो सकता है जो अपवित्र और निकृष्ट लौह को स्वर्ण बना देता है किन्तु सन्त तो उसको भी पारस बना देते हैं।

अस्थल बोहर की भूमि का हर कण-कण शिवमय है। यहाँ सदियों से ज्ञान ज्योति दीप्त होती आयी। अगर उस दिव्य ज्ञान को प्राप्त करना है तो कठिनाइयाँ और दुष्कर मार्ग को कण्टकित गुलाब की टहनी पर विहँसते पुष्प की भाँति सुगन्धि विखेरते हुये अपने को सिद्ध करना पड़ेगा। गहन अन्धकार को चन्द्र और टिमटिमाते नक्षत्रें से नहीं मिटाया जा सकता है उसके लिये साक्षात् सूर्य सदृश बल्कि उससे भी बढ़कर जहाँ सूर्य चन्द्र, नक्षत्र और सहस्रों विद्युतों के प्रकाश कुण्ठित हो जाते हैं ऐसे अधिपतियों के अधिपति उस ब्रह्म को प्राप्त करा सकते है। जो काल का भी महा काल वह अज्ञान तिमिर को मिटाकर ज्ञान को या परा विद्या को प्रदान कर संसार से मुक्त करा सकता है। ऐसे गुरू की शरणागत होना पड़ेगा। भटका हुआ तो बाग्जाल में फँस कर आपको भटकाता रहेगा। जाल में फँसी मछली जल के बिना तड़पती है, छटपटाती है और शिथिल होकर प्राणान्त करती है। अगर कोई दयालु, कृपालु, कारूणिक सन्त रूपी साहसी उस वधिक के जाल से मुक्त कर सागर के जल में छुड़वा देता है तो उसके सुख की असीमता को वखान नहीं किया जा सकता है। मानव के लिये सच्चा साधु - सन्तरूपी, यज्ञरूपी, तीर्थरूपी गुरू ही ऐसा कर सकता है ।सच्चे हृदय से अर्पित प्रार्थना, अराधना से सन्त व सद्गुरू पाप - ताप और शाप का विमोचन

करते हैं। अरथल बोहर की इस अरण्य भूमि में तपोनिष्ठ सिद्ध योगियों की एक वृहत् श्रृंखला रही है। ब्रह्मका साक्षात्कार गुरू कृपा से ही हो सकता है। नित्य वन्दनीय गुरूचरणारविन्दों की कृपा से ही मैं इस पुस्तक में किंञ्चित सत्पुरूषों के चरित्र को लिख रही हूँ। यद्यपि सन्त चरित्र महासागर और मेरी बुद्धि छोटी नौका इसको कैसे पार कर सकती? जो छोटे से तालाब को तैर कर पार नहीं कर सकता है वह विशाल सद् गुणों की वैतरणी को कैसे पार कर सकती है। धरातल पर खड़ा व्यक्ति आकाश की लम्बाई मापना चाहता हो, सूर्य और चाँद को स्पर्श करना चाहता हो, असम्भव है। सूखी रोटी और दाल खाने वाले से मोहन भोग का स्वाद पूछो तो वह क्या बतायेगा ? लेखनी तो उठा ली पर बहुत समय तक सागर की नौका की तरह झंझाओं से झूझती रही। कभी एक तरंग आती, कभी दूसरी, अनवरत् तरंगों में, मैं गोते लगाती रही, कभी मोतियों की लड़ी और कभी घोंघे ही हाथ लगे। मैं उन सबको रत्नों से कम नहीं मानती हूँ। पूजनीय गुरू महाराज श्रद्धेय श्री चाँद नाथ जी महाराज की असीम कृपा की एक कला (अंश) ही कहूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी जिनकी कृपा से, श्री गोरक्षनाथावतार शिव अंशरूप बाबा मस्त नाथ ने अपनी लीला का विस्तार इस क्षेत्र में किया ओर जिनके श्री चरण रज से भूमि पावन हुई उनकी इस लीला और योग की गाथाओं को लेखनीबद्धकर पूर्ण विराम की ओर अग्रसर हुई पूर्ण तो ब्रह्म है, पूर्ण से सृष्टि रची गई पूर्ण से पूर्ण निकाल लेने पर पूर्ण ही बचता है। साधु चरित्र, गुरू महिमा का महात्म्य तो असीम है।

बाबा मस्तनाथ जी की योग साधना का सच्चा अनुकरण या उनकी कृपा से योग दीक्षा का अनुगमन तो रणपत मान्धाता, पाई नाथ, मैना नाथ, तोता नाथ ने तथा उसी श्रृंखला के अन्य नाथ योगियों ने किया। श्रद्धेय गुरूवर्य उसी श्रृंखला के सन्त हैं उनकी सृजनात्मक दृढ़ता, कार्य शैली जन - जन के कल्याण के लिये है उनका जो भी चरण आगे बढ़ता है अपने स्थायी चिन्हों को अंकित करता है। वर्तमान में तो वह सार्वदैशिक और व्यापक हो ही रहा है भविष्य में भी दीर्घ काल तक कीर्ति ध्वज फहराता रहेगा।

पुस्तक में जो चरित्र और कथायें संगृहीत हैं वह तथ्यात्मक हैं। नाथ भेख में जहाँ तक इसका विस्तार व शाखायें - उपशाखायें हैं परम्परागत सभी साधु महात्मा, श्रद्धालु भक्त, तथा योग साधना में अभिरूचि रखने वाले योगानुरागियों के लिये इन चरित्रों के माध्यम से उत्साह व अपूर्व ऊर्जा, लगन व निष्ठा जागृत होगी तथा योग साधना के प्रति विशेष अभिरूचि प्रादुर्भूत होगी जिससे इहलोक और परलोक का मार्ग प्रशस्त होगा।

कलेवर अभिवृद्धि में जिन-विज्ञ विद्वान महात्माओं के आशीर्वचन एवं सतत् कृपा रही उनकी मैं चरण वन्दना करती हूँ उनमें मैं सर्व श्री पूज्य श्री आनन्द नाथ जी योगी, अखिल भारतीय अवधूत योगी सम्प्रदाय का अचिन्तनीय, अविस्मरणीय आशीर्वाद इस पुस्तक के लेखन में रहा उनके श्री चरणों में शत शत नमन करती हूँ। पूज्य श्री हजारी नाथ जी (पुजारी जी)

अस्थल बोहर मठ, श्री विलास नाथ जी महाराज पुजारी हरिद्वार जिन्होंने तमाम नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित पुस्तकें नाथ रहस्य, नव नाथ चरित्र, पूजा पद्धति आदि लिखकर जनोपयोगी कार्य किया। उनका सुझाव व निर्देश मिलते रहे। मैं उन सबके लिये नत मस्तक हूँ।

कलेवर की श्री वृद्धि के लिये मैं डा. विश्राम सिंह भू. पूर्व प्राचार्य श्री मस्तनाथ आयुर्वेद कॉलेज एवं डा. विश्वपाल जी प्राचार्य संस्कृत महाविद्यालय अस्थल बोहर को साधुवाद देती हूँ जिन्होंने लेखन के सुझाव में एवं संस्कृत की त्रुटियों का निवारण कर मेरा मार्ग प्रशस्त किया। जिनका स्मरण मेरे जीवन का अभिन्न अंग है उस जन्मदात्री माँ जिसकी कोख से मेरा जन्म हुआ श्रीमती सत्यवती शर्मा, पूज्य पिता जी श्री जय चन्द्र जी शर्मा, एवं मातृ सदृश वात्सल्य जिनसे मुझे हमेशा मिला मैं वन्दनीय मौसी राम प्यारी भारद्वाज का स्मरण न करूँ यह कदापि नहीं हो सकता है मैं उनकी इस कार्य के लिए दी हुई आज्ञा का अक्षरशः पालन करती हूँ मैं दो नामों को कैसे भुला सकती हूँ प्रथम मेरी शिक्षिका जिन्होंने शिक्षा का प्रथम पाठ पढ़ाकर इस योग्य बनाया श्रीमती सन्तोष यादव दूसरी श्रीमती हर्षलता जो अन्य धर्मानुयायी (क्रिश्चियन) होते हुए भी उनकी नाथ सम्प्रदाय तथा मठ के प्रति अगाध श्रद्धा एवं अनिर्वचीय निष्ठा मठ से जुड़ी है जिनका प्रेरणामयी सहयोग मिलता रहा। डा. फतेह फार्मेसी इन्चार्ज का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने तमाम कथानकों को बताकर लेखन में सहयोग दिया। अपनी

अग्रजा की दार्शनिक दृष्टि भी सदुपदेश के सदुपयोग की स्तुत्य हूँ। अन्ततः मैं पाठकों के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करूँगी। जिन्हें मेरा लघु प्रयास कितना हृदयंगम होगा। मैं अपने को धन्य समझूँगी। अतः मेरे उत्साहवर्धन हेतु पत्र लिखें ताकि भविष्य में मैं और भी धार्मिक कृत्यों को नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित लिखना चाह रही हूँ इसलिए मैं सतत् प्रयत्नशील हूँ और यदा - कदा अवसर मिलते ही मैं नाथ साहित्य की सामग्री का संकलन करती रहती हूँ।

अन्त में श्री गुरू चरणारविदों में यह गुरूचरण किंकणी चरण वन्दन करती है।

जय बाबा मस्तनाथ जी महाराज।
जय गुरूवर्य चाँद नाथ जी महाराज।।

दिनांक 8-3-2006
फाल्गुन शुक्ल पक्ष नवमी

शिवानी
एफ-96, श्याम बिहार, फेस - 1
नजफगढ़, दिल्ली -110043

क्र.सं.	अनुक्रम	पृष्ठ सं.
1	श्री गणेश स्तुति	1
2	आरती	1
3	सरस्वती वन्दन	2
4	गुरू वन्दन विचार	2
5	'मातृ देवो भव'	3
6	'पितृ देवो भव'	3
7	गुरू चरण शरण	4
8	गुरूदेव	5
9	भगवान शंकर एवं माता पार्वती वार्ता	6
10	महायोगी मत्स्येन्द्र का जन्म	8
11	एक और जनश्रुति के अनुसार	10
12	बद्रिकाश्रम में मत्स्येन्द्र की कठिन तपस्या	12
13	नाथ पंथ में दीक्षित	14
14	नाथ सम्प्रदाय का उदय	14
15	श्री गोरक्षनाथ जी का अवतार धारण करना	18
16	गुरू गोरक्षनाथ जी की राजा भर्तृहरि से भेंट	26
17	गुरू गोरक्षनाथ जी द्वारा दरिद्र ब्राह्मण को समृद्धि दान	30

18	गुरू गोरक्षनाथ जी द्वारा मक्का में चमत्कार प्रदर्शन	32
19	गुरू गोरक्षनाथ जी के आशीर्वाद से चौरंगी को हाथ-पाँव की प्राप्ति होना।	34
20	पूर्ण भक्त का नाथ पंथ में दीक्षित होना	36
21	गुरू गोरक्षनाथ जी का व्यक्तिगतत्व और महिमा आचार्य रजनीश और सुमित्रा नंदन पंत सम्वाद	37
22	गुरू-भक्ति की परीक्षा	41
23	गुरू गोरक्षनाथ के आशीर्वाद से बाछल रानी को पुत्र की प्राप्ति	45
24	गुरू गोरक्षनाथ जी के 108 नाम	51
25	श्री गोरक्षनाथ चालीसा	53
26	आरती श्री गोरक्ष नाथ जी की	55
27	योगाश्रम मठ अस्थल बोहर में सिद्ध योगी श्री चौरंगीनाथ जी के चमत्कार प्रदर्शन	56
28	सिद्ध चौरंगीनाथ जी के श्राप से नगर का विध्वंस	59
29	जनश्रुतियों के अनुसार	60
30	मठ का ध्वंस	61
31	श्री बाबा मस्तनाथ जी का अवतार धारण करना	63
32	बाल्यकाल में मस्ता के चमत्कार प्रदर्शन	68
33	बालक मस्ता ने योगबल से वर्षा कराकर गायों की	

	प्यास बुझाई	72
34	बालक मस्ता को गुरू चरणों में समर्पित करना	74
35	आई पन्थ का प्रादुर्भाव	77
36	''आई पन्थ'' का प्रचार एवं प्रसार	78
37	पेहवा नगर में विशाल धार्मिक मेला	79
38	श्री बाबा मस्तनाथ जी के विराट स्वरूप के दर्शन	82
39	श्री बाबा मस्ताईनाथ जी द्वारा समस्त सम्प्रदाय को चमत्कार दिखाना	83
40	''आई'' के स्थान पर ''नाथ'' शब्द का प्रयोग	85
41	मठ अस्थल बोहर का जीर्णोद्धार	85
42	कुबड़ी स्त्री का काया कल्प	86
43	श्री बाबा मस्तनाथ जी द्वारा नेत्रहीन को नेत्र ज्योति प्रदान करना	89
44	बोहर गाँव में वर्षा करवाना तथा वर्षा का वरदान देना	90
45	सन्तान प्राप्ति का वरदान	95
46	योगबल से मृत गाय को जीवित करना	99
47	सामंत शिकारी को दिव्य ज्ञान प्रदान करना	101
48	आलमशाह को चमत्कार प्रदर्शन दिखाना	106

49	श्री बाबा मस्तनाथ जी द्वारा संत हरिदास जी की परीक्षा लेना	113
50	संत हरिदास द्वारा श्री बाबा मस्तनाथ जी की यौगिक सिद्धि देखना	115
51	श्री बाबा मस्तनाथ जी के आदिकाल के शिष्य श्री रणपत धाता	117
52	योगी श्री रणपतनाथ तथा धातानाथ की कठोर तपश्चर्या	123
53	यचूपा ग्राम में देवीदास ग्रामाधिपति के अंहकार का शमन	126
54	अहंकारी स्त्री को श्री बाबाजी ने दिव्य ज्ञान प्रदान किया।	132
55	श्री बाबा मस्तनाथ जी द्वारा अपने शिष्यों को शरीर रूपी दिव्य ज्ञान प्रदान करना	140
56	सर्व सिद्धि सम्पन्न युगल योगीश्वरों की सांकेतिक वार्ता	152
57	श्री बाबाजी द्वारा शिष्यों को सम्बोधित करना	154
58	श्री बाबाजी की महायात्रा के विषय में जानकारी	154
59	समाधि पूर्व ही समाधि मन्दिर का निर्माण	156
60	अनन्त विभूषित पूज्यपाद श्री बाबा मस्तनाथ जी का ब्रह्मलीन होना	158

61	परम-पवित्र अखंड ज्योति	163
62	बाबा मस्तनाथ चालीसा	163
63	श्री बाबा मस्तनाथ वराष्टकम	167
64	ॐ श्री बाबा मस्तनाथ सहस्रनाम्	170
65	आरती श्री बाबा मस्तनाथ जी	191
66	सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी महाराज	191
67	सप्तमी अष्टमी नवमी को श्री बाबा मस्तनाथ जी की पुण्य स्मृति में विशाल धार्मिक मेले का आयोजन	192
68	सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी महाराज की जोधपुर यात्रा	194
69	बीकानेर राज्य में योगबल द्वारा वर्षा करवाना	194
70	सिद्ध योगी श्री मेघनाथ जी महाराज	199
71	सिद्ध योगी श्री मोहरनाथ जी महाराज	200
72	योग-प्रचार के लिए हाथी-घोड़ों का उपयोग	200
73	योगाश्रम के प्रति लोगों का निष्ठा भाव	201
74	सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज	201
75	माँ अन्नपूर्णा देवी का सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी पर पूर्ण आशीर्वाद	202
76	बंजर भूमि के भाग जगे कृषि से चार चाँद लगे	203

77	संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना	205
78	प्रेरणा के अक्षय स्रोत सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज	206
79	सिद्ध योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज	207
80	योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज की धार्मिक अलवर यात्रा	208
81	हरिद्वार में संस्कृत विद्यालय की स्थापना	208
82	धार्मिक ग्रंथों' का प्रकाशन	209
83	हिन्दू संस्कृति के प्रतीक	210
84	सिद्ध योगी श्री श्रेयोनाथ जी महाराज	212
85	योगी श्री श्रेयोनाथ जी का प्रारम्भिक जीवन	212
86	शिक्षा	214
87	भगवान् धन्वन्तरि जी के आशीर्वाद से आपकी आयुर्वेद कीर्ति देश विदेश में फैली	216
88	'गुरू आदेश' से आपका मठ अस्थल बोहर में शुभागमन	217
89	कृषि के आधुनिकीकरण द्वारा मठ की सम्पदा में 'श्री वृद्धि'	218
90	श्री बाबा मस्तनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय का निर्माण	219
91	श्री बाबा मस्तनाथ धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय	220

92	श्री बाबा मस्तनाथ धर्मार्थ सामान्य चिकित्सालय	221
93	श्री बाबा मस्तनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय	221
94	प्राचीन वास्तुकला के महान प्रेमी	222
95	मठ सम्पत्ति का संरक्षक	222
96	भारतीय संस्कृति, देश भक्ति, कर्त्तव्य निष्ठा के प्रकाश स्तम्भ	223
97	स्वास्थ्य मंत्री के गौरवमय पद की प्राप्ति	225
98	सुचारू तथा स्वच्छ पेयजल व्यवस्था	227
99	स्वास्थ्य मंत्री के पद से त्याग पत्र	227
100	वरदान सार्थक सिद्ध हुआ	228
101	गद्दी के महन्तों का एकमात्र लक्ष्य	228
102	महा-समाधि का पूर्वाभास	229
103	महासमाधि	229
104	क्षति पूर्ति अत्यंत कठिन	232
105	ब्रह्मलीन सिद्ध योगी श्री श्रेयोनाथ जी महाराज एक असाधारण व्यक्तित्व	233
106	एक मधुर स्मृति	234
107	योगी श्री चाँदनाथ जी का ''महन्त'' पद पर अलंकृत होना	236

108	पुण्य पुरूष पूज्यपाद गुरूवर श्री १००८ श्री महन्त चाँदनाथ योगी का संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त	239
109	घर को वापसी	244
110	श्री चाँदनाथ जी के चीरा गुरू	244
111	दीक्षा प्राप्ति	246
112	मन्त्र-प्राप्ति	247
113	मंत्र का तथ्य जानने का प्रयास	247
114	भिक्षाटन के लिए जाना	248
115	श्री गुरूदेव जी की आज्ञा	250
116	आश्रम जीवन	251
117	विचारों पर नियन्त्रण	252
118	विवेक का अभ्यास	252
119	आसन	253
120	जप साधना संबंधित कुछ उपदेश एवं जानकारी	253
121	साधना	255
122	योग साधना	256
123	योग साधना में विघ्न	257
124	विभूति गुरू	257
125	भक्ति	258

126	साधना कहा करनी चाहिए, कहा नहीं करनी चाहिए	259
127	त्राटक योग साधना	259
128	ध्यान कैसे करना चाहिए	259
129	साधक की ध्यान मुद्रा	260
130	विशेष अनुभूतियाँ	261
131	ध्यान योग साधना	262
132	गुरू की अनिवार्यता	264
133	गुरू दक्षिणा	265
134	गुरू बनने का दायित्व	267
135	श्री गुरू मन्दिर का निर्माण	268
136	कर्म की प्रधानता	268
137	सदाचार तथा शास्त्र निष्ठा	268
138	सत्यवादिता	269
139	चरित्र की विशेषताऐं	269
140	गुरूजी का स्वभाव	270
141	गुरूजी का भोजन	270
142	गुरूजी की दिनचर्या	270
143	विभिन्न धार्मिक कृत्य	271
144	नवरात्रों में विशाल यज्ञ का आयोजन एवं विशाल	

	भंडारा	271
145	कोढ़ियों को कम्बल एवं अन्न दान	272
146	इष्ट और गुरू अभेद हैं	272
147	शक्ति का संचार	272
148	गुरू तत्व	273
149	साधना संबंधी कुछ बातें	274
150	महादेवी लक्ष्मी का प्राकट्य	274
151	दिव्य सुगन्ध	276
152	सिद्ध योगी गोपीचंद भर्तृहरि जी के साक्षात् दर्शन	276
153	साधना से योग ऐश्वर्य का प्रकाश।	278
154	भगवान शंकर के दिव्य दर्शन	279
155	श्री गुरूजी का चिन्मय भाव	281
156	गुरू चिन्तन का फल	281
157	गुरू और भगवान में कोई भेद नहीं	282
158	ज्योतिष विद्या का ज्ञान	282
159	योग	285
160	गुरूजी की अभिरूचियाँ	290
161	बाढ़ग्रस्त लोगों की सहायता	293
162	गुरूजी की लंदन यात्रा	294

163	शिशु शिक्षा एवं श्री गुरूजी	294
164	पवित्रता के पुंज हैं श्री गुरूजी	297
165	बैकुण्ठ दर्शन	300
166	सिद्ध महात्मा से साक्षात्कार	303
167	विश्व कल्याण के लिए किए गए अनुष्ठान	304
168	श्री गुरूजी की कुछ पहाड़ी यात्रायें	305
169	तुंगनाथ मन्दिर	306
170	बद्रिकाश्रम	306
171	जड़ी बूटियों पर चर्चा	308
172	द्वारिका धाम यात्रा	309
173	जगन्नाथ पुरी यात्रा	309
174	तारापीठ साधना	310
175	जब फिलिपिन्स के राजदूत श्री गुरूजी के प्रति आकर्षित हुए	310
176	महान महात्मा महन्त चाँदनाथ जी महाराज	313
177	श्री गुरू की महानता	315
178	श्री गुरू ध्यान	317
179	श्री बाबा मस्तनाथ जी के प्रत्यक्ष दर्शन	318
180	श्री गुरूजी द्वारा दिये गए कुछ मंगल उपदेश	320

181	मन पर नियंत्रण रखना अति आवश्यक	340
182	शक्ति की कुँजी सदैव गुरू के हाथ में	342
183	समय गतिशील है, वह किसी का इंतजार नहीं करता	343
184	जन्म और मृत्यु	344
185	योगी की दृष्टि में मृत्यु	347
186	सनातन धर्म के विषय में भक्तों की शंका निवारण	348
187	स्वर साधना	353
188	कुंभ मेले में साधु-महात्माओं द्वारा श्री गुरूजी का स्वागत	355
189	महाकुंभ पर्व	358
190	शास्त्र के आधार पर महाकुंभ पर्व	358
191	नाथ सिद्ध योगियों का महाकुंभ पर्व	359
192	नासिक (त्र्यम्बक) कुंभ पर्व	359
193	नाथ सिद्ध योगियों का त्र्यम्बक महाकुंभ पर्व	360
194	हरिद्वार महा कुंभ पर्व	360
195	पौराणिक पहचान	361
196	नाथ सिद्धों के प्रति हरिद्वार मान्यता	361

197	उज्जैन महाकुंभ पर्व	363
198	नाथ सिद्धों के प्रति उज्जैन	364
199	प्रयाग राज महाकुंभ पर्व	365
200	नाथ सिद्धों का महाकुंभ पर्व	365
201	ध्वजा रोहण पूजा	366
202	योगी महासभा कार्यकारिणी समिति पदाधिकारियों का चुनाव	367
203	श्री गुरूजी का आत्म परिचय	367
204	श्री गुरूजी पुरस्कार से सम्मानित अर्न्तराष्ट्रीय गोल्ड स्टार सहस्राब्दि पुरस्कार	368
205	श्रीमती इन्दिरा गाँधी सद्भावना पुरस्कार	369
206	कुछ दिव्य अनुभूतियाँ एवं संस्मरण पुजारी जी, मठ अस्थल बोहर	369
207	श्री गोवर्धन नाथ जी, बद्रीनाथ	392
208	श्री बाबा मस्तनाथ जी एवं गुरू कृपा से नवजीवन की प्राप्ति	406
209	लेखिका के कुछ निजी अनुभव	409
210	पलभर में ही शंका निवारण	411
211	गुरूजी के रूप में भगवान श्री कृष्ण के दिव्य दर्शन	413

212	स्वप्न में गुरू दीक्षा	415
213	गुरू के लिए श्रद्धा अति आवश्यक	418
214	सिद्ध स्मृति भवन में स्वर्ग का दृश्य	421
215	ब्रह्मलीन महंत श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज	424
216	राजनीतिक गतिविधियों से सम्पर्क	427
217	महन्त श्री अवेद्यनाथ जी महराज	430
218	ब्रह्मलीन श्री सिद्ध योगी लक्खीनाथ जी महाराज	434
219	श्री शिव मन्दिर परिसर में अन्य दर्शनीय स्थल	437
220	श्री बाबा लक्खीनाथ जी ब्रह्मलीन होने से एक सप्ताह पूर्व	438
221	भक्तों को आशीर्वाद	440
222	श्री बाबा लक्खीनाथ जी के भौतिक शरीर का परित्याग	441
223	एक महत्वपूर्ण स्मृति	442
224	ब्रह्मलीन श्री धनीनाथ जी महाराज	443
225	मानवता को समर्पित एक मसीहा	444
226	नाथ सम्प्रदाय के एक शक्तिशाली धनी व्यक्ति का अन्त	449
227	सिद्ध योगी श्री हजारीनाथ जी महाराज '' पुजारी जी'' मठ अस्थल बोहर	452

228	योग्य गुरू के योग्य शिष्य	454
229	संत निन्दक महा पातकी	455
230	गुरू के साथ विश्वासपात्र रहो, विश्वासघाती नहीं	456
231	शिष्य धर्म	458
232	दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर	459
233	प्राचीन एवं धार्मिक स्थल मठ स्थल बोहर	468
234	सिद्ध भूमि मठ अस्थल बोहर का माहात्म्य	470
235	श्री बाबा मस्तनाथ सिद्ध पीठ की महत्ता	472
236	आश्रम का सार्वभौमिक एवं सार्वदेशिक प्रभाव	474
237	श्री बाबा मस्तनाथ मठ का आध्यात्मिक महत्व	475
238	श्री बाबा मस्तनाथ शिक्षण संस्थान की ख्याति चरम सीमा पर	483
239	शिक्षा के उद्देश्य	486
240	आदमी	486
241	इंसान बनो	487

श्री गणेश स्तुति

एक दन्तश्रच महाबुद्धिः सर्वज्ञो गणनायकः।
सर्व सिद्धकरो देवः गौरीपुत्रो विनायकः।।
प्रथम गजानन पूजिये ऋद्धि सिद्धि कल्याण।
बुद्धि दायक करिवरवदन, गाते वेद पुराण।।

आरती

जै गणेश काटो कलेश ऋद्धि सिद्धि देवा।
तुमिरे सुमिरे बुद्धि मिले, पार होवे खेवा।।
प्रथमहि पूजा करे तिहारी, संत भक्त नर नारी।
घृत लड्डू सिन्दूर चढ़ावें, फल फूलहिं मेवा।।
रूप तुम्हारा जग से न्यारा, शोभा सिन्धु संवारी।
जो जन तुम्हरो ध्यान लगावें, मन चाहा फल पावे।
ऋद्धि सिद्धि नारी शुभकारी सुख सम्पति भंडारी।
यही विचार हृदय मन धारी, शिवानी शर्मा आभारी।।

सरस्वती वन्दना

अम्बे हे वरदायिनी दृष्टि हो ज्योतिर्मान।
लेखन क्रिया प्रबुद्ध हो शुद्ध हो शील विचार।।
मुझको नवल उत्थान दो, माँ सरस्वती वरदान दो,
माँ शारदे, हंसास्विनी, वागीश बीणा वादिनी,

माया मुझे नहीं ठग सके, मन मोह में नहीं फँस सके,
कर दूर सब अज्ञान दो, माँ सरस्वती वरदान दो,
निष्काम हो मन कामना, मेरी सफल हो साधना,
नवगीत, नवलय तान दो, माँ सरस्वती वरदान दो,
ये विश्व ही परिवार हँसे, सबके लिए सम प्यार बसें
आर्दश लक्ष्य महान हो, माँ सरस्वती वरदान दो,

गुरू वन्दन विचार

हे गुरूदेव, मैं अपनी पूजा का फल मात्र इतना ही चाहती हूँ, कि आपके चरणों से कभी विलग न हो पाऊँ।

हे गुरूदेव, आपके चरण कमल पुनः पुनः ध्यान करने योग्य, हृदय के विनम्र भावों से ज्ञेय एवं सुन्दरतम् हैं। सदैव स्तुत्य, शिष्यों के चित्त को चैतन्य करने वाले तथा कमनीय हैं। आपके चरणकमल भक्तों को नित्य धन्यतम् करने वाले तथा समस्त मंगलमय सम्पदा से परिपूर्ण हैं। जन्म-मरण के भय को हरने वाले, पावनतम वे चरण कमल मेरे हृदय में सभी श्रेष्ठ भावों के साथ समाहित हों, ऐसी ही मेरी मनोकामना है।

सर्वप्रथम श्री गुरूजी के चरण कमलों में साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करते हुए मैं उनकी चरण धूली मस्तक पर धारण करती हूँ। जो अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करने के कारण अखंड ज्योतिर्मय सूर्य हैं।

उसके पश्चात् निर्गुण, निराकार निरंजन, अविनाशी 'अलख' नाम को मन, वचन एवं कर्म से कोटि-२ प्रणाम करती हूँ।

तत्पश्चात् मैं अपनी प्रिय मौसी, जो मेरे लिए माँ के समान हैं, उनको मैं श्रद्धा-पूर्वक प्रणाम करती हूँ।

तत्पश्चात् मैं अपने माता-पिता को कोटिशः प्रणाम करती हूँ। जिन्होंने मल-मूत्र युक्त इस देह को स्वच्छ निर्मल बनाकर मेरी अज्ञानावस्था में पाला पोसा और नाना प्रकार का ज्ञान देकर मेरे जीवन से अहंकार हटाने का प्रयास किया।

'मातृ देवो भव'

माँ सत्या शर्मा पूज्या, श्याम विहार की रहने वाली।
जन्मदात्री पोषण कर्त्ता, परम प्यार बरसाने वाली।।

'पितृ देवो भव'

धरती पर लाने वाले, विद्या का पाठ पढ़ाने वाले।
श्री बाबा के दर्शन कराने वाले, तुम्हें, करूँ नित याद।।
श्री बाबा का व्यक्तित्व लिखूँ मैं, उनके कुछ कृतित्व लिखूँ मैं।
महाशक्ति का तत्व लिखूँ मैं, कर दो पूरण काम।।

हे प्रभु- हे दीन बन्धु! मैं आपकी दया दृष्टि का कहाँ तक गुणगान करूँ जिसका वर्णन, गुणगान करने में देवता भी असमर्थ रहते हैं। हे नाथ! मैं अज्ञानी आपसे यही विनम्र निवेदन करती हूँ, कि मैंने आपकी प्रेरणा से आज जिस पुस्तक को

लिखने के लिए लेखनी उठाई है, यह मेरा सत्य संकल्प आपकी करूणा, अनन्त कृपा से पूर्ण हो।

दोहा- गुरू चरणन् चित्त लाऊँ, हाथ में कलम उठाऊँ।
श्री बाबा मस्तनाथ और गुरू का कर कथन सुनाऊँ।।

हे दयानिधान, दयामय करूणा सागर भगवान! जो कुछ भी लिख पाऊँगी, वह सब आपकी ही कृपा का फल होगा। मेरे लिखने में कुछ गलतियाँ भी जरूर होगीं, क्योंकि गलतियाँ करना और भूल करना मानव का सहज स्वभाव है। अतः अपनी गलतियों और भूलों के लिए मैं करबद्ध क्षमा-प्रार्थी हूँ।

गुरू चरण शरण

मेरे मन के मन्दिर में परब्रह्म श्री नाथ जी एवं श्री गुरूदेव सदैव निवास करें। और संतों महात्माओं की सेवा में मेरा मन सदैव श्रद्धा निष्ठा के साथ लगा रहे।

हे गुरूदेव! मुझ अज्ञानी शिवानी को अपनी शरण में लेकर कृतार्थ करें। पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों के द्वारा मनुष्य रूप में, इस संसार 'रूपी-सराय' में जन्म पाते ही राग द्वेष के वशीभूत होकर मोहरूपी दलदल में फंस गई हूँ।

हे गुरूदेव! मेरी बुद्धि तो अज्ञान से भरी हुई है, अतः आप अपनी कृपा से मुझे शुभ मति प्रदान कीजिए।

हे गुरूदेव! मैं ज्ञान के मार्ग पर जाना चाहती हूँ, किन्तु

जा नहीं पाती। क्योंकि राग-द्वेष, मोह-माया के क्रूर जाल ने मुझे पकड़ रखा है।

गुरूजी मैं अज्ञानी हूँ, हो रही माया में लीन।
आप शाहों के भी शाह हो, राम नाम आधीन।।
राम नाम आधीन आपके, रिद्धि-सिद्धि आधीन गुरू।
यहाँ अलख नाम भंडार भरे, आप दाता मैं हूँ दीन गुरू।।
हे नाथों के नाथ, नमाऊँ माथ, मैं हूँ गमगीन गुरू।
आप समदर्शी सब जानते हो, तड़पे है जल बिन मीन गुरू।।

हे गुरूदेव! मैं स्वयं अपनी आँखों से देखती हूँ कि इस संसार में जन्म लेने वाले सभी प्राणी अकेले आते हैं, और अकेले ही चले जाते हैं। फिर भी मेरी समझ में कुछ नहीं आता। इसलिए आपकी शरण में आयी हूँ। आप मेरे अज्ञान का निवारण करके मुझको अपनी शरण में ले लीजिए।

गुरूदेव

जो अपने गुरू के श्री चरणों में श्रद्धा भक्ति रखता है, गुरू कृपा से उसी को आत्मज्ञान प्राप्त होता है। वही शिष्य, गुरू के उपदेश ज्ञान का रहस्य समझ पाता है। और उसे दिया हुआ उपदेश भी सफल होता है। जिन्हें गुरू की शरण नहीं मिलती, और न ही गुरू मंत्र एवं गुरू दीक्षा प्राप्त होती है, उनके निराधार भटकने का सदैव भय बना रहता है।

जो शिष्य नर रूपी नारायण अपने गुरू की दिव्य प्रतिमा को अपने हृदय के भीतर मन्दिर में स्थापित कर, और गुरू को

ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश के तुल्य जानकर श्रद्धा भक्ति पूर्वक उनकी सेवा, अर्चना, वंदना करता है तथा देवताओं में रखी जाने वाली श्रद्धा भक्ति को श्री गुरुदेव के श्री चरणों में समर्पित करता रहता है, उसे ही श्री सदगुरु द्वारा परम-प्रकाशमय दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है। जिससे शिष्य स्वयं ज्योतिर्मय होकर माया-मोह, आशा-तृष्णा के जाल से छूटकर शांत हो जाता है तथा भवसागर से पार हो जाता है।

भगवान शंकर एवं माता पार्वती वार्ता

एक बार कैलाश पर्वत पर विराजमान भगवान शंकर से माता पार्वती ने कहा हे भगवन! आप अज़र अमर हैं, और मुझे बारम्बार जन्म लेना पड़ता है, इसका क्या कारण है ? इसके साथ ही जिस मंत्र का जप आप करते हैं, उसे मुझे भी देने की कृपा करें। जिससे मेरा अज्ञान दूर हो सके।

देवाधिदेव भगवान शंकर ने कहा- हे महादेवी भव बन्धन से मुक्त करने वाला और अज़र-अमर बनाने वाला जो यह ज्ञान तथा मंत्र है, वह परम गुह्य है। यदि तुम जानना चाहती हो तो मेरे साथ किसी एकांत स्थान पर चलो। जहाँ पर कोई अन्य प्राणी न हो, वहीं पर बैठकर मैं तुम्हें उस गुह्य ज्ञान का उपदेश दूँगा।

भगवान शंकर और माता पार्वती समुद्र तट पर एक गहन वन में जा पहुँचे। वहीं पर भगवान शंकर ने पार्वती के समक्ष तत्व ज्ञान का वर्णन सुनाना आरंभ किया। पार्वती जी बड़े ध्यान से तत्व ज्ञान को सुनने लगी। कुछ देर तो ध्यान मग्न

होकर पार्वती जी उस तत्व ज्ञान को सुनती रहीं फिर दैव संयोग से वे बैठी - बैठी ही समाधिमग्न हो गई। शिवजी भगवान ने समझा, कि पार्वती आँखे बंद करके उनके उपदेश को सुन रही है, उन्होंने अपना उपदेश जारी रखा।

उपदेश पूर्ण होने के पश्चात् भगवान शंकर ने पार्वती से कहा- हे देवी ! मैंने आज जिस रहस्यमय ज्ञान का उपदेश दिया है वह तुम्हें कैसा लगा ?

पार्वती जी तो निद्रामग्न हो चुकी थी, सो वे उत्तर कैसे देती। परन्तु उसी समय समुद्र तट से एक आवाज़ आई, जो इस प्रकार थी।

हे महेश्वर! आपने जो यह रहस्यमय ज्ञान समझाया है, उसे सुनकर मुझे अत्यंत आनंद हुआ है। प्रेमानंद के कारण मेरी द्वैत बुद्धि नष्ट हो गई है। आपके उपदेश का सारांश यह है- कि शिव ही कर्ता है, शिव ही भोक्ता है, शिव ही सबके स्वामी हैं, शिव ही आत्मा है, शिव ही जीव है, शिव के अतिरिक्त और कोई भी नहीं है।

समुद्रतट पर जल में से आने वाली इस आवाज को सुनकर भगवान शंकर आश्चर्य चकित रह गये, कि यहाँ पर तो किसी मनुष्य के चिन्ह भी नहीं है, फिर इस परम गुह्य ज्ञान को किसने सुन लिया ? और कौन इसका उत्तर दे रहा है ?

तत्पश्चात् ध्यान दृष्टि से देखने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि समुद्र तट पर जल में एक मछली पड़ी हुई है। और वह गर्भवती

है, उसके गर्भ में कविनारायण हैं। उन्हीं कविनारायण ने मेरे ज्ञानोपदेश को सुना है। यह जानकर भगवान शंकर को अत्यंत हर्ष हुआ, और कहा कि- हे कविनारायण! आप इस तत्व ज्ञान को प्राप्त करने के योग्य हैं। किन्तु इस समय आप गर्भ में हैं। अतः जब तक आप जन्म न ले ले, इस तत्व ज्ञान का मनन करते रहिये।

महायोगी मत्स्येन्द्र का जन्म

नौ नारायणों में से श्री कविनारायण जी मत्स्येन्द्रनाथ जी के रूप में प्रकट हुए थे। उन्होंने भृगुवंशी ब्राह्मण के घर जन्म लिया था। जन्म होने पर माता-पिता अत्यंत प्रसन्न हुये। किन्तु जब पंडितों ने भविष्यवाणी की, कि बालक का जन्म गण्डान्त (मूल) नक्षत्र में हुआ है। और यह बालक आप लोगों के लिए अशुभ सिद्ध होगा ये सुनकर वे अत्यंत दुखी हुये, और बालक को शेष झील में फेंक दिया। जिसे उसी समय एक मछली निगल गई। दैव संयोग से जब माता पार्वती की प्रार्थना पर भगवान शंकर उन्हें अमरकथा सुना रहे थे, उस समय वहाँ पर विगलित हुआ एक तोते का अंडा और समुद्र में पड़ी मछली सुन रही थी। मछली के पेट में कविनारायण जी अमरकथा (तत्व ज्ञान) सुन रहे थे।

आहट पाकर जब शंकर जी ने पेड़ की ओर देखा तो तोता अमर होकर उड़ गया। और भगवान शंकर की जल की तरफ दृष्टि गई तो देखा, मछली के पेट से बालक बाहर आया।

विष्णु अवतार मत्स्य के मुख से प्रकट होते हुए महायोगी मत्स्येन्द्र जी

मछली के पेट से उत्पन्न होने पर ही उनका नाम मत्स्येन्द्र पड़ा।

एक और जनश्रुति के अनुसार

समुद्र किनारे एक कामिक नाम का मछुवारा अपनी पत्नी के साथ रहता था। उनके यहाँ कोई सन्तान नहीं थी। इसी कारण दोनों पति-पत्नी दुखी रहते थे। कामिक की पत्नी सदैव अपनी पति से कहती थी कि आप मछलियों को प्रतिदिन पकड़कर लाते हैं। ये मछलियां जब पानी से बाहर आकर तड़प-तड़प कर मर जाती हैं तो ये ही हमें शाप देती है। इन्हीं के शाप के कारण हमारे यहाँ सन्तान उत्पन्न नहीं होती। कामिक ने अपनी पत्नी को बहुत समझाया कि मछली पकड़ना तो हम मछुवारों का धन्धा है। अगर हम मछली नहीं पकड़ेगे तो हमारा गुजर-बसर कैसे होगा ? हम खायेंगे क्या?

एक दिन कामिक पत्नी के दुख से अत्यंत दुखी होकर समुद्र किनारे मछली पकड़ने गया। उसी दिन उसको एक बहुत बड़ी मछली दिखाई दी। उसने मन में सोचा यदि आज मुझे यह बड़ी मछली मिल जाये तो कितना अच्छा हो। वह यह सोच ही रहा था की उसे ''अलख-निरन्जन'' का स्वर सुनाई दिया। उसने इधर-उधर देखा लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। कामिक ने भगवान का नाम लेकर अपना जाल समुद्र में फेंका। उसी समय एक विशालकाय मछली उसके जाल में फँस गई। यह देखकर कामिक अत्यंत प्रसन्न हुआ। वह मन ही मन

सोचने लगा कि आज तो बहुत पैसे मिलेंगे।

उसी समय वहाँ नारद जी प्रकट हो गये। कामिक यह देखकर हैरान रह गया। उस मछली के पेट से एक अत्यंत दिव्य व तेजस्वी बालक प्रकट हो गया। प्रकट होते ही वह दिव्य बालक ''अलख निरन्जन-अलख निरन्जन'' का बारम्बार जाप कर रहा था। नारद ने विष्णु अवतार कविनारायण जी को जो कि शिशु रूप में मछली के मुँह से प्रकट हुए थे प्रणाम किया, और कामिक को कहा कि यह बालक कोई साधारण बालक नहीं है यह तो आगे चलकर महान सिद्ध योगी बनेगा। तुम बड़े यत्न से इसका पालन पोषण करना। और इसका नाम 'मत्स्येन्द्र' रखना।

सन्तान न होने की वजह से कामिक की पत्नी बहुत उदास रहती थी। उस दिन कामिक जब वापस घर आया तो उसकी गोद में सुन्दर तेजस्वी शिशु को देखकर उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही। उसने अपने पति से कहा कि- भगवान को कोटि-कोटि प्रणाम और धन्यवाद है कि उन्होंने कृपा करके हम संतानविहीनों की मनोकामना पूर्ण की है। यह कहकर कामिक की पत्नी ने बालक को छाती से चिपका लिया। बालक के छाती से चिपकाते ही उसके स्तनों से दूध की धारा बहने लगी। उन्होंने बालक का नाम मत्स्येन्द्र रखा।

इसी तरह धीरे-धीरे समय बीतने लगा। बालक मत्स्येन्द्र बड़ा होने लगा। मत्स्येन्द्र बड़ा ही ज्ञानवान था। पिता के मछली पकड़ने के कार्य से उसे बड़ी घृणा होती थी। मछलियों को

तड़पते हुए देखकर उसके हृदय में दया आ जाती थी।

एक दिन मत्स्येन्द्र भी पिता के साथ समुद्र तट पर गया। कामिक ने उसे तट पर ही बैठा दिया, और स्वयं पानी में घुस गया। तट पर टोकरी में रखी हुई मछलियों को जब मत्स्येन्द्र ने देखा तो वह तड़प रही थी। तो उसे बड़ी दया आई और पूरी की पूरी टोकरी की मछलियों को वापस पानी में डाल दिया। इस पर कामिक क्रोधित हुआ। यह देखकर मत्स्येन्द्र ने सोचा यह तो मानेगा नहीं, और मुझसे मछलियों की तड़प देखी नहीं जाती। यह विचार मन में आते ही बालक मत्स्येन्द्र वहाँ से चल दिया।

बद्रिकाश्रम में मत्स्येन्द्र की कठिन तपस्या

गर्भ में प्राप्त दिव्य ज्ञान के उच्च संस्कारों से मत्स्येन्द्र ''अलख निरंजन-अलख निरंजन'' का जाप करता हुआ बद्रिकाश्रम में जा पहुँचा। वहाँ पर मुक्ति दायिनी, पतित पावनी गंगा के तट पर बैठकर उन्होंने तपस्या करनी आरम्भ कर दी।

तपस्या के आरम्भ में तो मत्स्येन्द्र कुछ दिनों तक केवल कन्दमूल फल आदि का सेवन करते रहे, किन्तु बाद में सब कुछ छोड़कर, निर्जल तप करते हुए वायु का भक्षण करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार से मत्स्येन्द्र का शरीर तप करते-करते अस्थि-पञ्जर मात्र रह गया।

शंकर भगवान ने जब बालक का यह उग्र तप देख तो

उनका हृदय द्रवित हो उठा और वह बद्रिकाश्रम जा पहुँचे।

जिस स्थान पर बालक मत्स्येन्द्र तप कर रहा था वहाँ पर देवाधिदेव महादेव शंकर मत्स्येन्द्र के सम्मुख प्रकट हो गये। और मत्स्येन्द्र से उनकी इतनी उग्र तपस्या का कारण पूछा।

मत्स्येन्द्र ने उत्तर देने से पहले पूछा- हे महापुरुष! आप कौन हैं ? और यहाँ किसलिए पधारे हैं ?

आदिनाथ भगवान शंकर ने कहा- हे वत्स! मैं आदिनाथ शंकर हूँ। और तुम्हारी इस कठोर तपस्या से अति प्रसन्न हूँ इसलिए तुम्हें वरदान देने आया हूँ। तुम्हारी जो भी इच्छा हो तदनुसार वर माँग लो।

यह सुनकर मत्स्येन्द्र की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उन्होंने आदिनाथ भगवान शंकर को साष्टांग प्रणाम किया। तत्पश्चात्- मत्स्येन्द्र ने भगवान शंकर को कहा- ''हे भगवन! यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं, तो मुझे यह वरदान दीजिये कि- आप ही मेरे शिष्य के रूप में स्वयं प्रकट होवें।

आदिनाथ महादेव शंकर ने मत्स्येन्द्र के मस्तक पर अपना हाथ रखा और ''तथास्तु'' कहा। भगवान के हाथ का स्पर्श पाते ही मत्स्येन्द्र का शरीर हृष्ट-पुष्ट हो गया। मत्स्येन्द्र को सारा जगत शिवमय दिखायी देने लगा।

नाथ पंथ में दीक्षित

आदिनाथ भगवान शिव ने मत्स्येन्द्र को नाथ पंथ की दीक्षा दी। इस प्रकार से वह नाथ पंथ में आदि गुरु भगवान शंकर के शिष्य हुए। भगवान आदिनाथ से दीक्षित होने के पश्चात् उनका नाम मत्स्येन्द्र से ''मत्स्येन्द्रनाथ'' हुआ।

नाथ पंथ में दीक्षित करने के पश्चात् भगवान शंकर ने मत्स्येन्द्रनाथ को सम्पूर्ण विद्याओं में पारंगत बना दिया। सब विद्याओं में प्रवीण होने के पश्चात् मत्स्येन्द्रनाथ ने आदि गुरु भगवान शंकर को साष्टांग दण्डवत प्रणाम किया। भगवान शंकर ने मत्स्येन्द्रनाथ को वरदान दिया, कहा कि वत्स। तुम मेरे आशीर्वाद से इस संसार में अक्षय कीर्ति प्राप्त करोगे।

नाथ सम्प्रदाय का उदय

निर्गुण निराकार आदिनाथ जी की सगुण रूप शिव रूप में अनन्त लीलायें हैं। उन्हीं लीलाओं को शिव की योगमाया लीला कहते हैं। ध्यान, तपस्या, सृष्टि उत्पत्ति, शक्ति उत्पत्ति, नाथ सिद्ध अवतार, सती संग विवाह, पार्वती विवाह, गणेश उत्पत्ति, गणेश विवाह, कार्तिक विरह, असुरों को वरदान देना तथा उनका संहार करना बारह ज्योर्तिलिंग रूपों में अनेक स्थानों पर प्रकट होना आदि न जाने कितनी ही लीलायें रचीं। श्री भगवान आदिनाथ जी की विशेष लीला तो नवनाथों की अर्थात् नाथ सम्प्रदाय की उत्पत्ति कर, योग द्वारा माया रहित मोक्ष को जाना, अनंत योग अनंत ज्ञान का उन्होंने निर्माण

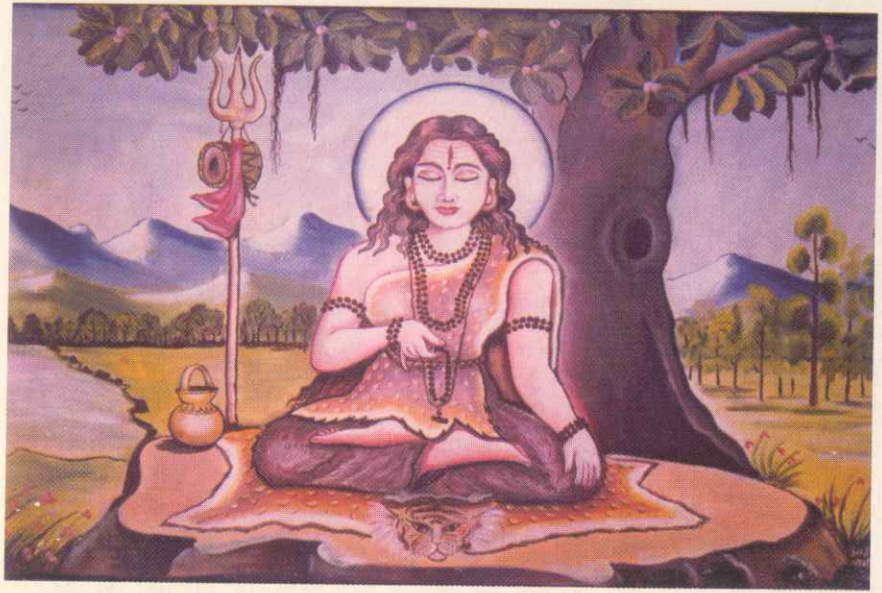

माता पार्वती अवतार सिद्ध योगी उदय नाथ जी

किया। आदिनाथ भगवान ने जब शेष झील किनारे माता पार्वती को अमरत्व प्रदान करने का उपदेश दिया, तो उन्होंने पार्वती माता को ही प्रथमतः शिष्य रूप में नाथ बनाया। वहीं से नाथ सिद्धों की गुरू शिष्य परम्परा प्रारम्भ हुई। आगे चलकर माँ पार्वती उदयनाथ रूप में प्रकट हुई। इस प्रकार आदिनाथ जी ने नाथ सम्प्रदाय का श्री गणेश किया।

श्री उदयनाथ जी सूक्ष्मरूपी पराशक्ति इस चराचर सृष्टि में विद्यमान है । स्थूल रूप में कैलाश मान-सरोवर पर निवास करती है। त्र्यम्बक महांकुम्भ पर्व पर नवनाथ चौरासी सिद्धों को दया, क्षमा, शान्ति, आशीर्वाद आदि उपदेश दिये। उन्होंने योग शक्ति से अपने चरणों में पाताल, पेट (गर्भ) में मृत्यु लोक, वक्षस्थल में स्वर्ग तथा शीश में अखंड ब्रह्माण्ड का दर्शन कराया था। सृष्टि उत्पति, शक्ति पराशक्ति रूप में कैसे हुई ? एवं योग में शक्ति का महत्व आदि पर उन्होंने उपदेश दिया।

उदयनाथ जी (पार्वती) ने अलवर जोधावास क्षेत्र के घने जंगलों में साठ हजार वर्ष तक घोर तपस्या की। स्वयं पराशक्ति होने के कारण सभी सिद्धियाँ उनकी दासी थी। एक बार भर्तृहरिनाथ जी तपस्या में लीन थे, उस समय उनको स्वयं दर्शन देने गई थी। गंगा माता ने भी उनके दर्शन किये थे। उन्होंने समय-समय पर नाथ सिद्धों को उपदेश एवं मार्ग दर्शन किया।

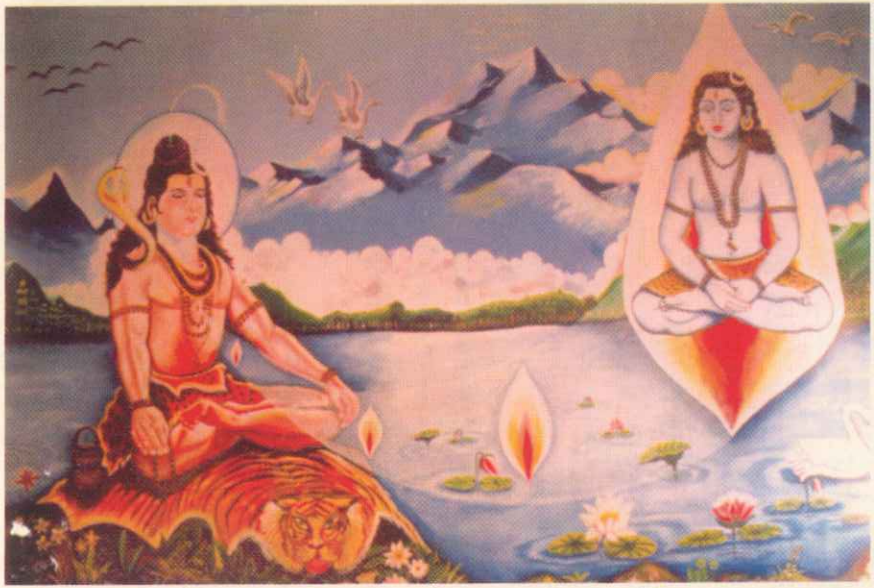

ज्योति स्वरूप गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज

श्री गोरक्षनाथ जी का अवतार धारण करना

नाथ योग ग्रन्थों के अनुसार नव-नाथों के नाम इस प्रकार से हैं-

1. आदिनाथ - ओंकार स्वरूप बोलिए।
2. उदयनाथ - पार्वती धरती स्वरूप बोलिए।
3. सत्यनाथ - ब्रह्माजी जल स्वरूप बोलिए।
4. सन्तोषनाथ - विष्णुजी खड्ग खाण्डा तेज स्वरूप बोलिए।
5. अचल अचम्बेनाथ - आकाश (शेष) स्वरूप बोलिए।
6. गजबेली-गज कन्थड़नाथ - गणेश जी गज हस्ती स्वरूप बोलिए।
7. ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ - अठारह भार वनस्पति स्वरूप बोलिए।
8. माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी - माया स्वरूप बोलिए।
9. गुरू गोरक्षनाथ जी - घट पिण्डे नव निरन्तरे रक्षा करन्ते श्री शंभु जती बाल स्वरूप बोलिए।

श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी के प्रमुख शिष्य श्री गोरक्षनाथ जी थे। जिनके रूप में स्वयं देवाधिदेव महादेव भगवान शंकर ने अवतार लिया था।

सब भक्तों ने श्री गुरुजी से यह इच्छा बताई, कि गुरुजी आप हमें यह बतलाने की कृपा करें कि भगवान शंकर ने साक्षात-रूप बदलकर श्री गोरक्षनाथ जी के रूप में स्वयं को क्यों प्रकट किया।

श्री गुरुजी ने बताया - यह बहुत प्राचीन समय की बात है। एक बार भगवान शंकर और माता पार्वती में सम्वाद छिड़ गया। माता पार्वती ने अहंवश होकर गर्व के साथ श्री आदिनाथ भगवान शंकर जी से कहा-

हे देवाधिदेव! जहाँ आप हैं, वहाँ मैं भी हूँ, आपसे मैं जुदा नहीं हूँ। क्योंकि बिना माया के सभी देवता यहाँ तक कि, ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी कुछ करने में असमर्थ हैं। सभी को सदैव शक्ति की आवश्यकता रहती है। महादेवी पार्वती आदिनाथ भगवान शिव से कहने लगी।

आप हो ब्रह्म मैं हूँ माया, रच दियो संसारो।
वस्तु बहुत रची अनमोली, नर-नारी भोग भोगारो।।
आप हो शंभु मैं हूँ शक्ति, हम दोनों हैं एक सारो।
आधा अंग पुरूष को कहिये, आधा नारि निहारो।।
तुम हो विष्णु, मैं हूँ लक्ष्मी, चलतो जगत बिहारो।
बिन लक्ष्मी के जीवन विरथा, कैसे होय गुजारो।।
आप हो ब्रह्मा मैं हूँ सावित्री, हृदय अन्दर धारो।
चाँदनाथ कहे गौरा बोली, भक्तों भरमता टारो।।

भावार्थ -

हे नाथ। यदि आप ब्रह्म हैं तो मैं सदा माया रूप में आप के संग विराजित होकर जगत की रचना करती हूँ। यदि आप शिव हैं, तो मैं शक्ति रूपा हूँ। इस प्रकार से हम दोनों में कोई अंतर नहीं, क्योंकि हे प्रभु मैं आपकी अर्द्धांग्नि हूँ। यदि आप

विष्णु रूप में संसार का लालन पालन करते हैं, तो मैं लक्ष्मी रूप में रहकर आपकी सहायता करती हूँ। यदि आप ब्रह्म रूप है, तो मैं सावित्री रूप में रहकर आपकी सृष्टि को ज्ञान का प्रकाश देती हूँ। इसलिए आपका कोई भी कार्य मेरे बिना संभव नहीं। हम दोनों की सम्मिलित शक्ति से सारे कार्य हो रहे हैं।

भगवान शंकर ने कहा- हे महादेवीः-
यत्र-यत्र तू है रहती, तत्र-तत्र मुझ वास।
यत्र वास मम तव नहीं, निश्चय कर विश्वास।।
सकल वस्तु रहती जहाँ, तहँ-तहँ रहे आकाश।
पर आकाश भर पहुँच की, वस्तु न राखे आश।।

भावार्थ -

जहाँ-जहाँ तुम रहती हो, वहाँ-वहाँ मैं तुम्हारे साथ रहता हूँ। परन्तु जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ तुम नहीं। जैसे संसार की सभी वस्तुयें जहाँ-जहाँ हैं, वहाँ-वहाँ आकाश अवश्य है। बिना आकाश के काई भी वस्तु स्थित नहीं हो सकती। किन्तु यदि वे सब वस्तुयें आकाश की थाह लगाने की कोशिश करें, तो वह बन्ध्या स्त्री के सामान असम्भव ही है। इसी तरह हे देवी! जहाँ तुम हो, वहाँ मैं भी हूँ, अतः तुम मेरी थाह नहीं लगा सकती। तुम मेरा जो स्वरूप देख रही हो, उससे भिन्न मेरा एक और रूप है, जो गोरक्ष नाम से प्रसिद्ध है। वह है-

''स्वयं ज्योतिः स्वरूपो योड़शन्याधारो निरंजनः।।
समुद्भूतो दक्षिणस्यां दिशि गोरक्ष संज्ञकः।।

भावार्थ :-

जो स्वयं ज्योति स्वरूप, मेघमालायें जिसका आधार बनी तथा जो निरंजन हैं। जो दक्षिण दिशा में गोरक्ष नाम से विख्यात हुये।

हे शिवे! यदि तुम्हें मेरे उस रूप को देखने की अभिलाषा हो, तो परीक्षा रूप में जाकर देख लो। इतना कहकर देवाधिदेव महादेव समाधिस्थ हो गये।

पार्वती जी अहंकार वश महाभयंकर रूप धारण कर वहाँ पर पहुँची जहाँ गोरक्षनाथ जी तपस्या कर रहे थे। गोरक्षनाथ जी की तपस्या भंग करने के लिए नाना प्रकार की माया दिखलाकर उनके मन को डगमगाना चाहा, किंतु गोरक्षनाथ जी पर उनकी माया का कोई वश नहीं चला अंत में गोरक्षनाथ जी ने स्वयं समाधि तोड़ दी, और कहने लगे कि हे देवी! योगियों को माया से छलना अत्यन्त कठिन है। तुम यहाँ से चली जाओ, श्री भगवान शंकर आपकी प्रतीक्षा कर रहें हैं।

परीक्षा में पराजित हुई पार्वती चिन्तित मन से भगवान शंकर के पास पहुँची, और बोली-हे नाथ! इस संसार में ऐसा कौन है, जिस पर मेरी माया का कोई भी वश नहीं चल सका। हे प्रभु! अब तक तो ऐसा कोई भी मौका नहीं आया, जिसमें मैं पराजित हुई हूँ। परन्तु आज मैं पराजित हो गई। हे दयानिधान् कृपा करके मुझे बताइये कि इसमें क्या भेद है ?

श्री शंकर भगवान ने कहा- हे महादेवी ! वह दूसरा कोई नहीं मैं ही गोरक्षनाथ के रूप में समाधिस्थ था। तुम्हें अपने ऊपर जो गर्व हो गया था, उसी को नष्ट करने के लिए मुझे यह लीला करनी पड़ी, हे देवी! यह बात सदैव याद रखो कि योगियों पर किसी कामिनी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। योगी तो मायातीत होते हैं। अब तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि शिव के सामने शक्ति सीमित है। यह सुनकर पार्वती जी अत्यन्त लज्जित हुई और कहने लगी कि हे स्वामी! हे प्रभु! आपकी माया अपरम्पार है, आपकी महिमा अनन्त है, अपार है। वास्तव में उसकी थाह लगाना असम्भव है।

एक जनश्रुति के अनुसार-एक बार मत्स्येनद्रनाथ जी भ्रमण करते-करते गोदावरी नदी के तट पर स्थित ''चन्द्रगिरि''नामक ग्राम में जा पहुँचे। वहाँ ''वशिष्ठ गोत्रीय'' सुराज नामक एक ब्राह्मण निवास करते थे। उनकी धर्मपत्नी का नाम ''सरस्वती'' था। उन्होंने ब्राह्मण दम्पति के द्वार पर जाकर भिक्षार्थ अलख जगाई। यह सुनते ही दोनों श्रद्धा से द्वार पर आये, और तुरंत ही उनके श्री-चरणों में नतमस्तक होकर प्रणाम किया और उनको पवित्र आसन दिया। ब्राह्मणी ने उसी समय भोजन तैयार किया और बड़ी श्रद्धा से उन्हें भोजन कराया। उन दोनों की सेवा से मत्स्येन्द्रनाथ जी अत्यंत प्रसन्न हुए और कहने लगे- मैं तुम दोनों की सेवा से अति प्रसन्न हूँ। तुम्हारी जो भी इच्छा हो वही वरदान माँग लो। ब्राह्मणी ने करबद्ध हो मत्स्येन्द्रनाथ जी से प्रार्थना की और कहा- हे

गुरुदेव!

सन्तति बिना हम दुःखी हैं, करे कृपा महाराज।
''पुत्रवान'' बन सुखी हो, भाग्य उजागर आज।।

हे महात्मा जी! भगवान का दिया हुआ हमारे पास सब कुछ है, किन्तु सन्तान के अभाव में हम बहुत दुःखी हैं। यदि आप हमें कुछ देना ही चाहते हैं, तो मुझे पुत्रवती होने का वरदान दीजिए। ब्राह्मणी की इस प्रकार की प्रार्थना सुनकर गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

दे विभूति गुरुजी कह वाणी। धारे कृपा करे शिव-दानी।।
मन नहिं करूँ, सकल्प-विकल्पा। पुत्र लाभ होई, दिन अल्पा।।

इस प्रकार से गुरूदेव ने अपनी झोली से विभूति निकालकर ब्राह्मणी को दे दी, और कहने लगे इस विभूति को ग्रहण करने से भगवान शंकर की कृपा से तुम्हें अवश्य ही अल्प समय में पुत्र-रत्न की प्राप्ति होगी। इस प्रकार से ब्राह्मणी को पुत्र-प्राप्ति का वरदान देकर श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी ने आगे यात्रा को प्रस्थान किया।

ब्राह्मणी बहुत भोली थी उसने गुरूजी की दी हुई विभूति का वर्णन अन्य लोगों के सामने किया सब लोगों ने व उसकी सखियों ने कहा- यह तो कभी हो ही नहीं सकता। विभूति के खाने से आज तक किसी के औलाद हुई है क्या ? इतना कहकर सब लोग हँसने लगे। इस प्रकार से विभूति पर विश्वास न करके ब्राह्मणी ने विभूति को गोबर के ढेर में फेंक दिया।

ऐसे ही दिन बीतने लगे, बारह वर्ष के पश्चात् गुरूजी को अपना दिया हुआ वरदान याद आया। श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी फिर से चन्द्रगिरि ग्राम में पहुँचे। वहाँ जाकर, ब्राह्मण के घर अलख जगाई। ब्राह्मणी भिक्षा देने हेतु बाहर आई तो श्री मत्स्येन्द्रनाथ ने ब्राह्मणी से पूछा- हे माई! अब तक तो तुम्हारा पुत्र बड़ा हो गया होगा। मुझे अपने पुत्र के दर्शन करा दीजिए। यह सुनकर ब्राह्मणी अत्यंत लज्जित हुई और गुरूजी के श्री चरणों में गिरकर फूट-फूट कर रोने लगी। ब्राह्मणी ने सारी घटना गुरूजी को कह सुनाई, कि लोगों की बातों में आकर मैंने आपकी दी हुई विभूति को ग्रहण नहीं किया। उसे मैंने उसी समय गोबर के ढेर में फेंक दिया था। श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी ने ब्राह्मणी से कहा- माई! आपने उस विभूति को जहाँ फेंका, मुझे उसी स्थान पर ले चलो। ब्राह्मणी मत्स्येन्द्रनाथ जी को उसी स्थान पर ले गई। वहाँ पहुँचकर मत्स्येन्द्रनाथ जी ने ''अलख-निरंजन'' शब्द की तीन बार आवाज लगाई। गोबर के ढेर के अन्दर से तीनों बार आवाज आई, आदेश गुरूजी! आदेश गुरूजी! आदेश गुरूजी! यह देखकर वहाँ पर उपस्थित सब लोग आश्चर्यचकित रह गये। गोबर के ढेर से फिर आवाज आई गुरूजी मैं पैदा तो हो गया हूँ, किन्तु बाहर कैसे आऊँ। गुरूजी ने उसी समय गोबर का ढेर हटाया तो उसमें से एक बहुत सुन्दर दिव्य तेजस्वी बालक बाहर निकला। बालक की उम्र बारह वर्ष की थी। क्योंकि गुरूजी ने बारह-वर्ष पहले ही ब्राह्मणी को विभूति दी थी। दिव्य एवं तेजस्वी बालक को देखते ही सबके सब उपस्थित लोग ठगे से खड़े रह गये। बाद में

सबने सिद्ध योगी मस्त्येन्द्रनाथ जी की जय जयकार की। ब्राह्मणी ने श्री मत्स्येन्द्रनाथ योगी से बहुत अनुनय विनय की, कि हे गुरूदव! आप यह बालक मुझे ही दे दीजिये।

सिद्ध योगी श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी ने कहा- माई! मैंने तो यह पुत्र तुम्हें ही दिया था, लेकिन तूने तो इसे अस्वीकार कर विभूति को गोबर में फेंक दिया था। शायद तुम्हारे भाग्य में पुत्र-सुख है ही नहीं।

उसी समय मत्स्येन्द्रनाथ जी दिव्य बालक को लेकर आगे यात्रा के लिए निकल पड़े।

गोबर से उत्पन्न होने के कारण ही दिव्य तेजस्वी बालक का नाम ''गोरख'' पड़ा। बालक गोरख सब कुछ छोड़कर वैरागी बन ''वन'' में योग साधना करने लगे।

वन में ही ''दर्शन'' मिला, गुरू मत्स्येन्द्रनाथ।
नामकरण नूतन किया, प्यारा गोरखनाथ।।
जन्म-कर्म अति दिव्य हैं, उत्पत्ति नहीं रजवीर्य।
स्वयं शम्भु प्रकट हुए, गोरख यति गम्भीर्य।।

इस प्रकार से वन में ही एक दिन गोरख को श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी ने ''दर्शन'' कुण्डल देकर गुरू दीक्षा दी। गुरू दीक्षा के पश्चात् गोरख को गुरू मत्स्येन्द्रनाथ जी ने नया नामकरण संस्कार किया। गोरखनाथ जी को ये नाम इनके गुरू श्री मत्स्येन्द्रनाथ जी ने ही दिया था। श्री गोरखनाथ जी की उत्पत्ति रजवीर्य रहित है। उनके कर्म दिव्य है, उनका जन्म

दिव्य है। गोरखनाथ जी के रूप में स्वयं देवाधिदेव महादेव ने अवतार लिया था।

गुरू गोरक्षनाथ जी की राजा भर्तृहरि से भेंट

गुरू गोरक्षनाथ जी अनेकों तीर्थों की यात्रा करते हुए गिरनार पर्वत पर जा पहुँचे और कुछ ही समय के पश्चात् वे अवन्तिका नगरी पहुँचे। वहाँ के राजा भर्तृहरि अपनी पत्नी पिंगला की मृत्यु हो जाने के कारण अत्यंत दुःखी थे। वह बिना कुछ खाये-पीये हर समय ''पिंगला-पिंगला'' चिल्लाते रहते थे।

वहाँ पर पहुँचने के पश्चात् गुरू गोरक्षनाथ जी ने देखा कि राजा भर्तृहरि तो श्मशान में बैठा हुआ है। उसी समय गोरक्षनाथ जी ने राजा भर्तृहरि को ज्ञानोपदेश देने के लिए एक युक्ति सोच निकाली। वे कुम्हार के घर गये और एक मिट्टी का घड़ा ले आये। जिस स्थान पर राजा भर्तृहरि जी बैठे हुए थे, वहाँ से थोड़ी दूर जाकर उन्होंने उस घड़े को अपने हाथ से पृथ्वी पर पटक दिया। घड़ा गिरते ही टूट गया। उस टूटे हुए घड़े के टूकड़े एकत्र करके, गोरक्षनाथ जी वहीं बैठकर ''हाय घड़ा, हाय घड़ा'' कह-कहकर विलाप करने लगे। और बहुत उच्च तथा करूण स्वर में रोना शुरू कर दिया। यह सब देखकर राजा भर्तृहरि अपना सारा दुःख भूलकर गोरखनाथ जी के पास जाकर कहने लगे- ''हे भाई! तुम इस तरह रो-रोकर क्यों विलाप कर रहे हो। गोरक्षनाथ जी ने उत्तर दिया- ''मेरा घड़ा टूट गया है, मैं उसी के लिए रो रहा हूँ।

यह सुनकर भर्तृहरि ने कहा- तुम योगी होकर एक सामान्य से मिट्टी के घड़े के लिए इतना शौक कर रहे हो। इस घड़े का मूल्य ही कितना है।

गोरक्षनाथ जी ने कहा- ''हे राजन्''! अपनी प्रिय वस्तु के वियोग का दुःख सभी को होता है। जिस प्रकार से तुम अपनी मिट्टी की बनी पत्नी के लिए रो रहे हो, उसी प्रकार से मैं भी अपने मिट्टी के घड़े के लिए रो रहा हूँ।

यह सुनकर भर्तृहरि ने कहा- ''तुम अपने मिट्टी के घड़े से मेरी रानी पिंगला की तुलना कैसे कर सकते हो ? तुम्हारा मिट्टी का घड़ा तो तुम्हें दुबारा भी मिल सकता है। परन्तु पिंगला जैसी पिंगला तो मुझे दुबारा नहीं मिल सकती''।

गोरक्षनाथ जी ने कहा- ''हे राजा''! तुम्हारी पिंगला जैसी पिंगला तो मैं क्षणभर में बना सकता हूं। परन्तु मेरा मिट्टी का वैसा ही घड़ा तो दूसरा नहीं मिल सकता।

यह सुनकर राजा भर्तृहरि ने योगी की परीक्षा लेने के उद्देश्य से कहा- ''हे योगी! व्यर्थ के विवाद में पड़ने से तो कोई लाभ है नहीं, तुम मेरी पिंगला उत्पन्न करके दिखलाओ, मैं तुम्हारे घड़े को बना करके मँगवा दूँगा गोरक्षनाथ जी ने कहा- ''यदि मैं तुम्हारी रानी पिंगला को उत्पन्न कर दूँ, तो तुम मुझे क्या दोगे ?

भर्तृहरि ने कहा- मैं आपको अपना आधा राज्य दे दूँगा। गोरखनाथ जी ने बात स्वीकार कर ली। अपनी योग शक्ति के

द्वारा उसी समय गोरखनाथ जी ने लाखों पिंगलाओं को उत्पन्न कर दिया। यह चमत्कार देखकर भर्तृहरि जी आश्चर्य चकित रह गये। सब पिंगलाओं ने राजा भर्तृहरि से वार्तालाप किया। भर्तृहरि जी ने भी उनसे अनेक प्रश्न किये। पिंगलाओं ने सब प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दिया।

तत्पश्चात् कुछ पिंगलाओं ने राजा भर्तृहरि को समझाते हुए कहा- ''राजन''! आपको हमारे वियोग का जो दुःख है, वह तो ठीक है। परन्तु मनुष्य जीवन शाश्वत नहीं है, यह जन्म-मरण के अधीन बना रहता है। अतः किसी भी आत्मीय की मृत्यु के दुःख का भार वहन करना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

''हे राजन''! हमें तो किसी न किसी दिन मरना ही था। आप अपनी माया-मोह त्यागकर अपने जीवन को सँभालने का प्रयत्न कीजिए। योगी गोरखनाथ जी अत्यंत सामर्थ्यवान हैं। आप इनकी शरण में जाइये। ये आपको चौरासी लाख योनियों के आवागमन के चक्कर से मुक्त कर देंगे।

यह सुनकर राजा भर्तृहरि का अज्ञान रूपी अन्धकार इस प्रकार से नष्ट हो गया जैसे अचानक ही सूर्योदय हो गया हो। राजा का मोह-माया नष्ट होकर ज्ञान रूपी सूर्य की ज्योति प्रकाशित हो गई। भर्तृहरि जी ने आगे बढ़कर गोरक्षनाथ जी के चरण पकड़ लिए।

गोरक्षनाथ जी ने राजा भर्तृहरि जी को उठाकर अपने हृदय से लगा लिया। और आशीर्वाद देकर कहा- ''हे राजन''!

अब तुम मुझे अपनी अभिलाषा बताओ, कि तुम अपनी रानी पिंगला के साथ रहकर राज्य का सुख भोगना चाहते हो, अथवा वैराग्य वृत्ति लेकर अपना जीवन सफल बनाना चाहते हो।

राजा भर्तृहरि ने गोरक्षनाथ जी से कहा- ''हे सिद्ध योगी''! हे निर्गुण स्वरूप! हे अलख निरंजन! मैं बारह वर्ष तक इस श्मशान में बैठा-बैठा पिंगला-पिंगला रटता रहा, किन्तु मुझे पिंगला दिखाई भी नहीं दी। हे ओंकार स्वरूप प्रभु! आपने यहाँ आते ही अपनी योग शक्ति से लाखों पिंगलाओं को प्रकट कर दिया। हे भगवन ! अब मुझे योग की महिमा का ज्ञान हो गया है। अब मेरे मन में पिंगला अथवा राज्य भोग की तनिक भी अभिलाषा नहीं है।

जग से मन उकता गया, सोते से गया जाग।
राज्य त्याग करके हुआ, आज मुझे वैराग।।
गुरूदेव! शरण आपकी आ गया, राखो मेरी लाज।
अब खाली नहीं जाऊँगा, पूर्ण कीजे काज।।
पूर्ण काज मेरे तन में भस्म लगाओं गुरू।
मैं आवागमन में फँसा रहा, मुझे अपने हाथ बचाओ गुरू।।
मत द्वार से मुझे बिसारो गुरू, मेरी मोह-माया मिटाओं गुरू।
हे गोरक्षनाथ अविनाशी, काट दो यम की फाँसी।।
करो न दिल से दूर प्रभु जी, मेरी मिटा दो सारी उदासी।।

हे कमण्डलधारी! आप मुझे शीघ्र ही अपने साथ ले चलिये। मैं आपसे योग मार्ग की दीक्षा लेना चाहता हूँ। हे सिद्ध योगी आप मुझ पर कृपा करके इन सब पिंगलाओं को अब अदृश्य कर दीजिए।

गुरू गोरक्षनाथ जी द्वारा दरिद्र ब्राह्मण को समृद्धि दान।

एक दिन गुरू गोरक्षनाथ जी ने अपने शिष्य पवननाथ को गाँव से दूध माँग लाने के लिए कहा। गुरू आज्ञानुसार शिष्य पवननाथ गावँ में पहुँचा, तो वहाँ के दुष्ट लोगों ने उसे एक अत्यंत दरिद्र ब्राह्मण के घर की ओर संकेत करते हुए बताया कि इस घर में बहुत सी गायें है। इस घर में रहने वाला ब्राह्मण सब साधु-संतों को खूब दूध पिलाता है। अतः हे साधु महाराज आप उसी के पास जाकर जितना चाहे उतना ही दूध ले आइये।

पवननाथ जी उन दुष्ट लोगों के मजाक को समझ नहीं सके। वह उन लोगों के कहे अनुसार दरिद्र ब्राह्मण के घर दूध माँगने के लिए जा पहुँचे। वह ब्राह्मण इतना गरीब था कि, उसके घर में केवल एक ही फटी-पुरानी धोती थी। जब ब्राह्मणी कुँए से जल भरने जाती थी तो वह उस धोती को पहनकर जाती थी। उस समय ब्राह्मण घर में नंगा बैठा रहता था। जब ब्राह्मण गाँव से भिक्षा लेने जाता तो ब्राह्मणी घर में नंगी बैठी रहती थी।

ऐसे दरिद्र ब्राह्मण के घर जाकर जब पवननाथ जी ने ''अलख'' शब्द का उच्चारण किया, तो दोनों पति-पत्नी अत्यंत लज्जित हुये पवननाथ जी ने जब उनके घर की स्थिति देखी तो देखते ही उनकी महा-दरिद्रता का अनुमान लगा लिया।

उन्होंने समझ लिया कि दुष्ट लोगों ने इस ब्राह्मण को लज्जित करने के लिए ही मुझे इस घर से भिक्षा माँगने के लिए भेजा है।

पवननाथ जी तुरन्त वहाँ से लौट पड़े। तत्पश्चात् वह किसी अन्य स्थान से दूध लेकर गुरूजी के पास पहुँचे। गाँव के दुष्ट लोगों ने दरिद्र ब्राह्मण को लज्जित करने के लिए उनके साथ जो उपहास किया था, वह पूरी घटना गुरूजी को कह सुनाई।

इस प्रकार से सारे वृतान्त को सुनकर गुरू गोरक्षनाथ जी को उस दरिद्र ब्राह्मण पर बड़ी दया आई। उन्होंने उसी समय थोड़ी सी अभिमंत्रित भस्म दी और कहा- ''पवननाथ तुम जाकर यह भस्म उस ब्राह्मण के घर डालकर आ जाओ। प्रभु कृपा से वह रातभर में ही इस गाँव का सबसे धनी व्यक्ति बन जायेगा। तब कल मैं स्वयं ही उस ब्राह्मण के घर जाकर दूध पीऊँगा।

पवननाथ तुरन्त ही जा कर उस अभिमंत्रित भस्म को उस ब्राह्मण के घर डालकर आ गया। भस्म के प्रताप से उस ब्राह्मण का घर उसी समय धन-धान्य से परिपूर्ण हो गया। ब्राह्मण को पता ही नहीं चला कि कहाँ से उसके घर के सामने सैकड़ों गायें आकर खड़ी हो गई। रातभर में ही उसका घर राज-भवनों को मात करने लगा।

गाँव के सभी लोग इस चमत्कारिक दृश्य को देखकर आश्चर्यचकित रह गये। जिन दुष्टों ने उस ब्राह्मण की दरिद्रता की हँसी उड़ाई थी, वे सब मन ही मन अत्यंत लज्जित हुए।

अगले ही दिन गोरक्षनाथ जी अपने शिष्यों को साथ लेकर उस ब्राह्मण के घर गये। ब्राह्मण ने सब योगियों को प्रणाम किया और आदर-सत्कार आदि करके गायों का दूध पिलाया। तदुपरान्त गोरक्षनाथ जी उस ब्राह्मण को अक्षय-सुख का आशीर्वाद देकर वहाँ से लौट गये।

गुरू गोरक्षनाथ जी द्वारा मक्का में चमत्कार प्रदर्शन

गुरू गोरक्षनाथ जी नेपाल यात्रा से चलकर तिब्बत, चीन, आदि देशों की दुर्गम यात्रा करते हुए, राह में अनेक पर्वत तथा नदियाँ पार करते हुए, हवा की लहरों में चलते हुए, उन्हें यह ज्ञान भी नहीं हुआ कि वह इतने दुर्गम रास्ते पर चल रहे है। अपितु उन्हें तो यह लग रहा था जैसे वह किसी मखमली चादर पर चल रहें हो। और चलते-चलते वह मक्का में पहुँच गये। एक दिन गोरक्षनाथ जी के मन में विचार आया, की मक्का निवासियों को योग-मार्ग की ओर आकर्षित करने के लिए उन्हें एक चमत्कार दिखाना चाहिए। वह मस्जिद के मुख्य द्वार में अपने पाँव करके लेट गये।

मस्जिद में आने वाले लोगों ने इसका विरोध किया। उनमें से एक व्यक्ति ने उनके दोनों पांव पकड़ कर उन्हें मस्जिद के विरूद्ध दिशा में कर दिया। उस समय वहाँ पर उपस्थित लोगों को यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ, कि गोरक्षनाथ जी के पाँव जिस विरूद्ध दिशा में कर दिये थे,

मस्जिद का द्वार भी अपने आप घूमकर ठीक उसी दिशा में हो गया।

इस अद्‌भुत दृश्य को देखकर लोगों ने गोरक्षनाथ जी के पाँवों को बार-बार हटाकर अलग-अलग दिशाओं में किया, परन्तु हर बार उनके साथ ही मस्जिद का द्वार भी घुमकर ठीक उसी दिशा में हो जाता, जिस दिशा में उनके पाँव होते थे।

अन्ततः सब लोगों ने यह अच्छी तरह समझ लिया कि मन्दिर के प्रवेश द्वार पर लेटा हुआ व्यक्ति कोई साधारण मनुष्य नहीं है। यह तो कोई फरिश्ता है। यह चमत्कार देखकर वहाँ पर उपस्थित सब लोग गोरक्षनाथ जी को करबद्ध होकर प्रार्थना करने लगे, और उनकी जय-जयकार करने लगे।

तत्पश्चात् गोरक्षनाथ जी ने वहाँ उपस्थित लोगों को योग की महिमा का वर्णन करते हुए उपदेश दिया। उपदेश सुनकर चार मुमुक्ष, लोगों ने गोरक्षनाथ से दीक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया। और कुछ ही समय के पश्चात् उन चारों ने श्री गोरक्षनाथ जी से दीक्षा ग्रहण की, और उनके शिष्य बन गये।

इस प्रकार से योग-चमत्कार दिखाकर गोरक्षनाथ जी वहाँ से आगे की यात्रा पर चल पड़े।

गुरू गोरक्षनाथ जी के आशीर्वाद से चौरंगी को हाथ-पाँव की प्राप्ति होना।

एक बार गुरू गोरक्षनाथ जी तपस्या के लिए तपोवन में ठहरे हुए थे। वन में उन्हें एक बहुत ही करूण स्वर सुनाई दिया। गोरक्षनाथ जी उसी स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ से वह स्वर सुनाई दे रहा था। सामने देखा, तो वहाँ पर एक कुआँ था। वह करूण-क्रदन स्वर उसी कुँए में से आ रहा था। गोरक्षनाथ जी ने कहा- कुँए में देव, दावन, मानव तथा योगियों में से कौन है। संत की अमृतमयी मधुर वाणी सुनकर कूप से आवाज आई कि- ''हे भगवन''! मैं विपत्ति का मारा हुआ एक बालक हूँ। बालक की मधुर वाणी सुनकर गोरक्षनाथ जी ने उस बालक को कूप से रस्सी के सहारे बाहर निकाला तत्पश्चात् उस बालक की विपत्ति का कारण पूछा।

बालक ने बताया- मैं स्यालकोट के चन्द्रवंशीय महाराज शालीवाहन का पुत्र हूँ। मेरी विमाता ने मुझसे अपनी वासना तृप्ति का अनुरोध किया। मैंने उनका अनुरोध नहीं माना। इससे नाराज होकर मेरी विमाता ने मुझ पर यह झूठा आरोप लगा दिया, कि मैंने उन पर कुदृष्टि डाली है। साथ ही यह भी आरोप लगाया, कि मैंने उनका शीलभंग करने की चेष्टा की है।

मेरे पिता राजा शालीवाहन ने मेरी छोटी विमाता की शिकायत सुनकर, और मेरे ऊपर क्रुद्ध होकर मेरे हाथ-पाँव कटवाकर, नगर के बाहर कुँऐं में फेंक दिया। इतना होने पर

भी मुझे मृत्यु नहीं आई, और मैं अपने कुछ पुण्य कर्मों के कारण बच गया। इस प्रकार से बालक अपनी दुःख भरी कहानी सुनाकर योगी के चरणों में गिरकर रोने लगा।

बालक की सम्पूर्ण करूण-कहानी सुनकर और उसकी मर्म-वेदना का कारण जानकर गुरू गोरक्षनाथ जी ने उसे आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद के पाते ही बालक के कटे-हुऐं हाथ-पाँव पूर्ण हो गये।

गुरू गोरक्षनाथ जी के आशीर्वाद से बालक कृष्ण के हाथ-पाँव पूर्ण हो गये और कालान्तर में पूर्णमल और चौरंगीनाथ के नाम से विख्यात हुये। गुरू गोरक्षनाथ जी ने उन्हें श्री नगर अमरनाथ गुफा में दीक्षा दी और वहीं पर उन्हें सब शक्तियों, मंत्र एवं वेदों का ज्ञान दिया । गुरू आज्ञानुसार एक बार वह अपने माता-पिता के पास पहुँचे। और अपनी माता इन्सरावती को दर्शन देकर आत्म-विभोर किया। अपने पुत्र को देखते ही माता की आँखों में पुनः बुझी हुई ज्योति लौट आई. और पिता ने अपनी गलती का अहसास किया, तथा अपने पुत्र को अपनी छाती से लगा लिया।

वह कुँआ आज भी पाकिस्तान में विद्यमान है। जिसमें चौरंगी के हाथ-पाँव काटकर फेंका गया था। इतना ही नहीं उस कुँए को गुरू गोरक्षनाथ जी का यह वरदान भी है, कि जो भी संतान विहीन स्त्री उस कुँए का जल पीयेगी उसको अवश्य ही संतान की प्राप्ति होगी। साथ ही यह भी वरदान दिया कि उस कुँए के पास कोई भी अनुष्ठान या पूजा-पाठ करने से अति

अल्प समय में ही सिद्धि प्राप्त हो जायेगी। चौरंगी नाथ का नाम कृष्ण था। हाथ पाँव पूर्ण होने पर पूर्णमल एवं चौरंगीनाथ हुये ।

पूर्ण भक्त का नाथ पंथ में दीक्षित होना

पूर्ण भक्त बाद में ''नाथ सम्प्रदाय'' में दीक्षित होकर तप साधना और योग के प्रभाव से महासिद्ध ''चौरंगीनाथ'' हुए। सिद्ध योगी चौरंगीनाथ ने ''हठ-योग'' साधना करके महाकाल के कालदंड को भी खंडित कर दिया। इस प्रकार से सिद्ध योगी चौरंगीनाथ जी सदा के लिए अजर-अमर हो गये।

मठ अस्थल बोहर योगाश्रम ही उनकी पावन-पवित्र तपस्थली रहा है। सिद्ध चौरंगीनाथ जी ने इसी योगाश्रम में हठयोग साधना की थी। मठ में वह गुफा आज भी गुप्त रूप से विद्यमान हैं जहाँ सिद्ध योगी जी ने तपस्या की थी । विक्रम सम्वत् १५१ से लेकर २७० तक आपने यहाँ निवास किया था। इसके बाद आप भ्रमण पर चले गये ।

सिद्ध चौरंगीनाथ जी के काल में यह मठ अतीव समृद्ध था इस मठ से सिद्धों की चौरासी पालकियाँ धर्म प्रचार के लिए चलती थी। सिद्ध चौरंगीनाथ जी के द्वारा स्थापित यह ''अस्थल बोहर'' का वर्तमान मठ बड़ी ''दरगाह'' श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर'' अथवा हिन्दू धर्म के महान ''धार्मिकतीर्थ'' के रूप में प्रसिद्ध है।

गुरू गोरक्षनाथ जी का व्यक्तित्व और महिमा
आचार्य रजनीश और सुमित्रा नंदन पंत सम्वाद

महाकवि सुमित्रानंदन पंत ने एक बार आचार्य रजनीश से पूछा- कि भारत के धर्म आकाश में वे कौन से बारह लोग हैं। मेरी दृष्टि में जो सबसे चमकते हुए सितारे हैं।

आचार्य रजनीश ने बताया - कृष्ण, पतञ्जलि, बुद्ध, महावीर, नागार्जुन, शंकर, गोरख, कबीर, नानक, मीरा, रामकृष्ण, कृष्णमूर्ति।

सुमित्रानंदन पंत ने आँखे बंद कर लीं, और वे सोच में पड़ गये। सूची बनानी आसान भी नहीं है। क्योंकि भारत का आकाश नक्षत्रों से भरा हुआ है। किसे गिनो, किसे छोड़ों सुमित्रानंदन पंत बड़े ही प्यारे व्यक्ति थे। अति कोमल, अति माधुर्य पूर्ण वृद्धावस्था तक भी उनके चेहरे पर वैसी ताजगी बनी रही, जैसी बनी रहनी चाहिए! ते सुन्दर से सुन्दरतम होते गये।

सुमित्रानंदन पंत ने फिर आचार्य जी से पूछा-तो फिर आप ऐसा कीजिये, सात नाम मुझे दीजिये।..... आचार्य जी ने उन्हें सात नाम दिये। कृष्ण पतञ्जलि, बुद्ध महावीर, शंकर, गोरख, कबीर।

सुमित्रानंदन पंत ने कहा- आचार्य जी आपने पाँच नाम किस आधार पर छोड़े हैं। आचार्य जी ने कहा- नागार्जुन बुद्ध में समाहित हैं। जो बुद्ध में बीज रूप था। उसी को नागार्जुन ने

प्रकट किया है। बुद्ध तो गंगोत्री है और नागार्जुन गंगा के रास्ते पर आये हुए एक तीर्थ स्थल है। तीर्थ स्थल को छोड़ा जा सकता है, पर गंगोत्री नहीं छोड़ी जा सकती। ऐसे ही कृष्णमूर्ति भी बुद्ध में समा जाते हैं। बुद्ध का जो परम सूत्र था - ''अप्प दीपो भव'' कृष्ण मूर्ति बस उसकी ही व्याख्या है। अपने दीपक स्वयं बनो। यह बुद्ध का अन्तिम वचन था। इस पृथ्वी पर शरीर छोड़ने से पहले यह उन्होंने सार सूत्र कहा था। राम कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं। मीरा, नानक कबीर में लीन हो जाते हैं। इस तरह ये सात की सूची बनी।

सुमित्रानंदन पंत की उत्सुकता और अधिक बढ़ गई। कहने लगे- अगर पांच की सूची बनानी पड़े। आचार्य जी ने कहा-ये मेरे लिए कठिन होता जायेगा। फिर भी पाँच की सूची बनाई- कृष्ण, पतजंलि, बुद्ध, महावीर, गोरख।..... क्योंकि कबीर को गोरख में लीन किया जा सकता है। शंकर तो कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं। वे कृष्ण के ही एक अंग की व्याख्या है। कृष्ण के ही एक अग का दर्शानेक विवेचन है।

तब तो वे बोले, बस एक बार और.....अगर चार ही नाम रखने हो तो, आचार्य जी ने उन्हें चार नाम की सूची दी- कृष्ण, पतजंलि, बुद्ध, गोरख।..... क्योंकि महावीर बुद्ध से बहुत भिन्न नहीं है। जरा सा ही भेद है। वह भी अभिव्यक्ति का ही भेद है। वे कहने लगे, बस एक बार और..... आप तीन ही व्यक्ति चुनें। आचार्य जी ने कहा-अब असंभव है। जैसे चार दिशायें हैं, ऐसे ही ये चार व्यक्तित्व हैं। जैसे काल और क्षेत्र

चार आयाम हैं ऐसी ही ये चार आयाम है। जैसे परमात्मा की हमने चार भुजायें सोची हैं, ऐसी ही ये चार भुजायें हैं। अब इनमें से कुछ छोड़ना तो हाथ काटने जैसा होगा। यह मैं न कर सकूँगा। अभी तक तो मैं आपकी बात मानता रहा, संख्या कम करता चला गया। अभी तक जो अलग करना पड़ा, वह वस्त्र था, अब अंग काटने पड़ेगें। अंग भंग मैं न कर सकूँगां ऐसी हिंसा आप मुझसे न करवायें।

मनुष्य के भीतर की खोज के लिए गोरखनाथ जी ने जितना अविष्कार किया, उतना शायद किसी ने भी नहीं किया है। उन्होंने इतनी विधियाँ दी हैं, कि अगर विधियों के हिसाब से सोचा जाये, तो गोरखनाथ जी सबसे बड़े अविष्कारक हैं। इतने द्वार तोड़े मनुष्य के अन्तराल में जाने के लिए, इतने तोड़े, कि लोग उन द्वारों में उलझ गये। गोरख को तो लोग भूल गये हैं, लेकिन एक शब्द चल पड़ा ''गोरखधन्धा''। उन्होंने इतनी विधियाँ दी हैं, कि लोग उनमें उलझ गये हैं। सोचते हैं कौन सी विधि ठीक हैं, और कौन सी गलत, कौन सी करें कौन सी छोड़ें।

अब कोई किसी चीज में, या किसी काम में उलझा हो तो उसे यही कहते हैं कि क्या गौरख धन्धे में उलझे हो।

गोरखनाथ जी के पास अपूर्व व्यक्तित्व था। आज हम बुनियाद के एक पत्थर की बात शुरू करते हैं। जिस पर पूरा भवन खड़ा है, भारत के संत-साहित्य का। गोरखनाथ जी ने सब कह दिया है, जो धीरे-धीरे बड़ा रंगीन हो जायेगा, बड़ा सुन्दर

हो जायेगा। जिसका लोग सदियों तक ध्यान करेंगे। जिसके द्वारा न जाने कितने सिद्ध पुरूष पैदा होंगे।

आचार्य रजनीश कहते हैं -जो शुद्ध है, नीचा है, उसका अलिंगन छोड़कर माया, लोभ और मोह का धीरे-धीरे त्याग कर देना चाहिये। इसी का नाम सन्यास है। ऐसे व्यक्ति के पाँव स्वयं विष्णु दबाने चले आते हैं। हिम्मत के वचन हैं- इसलिए गोरखनाथ जी को मैं नहीं छोड़ सकता। चार में मुझे गोरख की गिनती करनी ही पड़ेगी।

मरो हो जोगी मरो, तिस मरणी मरो, जिस मरणी गोरख मरि दीठा।..... प्रेम में मरना होता है, प्रेम मृत्यु है, जो मरता है, वही पाता है शाश्वत को, अमृत को। बड़ी मिठास है, इस मृत्यु में। ध्यान में जो मर जाये, इससे ज्यादा अमृत पूर्ण उसके लिए कोई अनुभव है ही नहीं। उस मृत्यु में मरकर ही पता चलता है, कि जो मरा है, वह मैं था ही नहीं। जो बच गया है, मरने के बाद भी वही मैं हूँ। गोरक्षनाथ जी कहते हैं-

मैंने मरकर देखा उसे, तुम भी मर जाओ, मिट जाओ, सीख लो मरने की कला। मिटोगे तो पा सकोगे। जो मिटता है वही पाता है।

गोरखनाथ जी कहते हैं -जिस मृत्यु से गुजरकर मैं जागा, मेरी सोने की मृत्यु हुई है, मेरी नहीं। अहंकार मरा है,, मैं नहीं। द्वैत मरा है, मैं नहीं। द्वैत मरा तो अद्वैत का जन्म हुआ। समय मरा तो शाश्वतता मिली।

एक बूँद समुद्र से मिलने चली, पर मिलते-मिलते उदास हो गई.....

मेरा तो शायद वजूद ही खो जायेगा। समुद्र ने हँसकर कहा.. .....मैं तुम्हारी जैसी ही अनेक बूँदें से मिलकर बना हूँ।

जो सीमित जीवन था, टूटा तो बूँद सागर हो गया। हाँ, निश्चित ही जब बूँद सागर में गिरती है, तो एक अर्थ में मर ही जाती है। बूँद की तरह मर जाती है, और एक अर्थ में पहली बार महाजीवन की उसे उपलब्धि होती है। सागर की भाँति जीती है..... सिद्ध बनो, इससे कम कुछ भी न हों इससे कम का कोई मूल्य नहीं है। मरने की कला सीखो। मरो हे जोगी मरो। बूँद की तरह मरो तो सागर की तरह हो जाओ। मृत्यु की कला ही महाजीवन को पाने की कला है।

गुरू-भक्ति की परीक्षा

चन्द्रगिरि ग्रान से योगी मत्स्येन्द्रनाथ जी अपने प्रिय शिष्य को साथ लेकर तीर्थाटन के लिए निकल पड़े। यात्रा में गुरू शिष्य दोनों ने जगन्नाथ पूरी जाने का विचार बनाया। चलते-चलते योगी मत्स्येन्द्रनाथ जी ने कनकगिरी नामक ग्राम में विश्राम करने का निश्चय किया और वहीं पर उनके मन में शिष्य गोरक्षनाथ की गुरू भक्ति की परीक्षा लेने का विचार उनके मन में आया गुरू-शिष्य दोनों गाँव के बाहर एक स्थान पर ठहर गये। उन्होंने गोरखनाथ से कहा-''शिष्य गोरक्षनाथ''! मुझे तो इस समय बहुत तेज भूख सता रही है, तुम गाँव में

जाकर भिक्षा माँग लाओ।

गुरू आज्ञा से शिष्य गोरक्षनाथ गाँव से भिक्षा माँगने के लिए चल पड़े। गाँव में जाकर उन्होंने एक ब्राह्मण के घर भिक्षा के लिए अलख जगाया। ब्राह्मण के घर में उस दिन श्राद्ध था, इसलिए उसने ब्रह्म भोज का आयोजन कर रखा था। जब ब्राह्मणी ने देखा कि द्वार पर किसी योगी ने अलख जगाया है, तो वह देखकर अति प्रसन्न हुई। ब्राह्मणी ने बहुत से व्यंजन भिक्षा में गोरक्षनाथ जी को दे दिये।

गोरक्षनाथ जी भिक्षा लेकर गुरू के पास पहुँचे। मत्स्येन्द्रनाथ जी ने बड़े प्यार से भोजन किया। तत्पश्चात् उन्होंने भोजन की प्रशंसा करते हुए गोरखनाथ जी से कहा- ''हे पुत्र गोरखनाथ''! तुम भिक्षा में अत्यंत स्वादिष्ट भोजन लेकर आये हो। इसमें जो दही-बड़े थे, वो तो बहुत ही रूचिकर थे। दही-बड़े खाकर कुछ इच्छा की तृप्ति नहीं हुई। ''हे पुत्र''! यदि तुम एक-दो दही-बड़ा और माँग कर ला सको, तो मुझे सन्तोष प्राप्त हो जायेगा।

गुरू की बात सुनकर गोरखनाथ जी दुबारा उसी ब्राह्मणी के घर भिक्षा माँगने के लिए जा पहुँचे, और ''अलख'' शब्द का उच्चारण किया।

योगी को पुनः आया देखकर ब्राह्मणी को अत्यंत क्रोध आया। वह योगी को अत्यंत तिरस्कार भरे स्वर में कहने लगी। ''हे योगी''! अभी कुछ ही देर पहले तुम यहाँ से भिक्षा लेकर गये थे। मैंने तुम्हे पर्याप्त मात्रा में भोजन दिया था, फिर भी तुम

दुबारा भिक्षा माँगने के लिए आ गये हो।

यह सुनकर गोरखनाथ जी ने कहा- ''हे माता''! आपने जो भोजन सामग्री मुझे दी थी, उसे खाकर मेरे गुरूदेव अति प्रसन्न हुए, और इसीलिए उन्होंने मुझे आपके पास एक-दो दही-बड़ा और ले आने के लिए भेजा है। हे माता! यदि आप मुझे एक दो दही बड़ा ओर दे दे तो आपकी अति कृपा होगी।

ब्राह्मणी बोली- मुझे तुम योगी नहीं लोभी लग रहे हो' बार-बार माँग कर खाने से तुम्हें जरा भी लज्जा नहीं आती।

गोरखनाथ जी ने हाथ जोड़कर कहा- हे माता! मैं अपने लिए नहीं माँग रहा, अपने गुरू के लिए माँग रहा हूँ। आप कृपा करके मुझे एक-दो दही-बड़ा ओर दे दीजिए। बदले में जो चाहें, वह मुझसे माँग लीजिये। मैं आपकी माँग को हर हाल में पूरी करूंगा।

योगी की बात सुनकर ब्राह्मणी और अधिक क्रोधित हो गई और कहने लगी- ''स्वयं तो भीख माँगते हो और दूसरों की इच्छा पूरी करते हो। हे योगी। अब कान खोलकर मेरी बात सुन लो, मेरे पास एक दही-बड़ा है। वह मैं तुम्हें तब दूँगी, जब तुम उसके बदले में मुझे अपनी एक आँख निकालकर दो।''

जैसे ही गोरखनाथ जी ने ये शब्द सुने, उसी समय गोरखनाथ ने अपनी आँख निकालकर बाहर खींच ली। गोरखनाथ जी ने ब्राह्मणी को बड़ी विनम्रता-पूर्वक कहा- हे माता! ये लो। मैंने तुम्हारी माँग पूरी कर दी। अब तुम एक दही बड़ा ले आओ।

गोरखनाथ जी की आँख से रक्त की धार बह रही थी। परन्तु वे निर्विकार भाव से अपने स्थान पर खड़े हुए थे। यह दृश्य देखकर ब्राह्मणी डर से थर-थर कर काँपने लगीं डर से उसकी घिग्गी बँध गई। वह दौड़ी-दौड़ी घर के भीतर गई और दही-बड़ा लाकर गोरखनाथ जी को दे दिया। वह उल्टे पाँव घर के भीतर गई और दरवाजा बंद करके अन्दर से ही बोली- हे योगी! मुझे क्षमा कर देना।

गोरक्षनाथ जी ने कहा- माई! इस आँख को तो ले जाओ। योगी जी कहते ही रहे किन्तु ब्राह्मणी ने अँदर से दरवाजा ही नहीं खोला।

एक हाथ में दही बड़ा और दूसरे हाथ में अपनी आँख लिए हुए गोरखनाथ जी अपने गुरू के पास पहुँचे। गुरू को आँख के विषय में कुछ पता न चले, इसलिए उन्होंने अपनी आँख पर पट्टी बाँध ली।

शिष्य गोरखनाथ की आँख पर पट्टी बँधी हुई देखकर मत्स्येन्द्रनाथ जी ने प्रश्न किया- ''बेटा गोरख! तुम्हारी आँख में क्या हो गया है?''

गोरखनाथ जी ने कहा - ''गुरूदेव! कोई खास बात नहीं है।''

मत्स्येन्द्रनाथ जी ने कहा - ''गोरख तुम साफ-साफ क्यों नहीं बताते हो?'' यह सुनकर गोरखनाथ जी ने शुरू से अन्त तक की सब घटना सत्य कह सुनाई।

गुरूदेव ने जब सारी घटना सुनी तो वह अत्यन्त हर्षित हुए। उन्होंने शिष्य गोरक्ष को हृदय से लगा लिया। इस प्रकार

मत्स्येन्द्रनाथ जी को पूरा विश्वास हो गया कि मेरा यह शिष्य मेरे लिए अपने प्राणों तक की बाजी लगा सकता है।

तत्पश्चात् सिद्ध योगी मत्स्येन्द्रनाथ जी मन्त्र पढ़कर गोरखनाथ जी की आँख को यथास्थान पर लगा दिया। आँख पहले की तरह ही हो गई और कष्ट भी दूर हो गया।

योगी मत्स्येन्द्रनाथ जी ने अपने शिष्य गोरक्षनाथ जी को अनेक आशीर्वाद दिये और कहा- ''हे पुत्र! संसार में तुम्हारा यश मुझसे भी अधिक प्रकाशित होगा। तुम नाथ पंथ के गुरू माने जाओगे तुम्हारे द्वारा इस वसुन्धरा पर धर्म का प्रचार होगा। हे पुत्र! गुरू भक्ति की परीक्षा लेने के लिए ही तुम्हें दुबारा दही-बड़ा लाने के लिए भेजा था उस परीक्षा में तुम सफलता-पूर्वक उतीर्ण हुए हो।''

कुछ समय गुरू शिष्य उसी स्थान पर रहे। मत्स्येन्द्रनाथ जी ने अपने शिष्य को वहीं पर और भी अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान कीं।

गुरू गोरक्षनाथ के आशीर्वाद से बाछल रानी को पुत्र की प्राप्ति

भारत वर्ष देवी देवताओं और ऋषि मुनियों की पावन भूमि है। जब-जब भी भक्तों पर कष्ट आया, तो उनके कष्टों के निवारण के लिए भगवान ने अवतार लिया है। राजस्थान में भी ऐसे ही अपने भक्तों के कष्टों को दूर करने के लिए गोगा पीर ने अवतार लिया।

बागड़ में गजरेड़ा एक सुन्दर गाँव है। उस समय वह एक बड़ा राज्य था वहाँ के राजा जेवर थे। उनकी रानी का नाम बाछल था वह पतिव्रता होने के साथ-साथ बहुत रूपवती व गुणवती थी। राजा-रानी को सदैव एक ही दुःख सताता रहता था, कि उनके यहाँ कोई संतान नहीं थी।

रानी बाछल बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थी। वह प्रतिदिन पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन करने के पश्चात् दीन दुःखियों की सेवा करती थी। कुल का दीपक न होने के कारण अत्यंत चिंताग्रस्त रहती थी, उसकी गोद सूनी थी ममता सदैव संतान के लिए नीर बहाती रहती थी। सब उसे ताने मारते थे, बाँझ कहते थे। उससे यह दुःख सहन नहीं होता था।

एक दिन महल के द्वार पर एक योगी ने अलख जगाई। योगी ने रानी बाछल से भिक्षा लेकर कहा माई! तुम्हारा लाल जीता रहे, जगत में सदैव तुम्हारा यश फैला रहे।

रानी आँखों में आँसू भरकर कहने लगी- हे महाराज! मेरे कोई संतान नहीं है, मेरी गोद सूनी है। संतान बिना मैं बहुत दुःखी हूँ। इतना कहकर वह योगी के चरण पकड़कर गिड़-गिड़ाने लगी। कहने लगी- हे योगी! आप भगवान स्वरूप हैं, मेरा कष्ट मिटाओ।

योगी कहने लगे- माई! धीरज रखो, मेरे पाँव छोड़ दो। यह तो भगवान की माया है। कहीं धूप है, तो कहीं छाया है। माई तुम ऐसा करो, तुम्हारे राज्य में हमारे गुरू गोरक्षनाथ जी

पधारें हैं। तुम उनकी शरण में जाओ। वह तुम्हारी इच्छा अवश्य पूर्ण करेंगे। यह सुनकर रानी अत्यंत प्रसन्न हुई और गुरूजी गोरक्षनाथ के पास जाने की तैयारी करने लगी।

रानी बाछल की बाँदी दौड़ी-दौड़ी आई और रानी से कहने लगी। हे रानी! आज तो चमत्कार ही हो गया। बाग में जो कुँआ सूखा हुआ पड़ा था वह जल से भर गया है, और हमारा बाग जो बारह वर्ष से सूखा पड़ा था वह भी हरा-भरा हो गया है। फल फूल और मेवों से सारे वृक्ष लदे हुए हैं। पेड़ों पर मोर, तोते और कोयल कूक रहे हैं। रत्ना माली की नेत्र ज्योति भी वापस लौट आई है। प्रसन्नता से बांदी फूली नहीं समा रही थी। वह रानी से बार-बार गुरू गोरक्षनाथ जी के पास जाने का आग्रह कर रही थी।

रानी उसकी बातें सुनकर अत्यंत प्रसन्न थी। वह मन ही मन विचार कर रही थी, कि अब मेरी भी खुशी की सुबह आ गई है। गुरू के आशीर्वाद से मुझे भी संतान प्राप्ति अवश्य होगी। रानी अपनी बाँदी के साथ भेंट-पूजा ले करके बाग की ओर चल पड़ी, जहाँ गुरू गोरक्षनाथ जी ने धूना लगा रखा था। बाग में पहुँचकर रानी ने देखा, चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी। सारा बाग फलों और फूलों की सुगन्ध से महक रहा था। रानी ने सोचा यह तो योगी रूप में भगवान ही है। चारों ओर संतों की जमात बैठी थी। गुरू गोरक्षनाथ जी नवनाथ चौरासी सिद्धों व अपने चौदह सौ शिष्यों के साथ तप रहे थे। भजन कीर्तन चल रहा था, सब के बीच में गोरक्षनाथ जी अपने आसन पर

विराजमान थे।

गुरूजी के पास पहुँचकर रानी बाछल ने उनके श्री-चरणों में प्रणाम किया, और कहने लगी कि हे करूणानिधान! आपके श्री-चरणों में ही मेरा सुखधाम है मेरी पीड़ा को दूर कीजिये। गुरू गोरक्षनाथ ने उससे पूछा-पुत्री! तुम्हें क्या कष्ट है। रानी ने आँखों में नीर भरकर कहा- गुरूदेव! मैं संतानविहीन हूँ। यह दुःख मुझसे सहन नहीं होता। गुरू गोरक्षनाथ जी ने रानी बाछल से सहज स्वभाव में कहा- पुत्री! हम तो रमते योगी हैं, हमारे वश में कुछ भी नहीं है, कि किसी की तकदीर बदल सके। रानी उनके चरण पकड़कर रोने लगी, वह बोली आप जगत के नाथ हैं आपके हाथ में सब कुछ है। हे करूणानिधान! मेरे ऊपर दया कीजिये। मुझे अपनी शरण में ले लीजिये। गुरूजी ने उसे समझाया-पुत्री! तुम महलों में रहने वाली हो। हम तो रमते योगी हैं, सुबह कहीं तो शाम कहीं होते हैं। हमारा कोई ठिकाना नहीं है।

रानी ने गुरूजी से प्रार्थना की और कहने लगी हे गुरूदेव! मेरा यह कलंक मिटा दीजिए सब मुझे बाँझ कहते हैं। हे नाथों के नाथ! मेरी पुकार सुन लीजिये। संत हृदय द्रवित हो उठा वह बोले-अच्छा अगर तुम नहीं मानती तो कुछ समय धीरज रखो, तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।

दिन बीतते गये, मास बीतते गये, देखते ही देखते बारह वर्ष व्यतीत हो गये। शुभ घड़ी आ गई, रानी बाछल अत्यंत

प्रसन्न थी। किंतु धोखे से बाछल से पहले काछल जाकर गुरू गोरक्षनाथ जी से फल ले आई। वह बाछल से पहले ही माँ बन गई। रानी बाछल गुरू गोरक्षनाथ जी के पास पहुँची, उनके श्री-चरणों में प्रणाम किया और कहने लगी- हे बाबा! हे जीवदात्रें! मेरा उद्धार कीजिए। इतना सुनते ही गुरूजी क्रोधित हो गये। बोले तू बड़ी बेईमान है, कुछ ही समय पहले तो तू दो पुत्रों का वरदान लेकर गई थी, तू बड़ी ही लालची नारी है। रानी रोकर कहने लगी- गुरूदेव! बेशक मुझे पुत्र वरदान मत दीजिये किन्तु मुझे बदनाम मत कीजिए। मैं तो अभी-अभी आई हूँ। आपका क्रोध देखकर मेरा हृदय टूट गया है। गुरू गोरक्षनाथ कुछ शाँत होकर बोले वह तुम नहीं थी तो कौन थी। किसने यह धोखा किया है। रानी ने गुरूजी को बताया कि वह मेरी छोटी बहन काछल थी। उसकी और मेरी शक्ल-सूरत बिल्कुल एक जैसी है। वह ही धोखा करके गई है। गुरूजी ने बाछल से कहा अब तुम ही बताओ कि तुम्हारी इच्छा कैसे पूर्ण करूँ। अब मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है। रानी कहने लगी- गुरूजी! अगर मैं खाली हाथ गई तो मेरा केवल अपमान ही होगा, किन्तु तुम्हारा बचन झूठा साबित हो जायेगा। उसकी बात सुनकर गुरूजी विचार करने लगे कि अगर इसकी सेवा का फल नहीं दिया तो मेरी ही हार होगी। विचार करने के पश्चात गुरूजी बोले-पुत्री निराश न हो। शिवजी पर विश्वास करके उनका ध्यान करो, तुम्हारी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। गुरू गोरक्षनाथ आदिनाथ शिव का ध्यान लगाकर समाधि में बैठ गये। वह समाधि में ही नागलोक पहुँच गये। वहां पहुँचकर पदमनाग की

रानी से भीख माँगने लगे। उन्होंने पद्मनाग की रानी से कहा कि- मुझे भिक्षा में एक बलिदान दे दो, जिससे कि मेरा शीश न झुके। उन्होंने कहा कि मैंने रानी बाछल को पुत्र का वरदान दिया है अगर ऐसा नहीं हुआ तो मेरा आशीर्वाद झूठा हो जायेगा। इसलिए हे नागलोक की रानी मुझे पद्मनाग के प्राणों को कुछ समय के लिए उधार दे दो। मैं कुछ ही समय बाद लौटा दूँगा।

पद्मनाग की रानी ने गुरू गोरक्षनाथ जी की प्रार्थना स्वीकार कर ली और अपने पति के प्राणों को गुरू गोरक्षनाथ जी को दे दिया। गोरक्षनाथ जी पद्मनाग के प्राणों की गुगल बनाकर वहाँ ले आये। वह गुगल गुरूजी ने रानी बाछल को दे दी और आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे बड़ा ही वीर पुत्र उत्पन्न होगा। सब लोग उसकी पूजा करेंगे। रानी ने उस गुगल के चार भाग किए। एक अपनी घोड़ी को, दो अपनी बाँदी को तथा एक भाग स्वयं लिया। बारह महीने पश्चात्-सुहानी घड़ी आई, रानी के पुत्र-रत्न उत्पन्न हुआ। महल में खुशियाँ छा गई। पुत्र पाकर राजा-रानी अत्यंत प्रसन्न हुए। भादों की नवमीं को इनका जन्म हुआ, नाम जाहरवीर रखा गया। जाहरवीर पद्मनाग के अवतार थे। इस प्रकार गोरक्षनाथ जी के आशीर्वाद से रानी बाछल को पुत्र प्राप्त हुआ। जो गोगा पीर के नाम में प्रसिद्ध हुआ ।

गुरू गोरक्षनाथ जी के १०८ नाम

ॐ शिव स्वरूपाय नमः, ॐ योग समूहाय नमः, ॐ सर्परूपधारिणे नमः, ॐ गोसेविने नमः, ॐ सिद्धिनाथाय नमः, ॐ महेश्वराय नमः, ॐ नाथानाम् नाथाय नमः, ॐ कमण्डलधारिणे नमः, ॐ त्रिशूलधारिणे नमः, ॐ मेघवर्णाय नमः, ॐ स्वर्गविहारिणे नमः, ॐ प्राणायामतत्पराय नमः, ॐ यज्ञपुरूषाय नमः, ॐ मनोवाशिने नमः ॐ मन्त्रनाथाय नमः, ॐ सर्वराध्याय नमः, ॐ धनदात्रे नमः, ॐ हृदयवासिने नमः, ॐ सुन्दररूप धारिणे नमः, ॐ परोपकारिणे नमः, ॐ मंगलकर्त्रे नमः, ॐ व्रतपरायणाय नमः, ॐ ब्रह्मतत्वाय नमः, ॐ त्रिलोचनाय नमः, ॐ गायत्रीरूपधारिणे नमः, ॐ दीप्तिमते नमः, ॐ गुरूप्रियाय नमः, ॐ ब्रह्मरूपाय नमः, ॐ ऋद्धयै नमः, ॐ सिद्धयै नमः, ॐ प्रकाशमते नमः, ॐ बुद्धिदात्रे नमः, ॐ पापनाशकाय नमः, ॐ जयाधाराय नमः, ॐ शंखस्वरूपाय नमः, ॐ आत्मज्ञानिने नमः, ॐ जीवरूपाय नमः, ॐ ओंकारस्वरूपाय नमः, ॐ शुभनाम्ने नमः, ॐ शून्याय नमः, ॐ अजन्मने नमः, ॐ जयरूपाय नमः, ॐ विजयाय नमः, ॐ निर्गुणाय नमः, ॐ डमरूधारिणे नमः, ॐ सर्वकामनायै नमः, ॐ अभयरूपाय नमः, ॐ दण्डरूपायै नमः, ॐ गिरनारपर्वतविराजमते नमः, ॐ दयाकारिणे नमः, ॐ सर्वप्रियाय नमः, ॐ सूर्यरूपाय नमः, धर्मसंस्थापकाय नमः, ॐ धैर्यवते नमः, ॐ बुद्धिमते नमः, ॐ सर्वदा प्रसन्नचिताय नमः, ॐ पवित्ररूपाय नमः, ॐ सिद्धांतकारिणे नमः, ॐ अनकारनाशिने

नमः,ॐ अन्धरूपधारिणे नमः, ॐ राग रहिताय नमः, ॐ वर्तमते नमः, ॐ जन्ममृत्युतारकाय नमः, ॐ गुणपात्राय नमः,ॐ विद्यापतये नमः, ॐ कलापूर्णाय नमः, ॐ महाभूति स्वरूपाय नमः, ॐ प्रलयकालेभयानकरूपधारिणे नमः, ॐ मातुः गर्भात अजन्मने नमः, ॐ सुखदात्रे नमः, ॐ ब्राह्मण प्रेमिने नमः, ॐ स्तुतियोग्य नमः, ॐ स्वयं वेदस्मरणीय नमः, ॐ त्रिगुणमयाय नमः, ॐ कर्मेणसुन्दराय नमः, ॐ प्राणमयाय नमः, ॐ सर्वकर्मफलदात्रे नमः, ॐ सर्वव्यापकाय नमः, ॐ अतिस्थूलाय नमः, ॐ भूलोकस्वरूपाय नमः, ॐ शरणागतपीड़ाहर्त्रे नमः, ॐ जीवदार्त्रे नमः, ॐ वसन्तस्वरूपाय नमः, ॐ व्रजस्वरूपाय नमः, ॐ गुरूप्रियाय नमः, ॐ महापराक्रमिणे नमः, ॐ रूद्राक्षमालाधारिणे नमः, ॐ सर्पभूषणधारिणे नमः, ॐ सर्वहितचिन्तकाय नमः, ॐ व्याघ्रचर्मधारिणे नमः, ॐ स्वर्णकेशधारिणे नमः, ॐ ब्रह्मचारिणे नमः, ॐ पुराण पुरूषाय नमः, ॐ अलखनिरंजनाय नमः, ॐ प्रकाशपुञ्जाय नमः, ॐ शान्तिशीलाय नमः, ॐ निर्णयकर्त्रे नमः, ॐ महातेजरूपाय नमः, ॐ पुष्करूपाय नमः, ॐ पुण्यात्मप्रेमिने नमः, ॐ शिवमंत्रधारिणे नमः, ॐ शिवयोगधारिणे नमः, ॐ शिवप्रियाय नमः, ॐ सम्पूर्णाय नमः, ॐ दिव्यस्वरूपाय नमः, ॐ महायशाः नमः, ॐ ज्ञानगम्यै नमः।

श्री गोरक्षनाथ चालीसा

दोहा -

गणपति गिरजा पुत्र को सिमरू बारम्बार।
हाथ जोड़ विनती करूँ शारद नाम आधार।।
जय जय जय गोरख अविनाशी, कृपा करो गुरू देव प्रकाशी।
जय जय जय गोरक्ष गुण ज्ञानी, इच्छा रूप योगी वरदानी।।
अलख निरंजन तुम्हारो नामा, सदा करो भक्तन हितकामा।
नाम तुम्हारा जो कोई गावे, जन्म-जन्म के दुःख नसावे।।
जो कोई गोरक्ष नाम सुनावे, भूत पिशाच निकट नहीं आवे।
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे, रूप तुम्हारा लख्या न जावे।।
निराकार हो तुम निर्वाणी, महिमा तुम्हारी वेद बखानी।
घट-घट के तुम अन्तर्यामी, सिद्ध चौरासी करे प्रणामी।।
भस्म अंग गले नाद विराजे, जटा शीश अति सुन्दर साजे।

तुम बिन देव और नहीं दूजा, देव मुनिजन करते पूजा।।
चिदानंद सन्तन हितकारी, मंगल करें अमंगल हारी।
पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी, गोरक्षनाथ सकल प्रकाशी।।
गोरक्ष-गोरक्ष जो कोई ध्यावे, ब्रह्म रूप के दर्शन पावे।
शंकर रूप धर डमरू बाजे, कानन कुंडल सुन्दर साजे।।
नित्यानंद है नाम तुम्हारा, असुर मार भक्तन रखवारा।
अतिविशाल है रूप तुम्हारा, सुरनर मुनिजन पावे न पारा।
दीन-बन्धु दीनन हितकारी, हरो पाप हम शरण तुम्हारी।
योग युक्ति में हो प्रकाश, सदा करो सन्तन तनवासा।

प्रातः काल ले नाम तुम्हारा, सिद्धि बढ़े अरू योग प्रचारा।
हठ-हठ-हठ गोरक्ष हठीले, मार-मार बैरी को कीले।
चल-चल-चल गोरक्ष अविनाशी, अपने जन की हरो चौरासी।
अचल अगम है गोरक्ष योगी, सिद्धि देवो हरो रस भोगी।
कांटो मार्ग यम तुल्य आई, तुम बिन मेरा कौन सहाई।
अजर-अमर है तुम्हारी देहा, तुम अविनाशी सनकादिक सब जोर ही नेहा।
कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा।
योगी लखे तुम्हारी माया, पार ब्रह्म से ध्यान लगाया।
ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे, अष्ट-सिद्धि नव- निधि घर आवे।
शिव गोरक्ष है नाम तुम्हारा, पापी दुष्ट अधम को तारा।
अगम-अगोचर निर्भय नाथा, सदा रहो सन्तन के साथा।
शंकर रूप अवतार तुम्हारा, गोपीचन्द भर्तृहरि को तारा।
सुन लीजे गुरू अरज हमारी, कृपा सिन्धु योगी ब्रह्मचारी।
पूर्ण आस दास की कीजे, सेवक जान ज्ञान को दीजे।
पतित पावन अधम अधारा, तिनके हेतु तुम लेत अवतारा।
अलख निरंजन नाम तुम्हारा, अगम पंथ जिन योग प्रचारा।
जय-जय जय गोरक्ष भगवाना, सदा करो भक्तन कल्याणा।
जय-जय जय गोरक्ष अविनाशी सेवा करें सिद्ध चौरासी।
जो यह पढ़े गोरक्ष चालीसा, होय सिद्ध साक्षी जगदीशा।
बारह पाठ पढ़े नित्य जोई, मनोकामना पूर्ण होई।
और श्रद्धा से रोट चढ़ावे, हाथ जोड़कर ध्यान लगावे।
सुने सुनावे प्रेमवश, पूजे अपने हाथ।
मन इच्छा सब कामना, पूरे गोरक्षनाथ।
अगम अगोचर नाथ तुम, परब्रह्म अवतार।

कानन कुंडल सिर जटा, अंग विभूति अपार।
सिद्ध पुरूष योगेश्वरों दो मुझको उपदेश।
हर समय सेवा करूँ, सुबह-शाम आदेश।
इति गोरक्ष चालीसा सम्पूर्ण भया।

आरती श्री गोरक्ष नाथ जी की

ॐ जय गोरक्ष हरे, स्वामी जय गोरक्ष हरे।
अष्ट-सिद्धि, नवनिधि, सब दुःख दूर करे।।
ॐ जय गोरक्ष हरे, स्वामी जय गोरक्ष हरे।
सिद्ध पुरूष योगेश्वर, दो मुझको उपदेश।।
नित उठ करती सेवा, सुबह-शाम आदेश।
ॐ जय गोरक्ष हरे, स्वामी जय गोरक्ष हरे।।
कानन-कुंडल केशा, जटा विभूति अपार।
अगम पंथ तुम योगी, परब्रह्म अवतार।।
ॐ जय गोरक्ष हरे, स्वामी जय गोरक्ष हरे।
प्रेम के वश में गोरक्ष, पूर्ण आस करो।।
सेवक जान के भगवन पूर्ण काज करो।
ॐ जय गोरक्ष हरे, स्वामी जय गोरक्ष हरे।।
अष्ट-सिद्धि नव निधि, सब दुःख दूर करें।
ॐ जय गोरक्ष हरे, स्वामी जय गोरक्ष हरे।।

योगाश्रम मठ अस्थल बोहर में सिद्ध योगी श्री चौरंगीनाथ जी के चमत्कार प्रदर्शन

योगी श्री मस्त्येन्द्रनाथ जी के शिष्य, सिद्ध चौरंगीनाथ जी जिन्होंने अपने परम-पवित्र श्री चरणों से इस भूमि को पवित्र बना दिया, कहते हैं- सिद्ध योगियों के चरण-कमल जहाँ भी पड़ते हैं, उसी जगह मनोवांच्छित फल देने वाले तीर्थ स्वयं ही बन जाते हैं। एक समय सिद्ध चौरंगीनाथ जी योगाश्रम मठ अस्थल बोहर में तपस्यारत थे। एक बनजारा अपने खाँड के बोरे लादकर यहाँ आ पहुँचा। उस समय यहाँ बहुत सघन वन था। बनजारे ने जंगल में एक विशाल तालाब देखा। विश्राम के लिए वह तालाब के किनारे ठहर गया। बनजारे का सेवक सिद्ध चौरंगीनाथ जी से धूने की अग्नि लेने के लिए गया। वार्तालाप के दौरान में श्री सिद्ध चौरंगीनाथ जी ने बनजारे के सेवक से पूछा कि बोरों में क्या भरा हुआ हैं बनजारे के सेवक ने मन में सोचा, यदि मैंने योगी को सच बता दिया कि बोरों में खाँड भरी हुई है तो योगी कहीं खाँड न माँग बैठे। इस झँझट से बचने के लिए उसने झूठ ही कह दिया, कि बोरों में नमक भरा हुआ है।

सिद्ध चौरंगीनाथ तो पहुँचे हुए योगी थे। वे एकदम से समझ गये, कि बनजारे का सेवका झूठ बोल रहा है। उन्होंने उसी समय अपने योग बल से सारे खाँड के बोरे नमक में परिवर्तित कर दिये। अगले दिन बनजारा अपना माल लेकर समीप के ही नगर में गया। जैसे ही उसने अपना माल देखा,

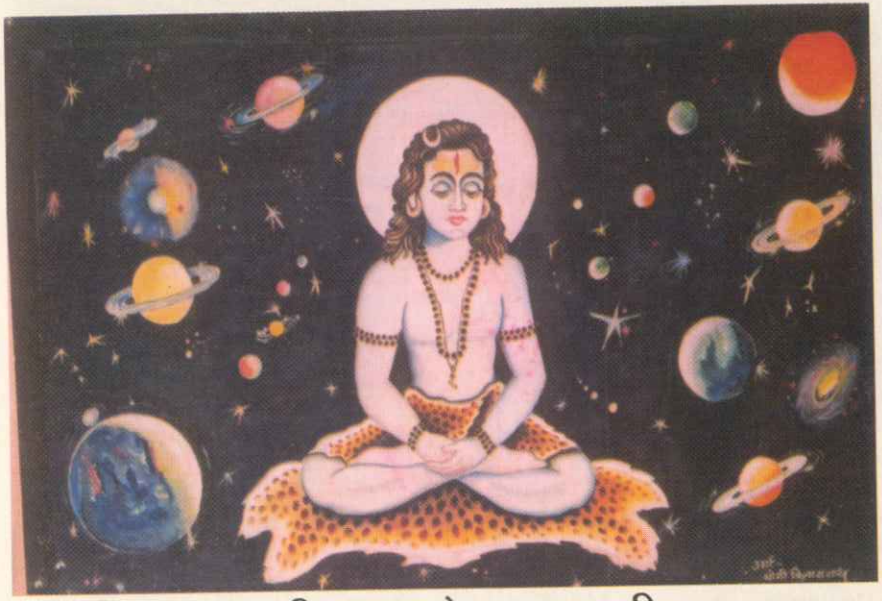

श्री शम्भू जती गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज

तो वह दंग रह गया। उसने देखा कि सभी बोरों में खाँड की जगह नमक भरा हुआ है। बनजारें ने अपने सेवक से पूछा- कि ये सब कैसे हुआ ? सेवक ने बताया कि जब योगी से वह अग्नि लेने गया था, तो योगी ने मुझसे पूछा था, कि बोरों में क्या भरा हुआ है? मैंने उस योगी से कहा कि इनमें तो नमक भरा हुआ है। ऐसा लगता है, उस योगी के कोप से ही खाँड के स्थान पर नमक हो गया है। बनजारा उसी समय सिद्ध योगी श्री चौरंगीनाथ जी के पास पहुँचा, और उनके श्री-चरणों में गिरकर फूट-फूट कर रोने लगा, और बारम्बार अपने सेवक द्वारा असत्य बोलने की क्षमा-याचना करने लगा। बनजारे की इस प्रकार क्षमा-याचना से सिद्ध चौरंगीनाथ जी ने कहा- हे बनजारे! अब तुम जाओ, और अपने बोरों को देखो, जैसे ही तुम अपने बोरों को खोलोगे तो तुम्हे नमक के स्थान पर फिर से खाँड ही प्राप्त होगी। और वह भी बहुत लाभ से बिकेगी। जब बनजारा वापस लौटकर आया तो देखा, सब बोरों में नमक के स्थान पर खाँड भरी हुई है। नगर में खाँड के बेचने से उसे बहुत भारी लाभ हुआ। यह देखकर बनजारे की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। वह पुनः सिद्ध योगी चौंरगीनाथ जी के पास पहुँचा। उसने योगी जी की अनुमति लेकर वहाँ एक मन्दिर का निर्माण कराया। उस मन्दिर की दीवारें साढ़े सात फूट चौड़ी तथा उतनी ही मोटी हैं। वही प्राचीन मन्दिर आज भी अस्थल बोहर में विद्यमान है।

सिद्ध चौरंगीनाथ जी के श्राप से नगर का विध्वंस

अस्थल बोहर की पावन तपस्थली में एक बार सिद्ध योगी चौरंगीनाथ जी ने ''बारह वर्ष'' की अवधि पर्यन्त समाधि लगाई। समाधि लगाने से पूर्व उन्होंने अपने शिष्यों को अपनी शरीर रक्षा हेतु नियुक्त कर दिया। और वे तपस्यारत हो समाधि में बैठ गये। जब महासिद्ध योगी जी की बारह वर्ष उपरान्त समाधि खुली तो उन्होंने देखा, कि उनके सभी शिष्यों के शरीर मात्र अस्थि-पंजर हो गये हैं। यह देखकर उन्हें अत्यंत दुःख पहुँचा। उन्होंने अपने शिष्यों से इस क्षीणता का कारण पूछा तो शिष्य-साधकों ने उन्हें बताया, कि उनके समाधि काल में वे बारी-बारी से समीप नगर में जाकर भिक्षा लेकर आते थे। नगर-निवासी हम लोगों को बिल्कुल रूखा-सूखा भोजन भिक्षा में देते थे। वहाँ पर मुख्यतयः जैन गृहस्थी ही निवास करते थे। वे लोग अपने धर्म मतावलम्बीयतियों तथा मुनियों को भिक्षा में श्रेष्ठ भोजन देते थे। इसलिए हम लोग रूखा-सूखा भोजन खाकर ही ऐसे दुर्बल हो गये हैं सिद्ध योगी जी को जैन निवासियों के इस भेद-भाव पूर्ण व्यवहार से हार्दिक दुःख पहुँचा, और उन्होंने उसी समय सारे नगर को अपने योगबल से उल्टा-कर दिया। जिससे वह समस्त समृद्ध नगर क्षण-भर में पूर्णतया ध्वस्त हो गया।

जनश्रुतियों के अनुसार

जब शिष्यों ने अपने गुरूदेव को बताया, कि पूरे नगर में केवल एक ब्राह्मणी ही ऐसी थी जो कि हमें उत्तम भोजन दिया करती थी। योगी श्री चौरंगीनाथ जी ने कहा- जाकर पूरे नगर में खबर कर दो कि कुछ ही देर में यह सारा नगर खत्म हो जायेगा। और उस ब्राह्मणी से जाकर कहो कि वह नगर छोड़कर परे चली जाये। शिष्यों ने ऐसा ही किया। किसी भी नगर-निवासी ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया, किन्तु ब्राह्मणी योगियों की शक्ति को जानती थी। वह साधुओं के कहे अनुसार नगर से परे चली गई, (नगर से कुछ दूरी पर) और देखते ही देखते सारा नगर, विनाश को प्राप्त हो गया। कहते हैं- उसी ब्राह्मणी के परे चले जाने से एक गाँव बस गया। जिसका नाम पहरावर पड़ा। और वह पूरा का पूरा गाँव ही ब्राह्मणों का है। कहते हैं वह पूरा गाँव उसी ब्राह्मणी की ही सन्तान है। आज भी वह प्रख्यात नगर एक विशाल टीले के रूप में मठ अस्थल बोहर से कुछ ही दूरी पर धवस्त पड़ा है। और अपने महा-विनाश की कहानी अपने ही मुख से कहता नजर आ रहा है। वर्तमान समय में इन ध्वंसावशेषों को 'खोखराकोट' के टीले के नाम से जाना जाता है। इससे तो यही स्पष्ट होता है कि साधुओं और सन्यासियों के प्रति कभी भी भेद-भाव पूर्ण व्यवहार तथा उनके प्रति कभी भी कटु-वचन, मिथ्या-भाषण और साधुओं की कभी भी अपने मुख से निन्दा नहीं करनी चाहिये। ऐसा करने से सदैव अनिष्ट होने की संभावना बनी रहती है। खोखराकोट के अवशेषों की समय-समय पर जो खुदाइयां हुई

है, उनमें अनेक प्रकार की जैन धर्म से सम्बधित पाषाण प्रतिमायें प्राप्त हुई है। जो कि मठ अस्थल बोहर संग्रहालय में सुरक्षित रखी हुई है।

मठ का ध्वंस

यह एक अटल सत्य है कि जो इस संसार में आया चाहे वह संजीव हो चाहे निर्जीव हो, विधि के विधान के अनुसार एक न एक दिन उसको यहाँ से जाना ही पड़ता है। इसी प्रकार जिसकी श्री वृद्धि हुई, उसकी क्षीणता भी कभी न कभी अवश्य ही निश्चित है। और यह भी सत्य है कि जिसकी क्षीणता होती है वह दुबारा भी समृद्धिशाली हो सकता है।

विधि के इसी नियम के अनुसार तेरहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी के मध्य एक ऐसा समय आया कि इस पवित्र तपोभूमि, श्री सिद्ध योगी चौरंगीनाथ जी की तपस्थली की गरिमा को ग्रहण सा लग गया। यह मठ अपनी प्राचीन गरिमा तथा वैभव को स्थिर नहीं रख सका। कालान्तर में यह मठ लगभग पूर्णतया ध्वस्त हो गया। मठ के ध्वंस के सम्बन्ध में न तो सही समय का पता है और न ही इसके ध्वंस के कारणों का सही से पता है। कहते हैं- एक बार सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी यहाँ भ्रमण करते हुए इस मठ में पधारे। उस समय वह ''औधड़'' ही थे। ''दर्शनी'' योगी नहीं हुए थे। उन दिनों यहां सिद्ध चौरंगीनाथ जी की शिष्य परम्परा के पाद-पन्थी योगी रहते थे। सम्प्रदाय में यह रीति शुरू से ही थी, कि उनके

किसी भी मठ में कोई अतिथि आयें तो वे तीन दिन तक उस अतिथि का पूर्ण आतिथ्य सत्कार करेंगे। उसके पश्चात् उससे भी कार्य लिया जायेगा। पाद-पन्थी साधुओं ने भेख की मर्यादा का उल्लंघन करते हुए बाबा मस्तनाथ जी के यहाँ पधारते ही उनको यह आदेश दिया कि- ''हे औद्यड़!'' अभी जाओ और मठ के घोड़ों के लिए घास-खोदकर ले आओ। अतिथि सेवा तीन दिन करनी है, यह मर्यादा भेख के साधु भूल गये। श्री बाबा मस्तनाथ जी ने उन साधुओं से पूछा सारा ले आऊँ या कुछ छोड़ भी आऊँ बाबा मस्तनाथ जी को इसका कोई जबाव नहीं मिला। आदेशानुसार वह मठ के घोड़ों के लिए घास खोदने चल पड़े। कुछ ही देर के पश्चात् जब वह घास का गट्ठर लेकर पधारे तो वहाँ पर उपस्थित सभी योगियों तथा साधुओं ने प्रत्यक्ष देखा कि घास का गटठर बाबा मस्तनाथ जी के सिर से सवा हाथ की ऊँचाई पर चला आ रहा है। यह चमत्कार देखकर सभी योगियों तथा साधुओं ने यह समझ लिया कि यह तो कोई दिव्य अवतारी पुरूष या फिर कोई करामाती सिद्ध महात्मा है। मठ में उपस्थित योगियों में से एक योगी बहुत पहुँचा हुआ था। उस योगी ने घास का गट्ठर नीचे उतारने के पश्चात् बाबा मस्तनाथ जी से पूछा- ''सारा का सारा उखाड़ लाये, या कुछ छोड़ा भी है।'' श्री बाबा मस्तनाथ जी ने उनके उत्तर में कहा- ''अढ़ाई छोड़ आया हूँ।'' यह कुछ सांकेतिक भाषा थी। यह कहकर श्री बाबा मस्तनाथ जी वहाँ से बिना अन्न-जल ग्रहण किये विदा हो गये। सिद्धों की भाषा सिद्ध ही समझ सकते हैं प्रश्नकर्ता योगी भी पहुँचा हुआ सिद्ध था। वह श्री बाबा जी के

संकेत को समझ-गया कि अब यहाँ केवल अढ़ाई साधु ही बचेंगे, और शेष सबके विनाश का समय आ गया है।

जनश्रुति के अनुसार श्री बाबा मस्तनाथ जी के श्राप से ही यह विशाल समृद्ध मठ ध्वस्त हो गया था। केवल सिद्ध चौरंगीनाथ जी की पावन अखंड ज्योति को प्रज्वलित करने के लिए अढ़ाई योगी की शेष रह गये। मठ का वैभवशाली रूप जिसमें ८४ अथवा ३६० सिद्ध योगियों की पालकियां धर्म-प्रचार के लिए यहाँ से चलती थीं, वह सब मात्र स्वप्न बनकर ही रह गयीं।

श्री बाबा मस्तनाथ जी का अवतार धारण करना

हरियाणा राज्य के रोहतक जिले में कंसरेटी नामक एक ग्राम हैं उसी ग्राम में एक अत्यंत दयालु, श्रद्धालु, परोपकार परायण, भगवत् भक्त, रैबारी सबला नामक व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ रहता था। सबला का जन्म वैश्य कुल में हुआ था, और उसने व्यापार के द्वारा बहुत सा धन उपार्जन किया था। भारत में उस समय माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए रेल-गाड़ियों का प्रचलन नहीं हुआ था। व्यापारी अपने माल को दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए ऊँट-गाड़ियों का ही प्रयोग करते थे। व्यापारी लोगों को 'रैबारी' नाम से जाना जाता था। अतः श्री सबला भी रैबारी नाम से जाने जाते थे। एक बार रैबारी सबला व्यापार के ही सम्बन्ध में ऊँटों पर अपना सामान लादकर यमुना नदी के किनारे-किनारे किसी नगर की ओर जा

रहे थे। वहाँ पर सबला की दृष्टि एक परम तेजस्वी योगी पर पड़ी। उसी समय वह योगी के पास जा पहुँचा। सबला ने बड़ी भक्ति-भावना व श्रद्धा से योगेश्वर की पूजा-अर्चना की, और उनकी सेवा में पुष्प, फल आदि अर्पित किये, और बड़ी भक्ति भावना के साथ योगीराज के श्री-चरणों की वन्दना की। योगी श्रेष्ठ सबला की भक्ति-भावना से अति प्रसन्न हुए। उन्होंने सबला से उसकी कुशल-क्षेम पूछी, कहाँ से आए हो ? क्या करते हो? सब कुछ उसके विषय में जाना। सबला रैबारी योगी के श्री चरणों में गिरकर फूट-फूट कर रोने लगा, और प्रार्थना कर कहने लगा कि-हे योगीराज मैं कंसरेटी गाँव का रहने वाला हूँ, पेशे से मैं व्यापारी हूँ। धन-धान्य से परिपूर्ण घर व पति परायणा पत्नी है। हे योगीराज ! आपकी कृपा से सब कुछ है, फिर भी मैं पूर्ण नहीं हूँ । मेरे मन में एक अभाव सदैव खटकता रहता है जिससे मेरा और मेरी पत्नी का जीवन दुःखी और बेचैन सा रहता हैं हमारे पास कोई संतान नहीं है।

योगीराज (गुरू गोरक्षनाथ जी) उस सबला रैबारी की सब बातें जानकर अत्यन्त द्रवित हो उठे। उन्होंने सबला रैबारी से कहा- ''हे भक्त! तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे कोई भी वरदान माँग सकते हो।''

सबला रैबारी ने जैसे ही वरदान की बात सुनी तो वह अत्यन्त हर्षित हो उठा, कहने लगा- हे योगीश्रेष्ठ! मुझे आप, आप ही के समान सिद्ध कला सम्पन्न पुत्र रत्न का वरदान दीजिए। गुरू गोरक्षनाथ जी ने ''तथास्तु'' कहा, और मन में

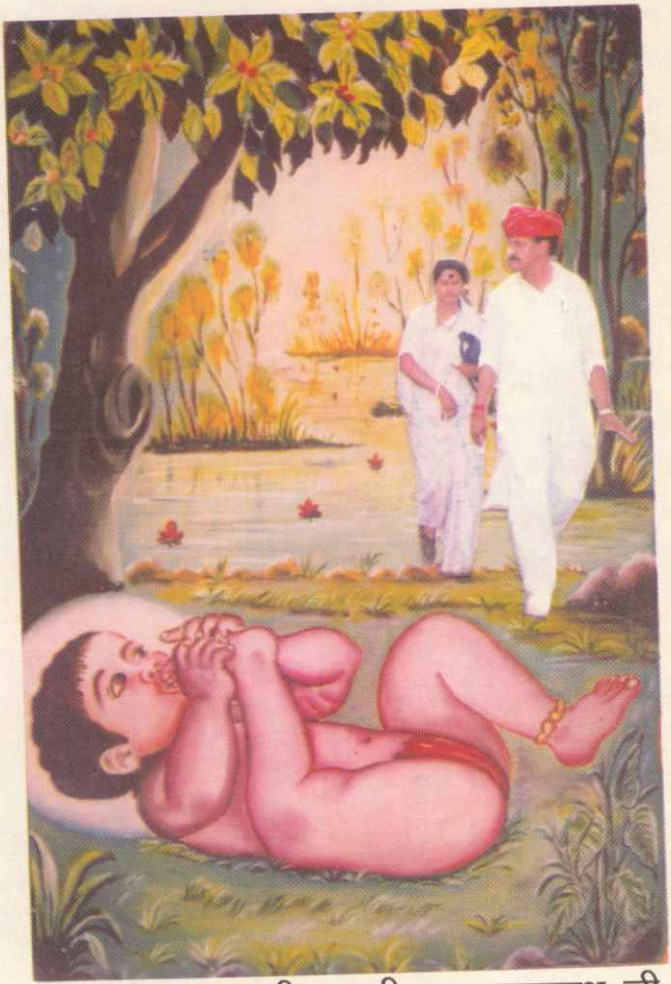

गुरू गोरक्षनाथ जी का श्री बाबा मस्तनाथ जी
के रूप में प्रकट होना

विचार करने लगे कि मुझे ही कुछ दिन तक कला बदलकर स्वयं ही भक्त सबला के घर रहना पड़ेगा। योगीराज से पुत्र प्राप्ति का वरदान पाकर रैबारी सबला प्रसन्न मन से सीधे घर को चले आये। उसने अपनी सती-साध्वी, पति परायणा स्त्री को यह शुभ सन्देश सुनाया कि गुरू गोरक्षनाथ जी ने उसे पुत्र-रत्न प्राप्ति का वरदान दिया है। सबला की स्त्री यह शुभ समाचार सुनते ही खुशी से झुम उठी। और उसी दिन से एक-एक दिन गिनती हुई एक वर्ष की अवधि पूर्ण होने की इंतजार करने लगी। वर्ष समाप्ति की अवधि निकट आ पहुँची किन्तु सबला की पत्नी में गर्भ के कोई भी लक्ष्ण नजर नहीं आये। फिर भी प्रभु विश्वासी सबला की योगी के वचनों की सिद्धि पर आस्था बनी रही। सबला की पत्नी निराश होकर कहने लगी कि- हे स्वामी! अब हमें पुत्र की प्राप्ति नहीं होगी।'' परन्तु सबला को योगीराज के दिये हुए वरदान पर पूरी आस्था थी। वह अपनी निराश पत्नी को समझाते हुए कहने लगा कि भगवान में विश्वास बनाये रखो, कहते हैं- जहाँ आस्था होती है वहाँ अपने आप ही रास्ते निकल आते हैं। वह अपनी पत्नी को बार-बार यही समझा रहा था कि, साधु, संतों और योगियों के कहे हुए वचन कभी भी असत्य नहीं होते, और न ही उनके दिये हुए वरदान निष्फल होते हैं। इसलिए तुम मेरी बात मानो और प्रभु में दृढ़ आस्था रखो। यदि हमारी प्रभु में आस्था की नीवं ही हिल गई, तो हमारी इमारत तो स्वयं ही गिर जायेगी। जीवन की डोर, तो विश्वास में ही है। जो व्यक्ति श्रद्धा-भावना से योगियों की सेवा करता है, उसके मार्ग में कभी भी कष्ट नहीं आते। हमें पुत्र-रत्न

की प्राप्ति तो अवश्य होगी, क्योंकि यह योगी का दिया हुआ वरदान है।

एक वर्ष की अवधि पूर्ण होते-होते योगेश्वर श्री गोरक्षनाथ जी को सबला को दिये हुए अपने वरदान की याद आई। उन्होंने अपने योगबल से अपने शरीर को एक वर्ष के बालक के रूप में परिवर्तित कर दिया। किसी कार्यवश सबला अपनी पत्नी के साथ दूसरे गाँव में जा रहा था, वहीं पर लेटकर (एक वर्ष का बालक बनकर) वह अपने पाँव का अगूँठा चूसने लगे। एक वर्ष के दिव्य तेजस्वी बालक को देखकर सबला और उसकी पत्नी विस्मय-मुग्ध हो ठगे से खड़े रह गये। उन दोनों ने विचार किया कि इस निर्जन वन में यह बालक कहाँ से आया? आश्चर्य चकित होकर दोनों उस बालक को निहारने लगे। और काफी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद भी बालक को जब कोई लेने नहीं आया तो उन्होंने उस दिव्य तेजस्वी बालक को अपनी गोद में उठा लिया कहने लगे कि योगीराज की कृपा से ही यह दिव्य बालक हमें प्राप्त हुआ है। उस परम तेजस्वी बालक को पाकर सबला और उसकी पत्नी अत्यंत प्रसन्न हुए, और उसे लेकर घर आ गये। सबला की पत्नी अपने पति से कहने लगी कि जब से हमारे घर में बच्चा आया है, मुझे चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश नजर आ रहा है। इस दिव्य बालक के घर में आते ही हर तरफ सुगन्ध ही सुगन्ध फैल गई हैं इस प्रसन्नता के मौके पर उन्होंने समस्त नगर में मिठाइयां बाँटी। ब्राह्मणों तथा अन्य पूज्यजनों को धन तथा वस्त्र आभूषण देकर उन्हें सम्मानित किया। इस प्रकार विक्रम सम्वत् १७६४ तदनुसार

१७०७ ई० में सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी प्रकट हुए।

शिवजी गोरक्ष रूप में, आये धरणी-धाम।
''गोरक्ष'' बदले रूप निज, मस्तनाथ के नाम।

श्री सबला ने प्यार से शिशु का नाम ''मस्त'' रखा।। मस्त का अर्थ है- विषय भोगों में इन्द्रियों को प्रवृत न होने दें। माता-पिता लाड़-प्यार से मस्त को मस्ता-मस्ता कहकर पुकारते थे।

बाल्यकाल में मस्ता के चमत्कार प्रदर्शन

बालक मस्ता समय के साथ-साथ बड़ा होने लगा सबला और उसकी धर्म पत्नी अपने बेटे का पालन पोषण बड़े लाड़-प्यार से करने लगे। किन्तु बालक मस्ता के विचार और उसका व्यवहार अन्य बालकों से एकदम निराला था। उस समय गाँव में न तो विद्यालय था और न ही कोई विद्याध्यापन में समर्थ विद्वान ही रहता था। गाँव में कोई शिक्षा का प्रबन्ध न होने की वजह से मस्ता के माता-पिता ने कहा- कि बेटा! तुम पूरा समय खेलने में व्यर्थ कर देते हो। अब तुम गायों को लेकर प्रतिदिन जंगल में जाया करो। मस्ता ने माता-पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर प्रतिदिन जंगल में जाना शुरू कर दिया। मस्ता के जंगल में जाने से उनके साथ खेलने वाले बालकों को दुःख हुआ। वे सब के सब कहने लगे कि हमारे खेल का सबसे उत्कृष्ट साथी हमारी खेल मंडली को छोड़कर जा रहा है। सारे बालकों ने मस्ता को अपने हृदय की पीड़ा बताई।

मस्ता मुस्कुराये और उन्होंने अपने साथी बालकों से कहा कि मैं नित्य तुम्हारे साथ खेलूँगा। मस्ता ने मन में विचार किया कि, माता-पिता की आज्ञा का पालन करना भी मेरा धर्म है। इसलिए मैं दो रूप धारण कर लेता हूँ । मस्ता के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं था, क्योंकि मस्ता तो स्वयं ही गोरक्ष अवतार है। और उनके लिए एक समय में दो स्वरूप धारण करना कोई बड़ी बात नहीं थी।

बालक मस्ता नित्य-प्रति प्रातः घर से गायें चराने के लिए जंगल में चला जाता था। गाँव के कुछ और बालक भी जंगल में गायें चराने जाते थे। गायें अपने आप चरती रहती थीं और सब बालक इकट्ठे होकर पेड़ की छाया में खेलते थे, हँसते थे, और अपना समय आनन्द से बिताते थे। गायों पर भी बीच-बीच में दृष्टि डालते रहते थे।

एक दिन रोज की ही भाँति मस्ता अपनी गायों को लेकर जंगल में गया। उनके पिता सबला ने उन्हें जंगल में जाते हुये भी देखा था। दिन में किसी कार्यवश सबला को गाँव से बाहर जाना पड़ा तब उन्होंने रास्ते में मस्ता को बालकों के साथ मैदान में खेलते हुए देखा। उन्होंने सोचा मस्ता जंगल में गायों को चरती हुई छोड़कर आया है। यह तो उसने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है परन्तु सबला ने धैर्य रखा, और मस्ता को कुछ भी नहीं कहा। परन्तु सबला ने नित्यप्रति जब यही घटना देखी तो उसकी धैर्य की सीमा खत्म हो गई। उन्होंने एक दिन मस्ता से पूछा तुम दिन भर गाँवों के बालकों के साथ खेलते

रहते हो और सारी गायों को बिना किसी की रक्षा के छोड़ आते हो यह बात अच्छी नहीं है।

मस्ता ने कहा- पिताजी! मैं नित्य जंगल में अपनी गायों के साथ ही रहता हूँ इस बात को आप गाँव के किसी भी बालक से पूछ सकते हो। जो मेरे साथ जंगल में गाय चराने के लिए जाते हैं।

मस्ता के सभी साथी बालकों ने कहा यह तो हमारे साथ ही गायों की रक्षा के लिए जंगल में रहता है। आपको अवश्य ही कोई भ्रांति हुई है।

सबला ने मन में विचार किया कि यह कैसे हो सकता है ? मैंने तो स्वयं ही मस्ता को अपनी आँखों से खेलते हुए गाँव में देखा है। मन में सबला ने निश्चय किया कि मैं इस सच्चाई को जानकर रहूँगा।

एक दिन अचानक सबला जंगल में गये, उन्होंने मस्ता को वहां गायें चराते हुए पाया। तुरंत ही सबला वहाँ से सीधे गाँव में पहुँचे, जहां पर बच्चे खेल रहे थे। उन्हें यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ, कि वहाँ पर मस्ता भी अन्य बालकों के साथ खेलने में व्यस्त है। यह देखकर सबला को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। वे उल्टे पाँव उसी स्थान पर गये, जहाँ जंगल में मस्ता गाय चरा रहा था। वहाँ जाकर सबला ने देखा, मस्ता तो अपनी गायें चराने में व्यवस्त है। वे पुनः गाँव लौटे तो उन्हें पहले की ही भाँति मस्ता को खेलते हुए

पाया। इस प्रकार से सबला ने गाँव के और जंगल के अनेक चक्कर लगाये। अन्त में सबला थककर चकनाचूर हो गया, किन्तु मस्ता के दो रूपों का रहस्य उसकी समझ से बाहर था। उसने यह आश्चर्य जनक घटना गाँव के लोगों को बताई

गाँव के लोगों ने इस विस्मय जनक घटना की सत्यता का पता लगाने के लिए अपनी आँखों से देखने का निश्चय किया। गाँव के लोग, सबला के साथ पहले तो वहाँ गये, जहाँ पर मस्ता बालकों के साथ गाँव में ही खेल रहा था। तत्पश्चात् वे सीधे जंगल की ओर पहुँचे। वहाँ उन्हें अत्यंत ही विस्मय जनक दृश्य देखने को मिला।

उन्होंने देखा- मस्ता एक वृक्ष के नीचे सोये हुए हैं। और एक विशाल कृष्ण वर्ण का सर्प वृक्ष में से छन कर आती हुई धूप से उन्हें बचाने के लिए उनके सिर पर अपना बड़ा सा फन फैलाकर, उनके मुख-मंडल पर छाया किए हुए है।

गाँव के लोगों को वहाँ आया देखकर नागराज वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गये। मुँह पर धूप लगने से तथा गाँव के लोगों की सामूहिक पद-ध्वनि के शब्दों से मस्ता की नींद खुल गई। लोगों ने मस्ता से उसकी कुशल-क्षेम पूछी, सन्तोषजनक उत्तर पाकर वे मस्ता को वहीं छोड़ गाँव वापस लौट आये। और वहाँ पहुँचे, जहाँ बच्चे खेल रहे थे, वहाँ पर उन्होंने मस्ता को भी पहले की भाँति ही खेलते हुए पाया।

ग्रामवासियों ने सबला से कहा कि- ''जंगल में गाय

चराने में व्यस्त तथा गाँव में बालकों के साथ खेलने में व्यस्त मस्ता एक ही है।'' इसमें तनिक भी सन्देह करना ठीक नहीं है। और हम लोगों ने यह भी देखा है कि जिस दिन से मस्ता का आपके घर में शुभागमन हुआ है, उसी दिन से आपकी दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति हो रही है। इससे तो यही सिद्ध होता है कि, मस्ता कोई चमत्कारिक या अवतारिक बालक है।

सर्वत्र गाँव में यही चर्चा थी कि जिसके सिर पर नागराज छत्र करते हैं, वह या तो कोई चक्रवर्ती सम्राट होता है अथवा कोई चमत्कारिक सिद्ध होता है।

आगे चलकर यही बालक मस्ता, सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ के रूप में प्रसिद्ध हुआ। ऐसे तपस्वी, तेजस्वी और करामाती सिद्ध हुए कि सारा देश इस महान योगी की कथाओं, भजनों को सुनकर अपने को धन्य समझता है।

बालक मस्ता ने योगबल से वर्षा कराकर गायों की प्यास बुझाई

बालक मस्ता वैसे तो अपने अलौकिक रूप एवं गुणों के द्वारा माता-पिता तथा ग्रामवासियों के मन को आकर्षित करता ही था। किन्तु ग्रामवासियों को अब तो यह प्रतीत होने लगा, कि यह बालक बाह्मलोक से परे किसी अन्तर्लोक में खोया सा रहता है। सामान्य बालकों की भाँति वह न रोता था और न ही किसी दुःख से व्याकुल ही होता था। ऐसे लगता था, प्रकृति जैसे इस

बालक के उज्जवल भविष्य से पहले से ही परिचित हो और इस पुण्यात्मा के अवतरण पर हर्ष मना रही हो।

यद्यपि मस्ता और बालकों के साथ जंगल में गायें चराने जाता था। किन्तु उसका मन तो हर समय पूजा भक्ति में ही लगा रहता था।

एक बार गर्मी के मौसम में कड़कती हुई दोहपर थी। पृथ्वी गर्मी के कारण जल रही थी। मस्ता के साथी बालकों ने कहा-

भीषण गर्मी पड़ रही, बोले सब गोपाल।
इन्द्र देव वर्षा करें, सबका है बेहाल।।

हम सबको गाँव में वापस लौट चलना चाहिये, क्योंकि गायों को पिलाने के लिए आस-पास पानी की एक बूँद भी नजर नहीं आ रही। पानी के अभाव में हमारी गाय प्यासी मर जायेंगी।

मस्ता ने अपने सभी साथी बालकों से कहा- मैं तो अपनी गायें वापस लेकर गाँव में नहीं जाऊँगा। मेरी गायों को तो यहीं पानी मिल जायेगा। सब साथी बालकों ने मिलकर कहा- हमने इस वन का चप्पा-चप्पा छान लिया है, हमें कोई भी तालाब या जलाशय दिखाई नहीं दिया। अतः तुम भी यहाँ रहने की हठ मत करो, हमारे साथ वापस गाँव में चलो। लेकिन मस्ता ने उनकी एक न सुनी, और वह और बालकों के साथ वापस गाँव में नहीं गये। अन्य बालक गाँव की तरफ मुड़े ही थे कि-

मस्ता ने माया रची, बरसे मेघ अपार।

जल जंगल एक हो गया, वृष्टि मुसलाधार।।

बालक मस्ता ने अपने योगबल से वर्षा करवा दी जंगल में ही मस्ता ने अपनी गायों को जल पिलाया। जल और थल लग रहा था जैसे एक हो गया हो

यह चमत्कार देखकर साथी बालक चकित रह गये। उन्होंने अपने-अपने घर जाकर व गाँव वालों को इस चमत्कार के विषय में बताया, कि जिस समय वे अपनी-अपनी गायों को लेकर घर की तरफ मुड़े थे, तो उस समय आकाश बिल्कुल स्वच्छ था, कड़कती हुई धूप थी, न कोई बादल था, और न ही कोई घटा थी। लेकिन मस्ता ने अपनी शक्ति से उसी समय मुसलाधर वर्षा करवा दी। यह तो निश्चय ही कोई भगवान है।

गाँव वालों ने जब इस चमत्कार के विषय में सुना तो सब के सब मंत्र मुग्ध हो गये। कहने लगे यह बालक कोई साधारण बालक नहीं है। यह तो कोई अवतारिक महापुरूष है, जो बाल्यकाल में ही अपनी योग लीलायें दिखला रहा है। सब लोग सबला और उसकी पत्नी को बधाइयाँ देने लगे कि तुम्हारा बालक तो साक्षात् भगवान है। सब ग्रामवासी मिलकर मस्ता की जय-जयकार करने लगे।

बालक मस्ता को गुरू चरणों में समर्पित करना

एक बार सबला और उनकी पत्नी ने सभी ग्रामवासियों को बुलाकर कहा कि हमे यह बालक गुरू गोरक्षनाथ जी की कृपा से प्राप्त हुआ है। और अब यह बात भी सब जान गये हैं कि यह कोई साधारण बालक नहीं है। प्रतिदिन कोई न कोई

नया चमत्कार दिखाता रहता है। इसका आचरण भी साधु-संतों के समान है। हमारे मन में तो यह शंका प्रकट हो रही है कि यह बालक घर में नहीं रहेगा। अतः हम दोनों ने बहुत सोच-विचार कर यह निर्णय लिया है कि मस्ता को किसी सिद्ध योगी के श्री चरणों में समर्पित कर देना चाहिये। सभी ग्रामवासियों ने एकमत होकर कहा- ''सबला जी!'' आप ठीक ही कह रहे हैं। गुरू गोरक्षनाथ जी से प्राप्त हुए इस बालक को किसी सिद्ध योगी के श्री-चरणों में सौंप देने में ही भलाई है। सबला के साथ मिलकर सभी ग्रामवासियों ने अनेक साधुओं और महात्माओं को ढूँढा, किन्तु मस्ता की अद्‌भुत लीलाओं के विषय में सुनकर सभी ने उस बालक का गुरू बनने से इंकार कर दिया। कई दिनों के लगातार परिश्रम के बाद उनको सर्वगुण सम्पन्न ''आई-पन्थ'' के ''आचार्य'' गुरू ''नरमाईनाथ जी'' के दर्शन हुए वे सब बालक मस्ता को लेकर श्री नरमाईनाथ जी के श्री-चरणो में उपस्थित हुए। बालक मस्ता ने सिद्ध योगी नरमाईनाथ जी के चरणों में शीश नवायाँ मस्ता के पिता और समस्त ग्रामवासियों ने करबद्ध होकर श्री नरमाईनाथ जी से विनय पूर्वक प्रार्थना की, और कहने लगे कि - ''हे गुरूदेव!''

गुरूमंत्र दीक्षित करो, करे तुम्हारा नाम।
बालक नहीं कोई देव है, मन में लो गुरू जान।।

मस्ता ने भी बारम्बार उनके चरण पकड़कर वन्दना की, और कहने लगे कि, हे गुरूदेव! मुझे आप शिष्य के रूप में स्वीकार कर लीजिए। मैं आपके श्री चरणों में रहकर आपकी

सदैव सेवा करता रहूँगा, और आपकी सेवा से अपने को धन्य समझूँगा। हे गुरूदेव! मैं सदैव आपके बतायें हुए मार्ग पर चलकर अपना जीवन सार्थक करूँगा।

सिद्ध योगी श्री नरमाईनाथ जी ने कहा- '' बालक!'' शिष्य बनाना तो एक किस्म का बन्धन है। गुरू जिसको भी अपना शिष्य बनाते हैं, तो गुरू का यह कर्तव्य बन जाता है, कि वह अपने शिष्य को योग की सिद्धियाँ प्राप्त कराने में उसकी सहायता करें। अपने शिष्य का पुत्र की तरह अविरल भाव से मार्ग दर्शन करता रहे। शिष्य बनाने से गुरू की स्वाधीनता क्षीण हो जाती है। मस्ता तुम्हें योग मार्ग, या योग क्रियाओं का कोई ज्ञान या अनुभव भी नहीं है, योग मार्ग अत्यंत कठिन मार्ग है। इसलिए मैं तुम्हें अपना शिष्य बनाने में असमर्थ हूँ ।

मस्ता के बहुत अनुरोध और अनुनय-विनय करने के पश्चात् सिद्ध नरमाईनाथ जी के हृदय में कोमल भाव का संचार हुआ। उनका पत्थर हृदय बालक मस्ता के प्रति एकदम पिघल गया। उन्होंने मस्ता को अपना शिष्य स्वीकार कर लिया और अपना आशीर्वाद दिया। स्वयं सिद्ध होते हुए भी श्री बाबा मस्तनाथ जी ने गुरू धारण किया, और समाज को धर्म पर और योग मार्ग पर चलना सिखया योग मार्ग में दीक्षित करने से पूर्व सिद्ध नरमाईनाथ जी ने मस्ता को कुछ समय तक अपने पास रखा, और जब उनको पूर्ण विश्वास हो गया कि मस्ता उनका शिष्य बनने के योग्य हैं, तब उन्होंने शुभ तिथि तथा शुभ नक्षत्र देखकर विक्रम सम्वत् १७७६ तनुसार १७१५ ई० में मस्ता का

मुन्डन करवाकर उसे योग मार्ग में दीक्षित किया, और उसको विधिवत् अपना शिष्य घोषित कर उसका नाम ''मस्ताईनाथ'' रखा।

आई पन्थ का प्रादुर्भाव

विमला राजा की लड़की थी। एक दिन गुरू गोरक्षनाथ जी ने राजा के घर भिक्षा हेतु अलख जगाया। राजकुमारी विमला भिक्षा देने के लिए जैसे ही द्वार पर पहुँची, उसने देखा द्वार पर बहुत सुन्दर साधु खड़ा है। राजकुमारी विमला ने गुरू गोरक्षनाथ जी से कहा- ''हे साधु महाराज!'' मैं तो आपसे विवाह करना चाहती हूँ गुरू गोरक्षनाथ जी ने कहा- ''राजकुमारी!'' हम तो योगी हैं, विवाह नहीं करते। यह सुनकर भी राजकुमारी विमला नहीं मानी और विवाह के लिए आग्रह करती रही। गुरू गोरक्षनाथ ने कहा- ''राजकुमारी विमला!'' ठीक है तुम ऐसा करना, महल में ये जो धान पड़े हुए हैं जब तक मैं नहीं आऊँ तक तक तुम इनको कूटती रहना। और इनमें से जितने भी कनक निकले उन सबको एक तरफ, और जितना भूसा निकले उसको दूसरी तरफ रखती जाना। राजा की बेटी थी इसलिए काम करने की आदत तो थी ही नहीं। किन्तु गोरक्षनाथ जी के आदेशानुसार वह उसी समय से धान कूटने में लग गई। देखते ही देखते बारह वर्ष व्यतीत हो गये। गोरक्षनाथ जी को अपना वचन स्मरण हो आया। आकर महल में अलख जगाया, देखा तो राजकुमारी विमला अब तक धान कूटने में व्यस्त थी। और एक तरफ कनक तथा दूसरी तरफ भूसे का बड़ा ढ़ेर लग गया था।

गुरू गोरक्षनाथ जी ने विमला से कहा कि मैं तुमसे शादी तो नहीं कर सकता, परन्तु ऐसा आशीर्वाद मैं तुम्हें देता हूँ कि जब तक यह सूरज चाँद रहेगा तुम्हारा नाम बहुत आदर भाव से लिया जायेगा। उन्होंने अपने कमंडल से अभिमंत्रित भस्म निकाली और जो कनक और भूसा राजकुमारी ने धान कूटकर अलग-अलग किए थे उन पर डाल दी। अभिमंत्रित भस्म के डालते ही एक दम से उस कनक और भूसे में से दो तेजस्वी योगी प्रकट हुए। जो योगी कनक में से प्रकट हुए उनका नाम गुरू गोरक्षनाथ जी ने कनकाईनाथ तथा जो भूसे में से प्रकट हुए उनका नाम भूसकाईनाथ दिया।

इस प्रकार से ये दोनों गुरू गोरक्षनाथ जी के मानस पुत्र हुये। राजकुमारी विमला को गोरक्षनाथ जी ने यह भी आशीर्वाद दिया कि इन दोनों योगियों के साथ तुम्हारा नाम भी अमर रहेगा और (''आई पन्थ'' का उदय भी तुमसे ही माना जायेगा। आई नाम विमला शक्ति का है। इसी को आई पन्थ या उदयनाथ भी कहते हैं। अतः आईनाथ देवी की शिष्य परम्परा का आई नाम है। जो इस समय आई पन्थ से प्रसिद्ध है। (सिद्ध सिद्धाँत पद्धति)।

''आई पन्थ'' का प्रचार एवं प्रसार

गोरख टिल्ले से चले, बारह योगी सिद्ध।
नाथ पंथ के प्रमुख थे, तप से हुए प्रसिद्ध।।

नाथ पंथ का प्रचार-प्रसार करने के लिए बारह सिद्ध योगी देश

के कोने-कोने में फैल गये। उन्होंने अपने गहनतम योग ज्ञान, सिद्धियों एवं चमत्कारों के प्रभाव से लोगों को अत्यंत प्रभावित किया। योग मार्ग का प्रदर्शन करके उन्हें सिद्धि प्राप्त करने की प्रेरणा दी। इसके अतिरिक्त योग साधना के महत्व को भी लोगों को समझाया।

आई पन्थ के बारह सिद्ध योगियों के नाम इस प्रकार से हैं-

1. महासिद्ध योगी श्री भगाई जी महाराज
2. महासिद्ध योगी श्री गरमाई जी महाराज
3. महासिद्ध योगी श्री तिर्थाई जी महाराज
4. महासिद्ध योगी श्री अरनाई जी महाराज
5. महासिद्ध योगी श्री रनाई जी महाराज
6. महासिद्ध योगी श्री दर्बाई जी महाराज
7. महासिद्ध योगी श्री लद्धाई जी महाराज
8. महासिद्ध योगी श्री मनसाई जी महाराज
9. महासिद्ध योगी श्री श्रुताई जी महाराज
10. महासिद्ध योगी श्री ब्रह्माई जी महाराज
11. महासिद्ध योगी श्री नरमाई जी महाराज
12. महासिद्ध योगी श्री मस्ताई जी महाराज
(बाबा मस्ताईनाथ जी)

पेहवा नगर में विशाल धार्मिक मेला

परम-पवित्र भक्तिदायिनी सरस्वती नदी के किनारे एक अति प्राचीन नगर पेहवा बसा हुआ है। प्रतिवर्ष चैत्र कृष्णा

अमावस्या के दिन वहाँ पर विशाल धार्मिक मेला लगता है। मेले में देश विदेश से साधु महात्मा लोग वहाँ आकर पधारते हैं। साधु-महात्माओं के दर्शनों एवं पवित्र नदी में स्नान करने हेतु अनेक भक्तजन भी वहाँ पधारते हैं, और अपने को धन्य समझते हैं। सिद्ध बाबा मस्ताईनाथ जी ने पन्थ के ''दर्शनी'' योगियों के अहंकार को दूर करने के लिए वहां कुछ चमत्कार दिखाने का निर्णय लिया। औघड़ बाबा मस्ताईनाथ जी अपने शिष्यों समेत धार्मिक मेले के दिन पेहवा नगर में जा पहुँचे। वहाँ पर एक उत्तम और उपयुक्त स्थान देखकर उन्होंने अपना धूना रमाया।

पेहवा के धार्मिक मेले में ''बारह पन्थों'' के सिद्ध योगी पहुँचे हुए थे। अगले दिन वहाँ पर विशाल भंडारा था। कुछ साधु मिलकर औघड़ बाबा मस्ताईनाथ जी के पास पहुँचे, और उनसे कहने लगे कि, वह भी अपने शिष्यों के समेत भंडारे में पहुँच कर प्रसाद ग्रहण करें।

श्री बाबा मस्ताईनाथ जी ने सारे सम्प्रदायों को अपनी सिद्धियों का चमत्कार दिखलाने तथा उनके गर्व को नष्ट करने का यह उपयुक्त अवसर समझा। इसी उद्देश्य से उन्होंने आमन्त्रित करने वाले योगियों से कहा कि- बारह पन्थों के बारह भंडारी, बारह कम्बल, और बारह गायें भेंट में लाकर देवें, तभी हम आपके साथ चलकर सारे सम्प्रदाय ''भेख'' के साथ भोजन कर सकते हैं, अन्यथा हम भोजन नहीं करेंगे। औघड़ बाबा मस्ताईनाथ जी के ऐसे वचन सुनकर सभी ''दर्शनी'' योगियों को बहुत बुरा लगा उन्होंने बाबा मस्ताईनाथ जी से कहा कि

समूचे नाथ सम्प्रदाय में औघड़ सन्यासी से 'दर्शनी' योगी का स्थान उच्च एवं पूजनीय होता है। औघड़ तो आधे योगी होते हैं। आप तो अभी औघड़ ही हैं। अतः दर्शनी योगियों द्वारा आपको भेंट प्रस्तुत कर आपको उच्च और वन्दनीय रूप में मानना ''भेख'' की मर्यादा के विपरीत है। यदि 'दर्शनी' योगी औघड़ सन्यासियों को ''भेंट-पूजा'' अर्पण करने लगे तो इससे सम्प्रदाय की सारी मर्यादा उलट जायेगी। ऐसी बातें आपको अपने मुख से नहीं निकालनी चाहिये। हाँ एक बात अवश्य है कि यदि आप सचमुच ही कोई सिद्ध योगी हैं, तो आप अपनी कोई करामात या फिर कोई चमत्कार दिखाइयें। उस चमत्कार को देखकर ही सारा सम्प्रदाय आपके प्रति कोई उचित निर्णय ले सकेगा।

सिद्ध बाबा मस्ताईनाथ जी ने कहा कि आप अभी तक ''औघड़'' और ''दर्शनी'' के ही बाद-विवाद में उलझे हुए हैं। आपने अभी तक मेरे असली रूप को नहीं पहचाना है। मैं तो शाश्वत ब्रह्मविलासी अनादि योगी हूँ। अगर आपको विश्वास नहीं हो रहा, तो मैं आपको अभी चारों युगों के ''दर्शन'' प्रत्यक्ष दिखला सकता हूँ । यह कहकर सिद्ध बाबा मस्ताईनाथ जी ने अपना मुख खोला, उसमें उन्होंने क्रमशः सत्युग में ''स्वर्ण'' तथा त्रेतायुग में ''चाँदी'' के द्वापर युग में ताँबे के तथा कलियुग में ''मृत्तिका'' से निर्मित दर्शन (कुण्डल) दिखलाये। यह दृश्य देखकर भी दर्शनी योगियों की भ्रान्ति दूर नहीं हुई। सब यही कहने लगे कि यह तो एक बाजीगर का तमाशा है। यह चमत्कार देखने के बाद उपस्थित योगियों ने कहा कि यह कोई साधु-महात्मा नहीं है, हमें तो यह एक बहुरूपिया प्रतीत हो रहा है।

श्री बाबा मस्तनाथ जी के विराट स्वरूप के दर्शन

साधु महात्माओं के भ्रम निवारण हेतु सिद्ध बाबा श्री मस्ताईनाथ जी ने पलभर में ही अपना विराट स्वरूप दिखला दिया। उसमें चारों युग, सातों द्वीप, सातों समुद्र, समूचा ब्रह्माण्ड तथा पेहवा ग्राम में वर्तमान ''दर्शनी'' योगियों का दृश्य सब अपने मुख में ही दिखला दिया। श्री बाबा जी के विराट स्वरूप के दर्शन पाकर आकाश से देवताओं ने फूलों की वर्षा की। इससे उन सब साधुओं की शंका का भी निवारण हो गया। बाबा जी को उपस्थित सभी साधुओं ने करामाती सिद्ध स्वीकार कर लिया। सभी साधु योगी वहाँ से उठकर उस स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ बारह पन्थों के अन्य योगी विराजमान थे। उन सब योगियों ने औघड़ बाबा मस्ताईनाथ की करामात की सारी जानकारी बतलाई और साथ में यह भी कहा कि बाबा मस्ताईनाथ जी कल के भंडारे में तभी पधारेंगे, जब उन्हें ''बारह पन्थों'' के योगियों की ओर से उनके द्वारा बतलाई गई ''भेंट'' अर्पित की जायेगी।

यह सुनकर बारह-पन्थों के योगी क्रोध से आग बबूला हो गये। सब के सब मिलकर कहने लगे कि हमारे बारह-पंथों के सिर्फ एक ही गुरू है। वह है ''श्री गुरू गोरक्षनाथ जी।'' इसलिए हम अन्य किसी को भी भेंट पूजा देने को तैयार नहीं हैं। मस्ताईनाथ तो अभी औघड़ साधु हैं, भेख की मर्यादा के अनुसार इसे तो हमारी पूजा-अर्चना करनी चाहिये। बारह-पंथों के योगी कहने लगे कि यह कैसा योगी है ? न तो इसके कानों

में कुंडल हैं, और न ग्रीवा में नाद ही है। ऐसे तो न जाने कितने ही साधु विभूति रमाकर धूमते हैं। ये भी उन्हीं में से एक है। इसीलिए तो यह इतनी अटपटी और बिना मतलब की बातें कर रहा है। हम इसे किसी भी कीमत पर सिद्ध मानने को तैयार नहीं हैं।

श्री बाबा मस्ताईनाथ जी द्वारा समस्त सम्प्रदाय को चमत्कार दिखाना

श्री बाबा मस्ताईनाथ जी ने जब अपने विषय में अन्य योगियों से अनाप-सनाप बातें सुनी, तो उन्होंने निश्चय किया कि अब तो समस्त योगी सम्प्रदाय को अवश्य ही कोई चमत्कार दिखलाना पड़ेगा। इन सब योगियों के संशय को दूर करने का केवल यही एक उपाय है। यह विचार कर उन्होंने वहाँ पर तुँरत ''रेचक पवन'' चला दी। अँतर में मेघ घिर आये, चारों दिशाओं में धुन्ध ही धुन्ध छा गई, इससे अपने-पराये की पहचान करना भी कठिन हो गया चारों ओर वृक्ष उखड़-उखड़ कर गिरने लगे इस प्रकार सारे क्षेत्र में कोहराम सा मच गया समस्त जनता एवं योगीजन अतीव परेशान हो उठे। चारों तरफ से त्राहि-त्राहि की आवाजें आ रही थी। तत्पश्चात बाबा मस्ताईनाथ जी ने अपना श्वास खींचकर उसे घट में ही स्थापित कर लिया, और ''कुम्भक'' प्राणायम् करके ''बडवानल'' को चैतन्य कर लिया फिर उन्होंने वायु को भी बंद कर दिया। आकाश से सूर्य देव भयंकर गर्मी बरसाने लगे, पृथ्वी सूर्य की गर्मी से तपने लगीं पृथ्वी पर पाँव रखना भी कठिन हो गया।

समस्त जनता एवं योगीजन प्राणान्तक गर्मी से जलने लगे, तड़पने लगे। गर्मी से बचने के लिए तथा इधर-उधर सिर छिपाने के लिए वृक्षों की खोज करने लगे। किन्तु वहाँ पर इतने वृक्ष थे ही नहीं, जिसके नीचे समस्त साधु योगी बैठ सकें। यह सब देखकर समस्त योगियों को अपनी गलतियों का अहसास हो गया। सब ''दर्शनी'' योगियों ने सिद्ध बाबा मस्ताईनाथ जी से अपनी गलतियों के लिए क्षमा-याचना की, और कहने लगे-

शक्ति बाबा की अतुल, कह न सके कोई भेद।
गोरक्षनाथ साक्षात् हैं, हैं देवों के देव।।

योगियों की दुर्दशा देखकर और उनकी क्षमा-याचना करने पर सिद्ध बाबा मस्ताईनाथ जी का हृदय द्रवित हो उठा। श्री बाबा जी ने कुम्भक वापस ले लिया। कुम्भक के वापस लेते ही सर्वत्र शाँति छा गई और फिर से समस्त योगियों ने सुख की साँस ली। सभी दर्शनी फिर से समस्त योगियों ने सिद्ध श्री बाबा मस्ताईनाथ जी के जय-जयकार के नारे लगाये। इस प्रकार से सिद्ध श्री बाबा मस्ताईनाथ जी की अलौकिक योग शक्तियों के दिव्य चमत्कार देखकर ''बारह पंथ'' के समस्त योगी सिद्ध बाबा मस्ताईनाथ जी के पास पधारे। श्री बाबाजी के श्री-चरणों में शीश झुकाकर ''बारह-पंथो'' की ओर से उन्हें भेंट-पूजा अर्पण की। और श्री बाबा मस्ताईनाथ जी को सर्वपूज्य सिद्ध के रूप में स्वीकार किया।

''आई'' के स्थान पर ''नाथ'' शब्द का प्रयोग

तीर्थ स्थल पेहवा में अपने योगबल से समस्त ''दर्शनी'' योगियों तथा उपस्थित अन्य योगियों को अपने शरीर पर ''नाद'' तथा कानों में कुंडल दिखलाकर अपने आपको ''दर्शनी'' योगी सिद्ध कर दिया। इस प्रकार से वह सारे सम्प्रदाय में दर्शनी'' योगी के रूप में मान्य हुए सारे सम्प्रदाय द्वारा ''पूजा'' प्राप्त करने के कारण सारे सम्प्रदाय ने उन्हें सिद्ध बाबा मस्ताईनाथ की जगह ''सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी'' के नाम से पुकारना आरम्भ कर दिया।

मस्तनाथ के नाम से उनकी हुई प्रसिद्धि।
योगी महातपेश्वरी, चरण लौटती सिद्धि।।

सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी की शिष्य परम्परा में पन्थ-द्योतक ''आई'' संज्ञा का स्थान ''नाथ'' संज्ञा ने ले लिया। तभी से उनकी शिष्य परम्परा के योगियों के नाम के अंत में आई के स्थान पर ''नाथ'' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा।

मठ अस्थल बोहर का जीर्णोद्धार

एक दिन सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी के शिष्यों ने उनसे बड़े ही विनय पूर्वक आग्रह में कहा- हे गुरूदेव! हे सूर्यस्वरूप! हे सूक्ष्म ज्ञान जानने वाले! इस मठ के ध्वस्त हो जाने से ''योग-मार्ग'' के प्रचलन में बहुत बाधा आ गई है, आप अपनी कृपा से इस अस्थल बोहर मठ का जीर्णोद्धार कीजिये। श्री बाबा मस्तनाथ जी ने अपने शिष्यों की यह आग्रह-पूर्वक

प्रार्थना स्वीकार कर ली, और कालान्तर में सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी इस मठ में पधारे और मठ का जीर्णोद्धार किया।

श्री बाबा जी के पुण्य प्रताप से तथा उनके शिष्यों की तपस्या एवं साधना से यह मठ पुनः अपने अतीव गौरव को प्राप्त हो गया है। सिद्ध शिरोमणि बाबा जी की कृपा एवं उनके आशीर्वाद से मठ की दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। श्री बाबा जी का जीवन चरित्र परम-पवित्र तथा यौगिक शक्तियों एंव सिद्धियों से परिपूर्ण बाबा जी ने इस ध्वस्त मठ का पुनः जीर्णोद्धार कर स्थान-स्थान पर अपनी आलौकिक योग शक्तियों तथा सिद्धियों का प्रदर्शन किया है। जिससे लोगों में पुनः योग के प्रति जागृति उत्पन्न हुई साथ ही उन्होंने अनेक भक्तजनों के कष्टों का निवारण किया है तथा उनकी मनोकामनायें पूर्ण कर उनका जीवन धन्य किया है। सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी के जीवन चरित्र एवं उनके चमत्कार संस्कृत भाषा, ब्रजभाषा, राजस्थानी भाषा, हिन्दी भाषा, आरतियों, रागनियों, भजनों तथा गीतों में लिखे हुए हैं।

कुबड़ी स्त्री का काया कल्प

एक बार सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा जी अपने कुछ शिष्यों के साथ भ्रमण के लिए निकल दूर-दराज किसी गाँव की सीमा के बाहर उन्होंने एक सुरम्य स्थान पर अपना धूना रमाया। और बाबा जी धूने के समक्ष ध्यान मग्न होकर बैठ गये। ग्रामीणवासी बाबा जी के आने से हर्षित हो उठे, और उनके लिए भेंट पूजा, भोजनादि लेकर उद्यान की और जाने लगे। नारी एक अपंग

थी, जाने लगी योगी के पास। मैं दुःखिया अति दुर्भागिनी, हो गई बहुत हतास।।

एक कुबड़ी स्त्री जो कि चलने फिरने में भी असर्मथ थी, वह भी गिरती-पड़ती श्री बाबा जी के दर्शन करने चल दी। गाँव के बुजुर्ग और नौजवान उस कुबड़ी पर व्यंग्य कसते हुए जा रहे थें, कह रहे थें हे कुबड़ी! तुझे वहाँ जाने की क्या आवश्यकता है ? और कुछ कह रहे थे कुबड़ी! तुझे तो बाबा जाते ही नवयुवती बना देंगे। परन्तु कुबड़ी ने उनकी एक न सुनी। वह हृदय में संत दर्शन की अभिलाषा और बाबा की अमृतमयी वाणी सुनने को उद्यान में जा पहुंची। बाबा जी के चरण कमल पकड़कर वह फूट-फूट रोने लगी, कहने लगी- हे अलख निरंजन बाबा! हे नाथों के नाथ ! सिद्धों के सिद्ध! हे भगवान शंकर स्वरूप बाबा! ये दुनियाँ मुझे बहुत ताने देती है। हे प्रभु! आप मेरी इस बीमारी को दूर कीजिये। मैंने तो सुना है कि गौतम की पत्नी पत्थर की शिला बनी हुई थी, तो भगवान राम ने उसको मात्र पैर का स्पर्श ही किया था। स्पर्श करने से ही वह नवयुवती बन गई और आकाश में उड़ गई। हे दयानिधान! मेरे लिए तो आप ही भगवान राम हैं। मुझ दुःखियारी पर आप अपनी दया दृष्टि कीजिये।

हे योगी, मेरे कष्टों को हरो, करके कोई उपाय।
जन्म-जन्म गुण गाऊँगी, बनो मेरे सहाय।।

कुबड़ी स्त्री की इतनी अनुनय विनय पूर्वक प्रार्थना करने के पश्चात् सिद्ध योगी जी ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा और

अपने एक शिष्य को बुलाकर कहा कि- हे शिष्य् तुम जाकर उस कूबड़ी के कूबड़ पर पाद-प्रहार करो। शिष्य ने गुरू आज्ञा का तुरंत पालन किया और उसके कूबड़ पर अपने पाद से प्रहार कियाँ और श्री बाबा जी की दी हुई भस्मी उसके अंग पर बिखेर दी। पाद-प्रहार की पीड़ा उसे तनिक भी नहीं हुई।

पाद-प्रहार के करने से, हो गई सीधी नार।
रूप मनोहर हो गया, कुबड़ी करे विचार।।

कुबड़ी उसी समय स्वप्न की भांति उठकर खड़ी हो गई, और उस विशाल जन-समुदाय के समक्ष बाबा के श्री-चरणों में झुकाकर बारम्बार प्रणाम करने लगी, और बाबाजी की जय जयकार करने लगी।

काया कल्प उसका हुआ, संकट दिया मिटाय।
नव जीवन उसे मिल गया, चरणों में पड़ी धाय।।

इस अलौकिक चमत्कार को देखने के लिए दूर-दूर से लोग उसके घर जाने लगे। और बाबा जी के प्रति उनकी भक्ति भावना और भी बढ़ने लगीं लोगों का बाबा जी के दर्शनों के लिए ताँता लगने लगा। इस प्रकार से श्री बाबा मस्तनाथ जी ने उस कुबड़ी स्त्री को नवजीवन देकर शिव-गोरक्ष मंत्र जपने का आशीर्वाद दिया।

शिव-गोरक्ष यह मन्त्र है, सर्व सुखों का सार।
जपो बैठ एकान्त में, तन की सुधि बिसार।।
शिव-गोरक्ष शुभ नाम में, शक्ति भरी अगाध।
लेने से है तर गये, नीच कीटि के व्याध।।

श्री बाबा मस्तनाथ जी द्वारा नेत्रहीन को नेत्र ज्योति प्रदान करना

बोहर गाँव में एक भगवत्-भक्त, धर्मपरायण ब्राह्मण रहता था। वह जन्म से ही अन्धा था। जब उसने यह सुना कि सिद्व योगी श्री बाबा मस्तनाथ जी ने कुबड़ी के कुबड़ को ठीक कर उसे नवजीवन प्रदान किया है, तो वह निर्भय ब्राह्मण भी मन में यह मनोकामना लेकर कि करूणावतार, परमात्मास्वरूप सिद्व बाबाजी मेरा भी अवश्य कल्याण करेंगे। इसी श्रद्धा भावना के साथ वह लाठी टेकते-टेकते सिद्व योगी जी के श्री चरणों में उपस्थित हुआ, और बाबाजी से हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि- ''हे ब्रह्मस्वरूप!'' हे सर्वगुण सम्पन्न बाबाजी!'' मैंने आपके चमत्कारों और आपकी सिद्धियों के विषय में लोगों से बहुत कुछ सुना हैं हे दयानिधे! मैं तो एक नेत्रहीन एवं कर्महीन ब्राह्मण हूँ। अतः हे बाबा जी आप मेरे ऊपर अपनी दयादृष्टि करके मुझ अन्धे को नेत्रदान दीजिए। ब्राह्मण श्री बाबा जी के समक्ष करबद्व होकर प्रार्थना करने लगा कि हे सिद्व योगीश्रेष्ठ! भगवान की कैसी निराली माया है, कभी धूप होती है, तो कभी छाया होती है। हे बाबा जी इसी प्रकार से मानव को दण्ड भी अपने कर्मों के अनुसार ही मिलता है। पिछले संस्कारों के हिसाब से ही हमें अच्छा-बुरा फल मिलता है। मुझे तो इस रहस्य का ज्ञान भी नहीं है कि मैं नेत्रहीन कैसे जन्मा, मैंने तो कोई बुरा-कर्म या कोई अधर्म भी नहीं किया है फिर मुझे ये कौन से कर्म का दण्ड मिला है ? मेरा जीवन दुःखों से क्यों भरा हुआ

है ? मेरे चारों ओर अन्धकार ही अन्धकर क्यों है ? मैं कौन से कर्म की सजा भोग रहा हूँ ?

सिद्ध शिरोमणि बाबा जी ने उस ब्राह्मण की प्रार्थना सुनी, और उस पर प्रसन्न होकर कहने लगे कि- ''हे ब्राह्मण!'' तुम्हारे नेत्र अवश्य ठीक होंगे।

धूने से विभूति ली, दे दी ब्राह्मण हाथ।
नेत्रों से लगाओ इसे, होगा ज्योतिर्पात।।

यह कहकर बाबाजी ने उसे दिव्य विभूति का प्रसाद दिया। ब्राह्मण ने बड़ी श्रद्धा से विभूति का प्रसाद ग्रहण किया।

आदेश नमस्कार कह मली विभूति, जैसा था उपदेश।
नेत्रों में ज्योति हुई, जय हो हे दरवेष।।

दिव्य विभूति के लगाते ही ब्राह्मण की आँखों में प्रकाश का प्रादुर्भाव हो गया। उसे प्रत्येक वस्तु साफ-साफ दिखलाई पड़ने लगी। यह चमत्कार देखकर लोग बाबाजी की जयकार करने लगे, जयकारों से आकाश गुंजायमान हो रहा था। ब्राह्मण ने बाबा जी के श्री चरणों में बारम्बार शीश झुकाया इस प्रकार से बाबाजी ने अनेक दुःखी लोगों के दुःखों का निवारण किया।

बोहर गाँव में वर्षा करवाना तथा वर्षा का वरदान देना

सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी महाराज द्वारा मठ अस्थल बोहर मठ का जीर्णोद्धार किये जाने से पूर्व बोहर गाँव आबाद हो चुका था।

बोहर गाँव में उस समय गूजर, ब्राह्मण तथा रोहड़ तीन जातियों के लोग रहते थे। कालान्तर में यहाँ जाट जाति के लोग भी आकर बस गये। जाट जाति के आने से यहाँ पर बसे हुए तीनों जातियों के लोग उजड़ गये। इसी सम्बध में बोहर गाँव में भंयकर रक्तपात हुआ। रक्तपात होने से हिंसा की तीव्र ज्वाला भड़क उठी, इससे बोहर वासियों के पुण्य क्षीण हो गये।

इस प्रकार से गाँव के जाट लोगों द्वारा पुण्य क्षीण करने से प्रकृति भी कुद्ध हो उठी। गाँव में कई वर्षों तक एक बूँद भी पानी नहीं बरसा, क्योंकि जाट जाति के लोगों ने मिलकर ब्राह्मणों की हत्या कर दी थी। कुछ बचे हुए ब्राह्मण इधर-उधर दूसरे गाँवों में जाकर बस गये थे।

शिव इच्छा से ब्रह्म हत्या के प्रकोप से यह क्षेत्र पाप का क्षेत्र हो गया। धर्म निष्ठ ब्राह्मणों, साधुओं एवं विद्वानों ने इस क्षेत्र का परित्याग कर दिया। इस पाप ग्राही क्षेत्र को छोड़कर चारों तरफ वर्षा हुआ करती थी। वर्षा के न होने से खेतों में एक दाना भी अन्न का नहीं उपजता था। लोग खाने के लिए एक-एक दानें अनाज को मोहताज हो गये। पानी के लिए भी लोगों को बूँद-बूँद के लिए तरसना पड़ता था गाँव में बालक, नर-नारी, वृद्ध अत्यंत दुःखी एवं अनेक रोगों से ग्रस्त हो गये। गाँव के वृद्ध लोगों ने एक सभा बुलाई, तथा सभा में इस समस्या के हल के लिए सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी के पास जाना स्वीकार किया।

चौ. गिरधारी की अगुवाई में सारा गाँव श्री बाबा मस्तनाथ

जी के श्री-चरणों में उपस्थित हुआ और श्री बाबाजी से अपने गाँव में पड़ी विपदा के विषय बताने लगे, रोने ओर गिड़गिड़ाने लगे।

भीड़ अति भारी हुई, सिद्ध शिरोमणि पास।
दुःखी कृषक कहने लगे, हम हैं अति उदास।

सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा, कहने लगे कि इस गाँव के जाट जाति के लोगों ने बहुत ही जघन्य अपराध व पाप किये हुए हैं। दिव्य दृष्टि से देखने के पश्चात् श्री बाबाजी ने उन सभी जाटों को कड़ी फटकार लगाई और कहने लगे-

दया धर्म ठुकरा दिया? करते नहीं परोपकार।
विधि को देते दोष हो, ये हैं करनी का फलपात।।

श्री बाबा जी उनसे कहने लगे- हे अधर्मी मूर्खों तुम्हारे जैसे पापियों, ब्रह्म हत्यारों, साधुओं की निंदा करने के कारण ही तुम लोग ये सब कष्ट भोग रहे हो। जिन लोगों में ब्राह्मणों के प्रति सम्मान न हो, साधुओं के प्रति भक्ति भाव न हो, ईश्वर में आस्था न हो, और जो इतने हिंसक कार्य कर चुका हो, जैसे तुम लोगों ने किये हैं इन सबके परिणाम स्वरूप ही तुम्हारे बोहर गाँव में यह अकाल की काली छाया मँडरा रही है। श्री बाबाजी ने उनको यह भी कहा कि जो मनुष्य जैसा बोता है, वैसा ही उसको फल मिलता है। इसी प्रकार से तुमने भी जैसे कर्म किये थे वैसे ही फल तुम्हें मिल गये हैं। उसी का दण्ड तुम लोग भोग

रहे हो।

श्री बाबा मस्तनाथ जी ने उनको यह भी चेतावनी दी कि यदि तुम लोग भविष्य में भी कोई ऐसा निन्दित एवं धर्म विरूद्ध कर्म करोगे तो तुम्हें इससे भी भयानक परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

चौ० गिरधारी व समस्त ग्रामवासियों ने श्री बाबाजी के चरणों में बारम्बार प्रणाम किया, और करबद्ध होकर बाबाजी से अपने अपराधों की क्षमा का उपाय पूछा।

संत हृदय उनकी दीन-दशा देखकर व उनको शरण में आया जानकर द्रवित हो उठा श्री बाबाजी ने उन बुद्धिहीनों को बड़े प्यार से समझाते हुए कहा- हिंसा का परित्याग, साधु-महात्माओं के प्रति श्रद्धा-भाव, ब्राह्मणों का सम्मान, ईश्वर में आस्था, समाज में आपस में प्रेम-भाव, दयादान आदि का पालन हमेशा करो।

सभी ग्रामवासियों ने बाबाजी के सम्मुख ही धूने को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा की, कि अब हम हिंसा की पुनरावृत्ति नहीं करेंगे। दया दान, गो सेवा, ब्राह्मणों का आदर सम्मान, साधु-संतो के प्रति आदर व श्रद्धा-भाव सभी शुभ कार्य आज से ही आरंभ कर देंगे।

ग्रामवासियों के मुख से ये सभी बातें सुनकर श्री बाबाजी अति प्रसन्न हुए और ग्रामवासियों को आशीर्वाद दिया कि अब तुम जाओ तुम्हारे गाँव में वर्षा अवश्य होगी सिद्ध श्री बाबा मस्तनाथ जी ने ग्रामवासियों को पाप कगाँवगांव में पहुँचने से

पहले ही, जबकि आकाश एकदम स्वच्छ था, देखते ही देखते चारों ओर काली घटायें छा गयी और मूसलाधर बारिश होने लगी। बारिश के होने से जनमानस अति प्रसन्न हुआ, और बाबाजी के जयघोष से आकाश गुंजायमान हो गया।

घर-घर जयकारे लगे, बाबा श्री मस्तनाथ।
धूने पर पहुँचे सभी, लेकर विविध प्रसाद।।

श्री बाबाजी के आशीर्वाद से कृषि पुनः फलने-फूलने लगी, लोग अति प्रसन्न हुए और तब से समय-समय पर वर्षा होने लगी।

श्री बाबाजी ने गाँव वालों को यह भी बतलाया कि जब भी तुम्हारे गाँवों में वर्षा नहीं हो, तो इसी स्थान पर सिद्ध चौरंगीनाथ जी की ज्योति के समक्ष मेरे धूने पर सवा रूपया, काला कम्बल और पुष्प चढ़ाना, तुम्हारे गाँव में वर्षा हो जायेगी।

जब भी बोहर गाँव में वर्षा नहीं होती, तो सब लोग मिलकर बाबाजी के बताये हुए वचनों का स्मरण कर धूने पर चढ़ावा, कम्बल, पुष्प आदि भेंट करते ही तुरंत वहाँ पर वर्षा हो जाती थी। यही क्रम अभी तक निरन्तर चल रहा है।

घर-घर होती आरती, जयकारों की धूम।
भाग्य हमारे खुल गये, चरणों को रहे चूम।।

सन्तान प्राप्ति का वरदान

हरियाणा राज्य में महम के पास एक घिरवाटी नामक ग्राम है। किसी समय वहाँ बहुत ही भगवत् भक्त लोग निवास करते थे। एक बार सिद्ध शिरोमणि, गोरक्ष अवतार, विघ्नहर्ता, दयालुस्वरूप श्री बाबा मस्तनाथ जी जिनका नाम मात्र सुनने से ही प्राणी मात्र का कल्याण हो जाता है, और समस्त पापों का नाश हो जाता है, भ्रमण करते-करते वहाँ जा पहुँचे। वहीं पर एक बरगद के वृक्ष के नीचे उन्होंने अपना धूना चेताया। बरगद का वृक्ष नितांत सूखा था। जब ग्रामवासियों ने सुना कि सिद्ध बाबाजी हमारे गाँव में पधारे हैं, तो ग्रामीण बाबाजी की सेवा में भेंट पूजा लेकर पहुँचे, और उनकी पूजा आरती की, और कहने लगे कि आज हमारे कितने धन्य भाग्य हैं जो आप हमारे गाँव में पधारे हैं। हमारे तो कितने ही जन्मों के पाप नष्ट हो गये हैं। हमारे अवश्य ही किसी जन्म के कुछ पुण्य कर्म अवश्य होंगे, जो आपने हमें दर्शन देकर कृतार्थ किया है।

इस प्रकार से भक्तों की श्रद्धा-भावना व उनकी पूजा वन्दना से सिद्ध बाबाजी अत्यंत प्रसन्न हुए और उन सबको सुखी रहने का आशीर्वाद दिया।

उसी ग्राम में एक बहुत ही सुशील भजनाराम नामक जाट रहता था। उसके पास कोई सन्तान नहीं थी, सन्तान न होने के कारण वह बहुत दुःखी रहता था। सन्तान प्राप्ति के लिए उसने कितने ही उपाय किये लेकिन सब व्यर्थ सिद्ध हुए जब उसने

सुना कि हमारे गाँव में बाबा मस्तनाथ जी पधारे हैं, तो वह सब कुछ छोड़कर बाबाजी के श्री चरणों में जा पहुँचा।

भजनाराम ने रोते बिलखते हुए श्री बाबाजी के चरण कमल पकड़कर कहा- ''हे प्रभु!' हे संकटमोचन! हे करूणानिधान! मैं बहुत दुःखी हूँ मेरे कोई औलाद नहीं है, बुढ़ापे में पानी देने वाला भी कोई नहीं है। और न ही कोई मेरे घर में दिया जलाने वाला है। ''हे शिव-स्वरूप!'' आपने कितने ही दीन-दुःखी लोगों को अपने आशीर्वाद से आबाद किया है, मेरे ऊपर भी कुछ अपनी दया-दृष्टि कीजिये।

बृद्ध दम्पति भजनाराम की बातें सुनकर वहाँ पर उपस्थित सब लोग उसका उपहास करने लगे और कहने लगे कि भजनाराम! यह उम्र सन्तान पैदा करने की नहीं है। बुढ़ापे में बाबाजी से पुत्र लेने आये हो। उनमें से ही एक सज्जन पुरूष ने कहा- भाइयो किसी का उपहास करना ठीक नहीं, यदि बाबाजी की कृपा से इसका भी मंगल हो जाये तो इसमें हमारा क्या नुकसान है ? वैसे भी यहाँ पर सब लोग अपने-अपने स्वार्थ के लिए ही तो आये हैं। उन्हीं में से कुछ लोगों ने कहा, कि अब इस बृद्ध दम्पति की सन्तान उत्पन्न करने की उम्र जा चुकी है अब इस बुढ़ापे में इसके कहाँ से पुत्र होगा ? अतः अब मन्त्रादि साधन इसके लिए व्यर्थ ही हैं।

एक सज्जन पुरूष कहने लगा कि भक्ति में अपार शक्ति है। बाबाजी के लिए कुछ भी असंभव नहीं है, वे तो पल भर में ही असंभव को संभव कर दिखाते हैं श्री बाबाजी तो गोरक्षावतार

हैं, इसलिए उनके लिए कुछ भी करना मुश्किल नहीं है।

श्री बाबा मस्तनाथ जी ने भजनाराम से कहा- हे भक्त! मैंने योगवल से तुम्हारे पिछले कर्मो की सारी बात जान ली है। यह सुनते ही भजनाराम की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी, वह हाथ जोड़कर बाबाजी से कहने लगा कि- हे सिद्धियों के उच्च शिखर पर आसीन महात्मन्! अब तो आप ही मेरी डूबती नौका को पार लगा सकते हो। बाबाजी ने भजनाराम से कहा- तुम्हारे पिछले जन्मों के कुछ पुण्य कर्म ही आगे आयेंगे। हे भक्त तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी और तुम्हारे यहाँ दो पुत्र उत्पन्न होंगे। तुम केवल भगवान में आस्था बनाये रखो।

श्री बाबाजी का आशीर्वाद पाकर वह बाबाजी की जय-जयकार करने लगा। वहाँ पर उपस्थित और भी लोग बाबाजी का गुणगान करने लगे। वहाँ पर उपस्थित लोगों में से कुछ लोगों ने कहा कि इसके यहाँ पुत्र हो ही नहीं सकता। हम लोग तो बाबाजी की बात को तभी सत्य जानेंगे, जब यह सूखा हुआ बरगद का पेड़ हरा हो जाये।

श्री बाबाजी ने कहा कि यह भक्त अवश्य ही पुत्र प्राप्त करेगा, और यह बरगद का सूखा हुआ पेड़ भी अवश्य हरा हो जायेगा। बाबाजी ने अपने शिष्यों से कहा- हे शिष्यो ! तुम जाकर इस सूखे हुए बरगद के पेड़ की जड़ में जल डालकर आओ। गुरू आज्ञा पाते ही शिष्य तुरन्त ही सूखे पेड़ की जड़ में जल डालकर आ गये। जल के डालते हीं सूखा हुआ बरगद का वृक्ष हरा हो गया, और उसमें से दो अँकुर निकल आये। वृक्ष में से अँकुर निकलते ही शिष्यों ने गुरूजी को बताया कि हे

गुरूदेव इसमें तो दो पत्ते दिखाई दे रहे हैं। शिष्यों की बात सुनकर बाबाजी ने कहा- भजनाराम तुम फिक्र मत करो, तुम्हारे अवश्य दो पुत्र होगें। यह सुनकर सभी लोग बाबाजी की जय-जयकार करने लगे। वृद्ध दम्पति भजनाराम ने श्री बाबा मस्तनाथ जी की बारम्बार चरण वन्दना की। वह सिद्ध बाबाजी के श्री चरणों में गिरकर खुशी से रोने लगा और कहने लगा कि- हे प्रभु! हे दयानिधान! आपने तो मेरे सब कष्टों का हरण कर लिया है।

श्री बाबाजी ने भजनाराम को समझाया और उसको सुखी रहने का आशीर्वाद देकर वहाँ से आगे भ्रमण के लिए चल पड़े।

इस प्रकार से भजनाराम बाबाजी का आशीर्वाद लेकर खुशी-खुशी घर को चला गया और एक वर्ष के अन्दर ही उसके घर में एक सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ। पुत्र प्राप्ति की खुशी में उसने ब्राह्मणों को खूब दान-दक्षिणा दी। दूसरे वर्ष भी उसके घर में बाबाजी की कृपा से दूसरा पुत्र उत्पन्न हो गया। इस प्रकार से सिद्ध योगी श्री बाबाजी का पुत्र-रत्न प्राप्ति का वरदान भजनाराम को सार्थक सिद्ध हुआ।

कुछ मुसलमान दम्पति खेत में हल चला रहे थे, जब उन्होंने सुना कि सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी के आशीर्वाद से भजनाराम के घर में सन्तान उत्पन्न हो गई है, तो वे भी सिद्ध योगी के पास अपनी मनोकामना लेकर गये। क्योंकि वे भी सन्तानविहीन थे। श्री बाबाजी ने उनकी भी सन्तान प्राप्ति की मनोकामना को पूर्ण किया।

योगबल से मृत गाय को जीवित करना

एक बार सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी वन में तपस्या कर रहे थे उसी वन में एक निर्धन जाट अपनी गाय चराने के लिए जाता था। उस गरीब किसान के पास केवल एक ही गाय थी। उसी गाय के दूध से वह अपने बच्चों का पेट पालता था।

एक दिन आचानक उसकी गाय ने चरना बंद कर दिया, और वह चक्कर खाकर गिर गई। जब किसान ने जाकर अपनी प्यारी गाय को देखा तो वह निष्प्राण हो चुकी थी।

गाय को मरी हुई देखकर किसान बहुत घबरा गया। क्योंकि उसके पास गाय के अलावा और कोई भी साधन ऐसा नहीं था, जिससे कि वह अपने घर का गुजारा चला सके। इस परिस्थिति से गो-सेवक जाट अत्यंत दुःखी हुआ और रोने लगा। मन ही मन वह सोचने लगा कि अब तो मेरे ऊपर एकदम से मुशीबतों का पहाड़ ही टूट गया हैं अब मैं अपने बच्चों को कैसे पालूँगा ? मेरे पास तो उनके पालन पोषण करने के लिए कुछ भी नहीं है। हे भगवान ! अब क्या होगा ? गोभक्त जाट को एकदम से याद आया कि समीप ही वन में सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी तपस्या में लीन हैं, मुझे उनके ही श्री-चरणों में जाना चाहिये, वह अवश्य ही कुछ न कुछ उपाय करेंगे। निर्धन जाट ने मन में सोचा कि बाबाजी ने अनेक दुःखी जनों के कष्टों का हरण किया है । कुबड़ी को कँचन सी काया प्रदान की, अँधे को नेत्र ज्योति दी, सूखे वृक्ष को हरा-भरा कर दिया,

निःसन्तान दम्पति को पुत्र प्रदान किये इत्यादि। इस प्रकार से वह श्री बाबाजी का चिंतन करते हुए उस जगह पहुँचा जहाँ पर श्री बाबाजी तपस्यारत थे।

सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी के तपः स्थल पहुँच कर वह किसान बाबाजी के श्री चरणों में गिरकर जोर-जोर से रोने लगा। रोते-रोते वह बाबाजी से विनती करने लगा कि- हे योगी श्रेष्ठ! हे नाथों के नाथ! मेरी गाय घास चरते हुए अचानक इसी जंगल में निष्प्राण हो गई है। हे भगवन्! मैं अब अपने बच्चों को कैसे पालूँ। मेरे पास बच्चे पालने के लिए कोई दूसरा साधन भी नहीं है। धन भी नहीं है जिसमें कि मैं दूसरी गाय खरीद सकूं। वह बाबाजी से बारम्बार हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि- हे सिद्ध योगी! मेरी गाय को तो आप किसी भी प्रकार से जीवन दान दीजिए।

संत हृदय श्री बाबाजी को उस निर्धन किसान पर दया आ गई। उन्होंने अपनी धूनी से विभूति उठाई और गाय के ऊपर डालते हुए कहा कि हे भक्त! अब तुम्हें फिक्र करने की आवश्यकता नहीं है, जाकर अपनी गाय को देखो, वह तुम्हें जीवित मिलेगी।

खड़ी वह शीघ्र हो गई, चर रही हरी-हरी घास।
जीवन दान दे बाबा बोले, देखले जाकर गऊ के पास।।

श्री बाबाजी के चरणों में आस्था रखने वाला किसान ज्यों ही बाबा के आदेश से मृतक गाय के पास पहुँचा तो आश्चर्यचकित

रह गया कि गाय तो खड़ी-खड़ी हरी-हरी घास चर रही है। बाबाजी की कृपा से उस निर्धन किसान के सभी संकट कट चुके थे।

जिसने भी बाबा जी के इस चमत्कार को सुना वही बाबाजी की जय-जयकार करने लगा।

सामंत शिकारी को दिव्य ज्ञान प्रदान करना

झज्जर नगर में उन दिनों बहुत ही सघन और सुरम्य वन था। एक बार भ्रमण करते-करते सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी उसी वन में जा पहुँचे। वन में तरह-तरह के पशु-पक्षी विचरण कर रहे थे।

कीर मयूर कपोत अरू कागा, सारस चील गीद खग बागा।
सिंह भेड़ियाँ नाहर चीता, झाँख ससा अरू मृगा सहीता।।
बंदर गीदड़ और हुँडारा, विचरै जीव अनेक प्रकारा।।

वन में प्रकृति का अनुपम नजारा था। बाबाजी ने एक बरगद के पेड़ के नीचे अपनी धूनी लगाई और तपस्या में लीन हो गये।

जंगल में अनेक प्रकार के वृक्ष थे जैसे नीम, पीपल, वट कदम्ब, कचनार, अशोक व अन्य जड़ी बुटियों के वृक्ष थे। तरह-तरह के फूल खिले हुए थे। शीतल वायु के झोकों से जंगल व आस-पास का वातावरण बहुत ही सुगंधित हो रहा था। वन में मनुष्य का रूप धारण करके अनेक भूत-प्रेत, देवता

राक्षस, नाग, सिद्धगण श्री बाबा मस्तनाथ जी की सेवा में उपस्थित हो गये। और सिद्ध शिरोमणी के दर्शन करके अपने को भाग्यशाली समझने लगे।

उस नगर में कुछ लोग ऐसे भी थे जो अपने मन में सदैव हिंसा की वृत्ति रखते थे। उनको श्री बाबाजी ने उपदेश दिया और अपना शिष्य बनाया।

एक दिन बाबा ने, मन में मोद बढ़ाय।
मृग रूप धारण कियो, अति अनूप सुखदाय।।

एक दिन श्री बाबा जी प्रकृति का नजारा लेने के लिए योगबल से अपना रूप बदलकर मृग रूप में इधर-उधर विचरने लगे। उसी समय एक सामंत शिकारी शिकार करते-करते वन में वहीं आ पहुँचा, जहाँ श्री बाबाजी मृग रूप में बाल क्रीडायें कर रहे थे। सामंत शिकारी ने जैसे ही इतने सुन्दर मृग को देखा, तो देखते ही उस पर बाण चला दिया।

छल बल करि अति गर्व सो, जान सकारी चोट।
बाण मारा चरण बिच, गहि तरूवर की ओट।।

बाण के लगते ही माया मृग रूपधारी श्री बाबाजी शीघ्रता से बेलों व वृक्षों की आड़ लेते-लेते धूने पर पहुँच गये, और पहले की ही भाँति अपने आसन पर आकर बैठ गये।

पग पसारि गुरूनाथ जू, मन में अति हर्षाय।
लागे पोंछन रक्त तब, तरूवर पात उठाय।।

सामंत शिकारी बाल हिरण को खोजता-खोजता और रक्त की धारा को देखता-देखता उसी वृक्ष के नीचे आ पहुँचा, जहाँ श्री बाबाजी अपने आसन पर विराजमान थे।

सामंत शिकारी बाबाजी के तेजस्वी चेहरे को देखते ही आश्चर्य चकित रह गया, उनका चेहरा सूर्य की भाँति तेज से चमक रहा था। बाबाजी जटाधारी और सम्पूर्ण शरीर में भस्म रमाये हुए थे। उनके एक पाँव से रक्त बह रहा था। यह देखकर सामंत शिकारी ने अपने दाँतों तले अंगुली दबा ली। शिकारी के मुँह से कोई बात नहीं निकल रही थी।

दंत अंगुलि दै मन पछतावै, बात कही मुख से नहीं जावै।
मृगारूप में था वन माहि, विचरे नाथ और कोउ नाहि।।
मृग बिलोकि हम चोट चलानो, सो पग लगा चीन्ह में पायो।
गिर रूधिर हम जहँ तहँ देखा, आये तुरत चीन्ह पग रेखा।

सामंत शिकारी बाबाजी के श्री चरणों में गिरकर जोर-ज़ोर से रोने लगा। श्री बाबाजी से बारम्बार क्षमा-याचना करने लगा, कहने लगा- हे जटाधारी बाबा! हे कृपासिंधु! हे महात्मन्! मैंने यह बाण जान बूझकर नहीं चलाया। आप उस समय मृग रूप में थे, सो मैं अज्ञानी आपको तनिक भी नहीं पहचान सका। सामंत शिकरी ने अपना धनुष और बाण फेंक दिया, और अपनी गलती के लिए श्री बाबाजी से प्रार्थना करने लगा। वह बार-बार श्री बाबाजी से कहने लगा- हे देव! हे प्रभु मैं तो निरा मूर्ख और अज्ञानी हूँ। मुझ पापी में आप जैसी दिव्य दृष्टि नहीं है, आप मुझ दुर्बुद्धि को दया का दान दीजिए हे परोपकार

परायण महात्मन् ! मैं आपकी महिमा को नहीं जानता। हे करूणा के सागर आपको बारम्बार नमस्कार है। मैं निर्गुण बुद्धि वाला क्षमा योग्य तो नहीं हूँ परन्तु हे देव मुझे एक बार तो आप क्षमा दान अवश्य दीजिए।

सामंत शिकारी की इतनी हृदय विदारक विनती सुनकर करूणावतार, शिवस्वरूप श्री बाबाजी ने सामंत शिकारी को अपने चरणों से उठाया और उसे समझाते हुए कहने लगे- हे भक्त! पुत्र तुम अपने मन से यह ग्लानि बिल्कुल निकाल दो, कि तुम से कोई अपराध हुआ है। तुम्हें तो यह बिल्कुल भी मालूम नहीं था कि मैं ही मृग के रूप में विचरण कर रहा हूँ। मेरी तरफ से तुम्हें क्षमा माँगने की भी आवश्यकता नहीं है।

सन्त सदा शीतल रहत, जैसे निरमल गंग।
दया रूप सन्तोष गुण, क्षमा है जिनका अंग।।

सामंत शिकारी ने फिर भी श्री बाबा मस्तनाथ जी से प्रार्थना की, कि हे दयानिधे! मैं आपके श्री-चरणों में अपना सर्वस्व भेंट करने को तैयार हूँ।

हुक्म करौ तो दौलत लाऊँ, महल, मकान, मन्दिर बनाऊँ।
बाग बगीचा या बन माहि, मैं लगवाय दऊँ यहि ठाही।
सदा बरत क्षेत्र जो चाहिये, देऊँ लगाय अन्न का कहिये।
नौकर चाकर दास घनेरे, सब हाजिर चरनन में तेरे।

सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी ने सामंत शिकारी को बहुत समझाया, कहने लगे- हे वत्स! मुझे किसी भी चीज की

आवश्यकता नहीं है, न धन की, न अन्न की, न नौकर चाकर की। जो आनंद त्याग में है, वह आनंद वैभव में लिप्त रहने में नहीं है। साधुओं का परमधन तो सन्तोष है, और मैं इस वन में कंदमूल फलों से पूर्णतयः सन्तुष्ट हूँ। हे भक्त! ये जो भौतिक पदार्थ हैं जिनकी तुम चर्चा कर रहे हो, वे तो योग साधना में बाधक हैं। श्री बाबाजी ने आगे समझाया।

झरना झील पियन को पानी, बन फल भोजन सुन्दर खानी।
छाया तरूवर गुहा बसेरा, सबसों उतम योगी केरा।
कहा करै दौलत लै योगी, चाहिये उनको जो हैं भोगी।
मन हाथी अरू इन्द्री घोरा, वान्धत सन्त सदा बल जोरा।
नाम अचल धन राखत पासा, धर्म धुजा ऊँची प्रकाशा।
जग में जीवन हैगा थोरा, ताते सुनो वचन यह मोरा।
हिंसा सकल जीव की त्यागो, भक्ती में तुम हर की लागो।
साधु संत पट दर्शन देवा, तन मन धन से करना सेवा।

सामंत शिकारी ने बाबाजी का यह अमृत तुल्य उपदेश सुनकर कहा- हे पूज्य गुरूदेव! जब तक मैं प्रायश्चित नहीं करूँगा, तब तक मुझे कदापि शान्ति नहीं मिलेगी। अतः आप मुझे कोई ऐसा उपाय बतायें जिससे मेरे पाप का क्षय हो जाये। सिद्ध शिरोमणि ने उसके प्रश्न के उत्तर में कहा-

करो ईश्वर की भक्ति, भक्ति में है ये शक्ति।
अनहोनी हो जाये, देर पल की नहीं लगती।

हे भक्त! निष्काम भावना से प्रभु भक्ति ही सब व्याधियों से

मुक्ति पाने की औषधि है। प्रभु भजन ही सब प्रकार के कष्टों से मुक्ति पाने का मार्ग है। प्रभु भजन ही सब दुःखों का क्षय करता है। प्रभु भजन से ही सबके सौभाग्य का सूर्य उदय होता है।

सिद्ध श्री बाबा मस्तनाथ जी के श्री मुख से इन कल्याणकारी वचनों का श्रवण करते ही सामंत शिकारी आनंद विभोर हो गया। बाबाजी के श्री चरणों में मस्तक झूकाकर और उनकी वन्दना करके वह अपने नगर को लौट गया। नगर में पहुँचते ही उसने सब नगर-निवासियों को अपने द्वारा बाबाजी को मारे गये बाण वाली सारी घटना कह सुनाई। इस यौगिक चमत्कार को सुनकर सब आश्चर्य चकित रह गये।

सिद्ध श्री बाबा मस्तनाथ जी का सामंत शिकारी के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। सामंत शिकारी ने बाबाजी के उपदेश को हृदयंगम कर भक्ति मार्ग में प्रवेश किया।

श्री बाबाजी के उपदेश से सामंत शिकारी एक प्रख्यात भक्त बना ओर निरन्तर प्रभु भजन में लीन रहकर उसने अपनी जीवन यात्रा सफल की, और मुक्ति का मार्ग अपनाया।

तेज पुँज प्रकाश अति, महिमा अधिक अनूप।
घर-घर चरचा होत यह, नाथ धरा मृग रूप।।

आलमशाह को चमत्कार प्रदर्शन दिखाना

देवों के देव नाना प्रकार के रूप धारण कर जगत का कल्याण करने वाले श्री बाबा मस्तनाथ जी ने जब यह देखा कि

भारत में यवनों का प्रभुत्व बढ़ता ही जा रहा है, और हिदुँओं को हर तरफ दुःख दिये जा रहे हैं। यही विचार मन में सोचकर कि एक बार दिल्ली शहर का भ्रमणकरना चाहिये।

दिल्ली शहर यमुना नदी के किनारे बसा हुआ एक सुरम्य प्राचीन शहर है और प्राचीन काल से ही भारत वर्ष की राजधानी रहा है।

जमुना सरिता जहाँ सुहावन, निर्मल जल सुन्दर अति पावन।
वेद पुराण महातम गावें, अरस परस किये पातक जावें।

दोहा- यह विधि मन में ठान के, शिष्य लेत बुलाय
निज इच्छा सब सो कही, गुरूनाथ हर्षाय।

चौपाई-

शिष्य संग अनेक ले लीन्हा, नाथ गमन दिल्ली को कीन्हा।
सनय-सनय पहुँचे अभिरामा, पंचकुइयाँ पर किया मुकामा।।
दिल्ली शहर खबर भई सारी सिद्ध शिरोमणि आया भारी।
संग में वाके शिष्य अनेका एक से एक अति गुण विवेका।।

दिल्ली शहर में पहुँचकर श्री बाबाजी ने अपने शिष्यों के साथ अपना धूना रमाया और ईश्वर चिन्तन में लीन हो गये।

उस समय दिल्ली में बहादुशाह जफर का शासन था। वह सबके साथ समान व्यवहार नहीं करता था। उसके राज्य में प्रजा खुश नहीं थी। वह हिन्दुओं का बहुत निरादर करता था। लेकिन जब उसने भी सुना कि उसके राज्य (दिल्ली) में सिद्ध

बाबा मस्तनाथ जी पधारे हैं, तो आलमशाह ने प्रसन्नता प्रकट की। उसने अपने मन्त्रियों से विचार विमर्श किया कि मैं भी सिद्ध बाबाजी के दर्शनों का इच्छुक हूँ। आलमशाह ने काजी से कहा-

हमहूँ सुना नगर मुख बानी, कीरत वाकी बहुत बरवानी।
भस्म अंग आखंड लगाये, जटा मुकुट तन पे छिटकाये।
कानन कुंडल वाके साजै, सेली सिंद्यि कण्ठ विराजै।
बैठा आसन धुनी लगाये, नागा पीर फकीर कहाये।
मुस्लिम नियमों के अनुसार काजी ने राजा कहा-
तन पर वस्त्र एकहूँ नाहीं, बेपरदा योगी तेहि ठाहीं।
लाज शरम कुछ नाहिं वाके, हिन्दु मजहब निशिदिन ताके।
नंगों का दरशन नहिं चाहिये, हजरत सोच विचार के रहिये।
दीन ईमान कुरान बतावें, ''शरह'' से बाहर कधी न जावे।

दोहा- विधि पूर्वक समझाय के, कहत भये सब कोय।
आगे मरजी आपकी, जो कहिये सो होय।

आलमशाह ने काजियों का निर्णय मान लिया और साथ ही उन्होंने एक परिचायक के हाथ सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी को भेंट में देने के लिए एक आकर्षक दुशाला तथा कुछ स्वर्ण मुद्रायें उनकी धूनी पर भेज दी।

सेवक दुशाला लेकर बाबाजी के पास पहुँचा और राजा द्वारा भेजी गई भेंट बाबाजी को अर्पित कर दी।

गुरूनाथ तब लिया दुशाला, निज हाथन धूनी बिच डाला।

खाक भया जब धूनी परा, देखि सेवक मन में डरा।

सेवक डरकर भाग गया और दुशाले वाला सब हाल राजा को कह सुनाया। यह सुनकर आलमशाह को बहुत बुरा लगा। अगले ही दिन उसने अपने मुख्य दीवान को बुलाकर कहा कि वह जाकर सिद्ध बाबा मस्तनाथ की परीक्षा ले, अगर वह करामाती सिद्ध योगी न हो तो उन्हें गिरफ्तार करके ले आवें।

राजा की आज्ञा मानकर दीवान श्री बाबा मस्तनाथ जी के पास पहुंचा और उनसे निवेदन करने लगा कि- हे महाराज!

हे गुरूनाथ दुशाला दीजै, वाके बदले दूसर लीजै।
कम कीमत का रहा दुशाला, तुमको देंगे कीमत वाला।

सिद्ध शिरोमणि दीवान के असली आशय को समझ गये कि वह कोई चमत्कारी सिद्धि देखना चाहता है, जिससे कि बादशाह की योग के प्रति आस्था बढ़ सके।

धूनी में से बहुत दुशाले गुरूदेव ने तुरँत निकाले,
दीवान जी के आगे डारे, लेओं चीन्ह जो होई तुम्हारे।

इस प्रकार से श्री बाबा जी ने योगबल से अंगारों में से अनेकों दुशाले निकालकर ढेर लगा दिया।

दीवान इस चमत्कार को देखकर आनंदमग्न हो गया। वह बाबाजी के चरणों में गिरकर क्षमा माँगने लगा। तत्पश्चात्

उनके श्री चरणों की वन्दना करते हुए उनके असली रूप के विषय में पूछने लगा।

योगीराज ने बताया कि- मैं स्वयं गोरक्षनाथ हूँ। मैं तो आलमशाह को कुछ देने आया था, किन्तु वह तो मेरी ही परीक्षा लेने लगा है। विनाशकाले विपरीत बुद्धिः, यह बड़ी दुर्भाग्य की बात है। सिद्धों की परीक्षा लेना कितना अनर्थकारी होता है, यह बात शायद तुम्हारा राजा नहीं जानता। जिस राज्य में सिद्धों का आदर नहीं अपितु उनकी परीक्षा ली जाती है, उनका अपमान किया जाता है। वह राजा किसी कृपा के योग्य नहीं , अपितु श्राप देने के योग्य है । तुम्हारा राजा वास्तव में बड़ा ही भाग्यहीन है। श्री बाबाजी ने दीवान से कहा कि वह आलमशाह को जाकर बतला दे कि मुझे किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, हम तो रमते योगी है। हमें किसी भी संसारिक पदार्थ की कोई आवश्यकता नहीं है । तुम्हारा बादशाह विषयान्ध हैं उसे वास्तवकिता का कुछ भी ज्ञान नहीं है। अब जैसा उसने किया है उसे वैसा ही फल मिलेगा।

दीवान श्री बाबा मस्तनाथ जी की चरण वन्दना करके और योगीराज की धूनी में से निकले दुशालों को हाथ में लेकर वह बादशाह के पास पहुँचा और वहाँ जाकर उसने समस्त घटना विस्तार पूर्वक बादशाह को कह सुनाई।

बादशाह सारी घटना सुनकर भली-भाँति समझ गया कि श्री बाबा मस्तनाथ जी बहुत ही पहुँचे हुए सिद्ध हैं।

उधर सिद्ध शिरामणि बाबाजी ने अपने समस्त शिष्यों को बुलाकर कहा कि वे सब एक साथ उल्टा नाद बजावें और कहें, कि यहाँ कोई तीसरी सत्ता ही राज्य करें। गुरू आज्ञा मानकर शिष्यों ने एक साथ उल्टा नाद बजा दिया। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अब यहाँ कोई तीसरी शक्ति ही राज्य करे। उनमें से एक शिष्य कीरतनाथ ने उल्टा नाद नहीं बजाया, दूसरे शिष्यों ने कीरतनाथ से कहा कि तुमने गुरू की आज्ञा का उल्लंघन किया है।

गुरूदेव ने कीरतनाथ से नाद न बजाने का कारण पूछा, तो कीरतनाथ ने कहा- गुरूदेव! मेरी समझ में यह नहीं आया कि यहाँ पर कौन सी तीसरी सत्ता राज्य करेगी।

गुरूदेव ने कीरतनाथ की शंका का निवारण किया, और कहा- हे शिष्य! यहाँ बहुत जल्दी ही तीसरी शक्ति आने वाली है। वह तीसरी शक्ति मन्दिर और मस्जिद किसी को भी नहीं मानेगी, वह राम व रहीम किसी का भी आदर नहीं करेगी। साथ ही श्री बाबाजी ने आलमशाह को शाप भी दिया कि- जिस भूमि का, जिस राज्य का आज तू बादशाह है, वहाँ तुझे मरने के बाद दो गज भूमि भी नहीं मिलेगी।

कुछ ही देर के पश्चात् आलमशाह श्री बाबाजी के पास पहुँचा और उनसे क्षमा-याचना करने लगा। वह बाबाजी से शाप से बचने का उपाय पूछने लगा। श्री बाबाजी ने कहा- जैसे धनुष से निकाल हुआ बाण वापस नहीं आ सकता, वैसे ही साधुओं द्वारा दिया गया शाप भी वापस नहीं हो सकता। फिर भी वह श्री

बाबाजी से कहने लगा ''हे महात्मा!'' मैं आपको देने के लिए कुछ भेंट लेकर आया हूँ कृपा करके आप इस भेंट को स्वीकार करें।

बाबाजी ने कहा- योगी तो सदैव त्यागी होते हैं। मोह-माया के बन्धनों से दूर रहते हैं। धन दौलत की उन्हें आवश्यकता नहीं होती। अतः ''हे राजा!'' मुझे कुछ नहीं चाहिये।

बादशाह बार-बार सिद्ध योगी के श्री-चरणों में गिरकर विनय करने लगा। संत हृदय श्री बाबाजी ने कहा- आलमशाह! यदि कुछ भेंट करना ही चाहते हो तो मुझे पाँच कुइयाँ भेंट में दीजिये। हर कुई एक मील की दूरी पर हो। इस प्रकार श्री बाबाजी ने जनकल्याण हेतु पाँच कुईयों का निर्माण कराया। इस तरह पाँच मील में पाँच कुइयों होने से ही दिल्ली में बहुत ही प्रसिद्ध पंचकुइयाँ रोड़ है।

आज भी वही और उसी स्थान पर श्री बाबाजी द्वारा प्रज्वलित, धूना विद्यमान है। जिनके लाखों व्यक्ति दर्शन करते हैं। (यह धूना ठीक बनवारी लाल चेरिटेबल अस्पताल के निकट है। बनवारी लाल अस्पताल के कुछ ही फर्लांग की दूरी पर जो गोल चक्कर है उसका नाम श्री बाबा मस्तनाथ चौक है।)

इतिहास साक्षी है कि आलमशाह से उसके अपने ही विश्वासपात्र सेवकों ने विश्वासघात किया। जिससे कि उसके साम्राज्य का पतन हो गया। तीसरी शक्ति (अंग्रेजों) ने दिल्ली राज्य में लम्बे समय तक राज्य किया।

यह भी सत्य हैं कि मरने के बाद आलमशाह को दिल्ली में दो गज स्थान भी नसीब नहीं हुआ।

दिल्ली के पश्चात् श्री बाबा मस्तनाथ जी ने चित्तौड़गढ़ के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में अनेक स्थानों पर योग मार्ग का उपदेश करते हुए शनैः शनैः चलकर वह चित्तौड़गढ़ पहुँचे।

हीरा परखे जौहरी सोना सहज सुनार।
सन्त को परखे संत ही, जो उतरै भवपार।।

श्री बाबा मस्तनाथ जी द्वारा संत हरिदास जी की परीक्षा लेना

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि महान आत्माओं को महान आत्मायें ही पहचानती हैं। एक बार सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी भ्रमण करते-करते झाड़ौदा के जंगलों में जा पहुँचे श्री बाबाजी जंगल में हरियाली का आनंद उठाते-उठाते अचानक से संत हरिदास के सम्मुख प्रकट हो गये। उस समय संत हरिदास जी गाय चरा रहे थे। गऊ सेवा में उन्हें बहुत आनंद आता था। जिस समय बाबा मस्तनाथ जी हरिदास जी के सम्मुख प्रकट हुए तो दोनों सिद्धों ने दिव्य दृष्टि से एक दूसरे को पहचान लिया।

संत हरिदास जी इस प्रकार से अचानक श्री बाबा मस्तनाथ जी को आया देखकर और उनके दर्शन पाकर अति प्रसन्न हुए। संत हरिदास जी ने अपनी ओढ़ी हुई चादर को ही

उतारकर श्री बाबा मस्तनाथ जी के आसन के लिए बिछा दिया। जंगल में ही श्री बाबाजी की पूजा वन्दना की और बहुत भावुक हो गये। संत हरिदास ने उनसे भोजन के लिए प्रार्थना की। संत जी कहने लगे कि- हे महात्मा जी! हे सबका कल्याण करने वाले योगी श्रेष्ठ! अब आप मेरे साथ मेरी कुटिया में चलकर भोजन ग्रहण कीजिए।

श्री बाबा मस्तनाथ जी ने संत हरिदास से कहा- ''भाई!' अन्न तो मैं खाता नहीं, केवल दूध ही पीता हूँ और वह भी बिना ब्याई हुई बछिया का। यदि संभव हो सके तो निकाल कर पिला दो।

श्री बाबा मस्तनाथ जी का प्रश्न सुनकर संत हरिदास जी ने अपना कमण्डल उठाया और एक बिना ब्याई हुई बछिया को श्री बाबा मस्तनाथ जी के सम्मुख खड़ा कर उसकी पीठ थपथपाई और मन ही मन प्रार्थना करने लगे- हे गौ माता! हे कामधेनु! आज मेरी लाज आपके ही हाथ में है, इसलिए हे माता मेरी लाज बचाना। ऐसी प्रार्थना कर संत हरिदास जी बछिया का दूध दुहने बैठ गये। संत जी ने चारों थनों में पानी के छींटे दियें भगवान की ऐसी कृपा हुई कि जिस भी थन का हरिदास जी ने स्पर्श किया, उसी में दूध उतर आया। यह देखकर संत हरिदास का हृदय खुशी के मारे गद्-गद् हो रहा था। उन्होंने गऊ माता (बछिया) को एवं भगवान को कोटि-कोटि धन्यवाद दिया। बछिया का दूध उन्होंने खुशी-खुशी से सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी को पीने के लिए दिया। बिन ब्याई बछिया का दूध पीकर श्री बाबा मस्तनाथ जी अति प्रसन्न हुए। उन्होंने संत हरिदास जी को

आशीर्वाद दिया, और मठ अस्थल बोहर आने का निमन्त्रण दिया। संत हरिदास जी को आशीर्वाद देकर श्री बाबा मस्तनाथ जी घूमते-घूमते मार्ग में धर्म उपदेश देते हुए मठ अस्थल बोहर पहुँच गये।

संत हरिदास भी बहुत पहुँचे हुए सिद्ध थे उनके लिए कुछ भी करना असम्भव नहीं था। संत जी पलभर में ही असंभव को संभव कर दिखाते थे।

धन्य संत तेरी यौगिक माया।
जगत ने तुमको शीश नवाया।
श्री मस्तनाथ जी जब मिलने आये।
दूध बछिया का काढ़ पिलाये।
जय हो संत तेरी अद्‌भुत माया।
सब भक्तों ने मेवा पाया।

संत हरिदास द्वारा श्री बाबा मस्तनाथ जी की यौगिक सिद्धि देखना

एक बार संत हरिदास जी के मन में भी यह विचार आया, कि मैं भी एक बार बाबा मस्तनाथ जी की तपस्थली जाकर देखूँ और साथ में यह भी देखूँ कि उनमें कितना योगवल है। यही विचाकर संतजी मठ अस्थल बोहर जा पहुँचे।

श्री बाबा मस्तनाथ जी की तपस्थली देखकर संत जी का हृदय अतिप्रसन्न हुआ। तपस्थली का भ्रमण करते-करते वे

देवालय तालाब पर जा पहुँचे। तालाब की सुन्दरता तो देखते ही बनती थीं चारों तरफ भाँति-भाँति के वृक्ष पंक्तिबद्ध खड़े थे। वृक्षों के नीचे घनी छाया में पशु-पक्षी बड़े स्नेह से विचरण कर रहे थे। शेर, चीता, हाथी, मोर, सांप, नेवला, बिल्ली इत्यादि सब के सब एक ही साथ तालाब में पानी पी रहे थे। यह दृश्य देखकर संत जी का हृदय अति आनंदित हुआ। उनके मुख से अनायास ही निकल पड़ा ''वाह क्या नजारा है''। तपस्थली का भ्रमण करने के पश्चात् संत जी अन्दर पहुँचे। वहाँ उनका बहुत आतिथ्य सत्कार हुआ। भोजन के समय श्री बाबा मस्तनाथ जी के शिष्यों ने श्री संत हरिदास जी को भोजन का निवेदन किया। भोजन करने के लिए श्री संत जी श्री नाथ जी के भंडारे में पहुँचे भोजन करने से पहले संत ने कहा- ''हे भाई!'' मैं तो भोजन करने से पहले अपना कमण्डल घी भरकर पीता हूँ उसके बाद भोजन करता हूँ। मठ के साधु जो श्री नाथ जी के भंडारे में कार्यरत थे, वे अति शीघ्रता से घी का बारा उठकार ले आये और श्री संत जी से कहने लगे कि- संत जी! अपना कमण्डल आगे कीजिए, हम इसे घी से भर देते हैं। पहले आप अपना कमण्डल घी का भर कर पी लीजिए, तत्पश्चात् भोजन पा लेना। कमण्डल में घी डालते - डालते पूरा का पूरा बारा खत्म हो गया किन्तु कमण्डल भरने का नाम ही नहीं ले रहा था यह सब देखकर कुछ शिष्य घबराकर श्री बाबा मस्तनाथ के पास पहुँचे और कमण्डल घी से न भरने वाली पूरी घटना उनको कह सुनाई।

श्री बाबा मस्तनाथ जी ने कहा- 'हे प्रिय शिष्यो! तुम्हें घबराने की अवश्यकता नहीं है। संत जी की माया तुम्हारे काबू

से बाहर की है, अतः मैं स्वयं ही जाकर उनकी इच्छा की पूर्ति करूँगा।

श्री बाबा मस्तनाथ जी ने तुरंत अपना कमण्डल उठाया और श्री नाथ जी के भंडार की तरफ चल पड़े। संत हरिदास जी के पास पहुँचकर श्री बाबा मस्तनाथ जी ने उनका हार्दिक अभिनंदन किया, तत्पश्चात् उनकी कुशल क्षेम पूछी। कहने लगे- ''हे संत जी! लीजिए आपको कितना घृत चाहिए।''

संत हरिदास जी ने यह सुनते ही अपना कमण्डलआगे बढ़ाया। श्री नाथ जी ने अपने कमण्डल से श्री संत जी के कमण्डल में घी डालना आरंभ किया, लम्बे समय तक यही क्रिया चलती रही। घी की धार श्री मस्तनाथ जी के कमण्डल से बंद होने का नाम ही नहीं ले रही थी, और न ही संत जी का कमण्डल भरने का नाम ले रहा था।

इस प्रकार से दोनों सिद्धों ने एक दूसरे की तरफ देखा और मुस्कराने लगे। दोनों महात्माओं ने अपना-अपना बराबर का खेल मानकर घी डालने और डलवाने की क्रिया को अपने आप बंद कर दिया। दोनों सिद्ध महात्मा आपस में इस प्रकार से मिलकर अति प्रसन्न हुए।

धन्य संत तेरी अदभुत माया।
बोहर मठ में दर्श दिखाया।
बहुत घना अतिथ्य पाया ।
बराबर सिद्धि का खेल दिखाया ।।

मस्तनाथ से मिलकर आनंद मनाया।
जय मस्तनाथ तेरी अदभूत माया।
सब भक्तों ने शीश झुकाया।
कमण्डल घृत से खाली नहीं हो पाया।
बराबर सिद्धि का खेल दिखाया।

श्री बाबा मस्तनाथ जी के आदिकाल के शिष्य श्री रणपत धाता

एक समय गुरू रम्मत काजे, खरक ग्राम में जाय बिराजे।
ग्राम निकट पश्चिम की ओरा, धूना तहाँ लगया घोरा।
पुरजन देखि बहुत हर्षाए, लोग नगर के देखन आए।
तब गुरू कहा शिष्य द्वै मेरे, निशदिन रहत नगर में तेरे।
सो मैं लेन आज इत आया, साँच-साँच यह तुम्हें बताया।
लोगन कहा नाम बतलाओ, शिष्य होई तुम लेकर आओ।
ताछिन आये रणपित धाता, कहा लखाय देख देउ भ्राता।
यह दोउ शिष्य आदि के मेरे, क्षत्री गृह जन्में सोई हेरे।

एक बार सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी महराज भ्रमण करते हुए खरक ग्राम में जा पहुँचे। श्री बाबाजी ने गाँव में पश्चिम दिशा में अपना धूना रमाया। खरक वासियों की श्री बाबाजी के प्रति अगाध श्रद्धा थी, उन्होंने बाबाजी से कहा- हे सिद्ध योगी आपने हम लोगों पर बहुत कृपा की है, कि आप हमारे गाँव में पधारे हैं। अब आप हमारे योग्य कोई सेवा बताइये।''

श्री बाबाजी ने कहा- इस गाँव में मेरे दो परम प्रिय शिष्य रहते हैं, और उनका जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ है। मैं उन दोनों को लेने के लिए ही यहाँ आया हुँ यह चर्चा चल ही रही थी कि कुमार रणपत धाता वहीं आ पहुँचे। श्री बाबाजी ने उन दोनों कुमारों को देखते ही पहचान लिया। श्री बाबाजी ने उपस्थित लोगों से कहा- ये दोनों ही मेरे आदिकाल के शिष्य हैं।

रणपत तथा धाता दोनों कुमारों ने श्री बाबाजी के श्री चरणों में वन्दना की, और करबद्ध होकर प्रार्थना करने लगे कि- ''हे बाबाजी! आप हम दोनों भाइयों को अपना शिष्य स्वीकार कर लीजिए और हम पर अपनी कृपा कीजिए।

सिद्ध योगी श्री बाबा मस्तनाथ जी ने दोनों बालकों रणपत तथा धाता को समझाया कि- प्रत्येक कार्य विवेक तथा धैर्य से ही करना चाहिए। पहले तुम दोनों अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर आओ, उसके बाद ही मेरे साथ चल सकते हो, अन्यथा नहीं।

जब रणपत धाता के माता-पिता को यह पता चला कि बाबा जी आये हैं और वह हमारे दोनों पुत्रों को अपना आदिकाल का शिष्य बतला रहे हैं, और हमारे पुत्र भी उनके साथ जाने के लिए तैयार है तो वह बहुत घबराये। उसी समय दोनों भागे-भागे श्री बाबाजी के पास पहुँचे, और बाबाजी के चरणों की वन्दना करके कहने लगे कि- ''हे नाथों के नाथ! हे दयानिधान! हम अपने पुत्रों को बहुत प्यार करते हैं । हम इनके बिना एक पल भी नहीं रह सकते। ''हे परोपकार परायण! यद्यपि आप इन्हें

अपना आदिकाल का शिष्य बतला रहे हैं, फिर भी हम अपने पुत्रों को आपको अर्पित करने में असमर्थ है। अतः हे योगीराज! हमारी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि आप हम पर अपनी दया दृष्टि कीजिए और हमारे पुत्रों को हमारे पास ही रहने दीजिए यह कह कर अपने पुत्रों को लेकर उन्होंने अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

दोहा- कछू दिवस पुर में रहे, परम गुरू सुखरास।
कोट खोखरा तपोवन, जाय किया फिर वास।।

श्री बाबाजी इस घटना के कुछ दिन बाद तक खरक गाँव में रहे, उसके बाद पुनः अपने खोखराकोट के तपोवन में स्थित अस्थल बोहर के योगाश्रम में आ गये।

घर आकर रणपत धाता दोनों कुमारों ने अपने माता-पिता से बहुत आग्रह किया कि वे उन्हें श्री बाबाजी के श्री चरणों में भेज दें, और उन्हें योग साधना करने की अनुमति प्रदान करें। उन दोनों के इस आग्रह को अस्वीकार कर माता-पिता ने उनसे कहा-

सुनो पुत्रों बन को मति जाओ घर में बैठे राज कमाओ।
कठिन फकीरी ना तोहि सरै, रूख वृक्ष तर रहना परै।
रूखे सूखे टुकड़े जोवै, घर-घर भीख माँगना होवै।

माता-पिता ने उन्हें बहुत समझाया कहने लगे- "हे पुत्रों! योग मार्ग अत्यंत कठिन है। योग साधना करने वालों को वन खण्ड में रहना पड़ता है। भिक्षा माँग कर खाना पड़ता है और

जो भी भिक्षा में रूखा-सूखा भोजन मिलेगा वो ही खाना पड़ेगा। इसलिए हमारी बात मानों और घर में रहकर राज भोगो।

दोहा- मानो हमारा वचन सत, तुम मत होवो फकीर।
भूख प्यास सहना परै, महा दुःख गंभीर।

रणपत तथा धाता तो जन्मों-जन्मों के योगी थे, उन्हें अन्तर्ज्ञान प्राप्त था। दोनों ने माता-पिता से कहा-

हाथ जोरि तब रणपत धाता, बोले बचन सुनो पितु माता।
करम हमारे लिखी फकीरी, कैसे भोगैं राज अमीरी।
सो मैं तुम्हारी आज्ञा पाऊँ, वन में जाकर योग कमाऊँ।
हम ऐसी न फकीरी करै, घर-घर भिक्षा मांगत फिरै।

रणपत तथा धाता दोनों हाथ जोड़कर अपने माता-पिता से कहने लगे कि- हे माता जी! हे पिता जी! जब हमारे दोनों के कर्म में फकीरी ही लिखी है तो हम अमीरी का राज कैसे भोग सकते हैं। हम दोनों तो आपकी आज्ञा से योग कमाना चाहते हैं। हम दोनों सामान्य योगी नहीं होंगे, और न ही हमें भिक्षाटन के लिए कहीं जाना पड़ेगा। आप इस बात की चिंता न करें, जिस स्थान पर हम तपस्या करेंगे, भक्तगण वहीं आकर हमें भेंट-पूजा प्रदान करेंगे।

रणपत धाता ने अपने माता-पिता को यह भी बताया कि श्री बाबा मस्तनाथ जी साक्षात्-गुरू गोरक्षनाथ अवतार है। उनकी महिमा अपरम्पार है। वह अष्ट सिद्धि व नव निधियों के ज्ञाता है और वे ही हमारे गुरू हैं। इतना सब समझाने के

पश्चात् भी उनके माता-पिता ने उनकी एक न सुनी।

बालक रणपत धाता भी योग मार्ग अपनाने का दृढ़ निश्चय कर चुके थे। उन्होंने अपने माता-पिता से आज्ञा लेने का एक उत्तम उपाय खोज निकाला। वह ये बात अच्छी तरह जानते थे कि हमारे माता-पिता नितांत सांसारिक व्यक्ति हैं और मोह-माया के अधीन है। किसी भी प्रकार की हानि को वो कभी भी बर्दास्त नहीं कर सकेंगे। इसी दुर्बलता का लाभ उठाते हुए उन्होंने घर में रखा सामान घी, दूध, वस्त्र आदि सब गरीबों में बाँटना शुरू कर दिया।

माता-पिता को जब यह पता चला कि वे दोनों घर का सामान इस तरह से बाँट रहे हैं, तो उन्होंने दोनों बालकों को बहुत समझाया कि गृहस्थी लोगों को धन जुटाना मुश्किल होता है। इसलिए घर का सामान लुटाना ठीक बात नहीं है। बालकों ने उनकी एक न सुनी ओर अपने मार्ग पर अडिग रहे। अन्त में माता-पिता ने उनहें बुलाया और कहा-

दोनों को बुलाए के, कहा सुनों ये बात।
करो फकीरी जाय के , हम राजी पितु मात।

इस प्रकार से माता पिता ने आज्ञा दे दी, और कहा कि तुम दोनों श्री बाबाजी के श्री चरणों में जा सकते हो।

माता-पिता की आज्ञा पाते ही और उनका आशीर्वाद लेकर बालक रणपत धाता श्री बाबा जी के श्री चरणों में जा पहुँचे और गुरू सेवा में संलग्न हो गये।

श्री बाबाजी ने उन दोनों भाइयों की सेवाओं से संतुष्ट होकर तथा उन्हें योग-मार्ग में प्रवृत्त होने का पात्र समझकर उन्हें गुरू दीक्षा देकर ''दर्शनी'' योगी बना दिया और उनका नाम योगी श्री ''रणपतनाथ'' तथा योगी श्री ''धातानाथ'' रख दिया।

योगी श्री रणपतनाथ तथा धातानाथ की कठोर तपश्चर्या

श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी ने रणपतनाथ तथा धातानाथ को आज्ञा दी कि ''योग मार्ग'' में पूर्णता प्राप्त करने के लिए बारह वर्ष तक खड़े रहकर ही तपस्या करनी होगी। साथ-साथ ही श्री बाबाजी ने दोनों को यह भी समझाया की वे इस अवधि में जीवन की हर क्रिया खड़े रहकर ही करें। श्री बाबाजी ने उन्हें आशीर्वाद देकर यह भी कहा कि वे गर्मी में अग्नि को सम्मुख रखकर तपस्या करें तथा सर्दी में शीतल जल में प्रवेश करके तपस्या करें।

श्री रणपतनाथ तथा धातानाथ जी ने श्री गुरू चरणों में शीश झुकाया , आशीर्वाद लिया और अस्थल बोहर योगाश्रम में धूना रमाया। धूने पर खड़े रहकर ही बारह वर्ष तक तस्पया में लीन हो गये। गुरू आज्ञानुसार गर्मी में धूने के सम्मुख तथा सर्दी में निकट के देवालय तालाव में खड़े रहकर वहाँ के शीतल जल में तपश्चर्या करते रहे।

इस प्रकार से दोनों की '' हठ योग'' साधना से तथा गुरू

कृपा से श्री रणपतनाथ तथा धातानाथ को अष्ट सिद्धि तथा नव निधियाँ साक्षात् हो गयी।

दोहा- रणपत धानाथ योगी बहुत भये सरनाम।
रिद्धि सिद्धि जिनके चरन, रहती आठों याम।

अष्ट सिद्धि तथा नव निधियाँ हर समय उनकी आज्ञा पालन में तत्पर रहने लगी। अष्ट सिद्धियां तथा नव निधियाँ निम्नलिखित हैं।

अष्ट सिद्धियाँः-

1- अणिमा - शरीर को वायु अणुवत कर लेना।
2- लघिमा - शरीर को वायु से भी हल्का कर लेना। जिससे उड़ा जा सके।
3- महिमा - शरीर को इच्छानुसार बड़ा कर लेना।
4- गरिमा - शरीर को पर्वत के समान बना देना।
5- प्राप्ति - संकल्प मात्र से ही किसी भी पदार्थ को प्राप्त कर लेना।
6- प्राकाम्य - शरीर को इच्छानुसार सुन्दर व स्वस्थ बनाये रखना।
7- ईशित्व - विश्व के सभी पदार्थों को नाना रूपों में बदल देना।
8- वशित्व - पंच भूतों व विश्व के सभी प्राणियों को वश में कर लेना।

नव निधियाँ :-

१. पदम् निधि	२. महा पदम् निधि	३. मकर निधि
४. कच्छप निधि	५. मुकुन्द निधि	६. नन्द निधि
७. नील निधि	८. शंख निधि	९. खर्व निधि

श्री रणपतनाथ तथा धातानाथ दोनों बड़े ही करामाती सिद्ध हुए हैं योगाश्रम मठ अस्थल बोहर में दोनों ने योग-साधना पूर्ण करने के पश्चात् कुछ ही समय के बाद जीवित समाधि ले ली।

दोहा - जियत समाधि जिन लई, जानत है सब लोग।
करामाती प्रसिद्ध अति, पूरण जिनका योग।।

श्रद्धालु भक्तों ने इन दोनों योगियों की स्मृति में एक विशाल स्मृति मन्दिर योगाश्रम अस्थल बोहर मठ में वही मन्दिर आज भी मठ अस्थल बोहर में विद्यमान है उसी समय से आज तक अखंड घी की ज्योति सिद्ध योगी श्री रणपतनाथ तथा धातानाथ जी की स्मृति में प्रज्वलित है, जिसका लाखों व्यक्ति दर्शन करते हैं तथा अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

सिद्ध स्मृति मन्दिर प्राचीन होने की वजह से बहुत जीर्ण-शीर्ण सा हो गया था। उसके नव निमार्ण हेतु कुछ ही समय पूर्व श्री महंत चाँदनाथ योगी (वर्तमान मठाधीश्वर) ने २६ जून सन् २००१ को श्री महंत अवद्यनाथ जी महाराज (मठाधीश्वर गोरखपुर) के कर कमलों द्वारा मन्दिर के नव-निर्माण की नींव रखवायी। श्री सिद्ध स्मृति मन्दिर रणपतनाथ तथा धातानाथ जी के मन्दिर का

कार्य निर्माणाधीन है, जिसमें लगभग डेढ़ करोड़ रूपये की लागत आने की संभावना है। मन्दिर बन कर लगभग तैयार है इसके बनने में पाँच वर्ष लगे।

यचूपा ग्राम में देवीदास ग्रामाधिपति के अंहकार का शमन

एक दिवस श्री नाथ अनूपा, गवन कियो कोउ ग्राम यचूपा।
नागा तपस्वी मौनी सन्ता, रहे हाथ जिनके गुणवन्ता।
ग्राम निकट जंगल के मांहि, धूना जाय किया तरू छांहि।
सुनि-सुनि लोग नगर के आये, करि प्रणाम पद शीस नवाये।
देवीदास एक था साधू, बसै नगर विच सिद्ध अगाधू।
आदर मान भाव बहु तेरा, जिनका निशिदिन रहा घनेरा।
तासों जाय कहयों पुरबासी, आये ग्राम सन्त रासी।
नागा तपसी दूधा धारी, है समर्थ सिद्धिवर उपकारी।

सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी एक बार भ्रमण करते-करत यचूपा ग्राम में जा पहुँचे, और गाँव के समीप ही वन में धूनी लगाकर बैठ गये। योगीराज के पधारने पर गाँव के नर-नारी अत्यंत हर्षित हुए। सब लोगों ने मिलकर यह निश्चय किया कि हम सब योगी श्रेष्ठ का अत्यंत श्रद्धा भावना से सत्कार करेंगे।

यचूपा ग्राम में देवीदास नामक एक विख्यात तपस्वी भी लम्बें अर्से से रह रहा था। ग्रामीण वासियों ने सोचा कि सिद्ध

शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी के सत्कार की विधि देवीदास से पूछनी चाहिए, क्योंकि वह भी तपस्वी है। इसी शुभ विचार से गाँव के लोग देवीदास तपस्वी के पास परामर्श के लिए जा पहुँचे।

तपस्वी देवीदास अभी साधक अवस्था में ही थे, वे पूर्ण सिद्ध नहीं हुए थे। अतः अभी तक वे राग-द्वेष को नहीं जीत पाये थे। देवीदास जी ने ग्रामवासियों को परामर्श दिया कि पूजा करने से पहले उनकी परीक्षा लेनी चाहिए, कि जो सिद्ध यहाँ पधारे हैं यह पूर्णतयः सिद्ध है भी या नहीं। अगर सिद्ध हैं तो वे अवश्य ही कोई चमत्कार दिखलायेंगे।

सभी गाँव वालों ने देवीदास की बात मान ली, और ये सभी बातें श्री बाबा मस्तनाथ जी को जाकर सुना दी। उनकी बातें सुनकर श्री बाबाजी चुप ही रहे।

तीन दिवस लों सन्त निर्बानी,
रहे तहाँ बिन आदर पानी।

योगीराज श्री बाबा मस्तनाथ जी गाँव के उस जंगल में निरन्तर भूखे बैठे रहे, पर गाँव के किसी एक व्यक्ति ने भी उनको एक बूँद पानी के लिए भी नहीं पूछा। इस प्रकार से तीन दिन भूखे और बिना आदर सत्कार के बैठकर संतजी ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा कि वास्तवकिता क्या है? परन्तु वे तब भी चुप ही रहे।

गवन समय एक सज्जन आयो, हाथ जोड़कर शीश नवायो।

बाल्यो बचन एक यहि भाँति, मालिक ग्राम भयो विष्याती।
घर-घर ताने हुकम लगाया, परजाजन को भय दिखलाया।
जो कोई जावें योगी तीरा, ताको त्रास देउँ गम्भीरा।

जब श्री बाबा मस्तनाथ जी वहाँ से जाने लगे, तो उसी समय एक सज्जन भागा-भागा आया, और श्री बाबाजी से हाथ जोड़कर कहने लगा कि- ''हे दयानिधान! हे नाथों के नाथ! इस गाँव के एक अहंकारी तपस्वी देवीदास ने समस्त ग्रामवासियों को बुलाकर यह कह दिया है कि जो कोई बाबा मस्तनाथ जी के पास जाकर उनको भेंट-पूजा देगा, उसकी कुशल नहीं होगी।'' इसी भय के कारण गाँव वाले आपके पास नहीं आये, और न ही आपका आदर सत्कार किया। इसीलिए हे सिद्ध शिरोमणि तीन दिन तक कोई भी ग्रामवासी आपकी सेवा में उपस्थित नहीं हो सका।

उस सज्जन की वाणी से गाँव की यह स्थिति सुनकर श्री सिद्ध योगी जी को अत्यंत क्षोभ हुआ, उन्होंने उस सज्जन भक्त से कहा- ''हे भक्त! जितनी जल्दी हो सके तुम अपना सामान लेकर इस गाँव को छोड़ दो, क्योंकि इस गाँव पर बहुत जल्द ही कोई विपत्ति आने वाली है ।

श्री बाबा जी के श्री मुख से गाँव के अमंगल की जानकारी पाकर सज्जन अति शीघ्रता से अपने घर पहुँचा और सामान बाँध कर जल्दी से गाँव छोड़कर जाने लगा। श्री बाबा ने भी अपने शिष्यों के साथ दूसरे गाँव को प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर जंगल में श्री बाबाजी ने अपना धूना रमाया। इस गाँव

के लोग बहुत श्रद्धालु और धर्मपरायण थे।

श्री बाबाजी के जंगल में पहुँचते ही उन्होंने सिद्ध श्री योगी जी का हार्दिक स्वागत किया तथा योगी श्रेष्ठ को बहुत ही आस्था तथा निष्ठा के साथ रखा।

उधर भक्त सज्जन दूसरे गाँव में पहुँचा भी नहीं था कि रास्ते में उसे एक बिल्ली मिली जो उसके गाँव से ही चली आ रही थी। उस बिल्ली ने अपने मुँह में अपने नवजात शिशु को दबा रखा था, और भय से व्याकुल होकर भागती जा रही थी। सज्जन समझ गया कि इस अपशकुन का कारण भी गाँव का अमंगल ही है।

गाँव वालों ने जब उस सज्जन पुरूष को गाँव छोड़कर जाते हुए देखा तो सब लोग उसका उपहास करने लगे और कहने लगे कि गाँव में कोई विपत्ति नहीं आयेगी। अतः तुम गाँव छोड़कर कहीं मत जाओ।

सज्जन पुरूष ने कहा कि सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी के श्री मुख से निकले वचन कभी असत्य नहीं हो सकते। इस गाँव में अवश्य ही कोई विपदा आने वाली है।

ऋषि मुनि ज्ञानी कहत पुकारे, भावी विपदा टरत नाहि टारे।
कोविद पंडित बुद्धिजन राजा, समय विचारत करत है काजा।
कोटि-कोटि कोउ जतन करावे, गया वक्त फिर हाथ ना आवे।
भाषत मुनिवर वेद पुराना, औसर चूके है पछिताना।
ताते करिये बेगि उपाई, जो गुरूदेव कहा समुझाई।

वह सज्जन पुरूष अभी दूसरे गाँव के सीमा पर ही पहुचाँ था, कि उसने पीछे मुड़कर देखा, देखते ही वह आश्चर्य चकित रह गया। उसका गावं धूँ -धूँ करके जल रहा था। घरों में से आग की भयंकर ज्वालायें निकल रही थीं। गाँव वालों के आग बुझाने के सभी प्रयास असफल रहे। सब लोग चिल्ला-चिल्ला कर रो रहे थे। बड़ा ही हृदय विदारक दृश्य था।

इस भयंकर अग्निकांड से दुःखी होकर सब लोग देवीदास तपस्वी के पास पहुँचे। और कहने लगे कि हमें इस अग्नि संकट से बचाओ।

तपस्वी देवीदास ने स्पष्ट बतला दिया कि मैं इस संकट से गाँव को बचाने में असमर्थ हूँ

दोहा- अग्नि बुझाई न बुझी, चला न एको तन्त्र।
सादिक पूछा सिद्ध से, कहाँ गये वे मन्त्र।

इस प्रकार से ग्रामवासियों ने देवीदास को बहुत लज्जित किया। फिर सबने विचार किया और कहने लगे कि हमें तो ऐसा लगता है कि ये सब श्री बाबा मस्तनाथ जी के कोप के कारण हुआ है।

योगी कोप महादुखदाई, चौदह भुवन देत थर्राई।
सागर पर्वत छिन में जारै, कोप किये परलौ करि डारै।
अग्नि तेज सीत कर राखै, कालहि जीत बह्मरस चाखै।
राई परबत परबत राई, करि करि छिन में देत दिखाई।
सूखी नदिया नीर बहावै, बिन बादल जल को बरसावै।

तीनि लोक का करता योगी, सदा अकाल बह्मरस भोगी।
असंख्य कल्प मन्वन्तर ताई, योगी जन्म लेत है नाही।
रहत अकाल काल ना जाके, अष्ट सिद्धि आज्ञा बस ताके।

सब लोग अपने किये पर बहुत पछता रहे थे, और कह रहे थे कि योगियों का कोप, उनका श्राप बहुत दुखदाई होता है। उनके कोप से तो चौदह के चौदह भुवन काँपते हैं। योगी तो अपनी सिद्धि से पलभर में ही टूटे पर्वत जोड़ सकते हैं, काल को जीतकर बह्म को प्राप्त कर लेते हैं। पलभर में राई से पर्वत और पर्वत राई बना देते हैं। सूखी नदियों में जल बहा देते हैं, और बिना ही बादल के वर्षा कर देते हैं। इसी तरह श्री बाबाजी काल को जीतकर तीनों लोकों में सदैव ब्रह्मरस का आनंद प्राप्त करते हैं। ऐसे महान योगी असंख्य मन्वन्तरों में कभी एक बार ही जन्म लेते हैं ऐसे योगियों का काल कभी नहीं आता, वे तो अज़र अमर होते हैं। अष्ट सिद्धियाँ हमेशा उनकी आज्ञा में तत्पर रहती हैं।

सभी ग्रामीण इकट्ठे होकर श्रद्धा भावना के साथ श्री बाबा मस्तनाथ जी के श्री चरणों में पहुँचे और उनकी चरण वन्दना करने लगे। उनसे बारम्बार क्षमा माँगने लगे। संत हृदय उनकी इस भक्ति भावना से प्रसन्न हुआ, और उनको क्षमा कर, श्री बाबाजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

श्री बाबाजी का आशीर्वाद पाकर गाँव के सभी लोग वापस आ गये और सुख-पूर्वक रहने लगे।

अंहकारी स्त्री को श्री बाबाजी ने दिव्य ज्ञान प्रदान किया।

अजन्में ब्रह्मचारी, गोरक्षावतार, दिगम्बर रूपधारी श्री बाबाजी एक वचन सिद्ध येागी थे, उनके श्री मुख से निकला हुआ प्रत्येक वचन सर्वदा सत्य सिद्ध होता था।

सिद्ध शिरोमणि भ्रमण करते तथा योग प्रचार करते हुए, एक बार कलोई गाँव से चलकर बोहर गाँव में पधारे। गाँव के बाहर पनघट पर बहुत सी महिलायें पानी भर रही थी। उनमें एक नवयुवती भी थी, अत्यंत सुन्दर थी वह महिला, उसके रूप की चर्चा दूर-दूर तक थी। युवती का नाम पाई देवी था। साधु-महात्माओं और भगवान में उसका विश्वास नहीं था। वह अपने पति को ही सब कुछ समझती थी। उसके पति का नाम चौधरी हरिसिंह था।

जैसे की ऊपर बताया जा चुका है कि श्री बाबाजी दिगम्बर रूपधारी थे, वे सदैव निर्वस्त्र ही रहा करते थे। उन्हें निर्वस्त्र विचरण करते देखकर अहंकारी रूपवती पाईदेवी ने अपनी दूसरी सखियों से कहा-

योगी एक बावला नंगा, देखु सही कस जात बिहंगा।
धूल लपेटे अंग में सोई, लाज शरम जाके ना होई।
ताके पाछे केती दुनियाँ, दौरे जात है ब्राह्मण बनियाँ।
मति के हीने सकल पुरबासी, देखि-देखि मोहिं आवत हँसी।

यह योगी तो मुझे पागल दिखाई दे रहा है। इसकी

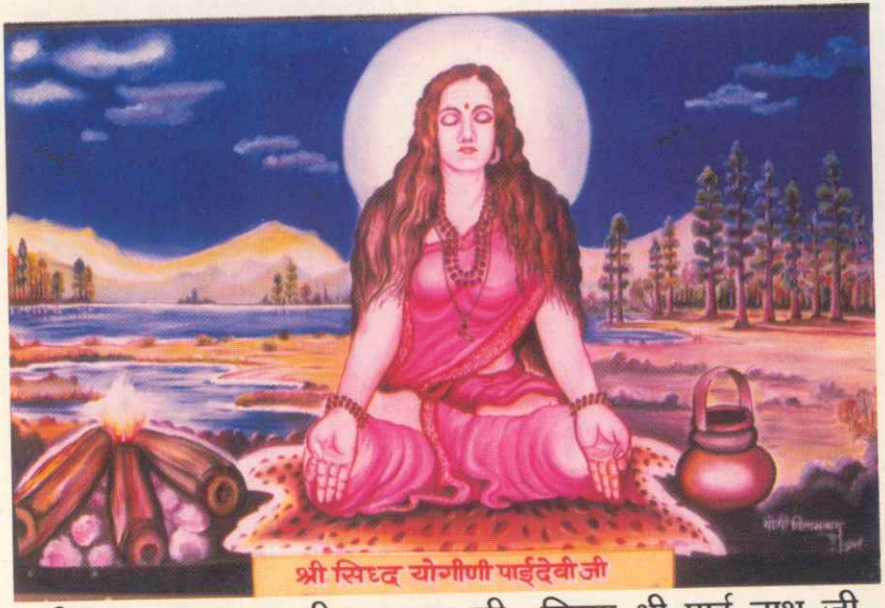

श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज की शिष्या श्री पाई नाथ जी

जात-पात का भी कुछ पता नहीं है। अपने नंगे शरीर पर धूल लपेट कर घूम रहा है। नंगे होने पर भी इसको कोई शर्म लाज नहीं है। मुझे तो इसकी नग्नता देखकर ग्लानि हो रही है। नग्नता साधु का स्वरूप नहीं होता है। फिर भी इसके पीछे कितनी दूनियाँ चली जा रही है। लेकिन धर्मपरायण लोग अपने भाग्य की सराहना कर रहे थे, कि आज हमारे कितने अहोभाग्य हैं कि हमें श्री बाबाजी के दर्शन हुए। पाई देवी कह रही थी कि ये जो इस नग्न साधु की प्रशंसा कर रहे हैं, मुझे तो लग रहा है कि इन सबकी बुद्धि ही भ्रष्ट हो गई है। मुझे तो इन सब पर हँसी आ रही है।

सुनि-सुनि के यह गर्वित वाणी, लगे बिचारन तब गुण खानी।
यह नहिं जानत मोंको नारी, याको गर्व रूप को भारी।
ताते करूँ कछु मैं लीला, जासों जानैं सब गर्बीला।

श्री बाबा मस्तनाथ जी ने उस गर्वीली स्त्री की इस प्रकार की बातें सुनकर कहा- यह स्त्री शायद मुझे जानती नहीं है। इसको अपने रूप और यौवन पर बहुत गर्व है। यह ये भूल गई है कि साधु-संतों को इस प्रकार से नहीं बोलना चाहिये। श्री बाबाजी ने उस स्त्री से कहा- ''हे अभिमानी स्त्री! जा तू भी नंगी हो जा।'' यह सुनकर पाई देवी बौखला उठी, और कहने लगी ''यह बाबा तो निरा पागल है। मैं ऊँचे कुल में ब्याही हुई हूँ मैं भला ऐसी मूर्खता क्यों करूँगी।

पनघट से पानी भरकर और बातें करते-करते सब महिलायें अपने-अपने घरों को लौट आई। श्री बाबाजी भी अपने

शिष्यों समेत अस्थल बोहर मठ में चले आये।

पाई देवी जैसे ही पानी भरकर अपने घर पहुँची, उसके अन्तःकरण से आवाज आई कि श्री बाबा मस्तनाथ जी ही तुझे पार उतारेंगे। देखते ही देखते उसके विचारों में परिर्वतन होना शुरू हो गया। उसको घर-गुहस्थी, धन सम्पत्ति तथा परिवार सब एक झमेला लगने लगा। वह सोचने लगी कि मोह ममता में फँसकर मैं तो सत्य से बिल्कुल भटक गई हूँ मुझे जल्द ही इस संसार का त्याग कर देना चाहिये।

पाई देवी के मन में ये विचार आते ही उसे एक मार्ग सूझ गया।

दोहा- उसे हुआ बैराग्य अति, वस्त्र दिये उतार।
विभूति मली शरीर पर, फेंके हार श्रृंगार।।

वह तुरन्त रसोई घर में गई और वहाँ से चूल्हे की राख उठकार सारे शरीर पर मल ली, वस्त्र आभूषण उतारकर फेंक दिये। और वह पूर्णतयः निर्वस्त्र हो गई। घर के आँगन में वह आँखें बन्द करके बैठ गई और शिव-गोरक्ष का जाप करने लगी। कभी वह ध्यान में बैठ जाती तो कभी वन की तरफ भागने लगती।

हरिसिंह किसी कार्यवश बाहर गया हुआ था, लेकिन गाँव के लोगों ने जब उसे यह समाचार दिया तो वह स्तब्ध रह गया। वह तुरन्त ही अपने घर पहुँचा। उसने देखा पाई देवी निर्वस्त्र विभूति रमाए शिव-गोरक्ष मन्त्र का जाप कर रही है। सबसे

पहले उसने पाई देवी के नग्न शरीर को वस्त्रों से ढक दिया। परन्तु पाई देवी ने कोई भी वस्त्र स्वीकार नहीं किया। हरिसिंह ने क्रोधित होकर उसे एक कमरे में बन्द कर दिया। प्रभु भजन में लीन स्त्री को किसी भी दंड का कोई असर नहीं हुआ।

वास्तव में पाई देवी अब रूप यौवन के गर्व से दूर हो चुकी थी, उसके समस्त विषय विकार दग्ध हो चुके थे। उसने आत्म-ज्ञान को पहचान लिया था। अब वह पूर्ण रूप से योगिनी बन चुकी थी।

हरिसिंह ने उसे बहुत समझाया और कहने लगा-

रूप बनाया कौन सा, कारण कैसा होय।
सत्य-सत्य मोसों कहो, लाज दई क्यों खोय।।

पाई देवी का पति हरिसिंह कहने लगा- "हे प्रिय!" तुम्हारे इस सुन्दर मुख को आज तक कोई भी नहीं देख पाया था, परन्तु आज सभी लोग इस मुख की निंदा कर रहे हैं। वह कहने लगा कि तुम तो अपनी नन्हीं सी बेटी मैना को बहुत प्यार करती थी, परन्तु आज तो तुम उसकी तरफ देख भी नहीं रही हो, तुमने तो उसे भी त्याग दिया है। "हे पाई देवी!" तुम हम दोनों का परित्याग मत करो।

बोहर ग्राम में चारों तरफ पाई देवी की ही चर्चायें चलती रही, लेकिन पाई का इस प्रकार से अचानक शिव-गोरक्ष मंत्र जपने का कारण पता नहीं चल सका। हरिसिंह सब प्रयत्न करके थक चुका था, सब कुछ उसकी समझ से बाहर था। कुछ

दिनों के पश्चात् पाई देवी की सखियों ने हरिसिंह को बताया कि- एक दिन तुम्हारी पत्नी हमारे साथ पानी भरने के लिए पनघट पर गई थी। उसी समय वहां सिद्ध योगी श्री बाबा मस्तनाथ जी अपने शिष्यों समेत भ्रमण करते-करते आ पहुँचे। वह दिगम्बर रूप में थे। श्री बाबाजी को नग्न अवस्था में देखकर पाई जोर-जोर हँसने लगी, और उनको कितने ही निन्दक वचन सुनाने लगी। इस प्रकार निन्दक वचन सनुकर श्री बाबाजी ने इसको स्पष्ट कह दिया कि- ''जा तू भी नंगी हो जा।''

दोहा- कारण रहा सो कहि दिया, पनिहारी समुझाय।
योगी का कुछ खेल यह, अद्‌भुत मोहि दिखाय।।

सारा हाल जानकर हरिसिंह के मन में बाबाजी के प्रति हिंसा की भावना पैदा हो गई। उसने निश्चय किया कि वह बाबाजी से अवश्य बदला लेगा। क्योंकि उन्हीं के कारण मेरी सुखी गृहस्थी में ग्रहण लग गया है।

एक दिन अवसर पाकर हरिसिंह ने शस्त्र उठाये और बाबाजी की हत्या करने के विचार से उनके धूने की और चल पड़ा। योगाश्रम में देवालय तालाब था, बाबाजी तालाब के किनारे-किनारे घूम रहे थे। हरिसिंह ने यह उत्तम अवसर समझा। उसने शस्त्र से बाबाजी पर बार किया, लेकिन निष्फल रहा। ऐसे ही उसने श्री बाबाजी पर तीन बार वार किया, लेकिन तीनों बार शस्त्र प्रहार व्यर्थ सिद्ध हुआ।।

हरिसिंह के मन में विचार आया कि यह बाबा तो कोई सिद्ध पुरूष ही है, इस पर आक्रमण करना तो व्यर्थ है।

हरिसिंह के तीनों वार निष्फल करके सिद्ध बाबा जी ने हरिसिंह को अपना विराट रूप दिखाना उपयुक्त समझा।

सिद्ध पुरूष की गति मति न्यारी, लखि ना सके कोउ संसारी।
नाथ भयंकर रूप दिखाया, बड़ी-बड़ी भुजा भूधरी काया।
छिन आगे, छिन पाछे देखे, छिन दायें छिन बायें पेखे।
कहीं गुपत कही परघट सूरा, कहीं निकट कही देखै दूरा।

हरिसिंह ने अत्यन्त आश्चर्य से देखा कि सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी का आकार अतीव विशाल होता जा रहा था, उनकी भुजाऐं विशाल और लम्बी होती जा रही थी। यह सब देखकर हरिसिंह थर-थर कांपने लगा। उसने बचने का एक ही उपाय सोचा, कि श्री बाबाजी के चरणों में गिरकर उनसे क्षमा याचना करनी चाहिये।

दोहा- हाथ जोड़ कहने लगा, क्षमा करो गुरूदेव।
अज्ञानी मैं मूरखा, जान सका नहिं भेद।।

हरिसिंह श्री बाबा जी से करबद्ध हो प्रार्थना कर कहने लगा कि- हे दीनानाथ! हे नाथों के नाथ! हे सिद्ध महापुरूष! हे दिगम्बर रूपधारी मैं अपनी गलती के लिए क्षमा चाहता हूँ। हे संत शिरोमणी! मैं अज्ञानी हूँ मूर्ख हूँ आपके विषय में कुछ भी नहीं जानता था, हे करूणानिधान! मुझे क्षमा करके अपने इस विराट स्वरूप का त्याग कर दीजिए। आपके इस स्वरूप को

देखकर मेरे प्राण निकलने वाले हैं, मुझे बहुत घबराहट हो रही है।

हरिसिंह की बारम्बार विनती करने से श्री बाबाजी ने उसको क्षमा कर दिया, और अपने विराट स्वरूप का भी परित्याग कर दिया। इस प्रकार श्री बाबाजी अपने सामान्य रूप में आ गये।

श्री बाबा मस्तनाथ जी हरिसिंह को समझाते हुए कहने लगे- ''हे भक्त! साधु-संतों को कोई भी मनुष्य प्रिय या अप्रिय नहीं होता। और न ही वह किसी का अनिष्ट चाहते हैं। सासांरकि मनुष्य चाहे जितनी भी गलतियाँ करें, कितने भी उन पर प्रहार करें? साधु संत फिर भी उनका भला, ही चाहते हैं। संतों की दृष्टि में सभी समान होते हैं।

इस प्रकार बाबाजी से ज्ञान प्राप्त करके हरिसिंह सीधा अपने घर पहुँचा, वहाँ से अपनी पत्नी और अपनी बेटी को लिया और श्री बाबाजी के चरणों में पहुँच गया। हरिसिंह हाथ जोड़ कर कहने लगा- हे सिद्ध शिरोमणि मैं अपनी प्रिय पुत्री और पत्नी को आपके श्री चरणों में सौंप रहा हुँ हे पुभ! आपके ज्ञानोपदेश से मेरा अज्ञान दूर हो गया है, मेरा अंहकार मोह, क्रोध सब दूर हो गया है। हे दयानिधान! आप इन दोनों को ज्ञानोपदेश देकर इन पर कृपा कीजिए।

सिद्ध बाबाजी ने उन दानों पर कृपा करके अनुगृहीत किया।

दोहा- मैना पाई छोड़ के, लेकर आशीर्वाद।
हरिसिंह घर को गया, पूर्ण हुई मुराद।।

शुभ मुहर्त देखकर बाबाजी ने उन्हें नाथ सम्प्रदाय में दीक्षित कर उन्हें ''दर्शनी'' योगिनी बनाया। पाई का नाम ''पाईनाथ'' तथा मैना का नाम ''मैनानाथ'' रखा।

गुरू की आज्ञा ले परवीनी, खड़ी तपस्या कुछ दिन कीनी।
तरूण अवस्था गोरे गाता, रही प्रसिद्ध अवधूतिनि माता।

इस प्रकार से उन दोनों ने श्री गुरू कृपा से खड़ी तपस्या की, और परम पद को प्राप्त हुई। उन दोनों का यश पूरे हरियाणा राज्य में फैल गया।

दोहा- अद्‌भुत लीला बाबा की, है पवित्र पहिचान।
गुरू प्रताप वर्णन करी, बुद्धि अपनी अनुमान।

श्री बाबा मस्तनाथ जी द्वारा अपने शिष्यों को शरीर रूपी दिव्य ज्ञान प्रदान करना

श्री बाबा मस्तनाथ जी सदैव ही की तरह अपने समस्त शिष्यों के साथ भ्रमण करने कहीं जा रहे थे। मार्ग में चलते-चलते वह अपने शिष्यों को समझाते हुए जा रहे थे। जैसे भगवान कृष्ण ने महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन को दिव्य गीता का ज्ञान दिया था उसी प्रकार से श्री बाबाजी ने भी अपने शिष्यों को शरीर रूपी दिव्य ज्ञान प्रदान किया।

महाभारत युद्ध के पश्चात् एक दिन अर्जुन ने श्री कृष्ण से पूछा- हे भगवन्! आज आप एक बार और मुझे गीता ज्ञान के विषय बताइये।

श्री कृष्ण ने कहा- हे अर्जुन! मैं तुझे गीता ज्ञान अवश्य दूँगा, किन्तु आज वह बात नहीं है, जो उस समय थी। उस समय तुमने मेरा विराट रूप देखा था, तुम्हारे भी उस समय दिव्य चक्षु थे, क्योंकि तुम इन नेत्रों से मेरा वह विराट स्वरूप नहीं देख सकते थे। इसीलिए मैंने ही तुम्हें दिव्य दृष्टि प्रदान की थी। उस समय मैंने जो तुम्हें ज्ञान दिया था वह दिव्य गीता ज्ञान था। आज न तो विराट स्वरूप मेरा ही है, और न ही तुम्हारी वह दिव्य दृष्टि है हे सखा! आज वह दिव्य ज्ञान नहीं होगा। इसलिए जो ज्ञान जिस समय दिया जाता है उसको उसी समय ध्यानपूर्वक सुनकर धारण करना चाहिये। कहने का तात्पर्य यह है कि- जब श्री बाबाजी ने देखा कि अब शिष्यों को इस ज्ञान की अति आवश्यकता है तो उन्होंने सब शिष्यों को समझाते हुए कहा-

जगत समाया बिन्दु में, बिन्दै में ब्रह्माण्ड।
बिन्दु नूर परकास तन, बिंद में उपजै पिण्ड।।
आदि नूर है बिन्दु में, बिन्दु न खोवो कोय।
सूक्ष्म बिन्दु जानै बिना, ज्ञान मुक्ति ना होय।।

हे प्रिय शिष्यो ! हमारा यह शरीर एक समूचा ब्रह्माण्ड हैं, जो इस विस्तृत ब्रह्माण्ड में है, उसे ही बीज रूप में मानवी पिण्ड

में संजो दिया गया है। साधना के द्वारा ही इन बीजों को अंकुरित किया जा सकता है। शिव संहिता में यह शरीर ब्रह्माण्ड संज्ञक है। जो बाह्माण्ड में है, वही इस शरीर में भी स्थित हैं, यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे।

अब मैं तुम्हें सात समुद्र और सातों द्वीपों का वर्णन सुनाता हूं। जो कि इस संसार में है, और वही हमारे शरीर में है। मज्जा में जम्बूद्वीप, हड्डियों में शाक द्वीप, नाड़ियों में सूक्ष्मद्वीप, त्वचा में क्रौञ्चिद्वीप, रोमों में गोमयद्वीप, नखों में श्वेत द्वीप और माँस में प्लक्ष (पुष्कर) द्वीप है।

हे शिष्यों! अब सात समुद्रों का वर्णन ध्यान से सुनो- मूत्र में क्षार (खारा) समुद्र, लार में क्षीर समुद्र, कफ में दधि समुद्र, मज्जा में घृत समुद्र चर्बी में मधु समुद्र, रक्त में इक्षु समुद्र और शुक्र में अमृत का समुद्र है। अब मैं तुम्हें आठ पर्वतों का वर्णन बताता हूँ- सुमेरू पर्वत शरीर के मेरूदण्ड में, कैलाश पर्वत मस्तक में, हिमालय पीठ में, मलयाचल बायें कन्धे में, मन्दाचल दायें कन्धे में, बिन्ध्याचल दक्षिण कान में और लालट में श्री शैल नामक पर्वत है। और बहुत से छोटे बड़े पर्वत हाथ-पैर की सब अंगुलियों में रहते हें। अब नदियों का वर्णन सुनाता हूँ पीनसा, गंगा, यमुना, सरस्वती, चन्द्रभागा, व्यास, शतलुज, श्री रात्री और नर्मदा ये नौ नदिया नौ नाड़ियों में रहती है। गंगा, यमुना, सरस्वती ये तीनों इड़ा, पिंगला औरा सुषुम्णा में रहती हैं तथा अन्य नदियाँ बहत्तर हजार नड़ियों में रहती है।

हे शिष्यो ! अब सत्ताईस नक्षत्र, बारह राशियाँ नवग्रह,

पन्द्रह तिथियाँ ये सब शरीरस्थ माँस पेशियों के बहत्तर हजार कोष्ठों में रहते हैं। तारा मंडल हड्डियों के रचना विशेष या भूख प्यास रूपी ऊर्मिपुञ्य में रहते हैं। तैंतीस करोड़ देवी-देवता समस्त रोम छिद्रों में बसते हैं, दानव, यक्ष राक्षस, भूत पिशाच और प्रेत शरीर की हड्डियों के जोड़ों में रहते हैं। गन्धर्व, किन्नर, और अप्सराओं के समूह उदर में रहते हैं। मेघ नेत्रों के आँसुओं में बसते हैं। दोनों नेत्रों में चन्द्र और सूर्य रहते हैं। वृक्ष, लता आदि जंघा के रोमों में रहते हैं। कीट पतङ्गदि विष्ठा में बसते हैं।

श्री बाबाजी अपने शिष्यों को बड़ी गंभीर मुद्रा में समझाते जा रहे थे। आगे वह बताने लगे- हमारा यह शरीर तो एक सराय है, और भगवान ने इसको बहुत ही आकर्षक बनाया है। इसी शरीर रूपी सराय में परमात्मा का दिव्य धाम है। अज्ञानी मनुष्य परमात्मा को बाहर ढूँढने का प्रयत्न करते हैं। वे यह नहीं जानते कि परमात्मा के प्रत्यक्ष दर्शन हम अपने भीतर ही कर सकते हैं। आवश्यकता है तो केवल अंहकार और अज्ञान रूपी मैल को परमात्मा के ही नाम से धो डालने की और अविरल भाव से उसी में लीन रहने की। आगे बाबाजी ने बताया कि हमारे इस शरीर में दस द्वार हैं, जिनमें से नौ द्वार तो प्रत्यक्ष हैं, परन्तु दसवाँ द्वार अप्रत्यक्ष है, उसे साधारण जन मानस नहीं देख सकता। अत्यंत परिश्रम, साधना व ध्यान के द्वारा ही इस द्वार के दर्शन संभव है। योगी, महात्मा इस दसवें द्वार के दर्शन भली भाँति कर सकते हैं।

अब पंचभूत का वर्णन बताता हूँ । जिससे कि हमारा यह शरीर बना है पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश यह पञ्चभूत संतान कहलाता है। ये सब आदिनाथ की शक्ति से उत्पन्न हुये है।

इन पञ्चमहाभूतों के गुण और अधिष्ठाता देवों का वर्णन सुनिये। पृथ्वी की कठोरता आदि गुण और ब्रह्मा अधिष्ठातृ देवता है। जल का गुण गीलापन और विष्णु देवता है। अग्नि का गुण उष्ण और रूद्र देवता है। वायु का गुण चलना है और देवता ईश्वर है। आकाश का गुण स्थिर (अचल) है और देवता सदाशिव है।

पाच तत्व का पुतला रचा एक ओंकार।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, ये पाँचों रचे विकार।
पाँचों रचे विकार मार, इन पाँचों को विषभार करो।
पच्चीस भूतनी कर वश में, इस मानव तन का उद्धार करो।।
ब्रह्मचर्य का व्रत धार, सब अपने मन शुद्ध विचार करो।
यह सहो कष्ट, रहो हृष्ट'पुष्ट, मझदार से बेड़ा पार करो।
ध्यान हरि से लगाओं, भजन में सब समय बिताओ।
मन मारो और संताप हरो तो, मुक्ति के पद को पाओ।।

हे शिष्यो! ज्ञानी पुरूषों को इस शरीर का अहंकार नहीं करना चाहिये। यह शरीर शाश्वत् नहीं है, यह तो नश्वर है, पानी के बुलबुल के समान है, जो तेज वायु के एक झोंके के आते ही नष्ट हो जायेगा। जिन पाँच तत्वों से मिलकर यह शरीर

बना है, उसी में विलीन हो जायेगा। इसलिए समय को व्यर्थ की बातों में नष्ट नहीं करना चाहिए। हर समय प्रभु भजन में लीन रहना चाहिए।

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे।
आओ प्रभु गुण गाओ रे, यही समय है प्यारे।
उदय हुआ हरिनाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे। यही समय....
छल कपट और झूठ को त्यागो सत्य में चित्त लगाओ रे, यही समय....
हर की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे, यही समय.....
कर लो नाम प्रभु का सुमिरन, नहीं पीछे पछताओ रे, यही समय.....
छोटे बड़े सब मिलकर खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे यही समय.....

मनुष्य की प्रवृत्ति उसके गुणों के आधार पर ही होती है। ये गुण तीन प्रकार के हैं, सात्विक, राजसी और तामसी, सात्विक गुण वाला मनुष्य शाँत रहता है, सात्विक भोजन ग्रहण करता हैं एवं प्रभु भजन में लीन रहता है। राजसी गुण वाला व्यक्ति राजसी ठाट-बाट से रहना पसंद करता है, अपनी सुख-सुविधा का ध्यान रखता है तथा अपने खाने-पीने का ध्यान रखता है।

तामसी गुण वाला मनुष्य तो बहुत ही निकृष्ट प्रवृत्ति का होता है और उसमें हर प्रकार के अवगुण देखने को मिलते हैं। हे शिष्यो ! अब मैं तुम्हें कुण्डलिनी शक्ति के विषय में बताऊँगा, चित्त को एकाग्र करके समझना। प्राणशक्तियों की केन्द्रीभूत शक्ति को देवी कुण्डलिनी कहते हैं। इसे देवी, महादेवी, शिवा, प्रकृति, भद्रा रूद्रा, नित्या, गौरी, धात्री तथा शक्ति आदि नामों

से जाना जाता है। जिस प्रकार वन, पर्वत, समुद्र आदि धारण करने वाली धरती माँ का आधार अनन्त नाग है उसी प्रकार शरीर की समस्त गति और क्रिया शक्ति तथा सब योग तन्त्रों का आधार ''श्री कुण्डलिनी शक्ति'' है।

शरीर की समस्त शक्ति एक स्थान पर कुण्डली मारकर सर्प के समान बैठी रहती है, इसलिए इसका नाम कुण्डलिनी है।

श्री कुण्डलिनी मूलाधार निवासिनी है, यही हत्पदम्स्था प्राण शाक्ति है, यही कण्ठस्था तथा स्वप्नायिका है, यही तालुस्था होकर सदाधारा कहलाती है। और बिन्दुस्था होकर बिन्दु मालिनी कहलाती है इच्छा शक्ति, क्रिया और ज्ञानशक्ति ये तीनों एकत्र होने पर यह त्रिशक्तित्ता कहलाती है । इसे ही नाद शक्ति भी कहते हैं।

शिव की शक्ति चिद्रूप होने पर भी जीवदेह में वह मूलाधार कुण्ड में अचिद्रूप में सोई रहती है, एवं जीव को अपने शिव-स्वरूप का अनुभव नहीं होने देती। पंच भौतिक तत्व तथा चित्त ये छः केन्द्र रूप में रहकर छः चक्रों का निर्माण करते हैं। छः चक्रों का विराट स्वरूप इस प्रकार से है।

प्रथम चक्र मूलाधार चक्र :- मानव शरीर में स्थित चक्रों में नीचे से ऊपर की ओर यह प्रथम चक्र है। सब चक्रों का मूल आधार होने से इस चक्र की मूलाधार की संज्ञा हुई अर्थात् सब चक्रों के मूल में यह चक्र है। मूलाधार चक्र का नाम ही आधार

चक्र है। यह चक्र गुदा प्रदेश में स्थित है। इस आधार कमल कमल में चार दल पंखुड़ियां हैं, इसका रंग पीला है। इसके देवता गणपित जी है। इस आधार चक्र की पवित्रता, चैतन्यता, ऊर्ध्वमुखता से ही समस्त शरीर की शुद्धता, जागृति, स्वास्थ्य, बल, बुद्धि की वृद्धि और स्थिरता होती है। इसका आधार हाथी की सुंड के समान है। इस चक्र का कार्य शरीर के व्यर्थ मल को विसर्जित करना है। इस चक्र की अशुद्धता से समस्त शरीर मलिन हो जाता है। इसी चक्र के नीचे श्री कुण्डलिनी महानिद्रा में सोयी रहती है। यह चक्र पाचन शक्ति को ठीक रखता है।

स्वाधिष्ठान चक्र :- यह चक्र लिंग स्थान में है। यह श्वेत वर्ण का है। इस कमल में छः दल हैं। इस चक्र में कृकल नाम की नाड़ी और इसी नाम की वायु है। इसका कार्य मूत्र विसर्जन करना है। यह पुरूषों के बीर्य और स्त्रियों के रज का स्थान है। रज-वीर्य से ही सन्तान की उत्पति होती है। प्रजा की उत्पति होती है। इसलिए इस चक्र के देवता श्री ब्रह्मा जी हैं इसकी साधना से धैर्य, विवेक, बल, क्षमता, विश्वास और दृढ़ता की प्राप्ति होती है।

मणिपूरक चक्र :- इस चक्र का स्थान नाभि देश हैं यह कमल नीले रंग का हैं, और दस दल का है। इस कमल में प्रधान नाड़ियों इड़ा, पिंगला और इनके बीच में सुषुम्ना नाड़ी है। इस कमल में समान वायु का निवास है। पूरे शरीर को इसी स्थान से भरण-पोषण मिलता है। इसके देवता श्री विष्णु जी हैं। समान वायु हृदय से प्राण और गुदा से अपान का आकर्षण

करती है। प्राण और अपान के मिलने का नाम श्वास है। यही प्राण अपान का मेल श्वास नाभि कमल से मेरूदण्ड होता हुआ शिखर में पहुँचता है तथा तत्वों की गति के अनुसार नासिका द्वारा बाहर आता है। पूरे ब्रह्माण्ड में व्यापक महाप्राण और पिण्ड शरीर में स्थित अल्प प्राण की नाभि मूल में एक गाँठ पड़ी है, जिस समय यह ग्रन्थि खुल जाती है, उसी समय श्वास, प्रश्वास की गति, रूक जाती है, और शरीर मृत हो जाता है। मणिपूरक चक्र कमल में मनरूपी भ्रमर निवास करता है और समय-समय पर विभिन्न दलों पर भ्रमण करता है। और भिन्न-भिन्न इच्छाओं को उत्पन्न करता है। इस चक्र की साधना से शान्ति, आनंद, समता, वैराग्य, तन्मयता, निश्चलता, एकांतप्रियता प्राप्त होते हैं।

अनाहत चक्र :- इस चक्र का स्थान हृदय है। यह बारह दल का कमल है। इसका रंग धुँये जैसा है। यहाँ प्राण वायु का स्थान है, इस चक्र के देवता शिव है, जो समस्त शरीर का पोषण और रक्षण करते हैं। इस चक्र की सिद्धि से निर्लोभता, प्रेम, सत्यता, सावधानता, समदर्शिता, अहिंसकता, वात्सल्यता, विवेकशीलता, जिज्ञासुता, दया, क्षमा और करूणा की शक्ति प्राप्त होती है।

विशुद्ध चक्र :- इस चक्र का स्थान कंठ है, इसका रंग नीला है और यह सोलह दल का कमल है। इस कमल का अधिष्ठाता जीव है। इस कमल का छेदन होने पर तत्काल मृत्यु हो जाती है। इसकी साधना करने से सोलह प्रकार के योग के

साधन की शक्ति आ जाती है।

आज्ञा चक्र :- इस चक्र का स्थान भ्रूमध्य त्रिकुटी है। इसका श्वेत वर्ण है। इस कमल की दक्षिण तरफ गन्धारी और हस्तिनी नाड़ी है। इन दोनों नाड़ियों का कार्य नेत्रों को प्रकाश देना है। यह चंक्र ज्ञानेन्द्रियों का केन्द्र है। इस पर प्रकृति, पुरूष, माया, ब्रह्म का संयोग है। यह ज्ञान प्रदान करने वाली ज्योति का भंडार है। शरीर के वाम भाग से इड़ा दक्षिण से पिंगला तथा ऊर्ध्व भाग से सुषुम्ना नाड़ी आकर मिलती है। इसलिए इससे वृत्तियां अर्न्तमुखी होती है। मन की चंचलता मिटती है। नेत्रों का प्रकाश बाहर भीतर के अंगों को देख सकता है।

सहस्रार चक्र :- सहस्र दल कमल सहस्रार का स्थान मस्तिक हैं इसके सहस्र दल है। इसका रंग धूम्र के समान हैं यह समस्त प्रकार के ज्ञान की उत्पति का स्थान है। समस्त शरीर के संचालन का केन्द्र मस्तिष्क है, यहां से समस्त प्रकारकी आज्ञा प्रचारित होती है। प्रत्येक इन्द्रिय इसी की आज्ञानुसार कार्य करती है। यह स्थान ब्रह्म स्थान, शिव स्थान, मुक्ति स्थान, अमृत लोक, शिखर लोक आदि नामों से जाना जाता है। यह नाभि कमल से उठे श्वास का विश्राम स्थान है। महाशक्ति कुण्डलिनी मूल कमल आधार चक्र से जाग्रत होकर इसी शिखर में प्रवेश करती हैं, तभी साधक को जीवन मुक्त अवस्था प्राप्त होती है। इस कमल में वृत्ति की लय से संसार सपने के समान मिथ्या प्रतीत होता है। इस स्थान से सदैव अमृत का स्राव होता रहता है। जिस समय यह अमृत स्रव बंद

हो जाता है, उस समय शरीर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। यह स्थान शरीर की सभी धमनियों का अन्तिम स्थान है। यह अमृत का ऊर्ध्वमुख कूप है, जिसमें सुरति रूपी पनिहारिन रात-दिन नीर भरती रहती है। इस स्थान पर वृत्ति सुरति का स्थिर होना ही निर्विकल्प या सहज समाधि है।

श्री बाबाजी ने शिष्यों को आगे बताया- मानव मस्तिष्क ज्ञान का भंडार है। मानव मस्तिष्क में तो न जाने कितना और कितने ही जन्मों का ज्ञान भरा हुआ है। साधारण जनमानस को इस विषय में जानकारी नहीं है। इस दिव्य ज्ञान गंगा को तो योगीजन ही अपने योगबल से अनुभव कर सकते हैं। मानव मस्तिष्क की संरचना बड़ी अद्‌भुत विचित्र तथा जटिल है। वास्तव में मस्तिष्क बड़ा ही रहस्यमयी और विचित्र हैं अधिकतर मस्तिष्क कोशिकायें प्रायः सुषुप्ति अवस्था में रहती है। ज्यादा से ज्यादा मस्तिष्क का दस प्रतिशत भाग ही काम करता है।, शेष भाग मूर्छित पड़ा रहता है। इस सोये हुए भाग में से जो व्यक्ति जितना अधिक अंश जागृत कर लेता है। वह उतना ही बुद्धिमान और ज्ञानवान बन जाता है। यह केवल योग साधना के द्वारा ही संभव हैं अर्थात् ध्यान योग से ही संभव है। इस ज्ञान को योग की भाषा में कुण्डलिनी जागरण कहते हैं। जिस व्यक्ति की कुण्डलिनी जागृत हो जाती है।, वह तीनों कालों का ज्ञाता हो जाता है, और जिसकी कुण्डलिनी या तीसरा नेत्र जागृत हो गया उसको चारों ओर परमात्मा के ही दर्शन होते हैं। वह मनुष्य शान्ति और केवल महाशान्ति में ही मग्न रहता है।

हे शिष्यो! संत महात्मा या किसी महापुरूष का सिर पर आशीर्वाद स्वरूप अपना हाथ रखना, इसी ओर संकेत करता है, कि सिर पर हाथ का स्पर्श होते ही उनके शक्तिशाली और बलिष्ठ मस्तिष्क की विद्युत शक्ति प्रवाहित हो उठती है। जिसके दुर्बल मस्तिक में भी भारी परिवर्तन की संभावना संभव है। देवताओं, संत-महात्माओं और सद्गुरू के चरणों में मस्तक रखने या सिर झुकाने के पीछे यह रहस्य है।

हे प्रिय शिष्यो! करम करे शुद्ध होत मन, फिर उपजत है ज्ञान।
ज्ञान उपजि मुक्ति मिले, कहते वेद पुराण।।

इस शरीर में जो सुख है उसे ही स्वर्ग जानो, और जो दुःख है। उसे ही नरक जानो।

मानव समझता है कि मानसिक विकास अच्छी से अच्छी शिक्षण पद्धति पर निर्भर है, यह मात्र एक भ्रम है शिक्षा से तो केवल जानकारी बढ़ती है। जिज्ञासाओं का समाधान होता है। और नये-नये प्रश्नों का जन्म होता है। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। हे शिष्यो! मानसिक विकास तो चित्त की एकाग्रता पर निर्भर है। और यह ध्यान योग द्वारा ही संभव है।

सिद्ध गुरू श्री मस्तनाथ ने देकर निर्मल-ज्ञान।
सारी जोग जमात संग, आगे किया प्रस्थान।

सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा के श्री चरणों में शिष्या शिवानी का कोटि-कोटि नमन्।

सर्व सिद्धि सम्पन्न युगल योगीश्वरों की सांकेतिक वार्ता

गुणातीत, सर्वेश्वर, ज्योर्तिमय, योगधारी श्री बाबा मस्तनाथ जी एक दिन अपने पावन धूने पर विराजमान थे। उसी समय उनके शुभ दर्शनों हेतु सिद्ध श्री भर्तृहरिनाथ जी उनके पास पधारे।

पूज्यपाद श्री बाबाजी ने सिद्ध योगी श्री भर्तृहरिनाथ की ओर एक अंगुलि उठाकर कोई संकेत किया। इसके उत्तर में सिद्ध योगी भर्तृहरि जी ने अपने कंधे की ओर संकेत किया, और अपनी एक अंगुलि अपनी नासिका पर रखी।

सिद्ध योगी श्री भर्तृहरिनाथ जी के प्रत्युत्तर में श्री बाबाजी ने अपनी अंगुलि पृथ्वी की ओर करके उससे कोई संकेत किया।

इस प्रकार दोनों सिद्धजनों ने संकेत ही संकेत में अपना वार्तालाप पूर्ण कर लिया।

श्री बाबाजी के समीप बैठे उनके शिष्यों तथा उपस्थित अन्य योगीजनों को इस वार्तालाप का कोई भी अर्थ समझ में नहीं आया, वे सब के सब विस्मय विमुग्ध हो बैठे ही रह गये।

योगियों तथा शिष्यों ने इन संकेतों के अर्थ समझने के संबध में एक दूसरे से पूछा, परन्तु सबका यह उत्तर था कि वे इन संकेतों को बिल्कुल भी नहीं समझ पाये।

समस्त शिष्यों ने निश्चय किया कि वे इन संकेतों का अर्थ को गुरूदेव से अवश्य पूछेंगे। सभी शिष्य मिलकर श्री बाबाजी के चरणों में उपस्थित हुये। सबने श्री गुरूदेव से बड़ी विनय पूर्वक पूछा- ''हे भगवन्!'' आप हम सब पर कृपा करके उस सांकेतिक भाषा में जो आपने वार्तालाप किया था उसका अर्थ समझाने का अनुग्रह करें। हे गुरूदेव! साथ ही यह भी समझाने की कृपा करें कि वह दूसरे योगेश्वर कौन थे ?

श्री बाबाजी ने सभी शिष्यों से कहा कि अन्य योगी श्री भर्तृहरिनाथ ज़ी थे। उन्हें देखकर मैंने एक अंगुली से संकेत किया था, उसका अर्थ यह था कि आप कहाँ से पधारे हैं ?

मेरे प्रश्न के उत्तर में सिद्ध योगी भर्तृहरि जी ने अपने कंधे पर हाथ रखा, इसका अर्थ यह था कि वे इस समय बंगाल से आ रहे हैं। साथ ही उन्होंने अपनी नासिका पर अंगुलि रखी थी, इसका अर्थ था कि वे भम्रण करते-करते नासिका तक थक चुके हैं। योगी भर्तृहरि जी का आशय था कि इन प्रवासों में उन्हें अत्यन्त कष्ट सहना पड़ा है, और उन्हीं कष्टों के कारण उनका नाक में दम आ गया है।

इस पर मैंने धरती माता की ओर संकेत करके उन्हें समझाया, कि जैसे यह जड़ धरती सब प्रकार से सहनशील है, उसी प्रकार से योगियों को भी सदैव सहनशील रहना चाहिए। उन्हें सांसारिक कष्टों तथा विघ्न बाधाओं से घबरा कर कभी भी अपने अंगीकृत कष्ट-सहन के मार्ग से भटकना नहीं चाहिऐ। मेरे इस परामर्श को उन्होंने अंगीकृत कर लिया वे आश्वस्त हो गये और यहाँ से प्रसन्नचित विदा हो गए।

श्री बाबाजी द्वारा शिष्यों को सम्बोधित करना

सर्वश्री बाबा मस्तनाथ जी ने अपने शिष्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि योगियों का यह पावन कर्तव्य है कि वे अपने मन को सदा संयम में रखें।

सुरत निरत मन समुझि के, घटन ही में तू ढूर।
ईश्वर तेरे पास है, तू मत भटकै दूर।।

योगियों को अपने मन पर पूर्ण नियन्त्रण रखना चाहिये तथा सिद्ध मार्ग पर चलकर योग साधना में पूर्णतया प्राप्त करनी चाहिये। योग साधना से न केवल सामान्य सिद्धियां प्राप्त होती है, अपितु 'हठ योग' साधन से तो महाकाल को भी जीता जा सकता है। योगी जब पूर्णता प्राप्त कर लेता है, तब यमराज की भी यह सामर्थ्य नहीं रहती कि वह उन पर अपने कालदंड का प्रहार कर सके। इस प्रकार 'हठ योग' साधना से योगीजनों के लिए वह मार्ग खुल जाता है, जिस पर चलकर वे सदा के लिए अजर-अमर हो जाते हैं।

गगन अटारी त्रिकुटी, जपि ले अजपा जाप।
आवागनम न होय पुनि, छूटि जाय सब ताप।।

श्री बाबाजी की महायात्रा के विषय में जानकारी

कीर्ति भूषण, पुराण पुरूष, धर्मधेनु, बुद्धिदाता श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज एक दिन अपने खोखराकोट (वर्तमान

मठ अस्थल बोहर) स्थित तपःस्थल पर एक कैर के वृक्ष की छाया में बैठे थे। ब्रह्मचिंतन में लीन श्री बाबाजी के पास महासिद्ध श्री चौरंगीनाथ जी पधारे।

दोनों योगियों ने 'आदेश-आदेश' के द्वारा एक दूसरे का अभिनंदन किया और परस्पर शुभ-दर्शन लाभकर परम आनन्दित हुए। श्री बाबाजी ने सिद्ध योगी श्री चौरंगीनाथ जी से उनके पधारने का कारण पूछा।

सिद्ध योगी श्री चौरंगीनाथ जी ने श्री बाबाजी को स्मरण कराया और कहा-

कब तक विचरोगे सुखधामी, चलना चाहिये रमता रामी।

''हे गुरूदेव कब तक आप यहाँ रमण करते रहोगे, यहाँ आकर आपने कितने ही शिष्यों को योग-मार्ग में प्रवृत तथा दीक्षित किया है, उनको योग-मार्ग में पारंगत किया है, कितने ही दुःखीजनों के कष्टों का हरण किया है, अतः हे गुरूदेव अब आपको चलना चाहिये। जिस कार्य के लिए आप यहाँ आये थे, वह तो अब पूर्ण हो चुका है। अब आप यह बताइये कि आपकी महायात्रा कब होगी ?

श्री बाबाजी श्री चौरंगीनाथ जी के प्रेम भरे वचन सुनकर बोले- फागुन सुदी नौमी तिथि के दिवसा, गमन करेंगे निर्गुन पुरूषा।

श्री बाबा मस्तनाथ जी के इस प्रकार से वचन सुनकर सिद्ध चौरंगीनाथ जी आदेश-आदेश कहकर पलभर में ही अपने

मलियागिर पर्वत पर पहुँच गये।

दोहा- तोतानाथ सुजान जहँ, रहे शिष्य गुरू पास।
सिद्ध वचन कीने श्रवण, मन में भये उदास।।

दोनों सिद्धों के इस वार्तालाप को श्री बाबाजी के शिष्य तोतानाथ जी सुन रहे थे। उन्होंने इस विषय में और भी शिष्यों को बताया। श्री तोतानाथ जी ने समस्त शिष्यों को एकत्र किया और कहने लगे कि, हमारे गुरूदेव ने अपना शरीर त्यागने का निश्चय कर लिया है, यह सुनते ही सब शिष्यों को अत्यंत दुःख हुआ। बड़े ही दुःखी भाव से वे गुरूजी के पास गये, और कहने लगे कि- ''हे गुरूदेव!'' आपने अपना शरीर त्यागने का निश्चय किया है। यह सुनकर हमें बहुत आघात लगा है। हे ज्योतिस्वरूप! हे दयानिधान! आप हमें यह बताइये कि काल क्या है? जो हमारे गुरूदेव का भी काल आ गया। तदनन्तर श्री गुरूदेव कहने लगे कि मैं कालवश होकर इस संसार से नहीं जा रहा, किन्तु हे प्रिय शिष्यो ! मैं अपनी इच्छा से इस संसार से जा रहा हूँ।, क्योंकि लोक-मर्यादा की रक्षा करना भी तो मेरा कर्तव्य है।

समाधि पूर्व ही समाधि मन्दिर का निर्माण

श्री बाबा मस्तनाथ जी के प्रिय शिष्य तोतानाथ जी ने एक दिन श्री बाबाजी से प्रार्थना की, और कहने लगे कि- ''हे गुरूदेव!'' आपने महाप्रयाण की तिथि तो निर्धारित कर ही ली है, अब आप कृपा करके वह स्थान भी निर्धारित कर दीजिए, जहां आपके इस पावन शरीर को समाधि-मग्न किया जा सके।

श्री बाबाजी अपने तपः आसन से उठे और समीप ही पड़ी एक लकड़ी से अपने शुभ कर-कमलों से वहाँ एक रेखा अंकित कर दी। जहाँ पर सिद्ध योगी श्री चौरंगीनाथ जी की आठवीं सदी में स्थापित अटल-ज्योति जल रही थी। श्री बाबाजी कहने लगे कि इस रेखा के अनुरूप ही उनके ब्रह्मलीन शरीर को समाधिस्थ करने के लिए समाधि-मन्दिर का निर्माण करके तैयार रखो।

श्री तोतानाथ जी ने एक बहुत ही कुशल भवन-निर्माता शिल्पी को बुलाया, जो यवन कुल से संबंधित था। शिल्पी ने सिद्ध शिरोमणि के द्वारा चिन्हित रेखा के अनुसार ही ''समाधि'' मन्दिर के निर्माण के लिए आधार स्थापना हेतु खुदाई शुरू कर दी। खुदाई करने पर वहाँ उसी परिधि के ठीक अनुसार ही बहुत प्राचीन समय की अत्यंत सुदृढ़ नींव भरी हुई मिली।

भवन निर्माता शिल्पी यह चमत्कार देखकर आश्चर्य चकित खड़ा रह गया ठीक उसी रेखा के अनुसार जहाँ पूज्य पाद द्वारा रेखा खींची गयी थी, वहीं पर भरी हुई नींव मिलना कोई कम आश्चर्य की बात नहीं थी। वास्तव में यह एक बहुत बड़ा चमत्कार था।

भवन-निर्माता शिल्पी दौड़ा-दौड़ा सिद्ध महात्मा जी के पास पहुँचा, कहने लगा- ''हे भगवन्!'' हे करूणानिधान! आपकी महिमा अपरम्पार है, परन्तु ''हे गुरूदेव!'' आप मुझे यह बताइये कि यह सब कैसे संभव हुआ। यह नींव कब, किसने

और किसके द्वारा निर्मित कराई ?

सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी ने कहा- ''हे यवन शिल्पी!'' यह प्राचीन काल की नींव तुम्ही ने अपने हाथ से किसी युग में निर्मित की थी। यह प्राचीन नींव किसी अन्य के द्वारा अथवा अन्य व्यक्ति के समाधि-मंन्दिर के लिए निर्मित नहीं हुई थी। यह सुनकर भवन-निर्माता शिल्पी आश्वस्त हो गया और उसने ठीक उसी प्राचीन नींव पर सिद्ध श्री बाबा मस्तनाथ जी के ब्रह्मलीन शरीर को भविष्य में समाधिगत करने के लिए ''समाधि-मन्दिर'' का निर्माण कर दिया। इस प्रकार से वर्तमान समाधि-मन्दिर का निर्माण विक्रम सम्वत् १८६४ की फागुन शुक्ला नवमी से पूर्व ही, उनके शिष्य सिद्ध तोतानाथ जी ने करवा दिया था।

अनन्त विभूषित पूज्यपाद श्री बाबा मस्तनाथ जी का ब्रह्मलीन होना

जिन महात्मन् की सर्व ऋद्धियाँ सिद्धियाँ चरण स्पर्श करती है। वह सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी अपनी तपोभूमि अस्थल बोहर में विराजमान थे। एक दिन बिधड़ान ग्राम-निवासी, बाबाजी के अनेक शिष्य तथा श्रद्धालु भक्तगण श्री बाबाजी के श्री चरणों में आकर उपस्थित हुए। वह सब मिलकर गुरूदेव से प्रार्थना करने लगे कि- ''हे गोरक्षस्वरूप!'' हे धर्मधाम! आप कुछ समय बिधड़ान गाँव में पधारकर अपने भक्तों को कृतार्थ कीजिए।

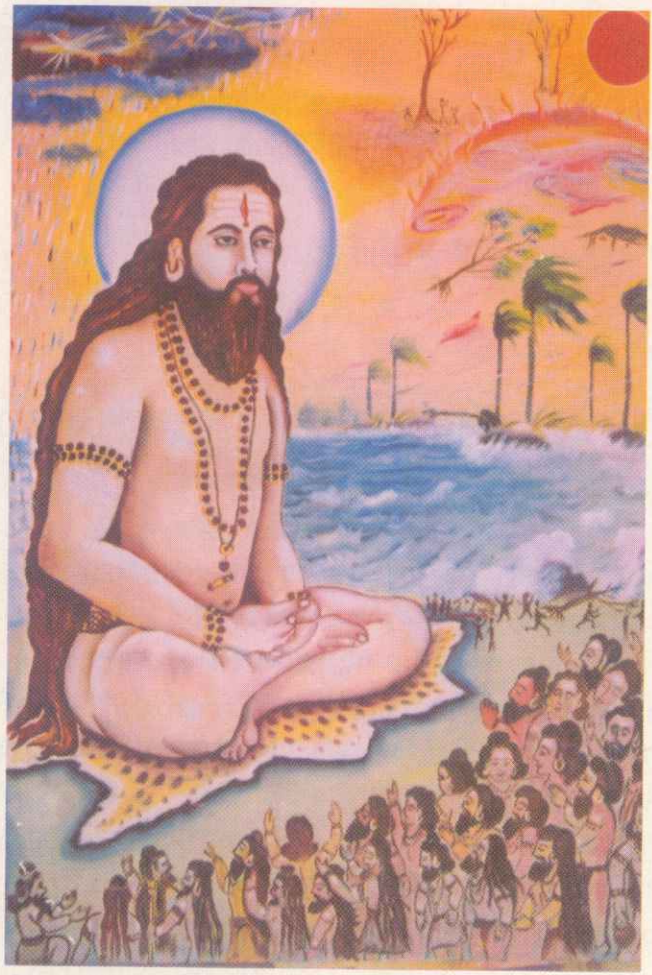

सिद्ध शिरोमणी श्री बाबा मस्त नाथ जी अपने
शिष्यों तथा भक्तों को उपदेश देते हुए

श्री बाबाजी ने सबकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, और वे उनके साथ बिधड़ान ग्राम में जा पहुँचे। ग्राम वासियों ने श्री बाबाजी का गाँव में पहुँचने पर हार्दिक अभिनन्दन किया। शिष्य व अन्य भक्तगण श्री बाबाजी की सेवा करते हुए अक्षय पुण्य का लाभ लेते रहे।

अपनी निर्वाण तिथि समीप आयी जानकर सिद्ध योगी श्री बाबा मस्तनाथ जी ने अपने सभी शिष्यों को बिधड़ान ग्रम में ही बुलवा लिया।

शिष्य सकल गुरूनाथ बुलाए, यथा उचित सबको समुझाए।
तुम सब राजी रहो समाना, हम अब गुप्त होत यहि आना।।

अपने समस्त शिष्यों को सदैव सुखी रहने का आशीर्वाद देकर कहा कि- ''हे शिष्यों, भक्तों एवं समस्त ग्रामवासियो! तुम सदा प्रभु भजन में लीन रहना। शरीरांत के पूर्व ही श्री बाबा ने यह घोषणा कर दी थी कि मेरे पार्थिव शरीर को अस्थल बोहर निवासी मेरे शिष्यगण ले जाकर पूर्व निर्धारित समाधि स्थल पर ही मुझे समाधि दें। तद्नुसार श्री बाबाजी ने इस भौतिक जगत से प्रयाण करते समय ग्रामवासियों से कहा- ''हे भक्तो!'' मेरे निर्णय और दिये हुए वचन के अनुसार मुझे अस्थल बोहर की तपोभूमि और उसी पवित्र स्थल पर ले जाना। इस संबंध में आप बोहर वासियों को सूचित कर दें।

यह कहते हुए श्री बाबा जी ने विक्रम सम्वत् १८६४ की फागुन शुक्ला नवमीं के दिन अपने योगबल से अपनी प्रायवायु

को प्राणायम् के द्वारा एवं ॐ..... की ध्वनि के साथ ब्रह्म में लीन कर लिया।

एक सहस्त्र अरू आठ सौ, चौसठ सम्वत् अन्त।
नौमी तिथि फागुन सुदी, मस्तनाथ गुप्तन्त।।

सिद्ध श्री बाबा मस्तनाथ जी के ब्रह्मलीन होने का समाचार विद्युत वेग से सारे प्रदेश में फैल गया।

गाँव के भक्तों ने अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार अपने-अपने अधिकार को प्रदर्शित करते हुए श्री बाबाजी के भौतिक शरीर को उठाने का प्रयास किया, किन्तु उस गाँव के सैकड़ों लोग मिलकर भी श्री बाबाजी के पार्थिव शरीर को नहीं उठा पाये। इसके पश्चात् बोहर वासियों ने सहज ही श्री बाबाजी के पार्थिव शरीर को उठाकर बोहर की ओर प्रस्थान किया। आश्रम में पहुँचकर जिस स्थान पर श्री बाबाजी को समाधि देनी थी, कुछ देर के लिए श्री बाबाजी के पार्थिव शरीर को शिष्यों, भक्तों एवं ग्रामवासियों के दर्शनार्थ हेतु रख दिया। श्रद्धालु भक्तों ने जब दर्शन करने के लिए कम्बल हटाया तो, देखा, कम्बल के नीचे श्री बाबा का स्थूल शरीर नहीं था। उनके स्थान पर केवल कम्बल ही मौजदू था। कम्बल को ही उपस्थित भक्तों ने दण्डवत-प्रणाम किया और पुष्पांजलि समर्पित की।

वहाँ पर उपस्थित एक सती ने श्री बाबाजी के ब्रह्मलीन शरीर (कम्बल) को देखकर शंका प्रकट की।

दोहा- एक सती ने बात चलाई हम जानत थे गोरक्ष भाई।
सो यह गोरक्ष होवे नहीं, यह संशय उपज्यो मन माहि।।

उस सती स्त्री ने कहा कि मुझे तो यह लगता है कि ये गुरू गोरक्षनाथ जी के अवतार नहीं है। क्योंकि मैंने तो सुना है कि महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी तो कभी मर ही नहीं सकते। वे तो अजर-अमर हैं।

सती की बात सुनकर और उसकी शंका का निवारण करने के लिए आकाशवाणी के द्वारा श्री बाबा मस्तनाथ जी ने कहा-

गोरक्ष योगी जियत हैं, मरत न एको आन।
तैं निश्चय दृढ़ राखु मन, क्यों भूलत अज्ञान।।

यह बिल्कुल सत्य है कि महायोगी श्री गोरक्षनाथ जी ने कालदंड का छेदन कर दिया है, और वे मृत्युंजयी हो गये हैं। इसमें अज्ञानवश संशय करने की कोई आवश्कता नहीं है।

इस प्रकार से समस्त भक्तजन असमंजस में पड़ गये और सोचने लगे कि सिद्ध शिरोमणि को समाधि दी जाए या नहीं।

शिष्यों तथा भक्तों की सन्देह निवृत्ति के लिए पुनः आकाशवाणी हुई कि- ''हे शिष्यो ! समस्त शंकाओं का परित्याग करके सिद्ध योगी के शरीर (कम्बल) को ''समाधिस्थ'' कर दिया जाए।''

आकाशवाणी के पश्चात् सभी शिष्यों ने सब शंकायें त्याग दीं तथा गगन भेदी जय ध्वनि के साथ श्री सिद्ध योगी मस्तनाथ जी के ब्रह्मलीन शरीर (कम्बल) को पृथ्वी माता को अर्पित कर दिया।

नाथ नवाऊँ माथ मैं, स्वामी तुमको जान।
कृपा करो मुझ अज्ञानी पर, करूँ निछावर प्रान।।
मस्तनाथ गुरूदेव का ऐसा है प्रताप।
उनके सुमिरन मात्र से छूट जाए त्रैताप।।

परम-पवित्र अखंड ज्योति

सिद्ध शिरोमणि श्री बाबाजी का सम्पूर्ण जीवन एक ज्योति-बिन्दु स्वरूप था। परम पूजनीय, योगपुँज, विघ्न विनाशक, परब्रह्म स्वरूप श्री बाबाजी जिनका नाम मात्र सुनते ही परमेश्वर में प्रगाढ़ भक्ति उत्पन्न हो जाती है। उनकी पावन स्मृति को, उनके जीवन की अनुरूपता प्रदान करने के लिए उनकी समाधि पर शुद्ध घी की अखंड ज्योति प्रज्वलित कर दी गई, तब से आज तक आँधी तूफानों के अनेकों बार थपेड़े खाकर भी अखंड ज्योति अखंड रूप से जलती आ रही है। इस अखंड ज्योति के सम्बन्ध में लोगों की धारणा है कि यह अटल ज्योति मनोवाञ्छित फल देने वाली है। अतः इसी श्रद्धा भक्ति से प्रेरित होकर प्रतिवर्ष मेले में एवं प्रतिदिन सहस्रों नर-नारी इसके शुभ दर्शन करके अपने जीवन को धन्य समझते हैं। तथा ज्योति के दर्शन करके अपनी यात्रा को पूर्ण समझते हैं।

बाबा मस्तनाथ चालीसा

दोहा - चरण शरण में आ गये, सुनो अरज मस्तनाथ।
बल बुद्धि विद्या दीजिए करो पापों का नाश।।

जय मस्तनाथ शंकर के प्यारे।
भक्तों खातिर नर तन धारे।।
सबला जी की हुई बड़ाई।
बनकर पुत्र रोशनी दिखाई।।

मस्तनाथ गुरू मन भाये।
लेकर दीक्षा अमर-पद पाये।।
अहंकार भया दर्शनी योगियों में जब।
विराट रूप दिखलाया पल भर में तब।।

नेत्र दान दिया भक्तों को।
तीन लोक में जानत तुमको।।
ग्राम यचूपा में चमत्कार दिखाया।
पल भर में सेवक को बचाया।।

भीमसिंह की भुजा कटाई।
मान सिंह को दीन्हीं बधाई।।
कहा सामंत ने सुनो हमारी।
मृत्यु लोक से तारन हारी।।

यवन मत की करी सफाई।
फिरंगी मत की नादी बजाई।।
जगह-जगह हो जन्म तुम्हारा।
तुम्हीं बनो भक्तन हितकारा।।

आये थे तुम प्रण निभाने।
शंकर जी का काम बनाने।।
शरण आपकी जो कोई आवे।
निश्चय मुक्ति परम पद पावे।।

कंसरेटी हुआ जन्म तुम्हारा।
अस्थल बोहर योगाश्रम प्यारा।।
वहां पर तुमने धूना लगाया।
हरि-पूजन बिन कुछ न भाया।।

हुआ बोहर मठ में आगमन तुम्हारा।
देवालय सरोवर वहां है न्यारा।।
जिसकी महिमा नहीं न जावे।
सभी चरम के रोग नसावे।।

अस्थल बोहर में करी तपस्या।
करते सबकी दूर समस्या।।
होती पूजा रोज तुम्हारी।
तन मन की दो काट बीमारी।।

मस्तनाथ झड़ौदा पहुंचे।
बिन ब्याई गुऊं का दूध भोजन में दीजे।।
हरिदास ने बछिया का दूध काढ़ पिलाया।
मस्तनाथ ने अचरज मनाया।।

दिया बुलावा बोहर मठ में आना।
योगाश्रम की शोभा बढ़ाना।।

बोहर मठ हरिदास पधारे।
दिखा दिये वहां अजब नजारे।।

भोजन खातिर तुम्हें बुलाया।
कमण्डल घी का भरवाना चाहा।।
चमत्कार देख शिष्य घबराये।
गुरू को जा सन्देश सुनाये।।

सुन सन्देशा आये नाथ जी।
घी का बारा लिए हाथ जी।।
लगे कमण्डल घी का भरने।
हरिदास की इच्छा पूरी करने।।

कमण्डल भरा नहीं संत का।
हुआ नहीं खाली बारा नाथ का।।
देख सभी ने अचरज माना।
हरिदास को सबने सिद्ध ही जाना।।

सबने उनकी करी बड़ाई।
पंगत ने जयकार लगाई।।
रिद्धि-सिद्धि है दास तुम्हारी।
जन की काटो सकल बीमारी।।

पांच तत्व प्रकृति पच्चीसा।
मन, इन्द्री दस यही चालीसा।।
इनको तुम काबू करवाते।
भक्तों को मुक्ति दिलवाते।।

जगह-जगह पर जन्म धारना।
शंकर जी का काज संवारना।।
अस्थल बोहर धाम तुम्हारा।
भक्तन के हो आप सहारा।।

मस्तनाथ चालीसा जो नित गावे।
कट जाये फंदा परम पद पावे।।
बाबा एक है आस हमारी।
दर्शन दो अब हे जटाधारी।।

श्री बाबा मस्तनाथ वराष्टकम

1. श्री मस्तनाथः सुतरां दयालु स्त्रैलोक्यचारी किल योगीराजः।
ईशं तमाराध्य करोमि भक्त्या स्तोत्रं तदीयं जनतापहारम्।।

भावार्थ - तीनों लोको में विचरण करने वाले, अति दयालु, जनता के दुःखों को हरने वाले, उस भगवान योगीराज श्री बाबा मस्तनाथ जी की आराधना करके मैं भक्ति पूर्वक उनकी स्तुति करता हूँ।

2. दुष्टेषुकालं तपसाविशालं शान्त्येकशालं भवजालकालम्।
चैतन्य माया कलनेमरालं श्री मस्तनाथं सततं नमामि।।

भावार्थ - जो दुष्टों के लिए काल के समान है, जिनकी तपस्या विशाल है, संसार रूपी भव बन्धन के लिए जो मृत्यु के समान हैं, जो जड़ चेतन को अलग करने में हंस के समान हैं, उन श्री बाबा मस्तनाथ जी को मेरा सतत् प्रणाम है।

3. सिद्धेषु बुद्धेषु चराचरेषु देवेषु वेदेष्वमित प्रभावम्।
ब्रह्मस्वरूपं परमार्थतत्वं श्री मस्तनाथं सततं नमामि।।

भावार्थ - सिद्धों में, ज्ञानियों में, चराचरों में, देवों में, वेद जिनकी अप्रतिहत गति हैं, परमार्थ तत्व, ब्रह्म स्वरूप श्री बाबा मस्तनाथ जी को मैं निरन्र प्रणाम करता हूँ।

4. विष्णुं गरिष्णुं भुवनस्य जिष्णुं धृष्णुं सहिष्णुं दुरित क्षयिष्णुम्।
सत्यं भरांत धिष्णांदधानं श्री मस्तनाथं सततं नमामि।।

भावार्थ - जो व्यापक हैं, निरन्तर स्तुति योग्य है संसार को जितने में समर्थ है, ज्ञान को धारण करने वाले हैं, सहनशील, बुराईयों का नाश करने वाले, ऋतम्भरा बुद्धि से युक्त श्री बाबा मस्तनाथ जी को मैं निरन्तर प्रणाम करता हूं।

5. विश्वस्वरूपं जगदीशरूपं धर्मैकयूपं यतिवर्गभूपम्।
वेदार्थसारं त्रयतापहारं श्री मस्तनाथं सततं नमामि।

भावार्थ - विश्व स्वरूप जो परमात्मा है, उसी का रूप धर्म के एक मात्र आधार स्तम्भ, सन्यासी वृन्द के स्वामी, वेदों के सार, तीनों तापों का हरण करने वाले, श्री बाबा मस्तनाथ जी की मैं निरन्तर स्तुति करता हूँ।

6. पापापहारं भवसिन्धुतारं स्वात्माडभिरामं प्रकृतेश्चापारम्।
योग प्रचारं भुविभारहारं श्री मस्तनाथं सततं नमामि।।

भावार्थ - पापों को हरने वाले, संसार रूपी समुद्र से पार करने वाले, अपने आप में ही लीन, प्रकृति से पार, योग प्रचार करने

वाले, संसार के भार को हरने वाले, श्री बाबा मस्तनाथ जी को मैं निरन्तर प्रणाम करता हूँ।

7. शोभा विशालं गिरीशक्षामालं शीताशुभालं निजभक्तपालम्।
अज्ञान कालं कलिकाल कालं श्री मस्तनाथं सततं नमामि।

भावार्थ - रूद्राक्ष की माला धारण करने वाले, विशाल शोभा वाले, चन्दमा के समान मस्तक वाले, अपने भक्तों के रक्षक, अज्ञान नाशक, कलियुग के लिए काल के समान श्री बाबा मस्तनाथ जी की मैं निरन्तर स्तुति करता हूँ।

8. यस्य प्रसादात्सकला जनानां कामादि दोषाः खलुयान्तिनाशम्।
धन्यं वन्दायं कत पुण्य पुञ्जं श्री मस्तनाथं सततं नमामि।

भावार्थ - जिनकी कृपा से मनुष्यों के कामादि सारे दोष निश्चय से नाश को प्राप्त होते हैं, जिनका मनोहर मुख धन्य है, जो पुण्य के पुंज हैं, ऐसे श्री बाबा मस्तनाथ जी को मेरा निरन्तर प्रणाम् हो।

9. गोरक्षमूर्ति सबला सुपुत्रं याञ्चावशात्कल्पित बाल रूपम्।
आरण्याद्यंनच योनिजातं श्री मस्तनाथ सतंत नमामि।।

भावार्थ - श्री योगिराज गोरक्षनाथ के अवतार, प्रार्थना के वशीभूत होकर बाल रूप धारण कर सबला के सुपुत्र कहलाये, जो अमैथुनी सृष्टि में पैदा हुए, जिनका जन्म दाता माता-पिता कोई नहीं, ऐसे श्री बाबा मस्तनाथ जी को मैं निरन्तर प्रणाम हूँ।

10. भक्तया विनम्रामनुजस्तुवन्ति येत्वांयथेष्टां भुवियान्ति कामान्।

मंदाररूपं तवपादमूलं श्रद्धानुकूलं फलदं नराणाम्।।

भावार्थ - जो भक्त विनम्र होकर आपकी स्तुति करते हैं, वे इस संसार में इच्छानुसार कामनाओं को प्राप्त करते हैं। आपके चरणों का आश्रय कल्पवृक्ष के समान है, जो श्रद्धा के अनुकुल भक्तों को फल देने वाला है।

श्री मस्तनाथस्य वराष्टकंये श्रृण्वन्ति चित्तेन पठन्तिडत्र।
वित्तानिधन्यानिभवन्तितेषां हित्वा च पापानिदिवं प्रयान्ति।।

भार्वाथ - जो मनुष्य श्री बाबा मस्तनाथ के वरदायक अष्टक को एकाग्राचित से सुनते हैं, पढ़ते हैं, उनके यहां धन के खजाने भरे रहते हैं, तथा मृत्यु के बाद स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।

(यह स्तोत्र हरिद्वार के योगाश्रम में रहने वाले श्री योगी शान्तिनाथ के शिष्य श्री शंकरनाथ जी ने बनाया)।

ॐ श्री बाबा मस्तनाथ सहस्रनाम्

ॐ यतये नमः, ॐ शंकरस्वरूपिणे नमः, ॐ शंकरध्याने सर्वदा तत्पराय नमः, ॐ सेवाकाय नमः, ॐ कठिन तपस्विने नमः, ॐ आनंदनिवासिने नमः, ॐ इन्द्रियाणां सेवाधारिणे नमः, ॐ योगधारिणे नमः, ॐ योगमाया सेवकाय नमः, ॐ गोरक्षाय नमः, ॐ योगसंयुक्ताय नमः, ॐ मनवृत्ति निरोधकाय नमः, ॐ ब्रह्म आविर्भूताय नमः, ॐ शास्त्रज्ञाय

नमः, ॐ योगप्रभावेणान्तर्यामिने नमः, ॐ योगीन्द्राय नमः, ॐ योगविद्यां रचयित्रे नमः, ॐ युक्ताहाराय नमः, ॐसर्वसिद्धिदायकाय नमः, ॐ सर्पपरास्तकाय नमः, ॐ सर्परूपधारिणे नमः, ॐ संसाररक्षकाय नमः, ॐ रूद्राक्षमालाधारिणे नमः, ॐ आदिनाथाय नमः, ॐ मठ-अस्थल-बोहरस्वामिने नमः, ॐ योगिनां नाथाय नमः, ॐ सर्वदा विभूतिधारिणे नमः, ॐ युगस्येश्वराय नमः, ॐ नागस्वरूपाय नमः, ॐ नानावर्णविभूषिताय नमः, ॐ धार्मिकाय नमः, ॐ नानावेषधारिणे नमः, ॐनानारूपधारिणे नमः, ॐ धैर्यशालिने नमः, ॐ निर्गुणाय नमः, ॐ सिद्धिनाथाय नमः, ॐ महेश्वराय नमः, ॐ दिगम्बरयोगिने नमः, ॐ सर्वेषां नाथाय नमः, ॐ बालकरक्षायै नमः, ॐ सर्वदा योगविचरणाय नमः, ॐ मनुष्यणामीस्श्वराय नमः, ॐ वाचस्पतये नमः, ॐ यतीनां प्रियाय नमः, ॐ भस्मभूषित शरिणे नमः, ॐ मृगचर्मधारिणे नमः, ॐ योगसमूहाय नमः, ॐ योगीयः ध्यानस्था नमः, ॐ मृगनयनाय नमः, ॐ योग राज्ञे नमः, ॐ मृगवेष तपस्विने नमः, ॐ मेघनाद गंभीरघोषाय नमः, ॐ योगज्ञातवे नमः, ॐ मेघवर्णाय नमः, ॐ महाबलवते नमः, ॐ यज्ञपुरूषाय नमः, ॐ योगिनां सम्राटाय नमः, ॐ मनस्विने नमः, ॐ दिशा ईश्वराय नमः, ॐ सर्वश्रेष्ठ योग विदुषे नमः,

ॐ दयालवे नमः, ॐ दिगम्बराय नमः, ॐ योगमार्गयुक्ताय नमः, ॐ योगबलेन सूक्ष्मज्ञाय नमः, ॐ योगमार्गपरिचारये नमः, ॐ स्वर्गविहारिणे नमः, ॐ जलनाथाय नमः, ॐ ब्रह्मचारिणे नमः, ॐ जगतनाथाय नमः, ॐ जनानां स्वामिने नमः, ॐ लोकानां नाथाय नमः, ॐ भूतनाथाय नमः, ॐ विपत्तिनाशकाय नमः, ॐ पृथ्वीनाथाय नमः, ॐ चतुर्दश भुवनेश्वराय नमः, ॐ जगत गुरूवे नमः, ॐ विदुषां स्वामिने नमः, ॐ इन्द्रियपालकाय नमः, ॐ सरस्वतीस्वामिने नमः, ॐ गोपशत्रुनाशकगुप्ताय नमः, ॐ प्राणायामे तत्पराय नमः, ॐ यज्ञनाथाय नमः, ॐ सर्वदा आनन्दमग्नाय नमः, ॐ महायतये नमः, ॐ आत्मवशिने नमः, ॐ कान्तिमते नमः, ॐ अत्यन्त पराक्रमिणे नमः, ॐ धैर्यमते नमः, ॐ मनवशीकारिणे नमः, ॐ सिद्धानां नाथाय नमः, ॐ वृद्धानां नाथाय नमः, ॐ अत्यन्त वृद्धमार्गप्रियाय नमः, ॐ आकाशविहारिणे नमः, ॐ आकाश विहारकस्य स्वामिने नमः, ॐ विघानन्दाय नमः, ॐ गणानां अध्यक्षाय नमः, ॐ विघादात्रे नमः, ॐ मन्त्रनाथाय नमः, ॐ धनदात्रे नमः, ॐ ध्यानस्य नाथाय नमः, ॐ सर्वेषाम आराध्यपूर्णनाथाय नमः, ॐ तेजस स्वामिने नमः, ॐ कान्ति तेजसंचेच्छुकाय नमः, ॐ सृष्टिकर्त्रे नमः, ॐ सृष्टिपालकाय नमः, ॐ जगतप्रलयकर्त्रे नमः, ॐ भैरवनाथाय नमः,

ॐ भैरवाकाराय नमः, ॐ भयहर्त्रे नमः, ॐ संसारदुःख विनाशकाय नमः, ॐ सृष्टिनाथाय नमः, ॐ स्थितिनाथाय नमः, ॐ विश्वस्य आराध्याय नमः, ॐ महाबुद्धिमते नमः, ॐ दिव्यशब्द कुर्वणे नमः, ॐ दिशानां नाथाय नमः, ॐ सनातनाय नमः, ॐ दिव्यभोगयुक्ताय नमः, ॐ आकाशादिरूपिणे नमः, ॐ कृष्णरूपाय नमः, ॐ असंख्यशरीरधारिणे नमः, ॐ पूर्णनाथाय नमः, ॐ तेजसां नाथाय नमः, ॐ सूर्यस्वरूपिणे नमः, ॐ हृदयनिवासिने नमः, ॐ अंगदेशस्य नाथाय नमः, ॐ प्रधाननटरूपिणे नमः, ॐ मंगलस्वरूपिणे नमः, ॐ धीरनाथाय नमः, ॐ शून्यमातृभक्ताय नमः, ॐ धीरस्य नाथाय नमः, ॐ शरीररक्षकाय नमः, ॐ विष्णुरूपाय नमः, ॐ सर्वप्राणीनां हृदयनिवासिने नमः, ऊँ अमराय नमः, ऊँ नित्याय नमः, ऊँ दिव्यरूपिणे नमः, ऊँ परोपकारिणे नमः, ऊँ व्रतपारायणाय नमः, ऊँ आत्मदर्शिने नमः, ऊँ सुन्दररूपिणे नमः, ऊँ इन्द्रस्य स्वामिने नमः, ऊँ ब्रह्मतत्वस्य अन्वेषणाय नमः, ऊँ प्रशंसनीय धनदात्रे नमः, ऊँ शंकरस्वरूपिणे नमः, ऊँ रक्षक अमराय नमः, ऊँ मातापतये नमः,ऊँ तपस्विरूपिणे नमः, ऊँ विष्णवे नमः, ऊँ एकब्रह्मरूपिणे नमः, ऊँ महेश्वराय नमः, ऊँ एकमूर्तये नमः, ऊँ त्रिलोचनाय नमः, ऊँ आद्ययोगिने नमः, ऊँ शिवस्वरूपाय नमः, ऊँ

गायत्रीस्वरूपिणे नमः, ऊँ कृष्णस्वरूपिणे नमः, ऊँ चतुर्दश भुवनानां स्वामिने नमः, ऊँ असुरनाशकाय नमः, ऊँ नादकारिणे नमः, ऊँ विष्णिवन्द्ररूपिणे नमः, ऊँ लाभस्वरूपिणे नमः, ऊँ भयहर्त्रे नमः, ऊँ प्रलयकारिणे नमः, ऊँ दीप्तिमते नमः, ऊँ लघुहस्ताय नमः, ऊँ प्रकाशस्य खगेश्वराय नमः, ऊँ गौरीनाथाय नमः, ऊँ वाचस्पतये नमः, ऊँ पूज्यगर्गस्य पूज्याय नमः, ऊँ गणेश्वराय नमः, ऊँ गानपतये नमः, ऊँ गंगासेविने नमः, ऊँ गुरूप्रियाय नमः, ऊँ दण्डाय नमः, ऊँ सूर्यचन्द्र-शेखराय नमः, ऊँ चन्द्रस्वरूपाय नमः, ऊँ च च शब्दकारकाय नमः, ऊँ अज्ञाननाशकाय नमः, ऊँ सर्वव्यापिने नमः, ऊँ चौरनाथाय नमः, ऊँ देवनाथाय नमः, ऊँ शिवाकृतये नमः, ऊँ चन्द्रपतिविष्णुवृद्धिनाथाय नमः, ऊँ ब्रह्मरूपाय नमः, ऊँ अग्निस्वरूपाय नमः, ऊँ आदिनाथाय नमः, ऊँ महाकवये नमः, ऊँ नित्यसुन्दर स्वरूपाय नमः, ऊँ कवितापतये नमः, ऊँ ऋद्धये नमः, ऊँ सर्वयोगकर्मज्ञापकाय नमः, ऊँ प्रकाशमते नमः, ऊँ सर्वव्यापिने ईश्वराय नमः, ऊँ स्थावरजंगमविराटरूपाय नमः, ऊँ चित्रनाथाय नमः, ऊँ सुन्दरश्रृंगधारिणे नमः, ऊँ अचिरकाल तपस्विने नमः, ऊँ बुद्धिदात्रे नमः, ऊँ पापनाशकाय नमः, ऊँ विजयदात्रे नमः, ऊँ सर्वगुणागाराय नमः, ऊँ जयाधाराय नमः, ऊँ जयदात्रे नमः, ऊँ सदाविजयशीलाय नमः, ऊँ जपाधीशाय

नमः, ऊँ जपाधाराय नमः, ऊँ जपदानकर्त्रे नमः, ऊँ अजपामन्त्र जापकाय नमः, ऊँ पंचजन्यस्वामिने नमः, ऊँ गंभीरवक्ताय नमः, ऊँ शंखस्वरूपाय नमः, ऊँ जनेश्वराय नमः, ऊँ अजन्मने नमः, ऊँ आत्मज्ञानिने नमः, ऊँ ब्रह्मस्वरूपाय नमः, ऊँ जीवनमुक्ताय नमः, ऊँ अविनाशिने नमः, ऊँ मायाजीवाच्छादन कारकाय नमः, ऊँ जीवरूपाय नमः, ऊँ संसार प्रपंचकारकाय नमः, ऊँ सुन्दरस्वरूपिणे नमः, ऊँ शून्याधाराय नमः, ऊँ योगिराजाय नमः, ऊँ ओंकार स्वरूपाय नमः, ऊँ इन्द्रनाथाय नमः, ऊँ शुभाय नमः, ऊँ इन्द्ररूपाय नमः, ऊँ जयरूपाय नमः, ऊँ अत्यंत जपकर्ता वायुरूपाय नमः, ऊँ मृत्युंज्याय नमः, ऊँ मननशीलाय नमः, ऊँ ध्वनिरूप गोरक्षाय नमः, ऊँ शब्दकर्त्रे नमः, ऊँ पृथिवीश्वराय नमः, ऊँ प्रयलस्य रूद्ररूपाय नमः, ऊँ विजयरूपस्वामिने नमः, ऊँ आकाशनाथाय नमः, ऊँ शून्यमयाय नमः, ऊँ शून्यवेषाय नमः, ऊँ सदायोगसमाधिनिमग्नाय नमः, ऊँ निर्गुणस्वरूपाय नमः, ऊँ त्रिकालनिवासिने नमः, ऊँ ढक्कावाद्य प्रियाय नमः, ऊँ डमरूवादकाय नमः, ऊँ सर्वकामनापूर्णकर्त्रे नमः, ऊँ अभयस्वरूपाय नमः, ऊँ योगस्वरूपाय नमः, ऊँ दमनकारिणे नमः, ऊँ सकलजगदुत्पत्तिस्वामिने नमः, ऊँ पापिष्ठेभ्य भयंकराय नमः, ऊँ दण्डदात्रे नमः, ऊँ अधर्मिणे दण्डदात्रे नमः, ऊँ यमस्वरूप दण्डदात्रे नमः, ऊँ पापिष्ठानाम्

उद्धारकर्त्रे नमः, ऊँ गुणानामाशयाय नमः, ऊँ दुष्ट दण्डदात्रे नमः, ऊँ दमनकारिणे नमः, ऊँ मेघस्वरूपाय नमः, ऊँ इन्द्रियाणां दमनकर्त्रे नमः, ऊँ निर्दयरूपाय नमः, ऊँ पापिष्ठेभ्य : दण्डदाय नमः, ऊँ नन्दस्वामिने नमः, ऊँ विदुषांनाथाय नमः, ऊँ रोगरहित नन्दीभक्ताय नमः, ऊँ आदेश प्रियाय नमः, ऊँ लोकप्रियनरस्वरूपाय नमः, ऊँ नीतिस्वरूपाय नमः, ऊँ रक्षकाय नमः, ऊँ स्तौतुं योग्याय नमः, ऊँ विजयशालिने नमः, ऊँ भक्तानां वशीभूताय नमः, ऊँ जीवानां मोक्षधामगोरक्षाय नमः, ऊँ हिमालये निवासिने नमः, ऊँ शब्द कर्त्रे नमः, ऊँ कामक्रोधजिताय नमः, ऊँ जयस्वरूपाय नमः, ऊँ दानदार्त्रे नमः, ऊँ दानेसिद्धाय नमः, ऊँ विनाशकारिणे नमः, ऊँ ज्ञानदात्रे नमः, ऊँ दयाकारिणे नमः, ऊँ दीनवत्सल्याय नमः, ऊँ दूरदर्शिने नमः, ऊँ उदाराय नमः, ऊँ तेजरूपाय नमः, ऊँ स्वर्गीय सौन्दर्ययुक्ताय नमः, ऊँ स्वर्गीय आसन विराजमते नमः, ऊँ दयालवे नमः, ऊँ सर्वप्रियाय नमः, ऊँ धनदाय नमः, ऊँ आन्तरिक इन्द्रिय रक्षकाय नमः, ऊँ सर्वदा अन्तिकाय नमः, ऊँ दूरद्रष्टुं योग्याय नमः, ऊँ आदित्यवर्ण प्रकाशमते नमः, ऊँ दिव्यमालाधारिणे नमः, ऊँ दिव्यभोगभोगिने नमः, ऊँ दिव्य वस्त्रधारिणे नमः ऊँ सूर्यस्वरूपाय नमः, ऊँ ब्रह्मस्वरूपाय नमः, ऊँ धर्मदाय नमः, ऊँ धनरहिताय नमः, ऊँ धनयुक्ताय नमः, ऊँ

धर्मस्थापनाकर्त्रे नमः, ऊँ धैर्यवते नमः, ऊँ बुद्धिमते नमः, ऊँ पृथ्वीश्वराय नमः, ऊँ अन्धकार नाशकाय नमः, ऊँ श्रेष्ठकामाय नमः, ऊँ अधर्मोद्धारकाय नमः, ऊँ धर्मणिशुद्धयुक्ताय नमः, ऊँ धर्माचरणाय नमः, ऊँ क्रोधादिनाशकारिणे नमः, ऊँ सिद्धांतकारिणे नमः, ऊँ शुद्धबुद्धिमते नमः, ऊँ पवित्राय नमः, ऊँ पवित्रकारकाय नमः, ऊँ प्रयत्नशीलाय नमः, ऊँ हर्षवते नमः, ऊँ अन्धकारनाशकाय नमः, ऊँ सदा प्रसन्नाय नमः, ऊँ लोकान् रंजनकारिणे नमः, ऊँ पीतवर्णाय नमः, ऊँ सर्पासनधारिणे नमः, ऊँ प्रसन्नवदनाय नमः, ऊँ शेषरूपाय नमः, ऊँ सर्वदुःखहारिणे नमः, ऊँ परमपवित्राय नमः, ऊँ सर्वश्रेष्ठाय नमः, ऊँ नागस्वामिने नमः, ऊँ वरदात्रे नमः, ऊँ धर्मार्थकाममोक्षाणामध्यक्षाय नमः, ऊँ तपधर्म फलदात्रे नमः, ऊँ बमशब्द प्रियाय नमः, ऊँ चतुर्वर्णपुण्यकर्मणां चं फलस्वरूपाय नमः, ऊँ बलिघ्वंसिने नमः, ऊँ बलदात्रे नमः, ऊँ जलाधिष्ठातृदेवता पवित्राय नमः, ऊँ बालप्रियबल स्वरूपाय नमः, ऊँ वराहरूपधारिणे नमः, ऊँ पश्चिमदिग्स्वामिने नमः, ऊँ पण्डित प्रियाय नमः, ऊँ बलवते नमः, ऊँ पार्वत्याः पूजाकर्त्रे नमः, ऊँ पृथिवीविहारिणे नमः, ऊँ सौम्यमूत्यै नमः, ऊँ प्रलयरूपाय नमः, ऊँ शिष्ट प्रियाय नमः, ऊँ संसारस्वामिने नमः, ऊँ सर्वोत्पतिस्थानाय नमः, ऊँ भव्यत्रिविधतापनाशकाय नमः, ऊँ बालकेभ्यः आनंददाय नमः, ऊँ शिवसेवकाय नमः, ऊँ

महादेवप्रियाय नमः, ऊँ संसार वात्सल्याय नमः, ऊँ सम्मानयोग्याय नमः, ऊँ योगिभ्यः मननशीलाय नमः, ऊँ गंभीरहृदायाय नमः, ऊँ महायोगिने नमः, ऊँ महाधीराय नमः, ऊँ महासिद्धाय नमः, ऊँ शून्य आशयाय नमः, ऊँ मनोजवाय नमः, ऊँ मनस्विने नमः, ऊँ अत्यंत प्रसन्नाय नमः, ऊँ उत्सव स्वरूपाय नमः, ऊँ मध्यनाथाय नमः, ऊँ महापरिणामवते नमः, ऊँ शून्य स्वरूपाय नमः, ऊँ यज्ञकर्त्रे नमः, ऊँ चन्द्रस्वरूपाय नमः, ऊँ यज्ञेषु पूज्याय नमः, ऊँ यज्ञस्वरूपाय नमः, ऊँ मोहरूपाय नमः, ऊँ मोहनाशकाय नमः, ऊँ त्यागी यज्ञकर्मणे नमः, ऊँ यमरूपाय नमः, ऊँ योगस्वरूपाय नमः, ऊँ यमस्य प्रियाय नमः, ऊँ यशधारिणे नमः, ऊँ प्रशस्त यशयुक्ताय नमः, ऊँ नाथाय नमः, ऊँ यशदायकस्नेहिने नमः, ऊँ नमस्कार प्रियाय नमः, ऊँ स्वास्थाय नमः, ऊँ मनुष्यनाथाय नमः, ऊँ सर्वदा योगनिमग्नाय नमः, ऊँ अविनाशिने नमः, ऊँ नन्दीनाथाय नमः, ऊँ रणमूर्त्यै नमः, ऊँ जयघोषेषु श्रेष्ठाय नमः, ऊँ लोकरंजकाय नमः, ऊँ लक्ष्मीप्रियाय नमः, ऊँ रामचन्द स्वामिने नमः, ऊँ परब्रह्मबीजजापकर्त्रे नमः ऊँ रामरमीकर्त्रे नमः, ऊँ परब्रह्मणः उपासना संलग्नाय नमः, ऊँ कमलनेत्रवते नमः, ऊँ सुन्दर स्वरूपाय नमः, ऊँ राजभोगदात्रे नमः, ऊँ रागशास्त्रज्ञात्रे नमः, ऊँ कामतुल्य सुन्दराय नमः, ऊँ राजधर्मस्नेहिने नमः, ऊँ राजनीति

तत्वज्ञाय नमः, ऊँ सर्वकर्तु समर्थाय नमः, ऊँ लक्ष्मी सौभाग्य वृद्धिकारिणे नमः, ऊँ रक्तचन्दनलेपकारिणे नमः, ऊँ त्रिपुण्डधारिणे नमः, ऊँ रक्तगंधलेपधारिणे नमः, ऊँ भाषणकर्त्रे रक्षकाय नमः, ऊँ प्रेमीभक्तफलदात्रे नमः, ऊँ इन्द्रियातीताय नमः, ऊँ विश्वोत्पादकाय नमः, ऊँ अज्ञेय आत्मने नमः, ऊँ अतुल्याय नमः, ऊँ पुनः शरीर निवासिने नमः, ऊँ सत्यधर्मयुक्ताय नमः, ऊँ महान व्यापकररूपधारिणे नमः, ऊँ अनन्तरूपधारिणे नमः, ऊँ पृथिवीधारिणे नमः, ऊँ अदृश्यस्वरूपाय नमः, ऊँ अव्यक्तस्वरूपाय नमः, ऊँ सहस्त्रबाहवे नमः, ऊँ निजमहिम्निास्थिताय नमः, ऊँ वरदायकाय नमः, ऊँ गौदात्रे नमः, ऊँ ऊँकार रूपाय नमः, ऊँ संसार जन्ममृत्युभय तारकाय नमः, ऊँ भक्तवत्सलाय नमः, ऊँ सर्वोत्तमाय नमः, ऊँ विभूतिमते नमः, ऊँ पवित्रदर्शन युक्ताय नमः, ऊँ उन्नतिमोक्षदात्रे नमः, ऊँ श्रुतिस्मृत्युत्पादकाय नमः, ऊँ महावीराय नमः, ऊँ सिंह पराक्रमस्वतन्त्राय नमः, ऊँ यज्ञे भूरिदाक्षिणादात्रे नमः, ऊँ शिवशिष्याय नमः, ऊँ प्रशंसनीयाय नमः, ऊँ राग रहिताय नमः, ऊँ द्वेषरहिताय नमः, ऊँ सिद्धेभ्य, स्तौतुमर्हाय नमः, ऊँ प्रसिद्ध चरित्रवते नमः, ऊँ गुणपात्राय नमः, ऊँ गुणपात्राय नमः, ऊँ श्रोतुं योग्याय नमः, ऊँ द्रष्टुं योग्याय नमः, ऊँ वर्तमानाय नमः, ऊँ भूतकालाय नमः, ऊँ समानबुद्धि युक्ताय नमः, ऊँ विद्यापतये

नमः, ऊँ निश्चलाय नमः, ऊँ समान तेजस्विने नमः, ऊँ प्रलयकालीन वायुरूपाय नमः, ऊँ महाभूति स्वरूपाय नमः, ऊँ प्राणीहृदये विराजमानाय नमः, ऊँ नक्षत्रस्वामिने नमः, ऊँ अमृतस्वामिने नमः, ऊँ नित्यम्ऐश्र्यकर्त्रे नमः, ऊँ प्रलयकाले भयंकररूपधारिणे नमः, ऊँ इच्छाप्रदाय नमः, ऊँ सर्वद्रष्टि स्वरूपे नमः, ऊँ सर्वद्रष्ट्रे नमः, ऊँ मातृगर्भे अनुत्पन्नाय नमः, ऊँ मंगलमय शरीररांग युक्ताय नमः, ऊँ भक्तलक्ष्मी युक्तकर्त्रे नमः, ऊँ सर्वदा आनंदमयाय नमः, ऊँ श्रेष्ठ यशवते नमः, ऊँ अविनाशिने नमः, ऊँ शोकरहिताय नमः, ऊँ भक्तशोकापहर्त्रे नमः, ऊँ सौम्य स्वरूपाय नमः, ऊँ कलापरिर्णाय नमः, ऊँ निष्कलंक आत्मने नमः, ऊँ लोक शिक्षणाय यज्ञकर्त्रे नमः, ऊँ स्वरूपब्रहमस्वयंज्ञाताय नमः, ऊँ ब्राहमण वत्सलाय नमः, ऊँ सर्वशक्तिमते नमः, ऊँ स्तुतिरूपाय नमः, ऊँ आत्म स्तुति योग्याय नमः, ऊँ सर्वस्तुति योग्याय नमः, ऊँ ब्राह्मण हितैषिणे नमः, ऊँ स्वयं वेदस्मरणीयाय नमः, ऊँ सत्यादिलक्षणयुक्ताय नमः, ऊँ ब्रह्मरूपाय नमः, ऊँ तत्वज्ञानाम्अध्यक्षाय नमः, ऊँ प्रकृति पुरूष स्वरूपाय नमः, ऊँ प्रकृत्यर्थ कर्मफलभोक्त्रे नमः, ऊँ सुखदार्त्रे नमः, ऊँ त्रिविधतापतप्यमानाय शान्ति प्रदात्रे नमः, ऊँ त्रिगुणमयाय नमः, ऊँ सर्वेभ्यः प्राणिभ्यः समानाय नमः, ऊँ शुद्धावस्थायां केवल सत्वरूपाय नमः, ऊँ संहारकाले

तमोरूपाय नमः, ऊँ मनोहरदर्शनाय नमः, ऊँ वेदत्रयस्वरूपाय नमः, ऊँ त्रिलोक रक्षकाय नमः, ऊँ वृद्धशक्तिमते नमः, ऊँ मनसासुन्दराय नमः, ऊँ कर्मण सुन्दराय नमः, ऊँ शरीरेण सुन्दराय नमः, ऊँ बुद्धया सुन्दराय नमः, ऊँ श्रुत्या पवित्राननाय नमः, ऊँ दुःख विनाशकाय नमः, ऊँ प्राणमयाय नमः, ऊँ कडाधारिणे नमः, ऊँ तपसायोगेन समाधिना प्राप्तुं योग्याय नमः, ऊँ शोककोध रहिताय नमः, ऊँ गम्भीर आत्मने नमः, ऊँ देवेभ्य विविध आदेश प्रदायकाय नमः, ऊँ सर्वकर्मफलदात्रे नमः,ऊँ जटामुकुट धारिणे नमः, ऊँ दिनस्वरूपिणे नमः, ऊँ संवत्सर स्वरूपाय नमः, ऊँ समयस्वरूपाय नमः, ऊँ ज्ञानकर्त्रे नमः, ऊँ व्यापकाय नमः, ऊँ कवये नमः, ऊँ भूलोक स्वरूपाय नमः, ऊँ स्वर्गलोकस्वरूपाय नमः, ऊँ प्रलयकर्त्रे नमः, ऊँ संसारजीवसमूहस्य विश्रामस्वरूपाय नमः, ऊँ अति सूक्ष्माय नमः, ऊँ अविवेकिने श्रमप्रदात्रे नमः, ऊँ क्षमास्वरूपाय नमः, ऊँ अतिस्थूलाय नमः, ऊँ सर्वत्र विराजमानाय नमः, ऊँ सर्वेषु विभक्ताय नमः, ऊँ सर्वज्ञाय सर्वमयाय नमः, ऊँ देवेश्वराय नमः, ऊँ देवाध्यक्षाय नमः, ऊँ अक्षराय नमः, समानरूपे व्यापकाय नमः, ऊँ सर्वेभ्यः समस्मै नमः, ऊँ सत्यमयाय नमः, ऊँ सुन्दर पर्ववते नमः, ऊँ परमपवित्राय नमः, ऊँ अनादिकालाय नमः, ऊँ कल्याणकर्त्रे नमः, ऊँ शान्तशरणदात्रे नमः, ऊँ शुभदर्शनाय

नमः, ऊँ शरणागतस्य पीड़ाहरये नमः, ऊँ शुभलक्षेणाङ्गयुक्ताय नमः, ऊँ शुभ अवयवाय नमः, ऊँ अग्निस्वरूपाय नमः, ऊँ वायुरूपाय नमः, ऊँ सर्वपवित्रकारकाय नमः, ऊँ महाकालस्वरूपाय नमः, ऊँ नृत्यकर्त्रे नमः, ऊँ मंद (अभिमान) हर्त्रे नमः, ऊँ लिगांकाराय नमः, ऊँ अव्यक्ताय नमः, ऊँ व्यक्ताव्यक्तोभयरूपाय नमः, ऊँ कपालधारिणे नमः, ऊँ मृत्युस्वामिने नमः, ऊँ नरश्रेष्ठाय नमः, ऊँ समय प्रर्वतकाय नमः, ऊँ दुष्टानां संहारकाय नमः, ऊँ नृत्यशास्त्रनिष्णाताय नमः, अत्यन्त रागयुक्ताय नमः, ऊँ रागरहिताय नमः, ऊँ वैराग्य ज्ञात्रे नमः, ऊँ जीवानां स्वामिने नमः, ऊँ वसन्तोद्भवकर्त्रे नमः, ऊँ जीवरूपधारणकर्त्रे नमः, ऊँ जीवानां जीवनाय नमः, ऊँ वज्रस्वरूपाय नमः, ऊँ प्राणीनां प्राणाधाराय नमः, ऊँ सुपर्णाय नमः, ऊँ सुपराक्रमाय नमः, ऊँ सर्पभूषण प्रसन्नाय नमः, ऊँ प्रलयदेवाय नमः, ऊँ मोहनरूपिणे नमः, ऊँ वक्षस्थले रूद्राक्षधारिणे नमः, ऊँ शिरसि रूद्राक्षधारिणे नमः, ऊँ वासुकिना सुशोभित कण्ठाय नमः, ऊँ भयंकर रूपधारिणे नमः, ऊँ सम्पूर्ण योगयुक्ताय नमः, ऊँ भयंकर पराक्रमाय नमः, ऊँ पवित्रतमाय नमः, ऊँ न कदापि हन्तुं शक्याय नमः, ऊँ स्वयंजीवाय नमः, ऊँ जीवदात्रे नमः, ऊँ प्राणीनां बन्धनहर्त्रे नमः, ऊँ सर्वशक्तिमते नमः, ऊँ द्वन्द्वरहिताय नमः, ऊँ सफल पराक्रमयुक्ताय नमः, ऊँ योगीनां कल्पिताय

नमः, ऊँ कल्पनातीताय नमः, ऊँ वेषरहिताय नमः, ऊँ विकल्परूपाय नमः, ऊँ प्रलयनाशकर्त्रे नमः, ऊँ कल्परक्षाकर्त्रे नमः, ऊँ सुलभदुर्लभाय नमः, ऊँ लाभस्वरूपाय नमः,ऊँ तपसा समाधिना प्राप्तुं योग्याय नमः, ऊँ भक्तेभ्यः दुर्लभं सुलभं कर्त्रे नमः, ऊँ लाभदात्रे नमः, ऊँ लोकमित्राय नमः, ऊँ दयारूपिणे नमः,ऊँ वेदमय शरीराय नमः, ऊँ अन्नमय कोषाय नमः, ऊँ पृथिव्यां शयनकर्त्रे नमः, ऊँ पृथिवींम्उत्पादकाय नमः, ऊँ अभिलषितुं योग्याय नमः,ऊँ पृथ्वीरूपधारिणे नमः, ऊँ विज्ञानमयकोशाय नमः, ऊँ आनन्दमय कोषाय नमः, ऊँ प्राणमय कोषाय नमः, ऊँ अनशनाय नमः, ऊँ अन्नरूपब्रह्मदात्रे नमः, ऊँ अमृतपूर्णनेत्रधारिणे नमः, ऊँ पदार्थरूपिणे नमः, ऊँ दुग्धाहारिणे नमः, ऊँ पुत्रकलत्ररहिताय नमः, ऊँ पदार्थव्यापिने नमः, ऊँ आशाकर्तुं योग्याय नमः, ऊँ मायाधारिणे नमः, ऊँ शत्रुनाशकाय नमः, ऊँ मूकत्वविनाशकर्त्रे नमः, ऊँ सर्वहित चिंतकाय नमः, ऊँ सर्वहितकर्त्रे नमः, ऊँ सर्वयुगोत्पन्नकर्त्रे नमः, ऊँ बलंज्ञात्रे नमः, ऊँ सर्वदा पदार्थ प्रयोजनाय नमः, ऊँ कर्पूरवर्णधारिणे नमः, ऊँ जयभिः सुशोभिताय नमः, ऊँ प्रपंचरहिताय नमः, ऊँ आधाररहिताय नमः, ऊँ सत्व स्वामिने नमः, ऊँ क्रोध नाशकाय नमः, ऊँ सर्वानन्दकारकाय नमः, ऊँ मुनिभ्यः प्रणमितुं योग्याय नमः, ऊँ मुनीनां कमलनिवासने नमः, ऊँ मन्त्रमयाय

नमः, ऊँ मुनीनां समूहस्य जीवनाय नमः, ऊँ उच्चशब्दकर्त्रे नमः, ऊँ शब्द स्वरूपाय नमः, ऊँ चमूनांपतये नमः, ऊँ पापमोचकाय नमः, ऊँ औषधिषु विराजमानाय नमः, ऊँ शुचिस्मिताय नमः, ऊँ वनानां स्वामिने नमः, ऊँ परितः परिचराय नमः, ऊँ मन्त्रज्ञानश्रेष्ठाय नमः, ऊँ पृष्ठाय नमः, ऊँ कालाग्निमुत्पादकाय नाशकर्त्रे च नमः, ऊँ चन्द्रसूर्याग्निनेत्र धारिणे नमः, ऊँ क्षोभ रहिताय नमः, ऊँ भस्मशरीरधारिणे नमः, ऊँ व्याघ्रचर्मधारिणे नमः, ऊँ सुवर्णदृष्टि धारिणे नमः, ऊँ स्वतन्त्राय नमः, ऊँ सर्वशास्त्रमयाय नमः, ऊँ प्रणत जनानां पीड़ाहर्त्रे नमः, ऊँ समीप निवासने नमः, ऊँ गजहर्त्रे नमः, श्रीअतिदूरं निवासने नमः, ऊँ महोत्सव युक्ताय नमः, ऊँ महोदय युक्ताय नमः, ऊँ ब्रह्मचारिणे नमः, ऊँ सदाचारिणे नमः, ऊँ पुराणपुरूषाय नमः, ऊँ अजेतुं शक्याय नमः, ऊँ पीतनेत्र युक्ताय नमः, ऊँ सर्वफलदात्रे नमः, ऊँ अवधिरहिताय नमः, ऊँ विद्यानाम् आश्रयाय नमः,ऊँ क्षेत्रपालाय नमः, ऊँ कूर्मरूपधारिणे नमः, ऊँ कल्कि अवतार रूपाय नमः, ऊँ ऋषभावताराय नमः, ऊँ गोराज्ञे नमः, ऊँ मन्त्रमार्गप्रधानाय नमः,ऊँ मन्त्रमार्ग प्रर्वतकाय नमः, ऊँ गोरक्षकाय नमः, ऊँ यतिस्वरूपाय नमः, ऊँ अलख निरंजनस्वरूपाय नमः, ऊँ सामगानकर्त्रे नमः, ऊँ सामगानवतां नमः, ऊँ स्वर्णकेशाारिणे नमः, ऊँ दयासमुदायाय नमः, ऊँ शत्रु तापयित्रे नमः, ऊँ शून्य

लीनाय नमः, ऊँ शून्याय नमः, ऊँ उत्पत्तिस्थानाय नमः, ऊँ निराकार शून्य देवाय नमः, ऊँ प्रकाश पुंजाय नमः, ऊँ स्वामि रहिताय नमः, ऊँ वृषभ स्वरूपाय नमः, ऊँ चेतनस्वरूपाय नमः, ऊँ चेतनाध्यक्षाय नमः, ऊँ महाकाशाय नमः, ऊँ उपद्रवरहिताय नमः, ऊँ अचेतनरूपाय नमः, ऊँ अचेतन निवासिने नमः, ऊँ जाड्य विनाशकाय नमः, ऊँ जाड्यानां तापहर्त्रे नमः,ऊँ राम प्रियाय नमः, ऊँ लक्ष्मण पूजिताय नमः, ऊँ वितस्तानदीम् आनन्ददात्रे नमः, ऊँ काशीवासी प्रियाय नमः, ऊँ नाट्यकत्रे नमः, ऊँ लोकरन्जनाय नमः, ऊँ विरक्ताय नमः, ऊँ वैराग्यकर्त्रे नमः, ऊँ पूजनीयाय नमः, ऊँ ग्रहणशीलाय नमः, ऊँ वैराग्यधनसम्पन्नाय नमः, ऊँ बुद्धिमते नमः, ऊँ चेतनाध्यक्षाय नमः, ऊँ सर्वपोषकाय नमः, ऊँ वृषभदेवाय नमः,ऊँ दोषरहिताय नमः, ऊँ भक्तानां कल्पवृक्षाय नमः, ऊँ बुद्धिमतांगुरूनिरूपिणे नमः, ऊँ ममता रहिताय नमः, ऊँ शान्तिशीलाय नमः, ऊँ आगहरहिताय नमः, ऊँ दम्भरहिताय नमः, ऊँ रसहरिताय नमः, ऊँ नीलरूपाय नमः, ऊँ नेत्रे नमः, ऊँ नेतृश्रेष्ठतमाय नमः, ऊँ मुक्तिनेत्रे नमः, ऊँ निर्णयकर्त्रे नमः, ऊँ नित्यस्थितियुक्ताय नमः, ऊँ संसारस्वरूपिणे नमः, ऊँ कल्याण भावयुक्ताय नमः, ऊँ भावस्वरूपाय नमः,ऊँ संसारात्मकाय नमः, ऊँ भवबन्धन विनाशकाय नमः, ऊँ कल्याणदात्रे नमः, ऊँ

भयरक्षकाय नमः, ऊँ परब्रहमणे नमः, ऊँ ऐश्वर्याय नमः, ऊँ शिवस्वरूपोत्पत्तिशीलाय नमः, ऊँ सर्वप्रियाय नमः, ऊँ स्नेहकर्तास्नेह स्वरूपाय नमः, ऊँ नीतिरूपाय नमः, ऊँ नीतियुक्ताय नीति उत्पादकाय नमः, ऊँ महातेजस्विने नमः, ऊँ परब्रह्मणिलीनाय नमः, पुष्कररूपाय नमः, ऊँ परमपदयुक्ताय नमः, ऊँ नीतिरूपाय नमः, सर्वपुरातनाय नमः, ऊँ परब्रह्मणिलीनाय नमः, ऊँ पुरूषरूपाय नमः, ऊँ पुरूषराध्यक्षाय नमः, ऊँ पुष्कर रहीवासिने नमः, ऊँ अद्वैत आत्मने नमः, ऊँ अशगनीयाय नमः, ऊँ भूपेन्द्रसम्मान युक्ताय नमः, ऊँ विष्णुप्रियाय नमः, ऊँ जगत्पोषकाय नमः, ऊँ पुण्यात्मानां प्रियाय नमः, ऊँ पवनहर्त्रे नमः, ऊँ पुण्यात्मानाम् आश्रयाय नमः, वायुसेवनधारिणे नमः, ऊँ मात्सर्यरहिताय नमः, ऊँ बिल्वपत्रधारिणे नमः, ऊँ बिल्वमालाधारिणे नमः, ऊँ बिल्वभक्ताय नमः, ऊँ इन्द्रियनिग्रहकर्त्रे नमः, ऊँ शिवमन्त्रधारिणे नमः, ऊँ शिवयोगाारिणे नमः, ऊँ शिवप्रियाय नमः, ऊँ संसारसंहारकर्त्रे नमः, ऊँ सरलयोगिने नमः, ऊँ क्षमायुक्ताय नमः, ऊँ ज्ञान दार्त्रे नमः, ऊँ ज्ञानगम्याय नमः, ऊँ क्षमा स्वामिने नमः, ऊँ पृथ्वी विचरण शीलाय नमः, ऊँ क्षमाचारिणे नमः, ऊँ तत्वज्ञानयुक्ताय नमः, ऊँ तंत्रशास्त्रकर्त्रे नमः, ऊँ तन्त्रज्ञानयुक्ताय नमः,ऊँ तन्त्रमयाय नमः, ऊँ तन्त्रसिद्धेः तत्वज्ञात्रे नमः, ऊँ बालतन्त्रज्ञाय

नमः, ऊँ यन्त्रमन्त्र फलदाय नमः, ऊँ मन्त्रज्ञाय नमः, ऊँ मन्त्रसिद्धिकर्त्रे नमः, ऊँ स्कन्दप्रियाय नमः, ऊँ आकर्षणयोग्याय नमः, ऊँ मन्त्रशास्त्ररचयित्रे नमः,ऊँ मन्त्रसिद्धितत्वज्ञाय नमः, ऊँ मन्त्रमयाय नमः, मन्त्रसिद्धितत्व ज्ञानयुक्ताय नमः, ऊँ सर्वमन्त्रज्ञाय नमः, ऊँ मन्त्रफलदाय नमः, ऊँ गोभ्यः सिद्धाय नमः, ऊँ गोमतीप्रियाय नमः, ऊँ गोरक्षकर्त्रे नमः, ऊँ गोपानां स्वामिने नमः, ऊँ गोस्वामिने नमः, ऊँ अज्ञानविनाशकाय नमः, ऊँ सर्वकामपरिपूर्णाय नमः, ऊँ सर्वमयाय नमः, ऊँ सर्व ईष्ट देवाय नमः, ऊँ इन्द्रियशमनीयाय नमः, ऊँ शुद्धज्योति स्वरूपाय नमः, ऊँ अविरोधिने नमः, ऊँ सदा जागरणयुक्ताय नमः, ऊँ सिद्धेभ्यः सेविताय नमः, ऊँ धर्मस्वरूपाय नमः, ऊँ धर्मशास्त्रकर्त्रे नमः, ऊँ सर्वधर्मशास्त्र कर्तृषु श्रेष्ठतमाय नमः, ऊँ धर्मज्ञाय नमः, ऊँ धर्मधारिणे नमः, ऊँ धर्मसेतवे नमः, ऊँ धर्मेश्वराय नमः, ऊँ धर्ममार्गचालकाय नमः, ऊँ धर्माचरणकर्त्रे नमः, ऊँ धर्मज्ञाय नमः, ऊँ धर्ममर्मज्ञाय नमः, ऊ सर्वप्रथमाय नमः, ऊँ धर्मात्मने नमः, ऊँ कपिलावतारिणे नमः, ऊँ धर्मज्ञेषु सर्वप्रथमाय नमः, ऊँ धर्मात्मने नमः, ऊँ धर्मशास्त्रपारगताय नमः, ऊँ संसारकर्त्रे नमः, ऊँ संसारपोषाय नमः, ऊँ असुर राक्षस संहारकाय नमः, ऊँ सर्वज्ञाय नमः, ऊँ पुण्यकर्त्रे नमः, ऊँ पाप निवारकाय नमः, ऊँ गुणयुक्ताय नमः, ऊँ गुणाढ्याय नमः, ऊँ गुणयोग्याय

नमः, ऊँ गणना योग्याय नमः, गुणानां प्रियाय नमः, ऊँ गुणज्ञान प्रियाय नमः, ऊँ पूज्यगुणयोग्याय नमः, ऊँ गुणतन्त्र मार्ग प्रर्वतकाध्यक्षाय नमः, ऊँ गुणानां मन्त्रवते नमः, ऊँ गुणैः लोकानुरन्जनकारिणे नमः, ऊँ गुणाधाराय नमः,ऊँ गुणस्वामिने नमः, ऊँ गुणज्ञैः प्रशंसिताय नमः, ऊँ गुणीनां प्रियाय नमः, ऊँ गुणोत्पत्तिस्थानाय नमः,ऊँ गुणसर्वश्रेष्ठाय नमः, ऊँ गोरक्षप्रियाय नमः, ऊँ गुणैः सुशोभिताय नमः, ऊँ वेदविद्यायुक्ताय नमः, ऊँ वेदवन्दनीयाय नमः, ऊँ वेदज्ञ आचार्याय नमः, ऊँ वेदान्तेन ज्ञातुमर्हाय नमः, ऊँ वेदान्त प्रणेत्रे नमः, ऊँ वेदान्तस्यातिपारंगताय नमः, ऊँ सुवर्णशरीरधारिणे नमः, ऊँ सुवर्णवीर्यवते नमः, ऊँ श्वेतवर्णयुक्ताय नमः, ऊँ उच्चः श्रवसे नमः, ऊँ हिमालय पर्वत स्वरूपाय नमः, ऊँ हयग्रीवावताराय नमः, ऊँ अश्वाध्यक्षाय नमः, ऊँ शक्तिमते नमः, ऊँ शक्तिदात्रे नमः, ऊँ शक्तिनाथाय नमः, ऊँ अतिशक्ति सम्पन्नाय नमः, ऊँ समर्थवते नमः, ऊँ मायारहिताय शुद्धाय नमः, ऊँ शक्ति सिद्धकारकाय नमः, ऊँ शक्तिहरणकर्त्रे नमः, ऊँ शक्तिकारणाय नमः, ऊँ सर्वगुण सम्पनाय नमः, ऊँ सर्वविधऐश्वर्यदात्रे नमः, ऊँ त्रिपुण्ड चन्दनधारिणे नमः, ऊँ वैराग्यमुक्ताय नमः, ऊँ शिवस्वरूपाय नमः, ऊँ सन्यासरूपिणे नमः, ऊँ गजासुर नाशकर्त्रे नमः, ऊँ भूतवेताल सुशोभिताय नमः, ऊँ श्मशानगृह निवासने नमः, ऊँ

वनविचरणशीलाय नमः, ऊँ त्रिशूलधारिणे नमः, ऊँ कर्मणां साक्षिभूताय नमः, ऊँ कर्मकर्त्रे नमः, ऊँ कर्मसामर्थ्ययुक्ताय नमः, ऊँ शुभकर्मकर्त्रे नमः, ऊँ शुभफल दात्रे नमः, ऊँ कर्मबन्धनछेदाय नमः, ऊँ शुभकर्मकर्ता गुरवे नमः, ऊँ गोदान दात्रे नमः, ऊँ गोकष्टनिवारकाय नमः, ऊँ गोसंकट विनाशकाय नमः, ऊँ गोवृद्धिकारकाय नमः, ऊँ गोसौभाग्य वृद्धि कारकाय नमः, ऊँ गोगायत्री उत्पादकाय नमः, ऊँ गोकाम धेनु प्रियाय नमः, ऊँ ज्ञानचक्षुधारिणे नमः, ऊँ चक्षुदात्रे नमः, ऊँ गुप्ताद् गुप्तगोरक्षााय नमः, ऊँ ज्योतिस्वरूपाय नमः, ऊँ अत्यन्तप्रकटीभूताय नमः, ऊँ सत् स्वरूपाय नमः, ऊँ शून्य ध्यान युक्ताय नमः, ऊँ नरमाईनाथ प्रियाय नमः, ऊँ अत्यन्तप्रिय शिष्येभ्य नमः, ऊँ महायोगसिद्धाय नमः, ऊँ पंचतत्ववशीभूत कर्त्रे नमः, ऊँ त्रिलोक प्रियाय नमः, ऊँ मृत्युंज्यस्वरूपाय नमः, ऊँ केवलयोगेन प्राप्यं प्राप्याणाम् नमः, ऊँ भैरव शक्ति रूपाय नमः, ऊँ योगमार्ग दर्शकाय नमः, ऊँ सर्व सर्वतः गुरू सतगुरू स्वरूपाय नमः, ऊँ गूढात्मने नमः, ऊँ अपूर्वपुरूषाय नमः, ऊँ गुहातीताय गुह्य ज्ञान युक्ताय नमः, ऊँ ओजस्वि नमः, ऊँ आईपन्थस्याविर्भावनिर्माणाय नमः, ऊँ सर्ववृणियुक्ताय नमः, ऊँ असंख्यमार्गेषुआत्मदर्शनाय आत्मज्ञान प्रकटकर्त्रे नमः, ज्ञानगम्यै नमः, ऊँ विशालाक्षाय नमः, ऊँ दयाकराय नमः, ऊँ कर्त्रे नमः,

ऊँ आलोकाय नमः, ऊँ त्रिलोचनाय नमः, ऊँ धर्मधाम नमः, ऊँ अमृतमयाय नमः, ऊँ संभाव्याय नमः, ऊँ जगदीशाय नमः, ऊँ गुण राशि नमः, ऊँ तारकाय नमः, ऊँ विरेश्वराय नमः, ऊँ प्रणवाय नमः, ऊँ विभवे नमः, ऊँ प्राशं नमः, ऊँ धनागमाय नमः, ऊँ धर्मधेनवे नमः, ऊँ महायशासे नमः, ऊँ अचलाय नमः, ऊँ पावनाय नमः, ऊँ तपस्विने नमः, ऊँ अनुतराय नमः, ऊँ यज्ञाय नमः, ऊँ गुणोत्तमाय नमः, ऊँ निरामत्तमाय नमः, ऊँ विरूपाय नमः, ऊँ सर्वेशाय नमः, ऊँ अलोभाय नमः, ऊँ सुलोचनाय नमः, ऊँ अप्रतिमाकृतये नमः, ऊँ सकलाधाराय नमः, ऊँ निर्ममाय नमः, ऊँ जयोर्तिमयाय नमः, ऊँ निरहंकाराय नमः, ऊँ सदागतये नमः, ऊँ मनस्विनेय नमः, ऊँ गोरक्षरूपधारिणे नमः, ऊँ धर्मणे नमः, ऊँ सात्विकाय नमः, ऊँ सत्यवते नमः, ऊँ गुणग्राहिणे नमः, ऊँ समाय नमः, ऊँ शुभकर्त्रे नमः, ऊँ स्तोत्रे नमः, ऊँ रसप्रियाय नमः, ऊँ स्तुत्याय नमः, ऊँ निष्कलंकाय नमः, ऊँ श्रुतिमते नमः, ऊँ शुभनाम्ने नमः, ऊँ निरूपद्रवाय नमः, ऊँ वरशीलाय नमः, ऊँ मानधनाय नमः, ऊँ सदागतये नमः, ऊँ कीर्तिभूषणाय नमः, ऊँ ऋद्धयै नमः, ऊँ सिद्धयै नमः, ऊँ बुद्धिदात्रे नमः, ऊँ पुष्पलोचनाय नमः, ऊँ त्रिवर्णस्वर्गा साधनाय नमः, ऊँ दृढ़प्रज्ञे नमः, ऊँ शुभनाम्ने नमः, ऊँ जीवनदात्रे नमः, ऊँ सुखदात्रे नमः, ऊँ मस्तनाथ योगिने नमः,

आरती श्री बाबा मस्तनाथ जी

ओ३म् जय बाबा मस्तनाथ हरे, जय बाबा मस्तनाथ हरे।
भक्त जनों के संकट, पल में दूर करें।।
ओ३म् जय बाबा मस्तनाथ हरे, जय बाबा मस्तनाथ हरे।
जो सुमरे सो पार तिरे, दुःख नष्ट होवें मन के।
सद् बुद्धि मिले भक्तों को, त्रिताप मिटे जन के।
ओ३म् जय बाबा मस्तनाथ हरे, जय बाबा मस्तनाथ हरे।
कम्बल, पुष्प, फल लिये खड़े, तुम सम नहीं दूजा।।
अज्ञानी है शिवानी स्वीकार करो पूजा।
ओ३म् जय बाबा मस्तनाथ हरे, जय बाबा मस्तनाथ हरे।।
श्री बाबा मस्तनाथ जी की आरती जो कोई नर गावे।
अन्न, धन, विद्या, बुद्धि ये चारों पावे।।
ओ३म् जय बाबा मस्तनाथ हरे, जय बाबा मस्तनाथ हरे।
भक्तजनों के संकट, पल में दूर करें।।
ओ३म् जय बाबा मस्तनाथ हरे, जय बाबा मस्तनाथ हरे।।

सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी महाराज

सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी ने अपने परम पूज्य गुरूदेव के श्री चरणों में बैठकर श्रद्धा व एकनिष्ठ भाव से योग मार्ग की कठिन से कठिन साधनाओं को बिना किसी विघ्न के सिद्ध कर लिया था।

श्री बाबा मस्तनाथ जी के महाप्रयाण के पश्चात् समस्त योगीजनों ने श्री तोतानाथ जी योगी को सिद्ध बाबा मस्तनाथ

जी के उत्तराधिकारी के रूप में गद्दी पर बैठाया। श्री बाबा तोतानाथ जी सिद्ध शिरोमणि जी के सहस्रों शिष्यों में से प्रमुख शिष्य थे।

श्री बाबा मस्तनाथ जी के समस्त शिष्यों ने अपने गुरूदेव की गद्दी पर विराजमान श्री तोतानाथ जी महाराज को उसी श्रद्धा तथा भक्ति-भाव से नमन किया, जिस प्रकार से वह सब सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी को नमन किया करते थे।

सप्तमी अष्टमी नवमी को श्री बाबा मस्तनाथ जी की पुण्य स्मृति में विशाल धार्मिक मेले का आयोजन

श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज के कैलाशधाम गमन के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी शिष्य सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी ने मठ अस्थल बोहर में एक ''महान स्मृति मेले'' का आयोजन किया।

इस स्मृति मेले में बारह पंथों के योगी देश-देशान्तर से पधारे तथा श्री बाबा मस्तनाथ जी को उनकी पावन स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित की।

मेले में इतनी भारी संख्या में साधु-महात्मा तथा भक्तगण पहुँचे कि उनकी गिनती करना अत्यंत कठिन था। वास्तव में यह स्मृति मेला अद्‌भुत तथा अनुपम था।

इस मेले में समस्त हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली पंजाब,

बंगाल तथा उत्तर-प्रदेश राज्य के अनेक बड़े-बड़े उच्चधिकारी भी सम्मिलित हुये।

महाराजा प्रताप के वंशज महाराणा उदयपुर ने अपने राज्य के धर्मदाय विभाग के अध्यक्ष को उदयपुर राज्य की ओर से महासिद्ध के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए भेजा। यह विशाल मेला लगातार तीन दिन तक चलता रहा। इस स्मृति मेले में जितनी भी धन राशी व्यय हुई, उसका प्रथम दिन का समस्त व्यय-भार उदयपुर के महाराजा की आज्ञानुसार उदयपुर के राजकोष से दिया गया। यह देखकर सब लोग आश्चर्यचकित रह गये, कहने लगे कि महाराजा की श्री बाबा मस्तनाथ जी के प्रति कितनी प्रगाढ़ श्रद्धा थी। श्री बाबा मस्तनाथ जी के वंशज व उनके उत्तराधिकारी शिष्य वर्तमान मठ अस्थल बोहर पीठाधीश्वर महन्त श्री चाँदनाथ जी योगी ने तो इस उत्सव में चार चाँद ही लगा दिये हैं। यह विशाल भव्य मन्दिर तीन दिन पहले तथा तीन दिन बाद इस प्रकार रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगा उठता है मानों वसुन्धरा पर देवलोक ही उत्तर आया हो। देश-विदेश से लोग इस परम पौराणिक धार्मिक मन्दिर को देखने से नहीं चूकते हैं। इस भव्य मन्दिर की शोभा देखते ही बनती है। श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर की पवित्रता व सुन्दरता के विषय में हमें बहुत अधिक बोलने या लिखने की आवश्यकता नहीं है, कहते हैं- फूल की ख्याति दूसरे स्थानों पर अपने आप ही पहुंच जाती है।

सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी महाराज की जोधपुर यात्रा

श्री बाबा तोतानाथ जी महाराज ने फागुन शुक्ला नवमी विक्रम सम्वत् १८६५ के शुभ दिन अपने पुज्य गुरूदेव की पुण्य-तिथि के समस्त कार्य सम्पन्न करने के पश्चात् अपनी धार्मिक यात्रा प्रारम्भ की। सर्वप्रथम श्री बाबा तोतानाथ जी जोधपुर पहुँचे। जोधपुर के महाराजा को श्री बाबा मस्त नाथ जी की कृपा से ही जोधपुर की गद्दी प्राप्त हुई थी। उन्होंने देवतुल्य योगी श्री तोतानाथ जी का राजकीय सम्मान के साथ शानदार स्वागत किया।

जोधपुर में सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी ने धार्मिक प्रवचनों तथा सत्संग द्वारा अनेक श्रद्धालुओं को योग मार्ग का रहस्य समझाया। वहा के अनेक नर-नारियों को योग मार्ग में दीक्षित किया।

जोधपुर से विदाई लेकर योगीराज श्री तोतानाथ जी बीकाने पधारे।

बीकानेर राज्य में योगबल द्वारा वर्षा करवाना

जिस समय सिद्ध योगी तोतानाथ जी बीकानेर पहुँचे, उस समय राज्य में चारों ओर भीषण अकाल के दुष्प्रभाव से मृत्यु की सी छाया मँडरा रही थी। पूरी जनता सूखे से ग्रस्त थी। सब अन्न व जल के लिए तरस रहे थे। पशुओं के लिए

घास का एक तिनका भी उपलब्ध नहीं था। ऐसे समय में सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी के बीकानेर पहुँचने पर वहाँ की जनता हर्षोल्लास से नाच उठी। वहाँ के लोग पहले से ही योग-प्रचारों से परिचित थे। उन्होंने सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी के योग की अलौकिक शक्तियों को अपनी आँखों से देख हुआ था। वह दृश्य भुलाये नहीं भूलता था, जब सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी ने ब्रह्मणों को भोजन के बाद दक्षिणा प्रदान करने के लिए पलभर में ही अतुलनीय स्वर्णराशि प्रदान कर दी थी।

जिस समय सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी ने बीकानेर राज्य में अपने चरण कमल रखे, तो उसी समय लोगों को विश्वास हो गया कि, अब उनके दुःखों का अन्त होने वाला है, और अब उनका भाग्योदय का सितारा चमकने में कुछ ही समय बाकी है।

प्रजा को यह अटूट विश्वास था कि सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी अपने गुरू की ही भाँति कोई ऐसा यौगिक चमत्कार करेंगे जिससे उनके कष्टों का अन्त क्षण-भर में ही हो जाऐगा।

उन दिनों बीकानेर राज्य में राजा सूरत सिंह राज कर रहे थे। महाराजा सूरतसिंह भी यौगिक सिद्धियों से भली भाँति परिचित थे। एक दिन राजा सूरतसिंह ने सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी महाराज के सम्मुख अपने राज्य में भीषण अकाल पड़ जाने और प्रजा द्वारा सहे जाने वाले कष्टों का वर्णन करते

हुए कहा कि, राज्य में वर्षा न होने के कारण समस्त प्रजा बड़े भारी संकट में फँस गई है। समस्त प्रजा अन्न व जल के लिए तरस रही है। तालाब, सरोवर, कुँए सब सूख गये हैं। राज्य का गोधन तथा पशुधन संकट में हैं। राज्य की समूची कृषि भूमि बंजर हो गई है।

राजा सूरतसिंह ने कहा कि शास्त्र की मर्यादा के अनुसार मुझे प्रजा के कष्ट के लिए नरक भोगना पड़ेगा। मेरा इहलोक तथा परलोक दोनों बिगड़ गये हैं। राजा सूरतसिंह योगीराज से कहने लगे कि अन्न व जल के अभाव में तड़प-तड़प कर मरती गाय तथा रूदन करती हुई प्रजा का कष्ट देखा नहीं जाता। मैं भीष्ण संकट में फँस गया हूँ "हे योगीराज!" मेरी आपसे कोटि-कोटि प्रार्थना है कि आप ही मुझे इस भीषण संकट से उबार सकते हैं। "हे दीन दयालु! हे करूणानिधान!" आप सर्वशक्तिमान हैं। आप अपने योगबल से वर्षा कराकर मेरे राज्य की रक्षा कीजिए। यह कहकर प्रजावत्सल महाराज सूरतसिंह की आँखों से अश्रु बहने लगे और वे श्री योगी तोतानाथ जी के श्री चरणों में गिर पड़े।

राजा सूरतसिंह की दुःख भरी वाणी सुनकर और उसका प्रजा के प्रति प्रेम देखकर श्री नाथ जी ने अपने योगबल से देखा कि, राज्य में भीषण अकाल का वास्तविक कारण क्या है?

योगबल से देखने के पश्चात् श्री बाबा तोतानाथ जी को वास्तविक अकाल का कारण पता चल गया। उन्होंने देखा कि इसमें राजा सूरतसिंह का कोई दुष्कर्म नहीं है, राज्य में भीषण

अकाल का कारण कोई दैवी प्रकोप है। योगी श्री ने यह भी जान लिया कि, राजा तो अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति वाला है, और वह अपनी प्रजा को पुत्र की भाँति चाहता है।

योगी श्री तोतनाथ जी ने कहा- ''हे राजन्! आप निश्चिंत होकर जाइये, आपके राज्य में शीघ्र ही मूसलाधार वर्षा होगी। जिससे आपकी समस्त प्रजा के कष्टों का निवारण होगा।''

सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी का आशीर्वाद पाकर राजा सूरतसिंह अपने महल में पहुँच भी नहीं पाये थे कि, योगीराज की कृपा से, उनके योगबल से समस्त राज्य में मूसलाधार वर्षा होने लगी। प्रजा में कुछ ही समय पूर्व जहाँ मृत्यु ताडंव करती नजर आ रही थी, वहीं पर सिद्ध की कृपा से उन सबके कष्ट का अन्त हो गया। प्रजा ने योगी श्री केजय जयकार के नारे लगाये और उनके आशीर्वाद से आनंद-पूर्व रहने लगे।

महाराज सूरतसिंह ने इस घटना को ऐतिहासिक स्वरूप देने के लिए सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी तथा उनके पश्चात् उनके योगाश्रम मठ अस्थल बोहर को ५२५० पुखता बीघे रकबे का गाँव ''गंगानी थेहड़ी'' जो कि गंगानगर जिले की हनुमान तहसील में हनुमानगढ़ नगर के निकट स्थित है भेंट में प्रदान किया।

सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी ने गंगानी थेहड़ी गाँव में एक गौशाला स्थापित की, वही गौशाला आज तक चली आ रही हैं। वर्तमान मठाधीश्वर महन्त श्री चाँदनाथ जी योगी ने गौशाला को अब बहुत ही सुन्दर तरीके से बनवा दिया है। वहाँ पर

लगभग २००-२५० गायें एक साथ रहती हैं।

गायों की सेवा बहुत ही श्रद्धा एवं भक्ति भावना के साथ की जाती है। महन्त जी की देखरेख में कृषि उत्पादन भी बहुत आधुनिक तरीके से किया जाता है।

योगी श्री चाँदनाथ जी के पूज्य गुरूदेव ने अपने कार्यकाल में गंगानी थेहड़ी गाँव में एक विशाल नेत्र-चिकित्सालय का निर्माण कराया था। इस नेत्र चिकित्सालय में आज भी लाखों रोगी निशुल्क चिकित्सा करवाते हैं।

इसी नेत्र चिकित्सालय में सिद्ध योगी श्री श्रेयोनाथ जी महाराज ने अपने लिए एक हालनुमा कमरा बनवाया, हनुमानगढ़ जाने पर वह सदैव उसी कमरे में ठहरते थे। वह सदैव उस कमरे में बैठकर अपने शिष्यों को यही बताते थे कि, मेरा अन्तिम समय, मेरा अन्तिम श्वास इसी कमरे में आयेगा।

योगी श्री तोतानाथ जी महाराज ने अपने योगबल से अनेक चमत्कार प्रदर्शन किये, तथा दीन-दुखियों के कष्टों का निवारण किया। आज भी गंगानी थेहड़ी गाँव में इसी शिष्य परम्परा के योगीजन रहते हैं। आज भी वहीं भूमि जो महाराजा सूरतसिंह ने सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी को भेंट में प्रदान की थी, मठ अस्थल बोहर की सम्पत्ति के रूप में है।

श्री महन्त चाँदनाथ जी योगी ने गाँव गंगानी थेहड़ी में बहुत ही भव्य, आकर्षक व विशाल शिव-मन्दिर का भी निर्माण कराया है। साथ ही साथ श्री महन्त जी ने कृषि भूमि के निकट

ही कुछ और भूमि खरीद कर मठ की सम्पत्ति में श्री वृद्धि की है।

विक्रम सम्वत् १८६४ श्रावण कृष्णा नवमी के दिन योगबल से श्री तोतानाथ जी महाराज अपना शरीर त्यागकर महासमाधि में लीन हो गये।

सिद्ध योगी श्री मेघनाथ जी महाराज

सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी के शिवलोक जाने के पश्चात् उनके सर्वश्रेष्ठ एवं उत्तराधिकारी शिष्य श्री मेघनाथ जी योगी गद्दी पर बैठे। योगी श्री मेघनाथ जी ने निरन्तर अपने गुरू के श्री चरणों में बैठकर योग-साधना की। आपने अनेक स्थानों पर जाकर भक्तजनों तथा श्रद्धालु पुरूषों को योग मार्ग में दीक्षित किया।

योगी श्री मेघनाथ जी महाराज एक वचनसिद्ध योगी थे। इनके समय में मठ की सम्पन्नता दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई और मठ के कोष में पुष्कल धनराशि जमा हो गई।

योगी श्री मेघनाथ जी महाराज अत्यंत दयालु प्रवृत्ति के उदार योगी थे। योगी जी से कोई भी व्यक्ति जब चाहे तब मिल सकता था। इनके समय में श्री बाबा मस्तनाथ जी के द्वारा स्थापित अटूट भंडारा निरन्तर चलता रहता था। योगी जी के अनोखे योग-प्रचार से बड़े-बड़े व्यापारी लोग इस मठ के सेवक बने।

आप सम्वत् १६२३ वि० में मिति चैत बदी १३ को ब्रह्मलीन हुए।

सिद्ध योगी श्री मोहरनाथ जी महाराज

सिद्ध योगी श्री मेघनाथ जी के महा-प्रयाण के पश्चात् उनके सुयोग्य शिष्य अपने गुरूदेव के उत्तराधिकारी के रूप में अस्थल बोहर मठ के महंत बने।

योगी श्री मोहरनाथ जी अत्यंत प्रगतिशील विचारों के कर्मठ योगी थे। संस्कृत भाषा के प्रकांड पंडित थे। कुरीतियों के प्रबल-विरोधी थे।

योग-प्रचार के लिए हाथी-घोड़ों का उपयोग

इस प्रचीन मठ अस्थल बोहर में, इतिहास में प्रथम बार हाथी-घोड़े तथा रथ आदि इन्हीं के कार्यकाल में रखे गये। मठ के योगी धर्म-प्रचार के लिए दूर-दराज के इलाकों में हाथी-घोड़े का प्रयोग करने लगे।

जिस स्थान पर भी ये योगी महात्मा जाते थे, गृहस्थ जन इनकी बड़ी श्रद्धा से सेवा करते थे, और इन साधु महात्माओं को भेंट-पूजा में धन, वस्त्र तथा अन्न देते थे। महात्मा इस धन राशि को दीन-दुखियों की सेवा में लगा देते थे। अन्न को सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी के समय से चालू ''अटूट-भंडारे'' में लगा देते थे। भंडारा श्री बाबा मस्तनाथ जी परम्परा के अनुसार आज तक ज्यों का त्यों चालू है।

योगाश्रम के प्रति लोगों का निष्ठा भाव

सिद्ध योगी श्री मोहरनाथ जी महाराज ने योग प्रचार के लिए तथा योग-मार्ग की शिक्षा देने के लिए अनेक स्थानों पर योगाश्रम बनवाये। योगाश्रमों पर होने वाला समस्त खर्च मठ अस्थल बोहर की तरफ से ही किया जाता था।

योगाश्रमों की स्थापना होने से तथा उनमें शिक्षा ग्रहण करने से जनसाधारण में योगियों तथा योगाश्रमों के प्रति श्रद्धा व निष्ठा उत्पन्न होना स्वभाविक ही था। योगी श्री मोहरनाथ जी महाराज बहुत विद्वान योगी थे। आप सम्वत् १९३५ वि० पौष सुदी १५ को ब्रह्मलीन हुए।

सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज

सिद्ध योगी श्री मोहरनाथ जी के शिवलीन होने के पश्चात् उनके शिष्य श्री चेतनाथ जी उत्तराधिकारी के रूप में पौष-शुक्ला १५ पूर्णिमा विक्रम सम्वत् १९३५ के दिन मठ अस्थल बोहर के महंत बने, और श्री गुरू गद्दी पर आरूढ़ हुए। योगी श्री चेतनाथ जी श्रेष्ठकर्मी, अतीव सात्विक वृत्ति सम्पन्न सिद्ध योगी थे। योगी श्री अत्यंत उदारचित्त परोपकारी तथा दीन-दुःखियों पर दया करने वाले थे। उनके कार्यकाल में देश में बहुत से ऐसे भीषण अकाल पड़े, जिससे यह मठ भी अत्यंत प्रभावित हुआ। इतना सब होने के पश्चात् भी श्री बाबा मस्तनाथ जी के समय से चली आ रही ''सदाव्रत'' की परम्परा को ज्यों की त्यों बनाये रखने के लिए इस मठ के योगीजन सुबह तथा

शाम को दीन-दुःखियों को भोजन वितरण करते थे।

सम्वत् १६५६ में इतिहास प्रसिद्ध भीषण अकाल पड़ा। इस अकाल की चपेट में समस्त हरियाणा पटियाला, दिल्ली, मध्य-प्रदेश पंजाब था उत्तर-प्रदेश व बिहार भी आये। इन दिनों यहाँ अकाल के साथ-साथ बहुत बड़े-बड़े भूकम्प भी आये।

सम्वत् १६५६ के अकाल के समय देश के अनेक क्षेत्रों के लोग वृक्षों के छिलकों को कूटकर उसके साथ थोड़ा सा अन्न मिलाकर खाते थे, जिससे उनके प्राणों की रक्षा हो सके।

भीषण अकाल के दिनों में भी श्री चेतनाथ जी महाराज 'अटटू अन्न क्षेत्र' चलाते रहे। यह घटना निश्चय ही असमान्य और विलक्षण साहस की परिचायक घटना के रूप में इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित होने योग्य है।

माँ अन्नपूर्णा देवी का सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी पर पूर्ण आशीर्वाद

भीषण अकाल का सामना करने के लिए सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी ने अपने समस्त शिष्यों को समझाया कि, मठ के सामने से गुजरने वाला कोई यात्री भूखा न जाने पाये। प्रत्येक यात्री को भूने हुए एवं पके हुए चने वितरित किए जाये।

सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी भी स्वयं राजमार्ग पर आकर बैठ जाते थे। अपने हाथों से वे यात्रियों को चने आहार के रूप में बाँटते थे।

इस प्रकार से ऐसे भीषण अकाल के समय में दानवीर, करूणावतार परम पूजनीय योगी श्री चेतनाथ जी महाराज ने मठ अस्थल बोहर के 'अन्न क्षेत्र' के माध्यम से भूखी जनता की अनुपम तथा अवर्णनीय सेवा की।

वास्तव में यह घटना स्वर्णाक्षरों में लिखी जानी चाहिये। वर्तमान हरियाणा सरकार को भी इस पुस्तक को पढ़कर साधुओं की धर्म-परायणता पर विशेष ध्यान देना चाहिये। धर्म के रक्षक साधुओं की, सरकार के द्वारा भी रक्षा की जानी चाहिये।

जब देश में इतना भीषण अकाल पड़ा हुआ था, तब भी साधु-संतों का योगबल माँ अन्नपूर्णा देवी को प्रसन्न करने में सफल रहा। उन्होंने भूख से मरती जनता की भोजन देकर प्राण रक्षा की। जितना भी अन्न, अन्न क्षेत्र से प्रायः निकलता था, उससे कई गुणा ज्यादा अन्न उनके अन्न क्षेत्र में बढ़ा हुआ मिलता था। यहीं था 'माँ अन्नपूर्णा देवी' का सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी पर आशीर्वाद, और यही था सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज का अटूट 'सदाव्रत'।

बंजर भूमि के भाग जगे
कृषि से चार चाँद लगे

योगी श्री चेतनाथ जी महाराज एक सच्चे कर्मयोगी थे। सर्वप्रथम उन्होंने ही मठ अस्थल बोहर में पड़ी बंजर भूमि में कृषि करवाना आरम्भ किया।

योगी श्री चेतनाथ जी महाराज ने समय की गति को

पहचानते हुए मठ को दान पर ही निर्भर न रहकर आत्म-निर्भरता की राह पर चलने की प्रेरणा दी।

कृषि से पहले मठ की आय का मात्र एक ही साधन था, और वह था, केवल श्रद्धालु भक्तों द्वारा दिया हुआ दान, जिसमें घी, गुड़, अन्न, वस्त्र, इत्यादि शामिल था।

प्रेरणा पुंज श्री चेतनाथ जी महाराज ने मठ की कृषि भूमि को उपजाऊ बनाने का जो शुभारम्भ किया, इससे उनके शिष्यों में कृषि के प्रति और अधिक जागृति आ गई। उन्होंने कृषि से मठ की आय को इतना अधिक बढ़ा दिया कि उसका स्वरूप ही बदल कर रख दिया। अब वही मठ कृषि से दिन-प्रतिदिन मठ की आय की 'श्री वृद्धि' कर रहा है।

कृषि करवाने का सर्वप्रथम श्रेय सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज को ही जाता है। उन्होंने ही बंजर भूमि में कृषि करवानी प्रारम्भ की थी। इससे तो यही पता चलता है कि साधु महात्मा केवल दान पर ही निर्भर न रहकर अपनी योग-साधना के साथ-साथ स्वयं भी श्रम करना जानते हैं।

वर्तमान मठाधीश्वर महन्त श्री चाँदनाथ जी योगी ने तो कृषि को अत्यंत आधुनिक तरीके से करवाना प्रारम्भ किया हुआ है। कृषि की आय के द्वारा मठ में अनेक शिक्षण संस्थायें चलाई जा रही हैं।

संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना

सिद्ध श्री योगी चेतनाथ जी महाराज संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान और संस्कृत भाषा के परम अनुरागी थे। जब श्री चेतनाथ जी महाराज ने यह अनुभव किया कि, संस्कृत भाषा के न रहने से शनैः शनैः इसका प्रचलन कम होता जा रहा है, साथ ही यह भी अनुभव किया कि संस्कृत भाषा ही भारतीय संस्कृति की 'मेरूदंड' है, अगर इसी भाषा का ज्ञान का पठन-पाठन कम हो गया तो देश में अनाचार और अनैतिकता बढ़ती जायेगी। इन सभी विपदाओं से देश को बचाने का केवल एक ही मार्ग है, और वह मार्ग है- संस्कृत भाषा का प्रचार व प्रसार।

संस्कृत भाषा के प्रचार व प्रसार के लिए योगी श्री चेतनाथ जी महाराज ने मठ अस्थल बोहर में ही एक संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की। इस संस्कृत विद्यापीठ में लगभग अस्सी छात्र संस्कृत पढ़ते थे। इन सभी अस्सी छात्रों को मठ से ही वस्त्र, भोजन एवं पुस्तकें दी जाती थी। मठ में समूची संस्कृत शिक्षा निःशुल्क होती थी।

कुछ ही समय पश्चात् यही संस्कृत विद्यापीठ हरिद्वार में स्थापित किया गया। अत्याधिक परिश्रम करने के कारण आप कुछ अस्वस्थ हो गये, इसलिए कुछ समय के लिए आप गंगानी थेहड़ी राजस्थान चले गये। वह स्थान नितांत एकांत था। वहीं पर आपने कुछ समय विश्राम किया, और थोड़े ही समय के पश्चात् आपने अपने योगबल से सम्वत् १९६३ में मिति चैत बदि ५ को महा-समाधि ग्रहण कर ली और आप कैलाशधाम को चले गये।

प्रेरणा के अक्षय स्रोत सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज

प्रेरणा पुंज, योग अनुरागी, संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज राजा तथा साधारण जनता में समान रूप से लोकप्रिय थे। योगी श्री अपने योगबल से गंगानी थेहड़ी राजस्थान में ब्रह्मलीन हुये।

महाराजा बीकानेर ने आपके ब्रह्मलीन पार्थिव शरीर को स्पेशल रेलगाड़ी द्वारा गंगानी थेहड़ी से अस्थल बोहर मठ रोहतक भिजवाया। इस हेतु महाराजा बीकानेर ने अपने रेल-विभाग को तथा भारत सरकार के रेल मंत्रालय से विशेष प्रबंध करवाये थे।

गंगानी थेहड़ी से रोहतक हरियाणा तक श्रद्धालु भक्तजन सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज के ब्रह्मलीन शरीर को अपनी श्रद्धांजलियाँ भेंट करते रहे।

मठ अस्थल बोहर पहुँचने पर शिष्यगण, भक्तगण, ग्रामीण तथा दूर-दराज से आये योगी श्री चेतनाथ जी महाराज के शिष्यों ने अत्यंत श्रद्धा एवं भक्ति भाव से अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की तथा योगी श्री के भौतिक शरीर को अत्यंत सम्मान पूर्वक धरती माता को अर्पित किया। उस समय सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज की जय ध्वनियों से आकाश गुंजायमान हो रहा था। ॐ शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः।

सिद्ध योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज

सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज के कैलाशधाम जाने के पश्चात् उनके शिष्य श्री पूर्णनाथ जी उनके उत्तराधिकारी के रूप में मठ अस्थल बोहर के महन्त के पद पर आसीन हुए।

योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज ने अपने गुरूओं की ही भाँति धार्मिक प्रवास की परम्परायें जारी रखीं। उन्होंने योगी-सम्प्रदाय में आस्था रखने वाले सभी रजवाड़ों की यात्रायें की। स्थान-स्थान पर सभी धर्म-प्रेमी राजाओं-महाराजाओं ने श्री बाबा मस्तनाथ जी की पवित्र गद्दी के उत्तराधिकारी होने के कारण आपका अतीव श्रद्धा से स्वागत किया।

धार्मिक प्रवास के दौरान योगी श्री पूर्णनाथ जी हिन्दूकुल दिवाकर, महाराणा उदयपुर के यहाँ पधारे। महाराणा उदयपुर ने योगी श्री पूर्णनाथ जी का राजसी ठाठ-बाट के साथ स्वागत किया और बहुत भारी स्वागत जुलूस निकाला।

महाराजा उदयपुर ने आपको एकलिंग भगवान के मन्दिर के पास ही राजकीय अतिथियों के स्वागत भवन में ठहराया। महाराणा उदयपुर योगी श्री के साथ हुई चर्चाओं से बहुत प्रभावित हुए।

महाराजा उदयपुर ने आपको विदाई के समय परम्परा के अनुसार ५,००० कलदार रजत मुद्राऐं तथा एक 'नर घोड़ा' मठ अस्थल बोहर के लिए भेंट कर आपकी यथा-विधि पूजा

की। महाराणा उदयपुर ने मठ के द्वारा हरिद्वार में निर्माणाधीन योगाश्रम संस्कृत विद्यालय के लिए भी ७,००० कलदार रजत मुद्रायें श्रद्धा-पूर्वक भेंट में अर्पित की।

योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज की धार्मिक अलवर यात्रा

योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज अपनी यात्रा के दौरान अलवर राज्य पधारे। उन दिनों अलवर राज्य में राजा जयसिंह का शासन था। राजा जयसिंह बहुत विद्वान व्यक्ति थे। संस्कृत भाषा से उन्हें बेहद लगाव था। वे बहुत ही प्रगतिशील विचारों के धनी थे। योगी श्री पूर्णनाथ जी का उन्होंने बहुत भव्य स्वागत किया।

अलवर नरेश महाराजा जयसिंह ने योगी श्री पूर्णनाथ जी की बेहद श्रद्धा भावना से सेवा की, विदाई के समय उन्हें अनुपम भेंट-पूजा अर्पित की। उन्होंने हरिद्वार में संस्कृत विद्यालय के निर्माण के लिए भी काफी धन राशि भेंट में अर्पित की।

हरिद्वार में संस्कृत विद्यालय की स्थापना

अपने परम पूज्य गुरूदेव योगी श्री चेतनाथ जी महाराज की स्मृति को चिर-स्थायी बनाने के लिए योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज ने हरिद्वार में संस्कृत विद्यालय के निर्माण कराया। विद्यालय में विद्याध्ययन करने वाले छात्रों के पठन-पाठन तथा भोजन, वस्त्र आदि का समस्त व्यय 'मठ अस्थल बोहर' द्वारा

ही किया जाता था।

इस संस्कृत विद्यालय में सैकड़ों विद्वानों ने शिक्षा पाई। इस विद्यालय के व्यय हेतु योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज ने उत्तर प्रदेश के दो गाँवों की आय को इस हेतु निर्धारित कर दिया था।

कालान्तर में उत्तर प्रदेश राज्य में कुछ राजनीतिक परिवर्तन हुए, उन दिनों स्वाधीनता आन्दोलन चल रहा था। उत्तर प्रदेश में पहली लोकप्रिय सरकार गोविंद बल्लभ पंत के नेतृत्व में बनी। उन्होंने जमींदारी प्रथा का उन्मूलन करने का निर्णय किया, उसकी लपेट में आने से बचने के लिए श्री पूर्णनाथ जी ने एक गाँव को बेंच दिया, किन्तु दूसरा गाँव कानून की चपेट में आ गया। इसी उथल-पुथल से संस्कृत विद्यालय की आय के स्रोत बंद हो गये। इसी कारणवश यह संस्कृत विद्यालय बंद कर देना पड़ा।

धार्मिक ग्रंथों' का प्रकाशन

योगी श्री पूर्णनाथ जी की यह हार्दिक इच्छा थी कि, जनसाधारण को योग-सम्प्रदाय की सही जानकारी मिले। इसीलिए उन्होंने 'सिद्ध सिद्धान्त पद्धति' 'गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह' 'श्री योगाचार्य स्तोत्रावली' नामक ग्रंथों को हिन्दी में टीकायुक्त करवाकर मठ की और से प्रकाशित करवाया तथा जनसाधारण को सुलभ करवाया।

हिन्दू संस्कृति के प्रतीक

जिस समय योगी श्री पूर्णनाथ जी मठ अस्थल बोहर की गद्दी पर विराजमान हुए, उन दिनों भारत वर्ष ब्रिटिश सरकार के अधीन था। स्वतंत्रता आन्दोलन उन दिनों चल रहा था। इस अवधि में देश के अनेक नौजवान अपनी मातृ भूमि को ब्रिटिश सरकार से मुक्त कराने के लिए आन्दोलन कर रहे थे। इस भयंकर प्रवाह के काल चक्र से योगी सम्प्रदाय भी इस आन्दोलन से नहीं बच सका।

श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज की शिष्य परम्परा के अनेक साधु-संतों और योगियों ने देश के स्वाधीनता आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया और अपनी प्रमुख भूमिका निभाई।

योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज राजनीति में अत्यंत दक्ष थे। अन्दर से योगी श्री ब्रिटिश सरकार के एकदम खिलाफ थे, परन्तु प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश सरकार के एकदम साथ थे। महायुद्ध में उन्होंने ब्रिटिश सरकार को पचास हजार रूपये तथा एक नर घोड़ा भी शासन को दिया। ब्रिटिश सरकार को यह धन-राशि देने के पीछे योगी पूर्णनाथ जी का बहुत बड़ा ध्येय छिपा हुआ था, जिसकी ब्रिटिश सरकार को कानों कान भी खबर नहीं थी। उन दिनों अंग्रेज शासक जहाँ भी हिन्दुओं के मन्दिर व मठों को देखते थे, उसी समय उनको तुड़वा डालते थे। योगी श्री पूर्णनाथ जी ने अनुमान लगाया कि यदि अपनी हिन्दू संस्कृति, मन्दिर और मठों को बचाना है तो कुछ न कुछ तो

अवश्य करना पड़ेगा। यही विचार कर योगी श्री कभी कभार ब्रिटिश सरकार को खुश कर दिया करते थे।

ब्रिटिश सरकार को जब पचास हजार रूपये धन राशि के रूप में प्राप्त हुए तो उनकी प्रसन्नता की सीमा नहीं रही। उन्होंने योगी श्री पूर्णनाथ जी को ब्रिटिश सरकार की और से 'कैसरे-हिन्द' का खिताब प्रदान किया। योगी श्री पूर्णनाथ जी को ब्रिटिश सरकार ने काफी सम्मान भी प्रदान किया। आप हरियाणा राज्य में ब्रिटिश सरकार के सबसे बड़े समर्थक जलियाँवाला बाग काँड के नायक जनरल डायर के हक में गवाही देने वाले राय बहादुर चौधरी लालचंद तथा हरियाणा प्रदेश में ब्रिटिश सरकार के उस समय के सबसे बड़े सुदृढ़ स्तम्भ चौधरी छोटूराम जी के विरूद्ध चुनावों के मध्य प्रत्याशियों को खड़ा करने तथा उनकी सहायता हेतु उन्हें सहायता देने में भी आप हमेशा अपना हाथ बंटाते रहे। इस प्रकार से आप दोनों पक्षों को सन्तुष्ट करने का प्रयास करते थे।

२८ फरवरी १६३६ के शुभ दिन आपने शुभ तिथि देखकर अपने सुयोग्य शिष्य श्री श्रेयोनाथ जी को 'मठ अस्थल बोहर' के सर्वमान्य महन्त पद पर प्रतिष्ठित किया और स्वयं उत्तर प्रदेश राजस्थान तथा हिमाचल राज्यों में धार्मिक प्रवास के लिए चले गये।

जिस समय आप हिमाचल में थे, प्रवास के मध्य ही आप ब्रह्मलीन हो गये। आपके ब्रह्मलीन पार्थिव शरीर को आपके शिष्यों ने हरिद्वार लाकर ब्रह्मकुंड में 'जल समाधि' दे दी।

सिद्ध योगी श्री श्रेयोनाथ जी महाराज

श्री श्रेयोनाथ जी महाराज को उनके पूज्य गुरूदेव सिद्ध योगी श्री पूर्णनाथ जी महाराज ने अपनी जीवित अवस्था में ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।

योगी श्री श्रेयोनाथ जी का प्रारम्भिक जीवन

योगी श्री श्रेयोनाथ जी के समान विभूतियाँ यदा-कदा ही अवतरित होती हैं। पिछली शती के आरंभ में न जाने देश के अनेक क्षेत्रों में अनेक महापुरूष अवतरित हुए। योगी श्रेयोनाथ जी उनमें से एक और शायद अपने ढंग के एकमात्र ही महापुरूष थे। यह तो हमारा सौभाग्य है कि हमें उनके समीप बैठने का और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ।

महान कर्मयोगी श्री श्रेयोनाथ जी का जन्म दिल्ली के नरेला नामक कस्बे में जाट जाति के एक सम्मानीय किसान परिवार में ५ जनवरी सन् १६०४ ई० में हुआ था। विधि का विधान अटल है, इसमें दखल देना असंभव है। १५ वर्ष की अल्पायु में ही आप विरक्त हो गये। घर बार का मोह त्याग कर आप वैरागी हो गये। एक कहावत के अनुसार- मनुष्य अपने पूर्व जन्म के संस्कारों सिद्धियों और शक्तियों को लेकर जन्म लेता है। यदि कोई मनुष्य आध्यात्मिक होने का इच्छुक है, और उन्नति करने से पहले ही वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तो फिर से वह नई देह धारण करके अपनी साधना शुरू कर देता है।

सिद्ध योगी श्री श्रेयोनाथ जी महाराज

अल्प आयु में घर-बार और मोह-माया का त्याग यही दर्शाता है, कि अवश्य ही योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने अपने पूर्वजन्म के संस्कारों के आधार पर ही यह जन्म धारण किया और प्राचीन धार्मिक मठ अस्थल बोहर में आकर योगी श्री पूर्णनाथ जी से दीक्षा ग्रहण कर योग-मार्ग में प्रवृत्त हुए।

शिक्षा

'योग साधना' के लिए उच्च तथा उदात्त शिक्षा-प्राप्ति परम आवश्यक है। यह अनुभव कर आप विद्याध्ययन में जुट गये, और संस्कृत भाषा को परम आवश्यक मानकर आप संस्कृत भाषा में पाण्डित्य - प्राप्त करने में संलग्न हो गये।

ऋषियों और मुनियों ने अपनी ज्ञान-साधना एवं आध्यात्मिक साधना संस्कृत वाड्.मय के माध्यम से ही की थी। समस्त ऋषि-मुनियों ने ज्ञान-निधि से ही संस्कृत भाषा का भंडार भरा था। इसलिए आपने संस्कृत भाषा को ही अत्यंत आवश्यक जाना।

जब आप संस्कृत भाषा का अध्ययन कर रहे थे तो उस समय आपको एक कठिनाई अवश्य आई, कि संस्कृत भाषा के विद्वान संस्कृत भाषा में पूर्ण पारंगत थे, साथ ही उनका दृष्टिकोण तथा आचार प्रायः अत्यंत संकीर्ण होता था। यहाँ तक कि वे किसी के हाथ का बना हुआ अथवा छुआ हुआ भोजन करना उपयुक्त नहीं समझते थे। यह भेद-भाव पूर्ण प्रवृत्ति आपको सदैव कचोटती रहती थी, फिर भी आप अपना कार्य

बिना किसी बाधा के करते थे। इस दृष्टिकोण को आधार बनाकर आपने सदा ही संयम तथा धैर्य से काम लिया। आपने अपने चित्त को कभी भी अशांत नहीं होने दिया। आप निरंतर अपने विद्याध्ययन में जुटे रहे।

संस्कृत भाषा में पाण्डित्य प्राप्त करने के लिए आपने खुर्जा, हरिद्वार तथा कपूरथला राज्य में गुरूचरणों में बैठकर गंभीर स्वाध्याय किया और संस्कृत भाषा में निष्णात हो गये।

संस्कृत भाषा का अनमोल ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् आप शस्त्रों के स्वाध्याय में प्रवृत्त हो गये। अधिकांश समय आप स्वाध्याय तथा मनन चिंतन में ही बिताते थे।

जयपुर को संस्कृत भाषा तथा शास्त्रों को केन्द्र माना जाता था, आप संस्कृत ज्ञान प्राप्त करने के बाद आयुर्वेद ज्ञान प्राप्ति के लिए जयपुर गये। वहाँ के प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान 'महाराजा संस्कृत कालेज' से आयुर्वेद शास्त्री की उपाधि प्राप्त की।

औषधि निर्माण आयुर्वेद का एक महत्वपूर्ण अंग है। आपने बहुत ही निष्ठा से 'औषध निर्माण' के ज्ञानार्जन में ध्यान दिया। आपने अपने अन्य सहपाठियों से अधिक अंक प्राप्त कर इस विद्या में पूर्णतया सफलता प्राप्त की।

भगवान धन्वन्तरि जी के आशीर्वाद से आपकी आयुर्वेद कीर्ति देश विदेश में फैली

कठियावाड़ के महाराजा व्याधिग्रस्त थे। उन्होंने न जाने कितने ही वैद्य एवं कुशल चिकित्सकों से अपना इलाज करवाया, लेकिन उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। जब महाराजा ने आपकी बहुत ख्याति सुनी, तो आपको अपने महल में बुलवा लिया। आयुर्वेद पद्धति से आपने महाराजा की चिकित्सा बड़ी ही निष्ठा से की। आपकी चिकित्सा से महाराजा थोड़े ही समय में स्वस्थ हो गये। स्वस्थ होने के पश्चात् महाराजा ने आपके ससम्मान चरण स्पर्श किये, और विदाई के समय आपको बहुत सी धन-राशि भेंट में दी। उसी धन राशि से आपने अहमदाबाद में एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय की स्थापना की। चिकित्सालय के साथ-साथ आपने औषध-निर्माण का कार्य भी आरंभ कर दिया। उसी धन राशि में से पाँच हजार रजत मुद्रायें आपने अपने पुज्य गुरूदेव को मठ अस्थल बोहर दक्षिणा स्वरूप भेजीं।

रोग निदान, व्याधि चिकित्सा में दक्षता प्राप्त करने के कारण आपका नाम चारों और फैल गया। इस प्रकार भगवान धन्वन्तरि, सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज एवं आपके पूज्य गुरूदेव के आशीर्वाद से आपके पास कंचन बरसन लगा।

'गुरू आदेश' से आपका मठ अस्थल बोहर में शुभागमन

योगी श्री पूर्णनाथ जी अत्यन्त नीति-निपुण महापुरूष थे। योगी श्री के १४०० शिष्य थे, परन्तु वे चाहते थे कि मठ के महन्त पद पर किसी ऐसे शिष्य को आसीन किया जाए, जो इस प्राचीन धार्मिक मठ को प्रगति के शिखर पर ले जाये, और इस मठ की कीर्ति को चारों दिशाओं में फैला दे। इतने शिष्यों में आन्तरिक मतभेद होना तो स्वाभाविक ही है, जिस समय आप गुजरात में आयुर्वेद चिकित्सा का कार्य कर रहे थे, उसी अवधि में कुछ परिस्थितियों के कारण आंतरिक परिवर्तन आ गये। इसी अवधि में आपके गुरूदेव ने आपको गुजरात में तीन पत्र लिखे, उन पत्रों में बार-बार यही आग्रह था कि- प्रिय शिष्य! मठ अस्थल बोहर जल्दी चले आओ, और मठ का कार्यभार संभालो। यहाँ आकर मठ का 'सर्वोच्च पद' स्वीकार करो।

योगी श्री पूर्णनाथ जी अपने १४०० शिष्यों में से आपको ही सबसे योग्य समझते थे।

गुजरात में आपका बहुत मान-सम्मान था। वहाँ पर आप आयुर्वेद के कारण काफी प्रख्यात हो चुके थे। अतः आपने मठ अस्थल बोहर आने में अपने गुरू को असमर्थता जताई। आपके गुरू ने जब 'आग्रह' के स्थान पर 'आदेश' शब्द का प्रयोग किया तो शास्त्र मर्यादा के अनुसार गुरू आज्ञा शिरोधार्य मानकर आप मठ अस्थल बोहर आ गये। (आज भी

मठ अस्थल बोहर में आपके गुरूदेव द्वारा लिखे गये पत्र सुरक्षित रखे हुए हैं)

सम्प्रदाय में प्रचलित रीति के अनुसार २१ मार्च सन् १९३७ ई० के शुभ दिन सर्वप्रथम श्री बाबा मस्तनाथ जी की शिष्य परम्परा के योगियों ने श्री श्रेयोनाथ जी को मठ अस्थल बोहर के महन्त पद पर आसीन होने के लिए उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार किया। उसी दिन से आपने मठ का सारा कार्यभार संभाल लिया।

प्रशिक्षण की पूरी अवधि होने पर दिनांक २८ फरवरी १९३९ के शुभ दिन इस प्राचीन मठ के 'महन्त' पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। तत्पश्चात् आपके गुरूदेव ने यहाँ से धार्मिक यात्रा पर प्रस्थान किया।

श्री श्रेयोनाथ जी के महन्त पद पर आसीन होने के शुभ अवसर पर बहुत ही विशाल और भव्य समारोह हुआ। उस समय समारोह में लगभग एक लाख रूपये की धन-राशि व्यय हुई।

कृषि के आधुनिकीकरण द्वारा मठ की सम्पदा में 'श्री वृद्धि'

महन्त श्रेयोनाथ जी योगी का जन्म एक किसान परिवार में हुआ था। इसलिए कृषि पर आपका स्वाभाविक रूप से अधिकार होना संभव ही था। आपमें वे सब गुण विद्यमान थे, जो

प्राकृतिक रूप से एक प्रगतिशील किसान में होने चाहिए। आपने कृषि को आधुनिकीकरण से करवाना प्रारंभ किया। साथ ही साथ कृषि विज्ञान के समस्त आधुनिक साधनों का प्रयोग किया।

जब आप मठ अस्थल बोहर की परम-पवित्र गद्दी पर महन्त पद पर प्रतिष्ठित हुए तब अस्थल बोहर मठ में अचल सम्पत्ति के अतिरिक्त लगभग तीस सहस्त्र रूपया कोष में था। आपने अपनी लगन और कठोर परिश्रम से मठ की आय को बढ़ाना शुरू किया, और कृषि के द्वारा होने वाली उपज को भी बढ़ाया। आपकी मेहनत और लगन ने अपना रंग दिखाया, कृषि से मठ को प्रभूत आय प्राप्त होने लगी।

श्री बाबा मस्तनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय का निर्माण

मठ की लोकप्रियता को बढ़ाने तथा आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को जाग्रत रखने के लिए आपने मठ में ही व्याधिग्रस्त रोगियों की चिकित्सा तथा उनको निःशुल्क औषधि वितरण का कार्य शुरू कर दिया। मठ के परिसर में ही आपने यह सोचकर आयुर्वेद चिकित्सालय का निर्माण कराया, कि प्रतिदिन आने वाले रोगियों को सुविधा हो सके। श्री बाबाजी आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति की उन्नति तथा प्रतिष्ठा चाहते थे। वे स्वयं एक हस्तसिद्ध वैद्य थे। उनकी रोगों की परख शक्ति अद्भुत थी। सैकड़ों रोगियों की चिकित्सा उन्होंने स्वयं ही की थी। इसका परिणाम यह था, कि प्रतिदिन प्रातः और सायं सैकड़ों रोगी मठ में आने लगे। रोगियों की सुविधा को ही ध्यान में रखते हुए

आपने आयुर्वेद चिकित्सालय का निर्माण कराया। यह चिकित्सालय लगभग तीन वर्ष की अवधि में पूरा हुआ।

श्री बाबा मस्तनाथ धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय

महन्त श्रेयोनाथ जी योगी ने रोगियों की चिकित्सा के मध्यही यह अनुभव किया कि इस क्षेत्र के लोगों में नेत्र रोग भी बहुत अधिक हैं। अतः आपने नेत्र रोग चिकित्सा हेतु 'श्री बाबा मस्तनाथ धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय' की स्थापना की। समूचे हरियाणा राज्य में यह नेत्र चिकित्सालय प्रख्यात है। इस चिकित्सालय को श्री बाबा मस्तनाथ जी का आशीर्वाद है, कि कोई भी व्यक्ति इस चिकित्सालय में अपनी आँखों का इलाज करवाये उसमें चिकित्सकों को शत् प्रतिशत सफलता मिलती है।

इस चिकित्सालय में दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराँचल, राजस्थान से रोगी आकर अपनी नेत्र चिकित्सा करवाते हैं। सभी रोगी आपनी नेत्र व्याधि दूर होने पर संस्था के संस्थापक साधुओं को हृदय से धन्यवाद करते हैं।

श्री बाबा मस्तनाथ नेत्र चिकित्सालय में नेत्र चिकित्सा सर्वथा निःशुल्क होती है। प्रतिदिन ३०० से ३५० तक की ओ. पी.डी. होती है। वास्तव में इस नेत्र चिकित्सालय की चिकित्सा अनूठी तथा अनमोल है।

श्री बाबा मस्तनाथ धर्मार्थ सामान्य चिकित्सालय

श्री बाबा मस्तनाथ सामान्य चिकित्सालय में ऐलोपैथिक तथा आयुर्वेद दोनों ही प्रणालियों से चिकित्सा की जाती है। दोनों ही चिकित्सा प्रणाली निःशुल्क हैं। यह चिकित्सालय अपने ढंग का अनोखा और अनुपम है।

श्री बाबा मस्तनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय

जब योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने देखा कि, देश में आयुर्वेद विद्या का शनैः शनैः ह्रास होता जा रहा है और समय के दुष्प्रभाव से प्राचीन आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली की गौरव गरिमा लुप्त होती जा रही है। यह देखकर विद्वान सिद्ध योगी श्री श्रेयोनाथ को अत्यंत दुःख हुआ। इस विद्यालय के पुनरूद्धार के लिए मठ अस्थल बोहर की ओर से आयुर्वेद विद्यालय की स्थापना का निर्णय लिया गया। यह शुभ विचार योगी श्री के मन में आते ही वे इसे साक्षात मूर्त रूप देने में जुट गये। योगी श्री श्रेयोनाथ जी की यह प्रवृत्ति थी कि वे जो भी निर्णय लेते थे, उसे पूरा करने में जरा भी विलम्ब नहीं करते थे।

इस विद्यालय के निर्माण में लगभग पौने चार वर्ष का समय लगा था। समस्त हरियाणा प्रदेश में यह आयुर्वेद महाविद्यालय अद्वितीय व अनुपम है।

प्राचीन वास्तुकला के महान प्रेमी

आयुर्वेद महाविद्यालय के भवन-निर्माण में आठवीं शताब्दी में प्रचलित प्राच्य शैली अपनाई गई है। इस महाविद्यालय में योगी श्री श्रेयोनाथ जी की अनोखी सूझ-बुझ सुरूचि तथा वास्तुकला का अद्‌भुत सम्मिश्रण देखने को मिलता है।

१० नवम्बर १९५८ ई. को इस महाविद्यालय में भव्य समारोह हुआ। इसका उद्‌घाटन राज्य के मुख्यमंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरो के शुभ कर-कमलों द्वारा हुआ था। उद्‌घाटन समारोह में बोलते हुए मुख्यमंत्री श्री सरदार प्रताप सिंह कैरो ने योगी श्री श्रेयोनाथ जी की विद्यादान के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की, तथा बाबा मस्तनाथ संस्था को पूरे हरियाणा राज्य में अद्वितीय बताया। उन्होंने कहा कि आपके इन परोपकारी और कल्याणकारी कार्यों की समूचा राज्य सराहना करता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार तथा प्रशासन आपके सेवा भाव के प्रति नतमस्तक है।

मठ सम्पत्ति का संरक्षक

मठ अस्थल बोहर अत्यंत प्राचीन तथा धार्मिक मठ है। यह मठ हर हिन्दु जाति के लोगों का पूज्य स्थान है। श्री बाबा मस्तनाथ जी की परम पवित्र गद्‌दी पर जो भी महन्त विराजमान होता है वहीं इस मठ की सम्पत्ति का संरक्षण करता है। इस मठ की स्थापना से लेकर आज तक यही परंपरा चली आ रही है।

गाँवों वालों को यह भली-भांति मालूम था कि श्री बाबा मस्तनाथ जी बहुत ही चमत्कारिक एवं करामाती सिद्ध हैं। बोहर गाँव में दुष्ट लोगों के कारण प्राकृतिक आपदा का प्रकोप फैला हुआ था। भूख-प्यास से लोग त्राहि-त्राहि कर रहे थे। सब इकट्ठे होकर श्री बाबाजी के पास पहुंचे और उनके श्री चरणों में गिरकर गिड़-गिड़ाने लगे। सभी अपनी भूलों की माफी मांगने लगे। सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा जी ने उन्हें क्षमा कर, बोहर गाँव में वर्षा कराई, साथ ही साथ उन दुष्टों को समझाया और धर्म का उपदेश दिया।

श्री बाबा जी के प्रत्यक्ष चमत्कारों को देखकर और उनसे प्रभावित होकर गाँव गढ़ी, बोहर तथा माजरा वाले लोगों ने मिलकर मठ के प्रति अपनी श्रद्धा दिखाई और मठ को कुछ भूमि दान में कृषि हेतु दी। यह भूमि मठ के अधीन है। गाँव वालों का इसमें कोई दखल नहीं है। दान में दी हुई कोई भी वस्तु या भूमि उसी के आधीन होती है जिनको ये सब चीजें दान में दी जाती हैं, यह कानूनन है।

भारतीय संस्कृति, देश भक्ति, कर्त्तव्य निष्ठा के प्रकाश स्तम्भ

बोहर गाँव तथा आसपास की जनता को केवल धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यों द्वारा ही प्रगति के पथ पर लाना संभव नहीं था, साथ ही साथ श्री बाबा मस्तनाथ संस्था के विरूद्ध राजनीतिक लोगों का हस्तक्षेप भी श्री श्रेयोनाथ जी योगी को कचोट रहा था।

इसलिए उन्हें राजनीति में परोपकारी व कल्याणकारी कार्यो के करने के लिए व जनसाधारण की सेवा के लिए इस क्षेत्र में न चाहते हुए भी आना पड़ा।

सन् १९६७ में विधान सभा के चुनाव हुए। कलोई विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र से हरियाणा विधान सभा के सदस्य के रूप में आप निर्वाचित हुए। चौ. श्री चंद जी भी इसी महानिर्वाचन में विद्यायक निर्वाचित हुए। चौ. श्री चंद आपकी विजय से अति प्रसन्न हुए, क्योंकि आप दोनों में आपस में बहुत अधिक प्रेम था।

चौ. श्री चंद जी और योगी श्री श्रेयोनाथ जी दोनों ने आपस में विचार विमर्श किया कि, समस्त निर्दलीय विधायकों की एक बैठक बुलाई गई। बैठक में सत्तरह निर्दलीय विधायक सम्मिलित हुए। सभी विधायकों ने मिलकर एक नवीन हरियाणा जनता पार्टी दल का गठन किया। योगी श्री श्रेयोनाथ जी इस दल के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

सन् १९६७ के महानिर्वाचन में अन्य किसी भी प्रतिपक्ष दल के इतने सदस्य निर्वाचित होकर नहीं आये थे, जितने इस नव-गठित पार्टी के सदस्य थे। अतः स्वाभाविक ही था कि योगी श्रयोनाथ जी को ही विधान सभा में प्रतिपक्ष दल के नेता के रूप में विराजमान होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस पार्टी में तेरह भारतीय जनसंघ के विधायक भी आकर सम्मिलित हो गये। इस प्रकार से इनकी संख्या तीस हो गई। और नवगठित दल ने राज्य में सत्ता ग्रहण करने का निर्णय लिया। इस प्रकार से

हरियाणा में प्रथम बार गैर-कांग्रेसी मंत्रिमंडल की स्थापना हुई। इस मंत्रिमंडल में 'नवीन हरियाणा जनता पार्टी' के नेता के नाते योगी श्री श्रेयोनाथ जी को वरिष्ठ मंत्री का स्थान दिया गया।

स्वास्थ्य मंत्री के गौरवमय पद की प्राप्ति

योगी श्री श्रेयोनाथ जी एक प्रख्यात एवं कुशल चिकित्सक थे। अतः आपको मंत्रिमंडल में स्वास्थ्य मंत्री का पद प्रदान किया गया। लोक निर्माण व समाज कल्याण विभाग भी आपको सौंपा गया। स्वास्थ्य मंत्री का पद ग्रहण करने के पश्चात् आपने यह घोषणा की, कि मैं राज्यकोष से मात्र एक रूपया ही ग्रहण करूँगा।

स्वास्थ्य मंत्री बन गये, जीता नाथ चुनाव।
वेतन का केवल लिया, एक रूपया प्रतिमाह।।

जिस समय आपने स्वास्थ्य मंत्री पद की शपथ ली, उस समय स्वास्थ्य विभाग में अत्याधिक त्रुटियाँ व्याप्त थीं, कहीं पर पर्याप्त डाक्टर नहीं थे, कहीं पर दवाइयाँ उपलब्ध नहीं थी। रोगियों के रोग निदान के लिए तथा उनकी सुविधाओं के लिए आवश्यक उपकरण भी नहीं थे। इस प्रकार से अस्पतालों में बहुत भ्रष्टाचार फैला हुआ था।

जब योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने स्वास्थ्य विभाग की यह दशा देखी तो उनके पाँव तले की जमीन ही खिसक गई।

उन्होंने उसी दिन से अस्पतालों में दवाओं की उपलब्धि तथा व्यय आदि का हिसाब किताब उन्होंने स्वयं ही देखना शुरू कर दिया। रोगियों से भी वे स्वयं ही पूछते थे कि उनकी चिकित्सा ठीक से हो रही है या नहीं। आप जहाँ भी अनियमितता अथवा भ्रष्टाचार देखते थे, उसी समय आप आदेश देकर उसे ठीक करवाते थे, और भ्रष्टाचारी को तुरंत ही दण्ड देते थे।

हरियाणा स्वास्थ्य विभाग की फाइलों में वे तथ्य आज भी सुरक्षित रखे हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने सदैव अनियमितता तथा अयोग्यता को दूर करने, एवं भ्रष्टाचारी को समाप्त करने का प्रयास किया था।

स्वास्थ्य मंत्री के रूप में श्री श्रेयोनाथ जी योगी की विवेकशीलता, न्यायशीलता, सक्रियता, की सारे हरियाणा राज्य में धूम मच गई। आपके विभाग के कर्मचारी अपनी परम्परागत निष्क्रियता तथा जड़ता को तिलांजलि देकर यथावत् अपना कार्य बड़ी निष्ठा से करने लगे। योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने यह सिद्ध कर दिया कि ध्यान, धारणा तथा समाधि में ही रत रहने वाले योगी अवसर पड़ने पर कर्मठ तथा कर्मयोगी भी सिद्ध हो सकते हैं। योगियों का शासन प्रशासन बहुत ही स्वच्छ और साफ होता है। योगीराज ने हिन्दी भाषा को भी राष्ट्र भाषा होने पर जोर दिया। आपके मंत्रालय का सारा कार्य हिन्दी भाषा में ही किया जाता था।

सुचारू तथा स्वच्छ पेयजल व्यवस्था

स्वास्थ्य मंत्री होने के नाते आपने अनेक देहातों में स्वच्छ तथा कीटाणु रहित पेयजल उपलब्ध कराने की योजनाओं को स्वीकृति प्रदान कर देहातों की विशेष प्रकार से सेवा की। सरकारी अधिकारियों को भी आपने यह हिदायत भी दी कि, जनसाधारण को बहुत कम समय में कीटाणुरहित जल उपलब्ध हो जाना चाहिए। इस योजना में लाखों रूपया खर्च हुआ। जब देहातों में स्वच्छ जल घर-घर पहुँचा जो जनता बहुत खुश हुई और उन्होंने योगीराज के जय-जयकार के नारे लगाये।

स्वास्थ्य मंत्री के पद से त्याग पत्र

योगीराज ने दिनांक १ नवम्बर, सन् १९६७ को हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री के पद स त्याग पत्र दे दिया।

योगीराज के त्यागपत्र देते ही ठीक बीसवें दिन २१ नवम्बर, सन् १९६७ ई. को हरियाणा के राज्यपाल श्री वीरेन्द्रनारायण चक्रवर्ती ने संयुक्त विधायक दल के राव विरेन्द्र सिंह मंत्रिमंडल को अपदस्थ कर दिया। जिस प्रकार आधार गिर जाने से छत टूट जाती है, उसी भांति संयुक्त विधायक दल का मंत्रिमंडल योगीराज का सहयोग समाप्त होते ही घड़ाम से धराशायी हो गया। इसके साथ ही समूचा संयुक्त दल ताश के पत्तों की तरह बिखर गया।

वरदान सार्थक सिद्ध हुआ

मठ अस्थल बोहर के सभी महन्तों को श्री बाबा मस्तनाथ जी का यह आशीर्वाद रहा है कि- 'जो खोलेगा उसकी खोलूँगा' और जो 'बंद करेगा उसकी बंद करूँगा' अर्थात् जो महन्त इस मठ के कार्य को ठीक ढंग से नहीं करेगा, उसकी आय के समस्त स्रोत बंद हो जायेंगे। गद्दी पर बैठने वाला जो महन्त कल्याणकारी और परोपकार परायण कार्य करेगा, तो मैं उसको मुक्त हस्त से लक्ष्मी प्रदान करूँगा।

समस्त इतिहास देखने पर यही पता चलता है कि सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी की उक्त-उक्ति सर्वांश सत्य प्रमाणित हुई है।

गद्दी के महन्तों का एकमात्र लक्ष्य

आठवीं शती में सिद्ध चौरंगीनाथ जी द्वारा स्थापित तथा अठारहवीं शती में श्री बाबा मस्तनाथ जी द्वारा जीर्णोद्धार किया जाने के बाद यह प्राचीन मठ अस्थल बोहर के उत्तराधिकारी महन्तों की देखरेख में दिन-प्रतिदिन प्रगति के पथ पर आरूढ़ होकर जनसेवा की विभिन्न प्रवृत्तियों के द्वारा परोपकार और कल्याण के कार्यों में लगा हुआ है। श्री बाबा मस्तनाथ जी के उत्तराधिकारी महन्त 'विधेयम्-जन् सेवनम्' आपने इसी ध्येय में रात-दिन प्रवृत हैं।

वर्तमान मठाधीश महन्त श्री चाँदनाथ योगी ने तो

जनकल्याण के लिए श्री बाबा मस्तनाथ शिक्षण संस्थान को इतना अधिक विस्तृत कर दिया है कि पूरे हरियाणा राज्य में ही श्री बाबा मस्तनाथ शिक्षण संस्थान की धूम मची हुई है।

महा-समाधि का पूर्वाभास

महन्त श्रेयोनाथ जी योगी एक वचन सिद्ध योगी थे। योगी महापुरूष जब अपनी जीवन यात्रा का समापन करते हैं, और दिव्य लोक जाने की तैयारी करते हैं, तब उन्हें पूर्वाभास हो जाता है। वह अपने शिष्यों एवं भक्तों को पहले से ही संकेत देना शुरू कर देते हैं। योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने आठ महीने पहले ही अपने सुयोग्य शिष्य श्री चाँदनाथ जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। श्री श्रेयोनाथ जी योगी सदैव यही कहते थे कि सम्प्रदाय में गद्दी जाति-पाति के हिसाब से नहीं बल्कि योग्यता के हिसाब से सौंपी जाती है।

महासमाधि

६ जनवरी सन् १९८५ ई. को योगी श्री श्रेयोनाथ जी अचानक ही हनुमान गढ़ थेहड़ी आ पहुँचे। इतनी कड़कती ठंड में उन्हें आया देखकर शिष्यगण व भक्तगण आश्चर्य चकित रह गये। थोड़ा समय आराम करने के पश्चात् रात ८ बजे गुरूजी ने हल्का भोजन किया। भोजनोपरांत गुरूजी हमेशा की ही तरह थोड़ा घूमकर अपने आराम कक्ष में चले गये। (उनका आराम कक्ष श्री बाबा मस्तनाथ नेत्र चिकित्सालय में था) उस समय उनके साथ उनके शिष्य व उनके कुछ सेवक भी थे। गुरूजी सबके साथ प्रसन्न मुद्रा में बैठे-बैठे बातें कर रहे थे। कुछ ही देर

के पश्चात् गुरूजी को अचानक से छाती में दर्द की शिकायत हुई, उस समय रात्रि के साढ़े ग्यारह बजे का समय था। नेत्र चिकित्सालय में उनके साथ डाक्टर भी मौजूद थे, इसलिए उनको वहीं पर दवा दे दी गई। कुछ देर आराम हुआ, किन्तु कुछ ही समय के बाद दूसरी बार फिर से उन्हें दर्द की शिकायत हुई। उनके शिष्य श्री चाँदनाथ जी शहर जाकर (कार्डियोलोजिस्ट) डाक्टर को ले आये। डाक्टर ने आते ही योगी श्री को दवा दी, और आराम करने को कहा। बाहर आकर डाक्टर ने उनके शिष्य व अन्य सेवकों को बताया कि योगी जी को बहुत खतरनाक दिल का दौरा पड़ा है। डाक्टरों ने बड़ी श्रद्धा व निष्ठा से उनकी देखभाल की, किन्तु योगी जी की स्थिति बिगड़ती ही चली गई। उस समय उनके पास डाक्टर, उनके शिष्य एवं कई सेवक मौजूद थे। बिगड़ती स्थिति को देखकर वहाँ पर उपस्थित सभी ने योगी जी को 'आदेश' किया। उन्होंने सबका आदेश स्वीकार किया। महा-समाधि में जाने से पूर्व श्री कोठारी जी (धनीनाथ जी) ने आदेश किया, उनके पश्चात् उनके प्रिय शिष्य श्री चाँदनाथ जी ने गुरूजी को आदेश किया। (पूज्य गुरूदेव को मैने ही अन्तिम आदेश किया था) स्नेहिल नेत्र खोलकर गुरूदेव ने सबको एक बार अच्छी तरह से देखा, आशीर्वाद दिया। उसके पश्चात् उनका स्वर सुनाई नहीं दिया। वह स्नेह से भरे नेत्र फिर नहीं खुले। अचानक से इतना बड़ा वज्रपात हो जायेगा, यह कभी किसी ने सोचा भी नहीं था। सभी उपस्थित शिष्य व भक्तगण फूट-फूट कर रो रहे थे। आँसू रूकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

कितना विचित्र संयोग था, जो पहले से ही कहते थे कि नेत्र चिकित्सालय (हनुमानगढ़ थेहड़ी) के इसी कक्ष में मैं आखिरी श्वास लूँगा, हुआ भी वही, वही कक्ष, वही नेत्र चिकिसालय, वही स्थान हनुमानगढ़ थेहड़ी। गुरूजी की वाणी से सदैव सत्य ही निकलता था।

७ जनवरी सन् १९८५ ई सोमवार ''पूर्णिमा'' के दिन प्रातः ७.०० बजे गुरूदेव का भौतिक शरीर पंच-तत्व में विलीन हो गया। योगी जी के शिष्य, भक्तगण व अन्य सेवक गुरूदेव के ब्रह्मलीन पार्थिव शरीर को फूल मालाओं से सजाकर गाड़ी में विराजित कर आश्रम मठ अस्थल बोहर ले आये। आश्रम में लाकर आसन पर योगी जी को आसीन किया गया। चारों दिशाओं में योगी जी के ब्रह्मलीन होने की सूचना स्वतः ही पवन वेग से पहुँच गई।

अन्तिम दर्शनों की इच्छा से उनके समस्त शिष्य, नगर निवासी व ग्रामवासी, नेतागण सब के सब मन्दिर के प्रांगण में एकत्रित हो गये। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए ब्रह्मलीन सिद्ध योगी श्री श्रेयोनाथ जी का पार्थिव शरीर मन्दिर के प्रांगण में दर्शनार्थ हेतु रखा गया। उनके शिष्यों, नेताओं व श्रद्धालुओं ने उस महामानव के दर्शन किये, और अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। जिस समय उन्हें समाधि दी गई तो लाखों की संख्या में लोग उन्हें अन्तिम विदाई देने के लिए खड़े थे। अन्तिम बार सबने अपने पुष्प अर्पित किये और श्री श्रेयोनाथ जी योगी अमर रहें के जयकारों के साथ उनके ब्रह्मलीन पार्थिव शरीर को धरती माता को अर्पित किया।

क्षति पूर्ति अत्यंत कठिन

(महन्त चाँदनाथ योगी)

मेरे पूज्य गुरूदेव सिद्ध योगी श्री श्रेयानाथ जी महाराज को काल के क्रूर हाथों ने हमसे छीन लिया। अचानक ही गुरूदेव का ब्रह्मलीन होना मेरे लिए अत्यंत कठिन है। नाथ सम्प्रदाय का एक महान संरक्षक चला गया। मेरा हृदय व्यक्तिगत क्षति का अनुभव कर रहा है। गुरूजी के अभाव में मेरे जीवन में शून्यता सी आ गई है। मठ अस्थल बोहर एक महान व्यक्तित्व से वंचित हो गया है। गुरूदेव मठ तथा संस्था का सारा कार्यभार मेरे कंधों पर सौंप गये हैं।

मैं सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी से प्रार्थना करता हूँ कि वे इस वज्रपात को धैर्यपूर्वक सहन करने की मुझे शक्ति प्रदान करें। ताकि मैं उनका पथगामी बनकर लोगों का उद्धार कर सकूँ।

भगवान की इच्छा सर्वोपरि होती है। इसमें किसी का वश नहीं चलता। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि गुरूजी ने जो ज्योति शिक्षा के प्रति जगाई है, मैं उसे बुझने नहीं दूँगा। मैं आज यही शपथ लेता हूँ कि शिक्षा के लिए और लोगों के उद्धार के लिए मेरा पूरा जीवन समर्पित रहेगा।

मेरे पूज्य गुरूदेव त्याग और तपस्या की प्रति-मूर्ति थे। महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी और सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी मेरे पूज्य गुरूदेव को अपने श्री चरणों में स्थान दे।

ब्रह्मलीन सिद्ध योगी श्री श्रेयोनाथ जी महाराज
एक असाधारण व्यक्तित्व

(पूज्यपाद श्री बाबा लक्खी नाथ जी)

भारत के प्रसिद्ध महान धर्माचार्य, तेजस्वी नेता, भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री हरियाणा, पूज्यपाद, प्रातः स्मरणीय, मठ अस्थल बोहर पीठाधीश्वर श्री श्री १००८ श्री बाबा श्रेयोनाथ जी महाराज जिनका ७ जनवरी सन् १९८५ को शिवलोक प्रयाण हुआ। वे हिन्दू धर्म, हिन्दू सभ्यता तथा हिन्दू संस्कृति के महान रक्षक थे। योगी श्रेयोनाथ जी बाल ब्रह्मचारी, सस्कृत, हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी भाषाओं के विद्वान थे। अखिल भारतीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा के आजीवन वरिष्ठ उपाध्यक्ष रहे। योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने अपना सारा जीवन भजन, पूजन, योग साधना, मन्दिरों के निर्माण तथा अस्पताल खोलने में लगा दिया। श्रेयोनाथ जी एक महान कर्मयोगी थे। विधेयं जन सेवनम् की भावना को लेकर दिवंगत होने तक वे निरन्तर लगे ही रहे।

यद्यपि योगी श्री श्रेयोनाथ जी एक सिद्ध योगी थे, भारत विख्यात महन्त थे। कर्म के पुजारी थे। योगी जी का विश्वास शक्ति और शास्त्र के समन्वय में था। वह केवल माला घुमाने वाले, एवं गद्दी पर बैठे रहने वाले महन्त नहीं थे। उनकी गणना तो उन श्रेष्ठ महापुरूषों में की जाती है, जिनमें स्वामी

विवेकानन्द, गुरू रामदास जी जैसे उच्च कोटि के महापुरूष थे। योगी श्री श्रेयोनाथ जी कभी भी मान-सम्मान और पद के भूखे नहीं रहे।

एक मधुर स्मृति

(महन्त श्री चाँदनाथ योगी)

मेरे पूज्य गुरूदेव सिद्ध श्री श्रेयोनाथ जी योगी की स्मृति आते ही नेत्र अश्रुपूरित हो जाते हैं। आँखें बंद करते ही ऐसा आभास होता है कि वह मेरे साथ ही घूम रहे हैं, जैसे अक्सर घूमा करते थे, और मंद-मंद मुस्कान से आने जाने वाले भक्तों का स्वागत भी करते रहते थे। गुरूदेव कभी बाबा मस्तनाथ जी के भव्य मन्दिर की बातें करते, तो कभी शिक्षा के क्षेत्र में पहुँचे जाते। गुरूजी कभी डिग्री कालेज की तो कभी विश्वविद्यालय की समस्याओं पर विचार करते, कभी नन्हें मुन्ने बच्चों की शिक्षा की ओर उनका ध्यान चला जाता। इतने विषयों पर एक साथ विचार करना तो उन जैसे महापुरूष का ही काम था, किसी साधारण पुरूष के बस की यह बात नहीं थी। निश्चय ही वे मानव न होकर देवता थे। उन्होंने श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर मठ जो अस्थल बोहर में स्थित है, उसको चमका दिया। मेरे पूज्य गुरूदेव अपने आप में ही एक संस्था थे, विचारों के पज थे। उनमें एक महात्मा व नेता दोनों के गुण विद्यमान थे।

पूज्य गुरूजी प्रातः काल उठकर भगवान श्री बाबा मस्तनाथ जी मन्दिर, मठ और संस्था का निरीक्षण करके संबंधित कर्मचारियों

को उचित आदेश एवं परामर्श देते थे। इतने व्यस्त होने पर भी वह गाँव के लाखों से व्यक्तिगत रूप से परिचित थे।

पूजनीय गुरूदेव की गाथा बहुत लंबी है। उनकी याद की स्मृति-श्रृंखला टूटती ही नहीं। उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि जब उन्हें समाधि दी जा रही थी, तो लाखों लोगों की संख्या में जनता उनको अन्तिम विदाई देने के लिए उपस्थित थी।

गुरूजी की याद आते ही कलेजे में एक हूक सी उठती है और माया-मोह से परे हम साधु-सन्यासियों की पलकें भी गीली हो जाती हैं ।

मैंने कभी यह सोचा भी नहीं था कि गुरूजी कभी मुझसे अलग भी होंगे। किन्तु क्रूर काल ने उन्हें हमसे छीन लिया। परन्तु नहीं वे अब भी हमारे बीच में ही हैं और मठ की रक्षा एवं उसकी उन्नति के लिए प्ररेणा दे रहें हैं। साथ ही साथ मेरा माग दर्शन भी कर रहे हैं।

योगी श्री चाँदनाथ जी का "महन्त" पद पर अलंकृत होना

कोई भी दिव्य विभूति जब इस संसार में जन्म लेती है तो बचपन से ही उनकी महानता के लक्ष्ण प्रकट होने लगते है। जैसे बिजली की चमक काली घटाओं को चीरकर बाहर आ जाती है, वैसे ही परमात्मा का प्रकाश स्थूल शरीर में छिपाने से भी नहीं छिपता। आध्यात्मिक सूर्य की किरणें छन-छन कर तत्वों के बन्धन से निकलकर प्रकट हो ही जाती है। उनका परिचय तो स्वयं माँ सरस्वती भी अपने शब्दों में नहीं बाँध सकती। उनके व्यक्तित्व का वर्णन तो सिर्फ उनके शिष्यों की भावनायें ही कर सकती है, शब्द नहीं। योगी श्री चाँदनाथ जी महाराज को किसी के परिचय की आवश्यकता नहीं है, ऐसे महापुरूष का वर्णन तो अवर्णनीय और अलेखनीय और कल्पनातीत है।

६ जनवरी सन् १६८५ ई० को प्रातः कड़ाके की सर्दी होने के पश्चात् सूर्य बादलों की लुकाछिपी कर रहा था। ऐसे लग रहा था मानों सूर्य भगवान श्री चाँदनाथ जी का स्वागत करने के लिए ही ऐसा कर रहे हों। मंद-मंद गति से चलती हुई हवा, कड़ाके की सर्दी और चारों तरफ शांति का वातावरण। सहस्रों लोगों की भीड़ थी, जिस समय योगी श्री चाँदनाथ जी को चद्दर की रस्म एवं तिलक की रस्म अदा की गई।

गुरूजी के मस्तक पर तिलक ऐसा लग रहा था, मानो गुरूजी के मस्तक पर कोई ज्योति प्रज्वलित हो रही है। उनके

योगी श्री चाँद नाथ जी महन्त पद पर अलंकृत

चेहरे पर गंभीरता साफ झलक रही थी। जिस समय गुरूजी गद्दी पर विराजमान हुए, उस समय उनका मुखमंडल गंभीरता के साथ-साथ किसी तेजपुंज की तरह चमक रहा था।

धीरे-धीरे आकाश एकदम साफ हो गया, और सूर्य भगवान पूरी तरह श्री गुरूजी का स्वागत करने के लिए प्रकट हो गये। ऐसे लग रहा था। मानों, सम्पूर्ण धरा पर धर्म के अनुयायी एक नई सुबह का सन्देश दे रहे हों।

जब योगी श्री चाँदनाथ जी की चद्दर रस्म हुई और वह श्री श्रेयोनाथ जी महाराज के उत्तराधिकारी के रूप में ''महन्त'' की गद्दी पर विराजमान हुए, उस समय उनकी आयु मात्र 28½ वर्ष थी।

संत बचपन से ही संत होते हैं। आयु के बन्धन उन्हें उनके मार्ग से हटा नहीं सकते।

महन्त श्री चाँदनाथ जी योगी का लंबा कद चौड़ा मस्तक, कानों में मुद्रायें, नेत्र इतने करूणा भरे मानों दया के सागर ही प्रतीत हो रहे हों। जिनमें सम्पूर्ण सृष्टि के लिए प्रेम ही प्रेम हो। गुरूजी का स्वभाव विनोद प्रिय है। जब वह कोई मनोविनोद की बात सुनते हैं, तो आँखे, नाक, मुख, मस्तक और अंग-अंग से हँसी फूट पड़ती है। गुरूजी की सरल निश्चल हँसी ऐसी है। जिससे उनका मुखमंडल ललिमा से चमक उठता है।

मैं कैसे वर्णित करूँ। हे! मेरे परम पूज्य गुरूदेव आपकी अविरल ममतामयी कृपा दृष्टि, मुझे बर्बस प्रेरित करती है कि

मैं आपको माँ कहूँ या पिता। गुरू कहूँ या ब्रह्म।

श्री गुरूजी की दृष्टि में सभी समान हैं उनकी दृष्टि में न कोई छोटा है न बड़ा, न अमीर न गरीब। सभी धर्म और जाति के लोगों के प्रति स्नेह सिक्त भाव गुरूजी का स्वभाव है।

पुण्य पुरूष पूज्यपाद गुरूवर श्री श्री १००८ श्री महन्त चाँदनाथ योगी का संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त

परम श्रेद्धय गुरूवर्य, योगी श्री चाँदनाथ जी महाराज का जन्म २१ जून सन् १९५६ ई० में ग्राम बेगमपुर दिल्ली में हुआ।

बाल्यकाल से ही आपका स्वभाव शांत, गंभीर तथा विचारशील था। अध्यनकाल में कुशाग्र बुद्धि एवं विलक्ष्ण प्रतिभा के कारण आपको गुरूजनों के दिये पाठ एवं शिक्षा शीघ्र ही कष्ठस्थ हो जाती थी। बालकपन से ही आप महात्माओं के आश्रमों में जाकर सत्संग एवं उपदेश श्रवण करते थे। फलस्वरूप आपको संसार से वैराग्य और परमात्मा से प्रेम होने लगा।

किशोरावस्था में आप पढ़ाई के साथ-साथ भगवत् कथायें पढ़ते और बड़ों की सेवा करते थे।

आठवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् संतो तथा साधु पुरूषों की संगति की रंगति से तथा उत्कृष्ट संस्कारों के परिणाम स्वरूप आपकी वैराग्य भावना प्रबल होती गई। एक दिन मन में दृढ़ निश्चय करके, बिना किसी की अनुमति के चुपके से अपनी माँ के रखे हुये रूपयों में से मात्र २० रुपये

निकालकर अपने एक मित्र के साथ हरिद्वार के लिए निकल पड़े। जैसे ही आप हरिद्वार पहुँचे, रेलवे-स्टेशन पर आपको एक पुलिस वाला मिला। पुलिस वाले को पता चल गया कि शायद ये दोनों बच्चे घर से भागकर आये हैं उसनें आप दोनों के हाथ पकड़े, और पूछा कि दोनों घर से भाग कर आये हो दोनों ने डरकर हाँ बोल दिया। पुलिस वाले ने दोनों को जोर-जोर से दो-दो थप्पड़ मारे, और बचे हुए रूपये छीन लिये। डाँटकर दोनों को कहा की वापस घर जाओ नहीं तो और पिटाई होगी। दूसरी रेलगाड़ी के आते ही पुलिस वाले ने हम दोनों का टिकट लिया और वापस घर आने के लिए रेलगाड़ी में बैठा दिया। हम दोनों बहुत रात को घर पहुँचे। घर वाले हमारी वजह से चिंतित बैठे हुए थे। घर पहूँचते ही माता-पिता ने हम दोनों से पूछा कि तुम दोनों कहाँ गये थे। हम दोनों ने एकदम सच बता दिया। माता-पिता ने हम दोनों को बहुत समझाया। हम दोनों माता-पिता का आदेश स्वीकार कर फिर से अपनी पढ़ाई में जुट गये।

अध्ययन करते हुये भी आपने, कभी भी किसी प्रकार भगवत-चिन्तन और सद्ग्रन्थों के पठन पाठन में कोई अड़चन नहीं आने दी। बी० ए० की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् हृदय में दृढ़ भाव और मन में पक्का विचार बनाकर गृह त्याग का अन्तिम निर्णय लेकर, कभी भी पुनः न लौटने की शपथ ली और गुरू की खोज में चल पड़े। कई महीने तक भूखे-प्यासे भटकने के बाद भी आपको निराशा ही हाथ लगी।

एक दिन अचानक आपको रोहतक जाने वाली बस

दिखाई दी। आप तुंरत ही उस बस में बैठ गए। तब तक आपने रोहतक कभी देखा भी नहीं था। रोहतक पहुँचने से कुछ पहले ही आपको श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर दिखाई दिया। बस से उतरकर आप श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर की तरफ चल पड़े। मन्दिर के द्वार पर पहुँचते ही आपको सिद्व योगी श्री श्रेयोनाथ जी के दर्शन हुए। उनका तेजोमय मुखमंडल, मुख पर गंभीरता किन्तु होंठों पर मुस्कराहाट थी। उनका शरीर योगबल से चमक रहा था। उनको देखते ही एक अद्‌भुत और अलौकिक दृश्य उभर आया आपके दिमाग में ओर न जाने किस प्रेरणा के वशीभूत होकर आपने उनके श्री चरणों में शीश झुकाया और उनके सामने अपने विचार प्रकट किये। कहते-कहते आपका गला अवरूद्ध और भारी हो गया। अनायास ही आँखों में आँसू भर आये। कंठ से बस इतना ही निकला, जन्म-जन्मान्तरों से भटक रही थी मेरी आत्मा गुरू दर्शन को, आज मुझे गुरू मिल गये हैं। मैं बहुत दिनों से गुरू की खोज में भटक रहा था, सौभाग्य से आज मुझे अपने गुरू मिल गये हैं। आपने योगी श्री श्रेयोनाथ जी से कहा - ''हे गुरूदेव!'' मैं केवल परमात्मा को ही पाना चाहता हूँ माया मोह से मुझे तनिक भी लगाव नहीं है। मुझे केवल गुरू का मार्ग-दर्शन चाहिए। इतना कहकर आपने फिर से योगी श्री के चरण पकड़ लिए और कहने लगे-

गुरू मुक्ति के दाता, माता-पिता तुम ही भ्राता।
चरणों में स्थान दीजिए, सेवक ये ही है चाहता।।

योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने बहुत ही शांत और स्थिर नेत्रों से

आपकी तरफ देखा और कहने लगे कि साधु बनना इतना आसान नहीं है, जितना तुम समझ रहे हो मेरी बात मानों और वापस घर को चले जाओ। आपने योगी जी से कहा- महाराज! मैं वापस जाने के लिए नहीं आया हूँ। तत्पश्चात् योगी जी ने कहा - साधु जीवन कठिनताओं का नाम है, और योग मार्ग उससे भी कठिन है। यह सब तुम्हारे बस की बात नहीं है, अच्छा यही होगा, तुम घर जाकर घर के ही ठाठ-बाट भोगो। आपने कहा - ''हे महाराज!' किसी भी कीमत पर मुझे घर नहीं जाना है।

योगी जी ने कहा -

जोग जुगत की साधना, नहीं बच्चों का खेल।
भला अमीरी और जोग का, कैसे होगा मेल।।
कैसे होगा मेल व्यर्थ मत हमसे मगज खपा बच्चा।
खाँडे की धार है ये मार्ग, मत इसमें कदम बढ़ा बच्चा।।

योगी श्री श्रेयोनाथ जी के समझाने के पश्चात् आपने फिर से गुरूदेव की अनुन्य विनय की और करबद्ध होकर प्रार्थना कर कहने लगे-

भला आपके सामने, क्या दूँ मैं प्रमाण।
मेरा घर में मन न हीं, बसे जोग में प्राण।।
बसे जोग में प्राण, मुझे अब भाँति नहीं अमीरी है।
मेरा मन दूनियाँ से विरक्त हुआ, अब मन बसी फकीरी है।

आपकी इस प्रकार की प्रार्थना और आपके विचार जानकर योगी श्री ने आपके आध्यात्मिक और साधनात्मक संस्कारों को अपनी दिव्य दृष्टि से अवलोकन कर आपको आश्रम में रहने की अनुमति दे दी। शिष्य रूप में भी आपको स्वीकार कर लिया। गुरूदेव के ये कृतार्थ भरे वचन सुनकर आप बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे-

गुरूदेव चेले का कर्तव्य मुझे, भिन्न-भिन्न कर समझा दीजे।
क्या कर्तव्य है चेले का स्वामी, कृपा कर मुझे बतला दीजे।।
चेले का हर फर्ज मुझे, देकर के ज्ञान बता दीजे।
महाराज आज मुझ भूले को, सीधे सब मार्ग दिखा दीजे।।
आप हैं ज्ञानी ध्यानी, धर्म शिक्षा मुझे समझानी।
दो मुझको उपदेश, और कहो मुख से अमृतवाणी।।

योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने आपकी परीक्षा लेने के लिए आपको खेतों से मोर उड़ाने का कार्य सौंपा। शिष्य को मन्त्र दीक्षा देने से पहले गुरू कई प्रकार की कठिन से कठिन परिक्षायें लेते हैं। उसके पश्चात् ही मन्त्र दीक्षा दी जाती है।

गुरू के आदेशानुसार आप दिन भर खेतों से मोर उड़ाते रहते। दोनों वक्त का भोजन बड़े भंडार में करते। आप अपनी मोर उड़ाने की ड्यूटी बखूबी निभा रहे थे। एक दिन अचानक भोजन करते-करते आपकी आँखों में आँसू भर आये। आपको उस समय माँ के हाथ का बना हुआ भोजन याद आ गया। और आप दोबारा से अपने घर चले गये।

घर को वापसी

जब आप आश्रम से दोबारा घर लौटे तो आपकी माताजी जो भोजन आपके लिए पहले बनाती थी, अब भी वह उतने ही प्यार से आपके लिए भोजन बनाती, और आपको परोसती थी। किन्तु न जाने क्यों, इस बार आपको न तो वह भोजन ही अच्छा लगा, और न ही घर में आपका मन लगा। घर में रहकर आप बहुत बेचैन हो गये। आपने एक दिन चुपचाप से घर छोड़ दिया और वापस आश्रम में पहुँच गये। जिस समय आप घर छोड़कर आश्रम पधारे उस समय आपकी आयु मात्र २१ वर्ष थी।

आप फिर से योगी श्रेयोनाथ जी की छत्रछाया में पहुँचे। घर जाने के पश्चात् आपके मन में जो बेचैनी हुई थी, वह शायद इसलिए हुई थी, कि आपको अपने गुरू मिल गये थे। घर जाने के पश्चात् उनकी शक्ति ही आपको अपनी तरफ खींच रही थी। आप तीन वर्ष तक घर में किसी को बिना बताए आश्रम में रहे। घर वालों ने आपको बहुत ढूँढा किन्तु आपका कहीं भी अता पता नहीं चला। आप बड़ी लगन से गुरू सेवा करते रहे।

श्री चाँदनाथ जी के चीरा गुरू

नाथ सम्प्रदाय में जब तक साधु को चीरा नहीं दिया जाता अर्थात् साधु को ''दर्शन'' नहीं पहनायें जाते, तब तक उसको पूर्ण ''नाथ'' साधु नहीं माना जाता। उस साधु को औघड़ कहा जाता है। औघड़ साधु को चिप्पी भी आधी ही दी

जाती है।

चीरा चढ़ाने का महत्व नाथ सम्प्रदाय में प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। एक समय माया स्वरूपी दादा मस्त्येन्द्र नाथ जी ने भगवान शंकर की घोर तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने मत्स्येन्द्रनाथ जी से कहा - ''हे मत्स्येन्द्रनाथ!'' मैं तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हूँ अतः आपको जो भी वरदान चाहिए, वह ही मुझसे माँग लीजिए।

भगवान शंकर के इस प्रकार के वचन सुनकर मत्स्येन्द्रनाथ जी अति प्रसन्न हुए और कहने लगे- ''हे देवाधिदेव महादेव!'' यदि आप मुझ से प्रसन्न हैं तो मुझे आप अपने जैसा ही स्वरूप प्रदान कीजिए। भगवान शंकर ने '' तथास्तु'' कहा और अन्तर्धान हो गये। जिस समय भगवान ने मत्स्येन्द्रनाथ को वरदान दिया, उस समय उनके कानों में कुंडल थे। शंकर जी ने वह कुंडल मत्स्येन्द्रनाथ को प्रदान किए। आगे चलकर मत्स्येन्द्रनाथ जी ने अपने शिष्य गोरक्षनाथ जी को कुंडल प्रदान किए। गोरक्षनाथ जी ने राजा भर्तृहरि जी के कानों में चीरा चढ़ाया और कुंडल प्रदान किये। तब से ही यह कुंडल प्रथा परम्परा नाथ सिद्ध योगियों में चली आ रही है।

कर्ण छेदन में (चीरा चढ़ाने में) सतुगरू विशेष प्रवीण होते हैं। जब कर्ण में चीरा दिया जाता है तो सर्वप्रथम शिष्य से पूछा जाता है कि आप कर्ण छेदन के लिए तैयार हो या नहीं ? तीन बार ऐसे पूछा जाता है। तीनों बार उत्तर 'हाँ' में मिलने पर ही चीरा दिया जाता है, अन्यथा नहीं चीरा देते समय सतगुरू शिष्य

को ''ॐ शिव गोरक्ष'' का जाप करने के लिए कहते हैं। श्री चाँदनाथ जी के चीरा गुरू श्री सिद्ध योगी हजारीनाथ जी हैं। (पुजारी मठ अस्थल बोहर)

कर्ण छेदन की प्रक्रिया इस बात की परिचायक भी है कि साधक को पूर्णरूपेण वैराग्य भाव जागृत हो चुका है।

दीक्षा प्राप्ति

चीरा चढ़ाने के बाद सर्वप्रथम गुरूदेव (योगी श्री श्रेयोनाथ जी) ने मुझे दीक्षा का अर्थ समझाया। गुरूदेव ने कहा- दीक्षित होने से पहले शिष्य को दीक्षा का अर्थ समझाना अत्यंत आवश्यक है।

दीक्षा का अर्थ है- दक्ष हो जाना, निपुण हो जाना, परिपूर्ण हो जाना, सक्षम हो जाना, सफलता से युक्त हो जाना। दीक्षा चार अक्षरों से मिलकर बनी है

द-ई-क्ष-आ

द-सद्यः, कुंडली, शिवा, स्वास्तिक, जितेन्द्रिय।

ई-त्रिमूर्ति, महामाया, पुष्टि, शान्ति, शिवा, तुष्टि

क्ष-क्रोध, संहार, महामोक्ष, अनलक्षाय।

आ- प्रचंड, एकज, नारायण, क्रिया, कान्ति।

दीक्षा जीवन में एक बार होती है, बार-बार नहीं होती। दीक्षा के पश्चात् गुरू की शक्ति शिष्य में प्रवाहित होती है। इसी गुरू शिष्य परम्परा को शास्त्र में सम्प्रदाय कहा गया है।

मन्त्र-प्राप्ति

गुरूजी ने बताया (योगी श्री चाँदनाथ जी) मन्त्र-प्राप्ति से पहले मैं गुरू ध्यान किया करता था। लेकिन न जाने वह कौन सा शुभ दिन था, कितना दिव्य था, कौन से पुण्य और किस महाभाग्य को लिए हुए था वह सुदिन। बहुत जन्मों में वहीं एक दिन था परम पुनीत, जो उदित हो गया। जब मेरे पूज्य गुरूदेव (योगी श्री श्रेयोनाथ जी महाराज) ने मुझे गुरू मंत्र प्रदान किया।

मैंने अपने परम पूज्य गुरूदेव के श्री-चरणों में आदेश किया। आदेशोपरान्त मैं श्री गुरूदेव के श्री चरणों के सनिध्य में बैठकर अपूर्व आनंद की अनुभूति से रोमांचित हो रहा था। मेरे होंठों से अचानक प्रार्थना के स्वर निकल आये। मैं अपने भाग्य की, और उस परमानन्द की मन ही मन सराहना कर रहा था। मुझे आज उस शक्ति का आभास हो रहा था, जिसके लिए मैं तड़प रहा था और गृह त्याग के समय मैंने जिस संकल्प को ग्रहण किया था, आज वह मुझे साकार प्रतीत हो रहा था। ऐसा दिव्य आनंद पूर्व में कभी भी उत्पन्न नहीं हुआ था।

मंत्र का तथ्य जानने का प्रयास

शिष्य चाँदनाथ को हृदय लगाया, मन्त्र तथ्य समझाया।
श्री बाबा मस्तनाथ का ध्यान कर, गुरूदेव ने हुक्म सुनाया।।

पूजनीय गुरूदेव ने समझाया कि-गुरू, मंत्र और देवता

ये तीनों एक ही हैं। मंत्र का अर्थ है- ''गुप्त परामर्श!'' मंत्र ईश्वर हैं, मंत्र तथा उसके अधिष्ठाता देवता एक ही हैं, मंत्र स्वयं देवता है।

श्रद्धा-भक्ति तथा शुद्धता के साथ सतत-मंत्र का जप करने से साधक की शक्ति बढ़ती है। मंत्र चैतन्य का जागरण है। मंत्र से ज्ञान, भक्ति, शान्ति, नित्य सुख तथा अमृतत्व की प्राप्ति होती है। मंत्र से साधक मंत्र के अधिष्ठाता देवता के गुणों तथा शक्तियों को प्राप्त करता है। मंत्र चेतन शक्ति का विशिष्ट प्रकाश है। मंत्र की शक्ति कितनी प्रबल है, यह तो मंत्र का अनुशीलन करने पर ही जाना जा सकता है।

जिस समय गुरू शिष्य के कान में बोलकर मंत्र दीक्षा देते हैं, तब वास्तविक पक्ष में शब्द के द्वारा ज्ञान तथा चैतन्य शक्ति का ही संचार करते हैं। गुरू का दिया हुआ मंत्र मात्र शब्द ही नहीं है, वह तो चैतन्य की घनीभूत मूर्ति तथा देवता का आत्म प्रकाश है।

भिक्षाटन के लिए जाना

गुरू आज्ञा से लगभग तीन वर्ष के पश्चात् आप अपने जन्म के गाँव में माता से भिक्षा लेने के लिए पधारे। जैसे ही आप गाँव पहुँचे, आपको देखने के लिए सैकड़ों लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। कुछ लोग तो आँखों में आँसू लिये हुए खड़े थे, कह रहे थे कि अब आप हमें छोड़कर कभी मत जाना। आपने

उन लोगों को बहुत समझाया और कुछ ज्ञान की बातें भी बताई। उसके पश्चात् आप अपने जन्म के घर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर आपने अपनी माता से भिक्षा का आग्रह किया।

दोहा- हे मात भिक्षा दे मुझे, मैं आशा करके आया हूँ
नाराज गुरू हो जायेंगे, ये सोच हृदय घबराया हूँ।।

गुरू आज्ञा से केवल एक दिन आपको घर में रहना था। आपको देखकर आपकी माँ की आँखें से आँसू रूकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

रोके से रूकते नहीं, बहे नयन जलनीर।
हमको किस पर छोड़कर, बेटा हो गए तुम फकीर।।
क्यूँ घर बार को त्याग दिया, क्यों बिगड़ी मति तुम्हारी है।
भाई बहना किस पर छोड़े, दई हम सबको दुःखवारी है।।

आप अपनी माँ का हृदय विदारक विलाप सुनकर कहने लगे, और उनको समझाने लगे।

भाग्य जो लिखा विधाता, सामने सो ही है आता ।
अब बहुत देर हो गई, मुझे भिक्षा दे माता।।

आपकी माँ ने भिक्षा दी, आपने उसे ग्रहण किया। वापस आश्रम में जाने की इच्छा जताई। आश्रम जाते वक्त आपकी माँ ने कहा- बेटा! तुझे जाना ही है तो तू जा, लेकिन मेरी एक बात हमेशा याद रखना, हमेशा भगवान भजन में ही लीन रहना। साथ ही साथ यह भी कहा कि अब इस जन्म के बाद तेरा दूसरा जन्म नहीं होना चाहिए।

ज्ञान की ज्योति जगा ले, जगत से चित हटा ले।

मिथ्या जग को त्यागकर, प्रभु को मीत बना ले।।

इस प्रकार आपने अपनी माँ से भिक्षा ग्रहण की और उनका आशीर्वाद प्राप्त करके वापस गुरूधाम पहुंचे।

श्री गुरूदेव जी की आज्ञा

योगी श्री श्रेयोनाथ जी ने आपको मंत्र दीक्षा, भक्ति और ज्ञान का उपदेश देने के पश्चात् आपको आज्ञा दी, कि केवल भक्ति का पाठ पढ़ने से कुछ नहीं होगा। इसके लिए अभ्यास करना अति आवश्यक हैं ध्यान और साधना के लिए एकांत की आवश्यकता होती है, इसलिए अब तुम साधना करने के लिए आश्रम राजस्थान थेहड़ी जाओ। वहीं जाकर साधना का अभ्यास करो। गुरूदेव ने आपको यह भी समझाया कि साधना के समय पौष्टिक भोजन खाना चाहिये। गुरूदेव ने आपको आशीर्वाद दिया और कहने लगे-

सारा संत समाज जाके, फल मधुर तोड़कर ला बच्चा।
रे चाँदनाथ! आज्ञा के साथ फल-फूल तोड़ने जा बच्चा।
तुझे रिद्धि-सिद्धि प्रदान करी, आनंद से योग कमा बच्चा।
नित्य भजन में रहो मगन, निज जीवन सफल बना बच्चा।।

(यहां पर फल-फूल का मतलब है ध्यान और साधना है)

आपने गुरू आशा शिरोधार्य की, और राजस्थान थेहड़ी जाने के लिए गुरू से आशीर्वाद लिया।

गुरूदेव ने जाते समय आपको आपके भविष्य के विषय में अनेक बातें बताई। आपने उनके अमृतमयी बचन बड़े ध्यान पूर्वक सुने और उनको अपने हृदय में धारण कर प्रसन्नचित्त से

राजस्थान की ओर चल पड़े।

जब आप वहाँ पहुँचे तो श्रद्धालु भक्तों ने आपका बहुत स्वागत किया।

आश्रम जीवन

गुरू आदेशानुसार आप थेहड़ी आश्रम में रहने लगे। आश्रम में पहले से ही अनेक महात्मा रहते थे। पहले से रहने वाले साधु-महात्माओं ने आपको प्रतिदिन कुछ न कुछ उल्टा-पुल्टा बोलना शुरू कर दिया। आपको वहाँ से भगाने की चेष्टा करने लगे। सब के सब इकट्ठा होकर कहने लगे कि तू यहाँ चार दिन भी टिककर नहीं रह सकता। उन लोगों के बोलने से आप बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए और स्वयं को आश्रम के कठोर जीवन में ढालने लगे। आश्रम में रहते हुए आप लकड़ी काटते, रसोई गृह में काम करते, गायों की सेवा करते इत्यादि।

कुछ ही दिन के पश्चात् आपके गुरूदेव ने आपको खेत में काम करने का कार्यभार सौंपा। आपका जन्म एक सम्पन्न किसान के घर का था, इसलिए खेत में काम करने में आपको बिल्कुल भी कठिनाई नहीं हुई। आप खेती करते, ट्रैक्टर चलाते और रात्रि में अपनी साधना का अभ्यास करते।

आपके कठोर परिश्रम से प्रथम वर्ष में ही पहले की अपेक्षा खेती में दस गुणा ज्यादा उत्पादन हुआ। आपकी इस प्रकार से मेहनत और लगन से आपके गुरूदेव अति प्रसन्न हुए। कुछ ही समय बाद गुरूदेव ने आपको वहां के ''कोठार'' का कार्यभार सौंप दिया।

विचारों पर नियन्त्रण

श्री गुरूदेव ने समझाया कि मन विचारों का समूह है। सभी प्रकार के अच्छे-बुरे विचार उसमें भरे पड़े हैं, जो वातावरण पाकर उत्पन्न होते रहते हैं। इन्हीं विचारों के कारण मानव उसी के अनुरूप कार्यों में प्रवृत्त होता है। इन विचारों पर यदि नियन्त्रण कर लिया जाये तो मनोनिग्रह आसान हो जाता है। विचारों पर नियन्त्रण करने की विधि है शांत एवं शिथिल होकर बैठ जाये तथा जो भी विचार मन में आयें उन्हें रोके नहीं, बल्कि साक्षी भाव से, द्रष्टा भाव से देखते रहें तथा यह अनुभव करें कि ये विचार मन के हैं, मेरे नहीं, मैं तो इनसे सर्वथा भिन्न हूँ। मैं आत्मा हूँ। मेरा इन विचारों से कोई संबंध नहीं है। ये विचार पूर्व जन्मों में किये गये कर्मों अथवा इसी जन्म में किए गये कार्यों से सम्बन्धित है जिनका मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार से ये विचार स्वतः ही शांत हो जाते हैं। विचारों को रोकने का प्रयास कदापि न करे, वरना ये पुनः अचेतन मन में प्रविष्ट होकर फिर उपद्रव करेंगे। इनको निकल ही जाने दो। इसी से मन निर्मल होगा। इस क्रिया के बाद तुम मन के स्वामी बन जाओगे। फिर तुम मन को अपनी इच्छानुसार चला सकोगे। यही योगी की सर्वोच्च स्थिति है।

विवेक का अभ्यास

सत् और असत् नित्य और अनित्य में भेद कर सत एवं नित्य को ग्रहण करना एवं असत् और अनित्य का त्याग करना

विवेक कहलाता है। इससे मन केन्द्रित होता है।

आसन

सुखद आसन लगाने से मन स्थिर रहता है। यह रजस को रोकता है तथा एकाग्रता लाता है। मन को एकाग्र करके आसन में बैठना चाहिये। पूजा का बहाना करके बैठने से अनेक प्रकार के निरर्थक विचार मन को घेर लेते हैं। मन को स्थिर करके ही पूजा में बैठना चाहिए। दृढ़ संकल्प करके बैठने पर भी यदि मन इधर-उधर दौड़े तो भी मंत्र जप करते ही जाओ, छोड़ो मत। थोड़े समय पश्चात् मन एकाग्र हो जायेगा। आसन में बैठते समय रीढ़ की हड्डी को सदैव सीधा रखना चाहिये। यदि झुककर बैठोगे तो मन भटकता रहेगा। जिसका आसन स्थिर नहीं होता वह कभी एकाग्रता नहीं प्राप्त कर सकता। यह सब अभ्यास से ही प्राप्त होता। गुरू गोरक्षनाथ जी ने कहा है-

आसन दृढ़ आहार दृढ़, दृढ़ करि राखे अपना चीत।
कहे नाथ सुन बालका मरे ना बूढ़ा होय।।

जप साधना संबंधित कुछ उपदेश एवं जानकारी

निश्चित समय- प्रातः ब्रह्म मुहूर्त्त तथा सूर्यास्त के जप बहुत ही लाभदायक हैं। क्योंकि उन समयों में सत्व का प्राधान्य रहता है।

निश्चित स्थान- एक ही स्थान में नियमित आसन लगाकर बैठना बहुत ही लाभकर है। स्थान को बार-बार नहीं बदलना चाहिए। जब आप वहाँ बैठोगे तो स्वतः ही आपको जप करने

की प्रवित्त हो जाएगी ।

स्थिर आसन- स्थिर आसन लगाने से मन स्थिर रहता है। एकाग्रता आती है। जिसका आसन स्थिर नहीं है, वह एकाग्रता प्राप्त नहीं कर सकता। जप में बैठते समय रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना चाहिये।

जप करते समय उत्तर या पूर्व में मुख रखना चाहिए, इससे जप शक्तिशाली हो जाता है। उत्तर की तरफ मुख करके जप करने से हिमालय के ऋषिगण सहायता करते हैं।

असान- मृग चर्म, कुशासन अथवा कम्बल को आसन के रूप में प्रयोग कर सकते हैं।

प्रार्थना- जप से पहले इष्टदेव का आहवान करना आवश्यक है। इसके करने से सात्विक भाव आता है।

स्पष्ट उच्चारण- जप करते समय मंत्र का स्पष्ट, ठीक-ठीक उच्चारण करना चाहिये। यदि उच्चारण ठीक है तो मंत्र शक्ति जल्द ही जागृत हो जायेगी।

सावधानी- जप प्रारंभ करते समय सावधान रहना चाहिए, क्योंकि जप के कुछ समय बाद मन थक जाता है, और आप निद्रा के वशीभूत हो जाते हैं। इस अवस्था को दूर करना अति आवश्यक है। कुछ लोग जप करते-करते सो जाते हैं, तथा समाधि की सुखद कल्पना कर बैठते हैं।

जपमाला- जपमाला से सतत् जप करते रहने की प्ररेणा मिलती है। जप में बैठने से पहले यह संकल्प करना चाहिए कि मुझे कितनी माला जपनी है।

जप में विविधता- जप में रूचि बनाये रखने के लिए थकावट दूर करने के लिए तथा उदासी हटाने के लिए यह आवश्यक हे कि कुछ समय के लिए जोर से जप कीजिए, फिर गुनगुनाइए उसके बाद मानसिक जप कीजिए। मानसिक जप सबसे अधिक शक्शिाली हैं यह मन को शुद्ध बनाता हैं तथा बुरी वृत्तियों को निष्क्रिय कर देता है।

ध्यान- जप के साथ-साथ ऐसा ध्यान करना चाहिए कि भगवान आपके समक्ष हैं, तथा उसकी मनोहारी मूर्ति का चित्रण कीजिए। इस अभ्यास से आपकी साधना को शक्ति मिलेगी।

विश्राम- जप समाप्त होने पर तुरंत स्थान न छोड़िए तथा हर किसी से न मिलिए। दस मिनट तक शान्ति पूर्वक बैठिए, कुछ प्रार्थना गुनगुनाइये, ईश्वर का स्मरण कीजिए तथा भक्तिपूर्व साष्टांग करके अपना स्थान छोड़िये।

इस प्रकार से गुरूजी ने जप व साधना संबंधित बहुत सी जानकारी दी।

साधना

सम्पूर्ण जीवन अपने आप में साधनामय है। साधना के माध्यम से ही जीवन में परिपूर्णता लाई जा सकती है। जो साधना नहीं कर सकते, वे जीवन में कुछ भी नहीं कर सकते।

मानव शरीर को ही उकृष्ट शरीर कहा गया है। मनुष्य को स्वाधीन इच्छा भी प्राप्त है, और उनके पास सुख-दुःख अनुभव करने की शक्ति भी है, और उनके पास उचित-अनुचित,

हित-अहित का विचार करने की शक्ति भी है। यही कारण है कि मनुष्य को दूसरे प्राणियों से उत्कृष्ट माना गया है। जबकि दूसरे प्राणियों के शरीर को भोग शरीर कहा गया है।

भारतीय दर्शन ने साधना को साक्षात् जीवन का प्रतिरूप ही माना है, और प्रत्येक जीवन को साधना के ही रूप में स्वीकार किया है। जीवन और साधना दोनों का आपस में सम्बन्ध है। अतः जीवन ही साधना है, और साधना ही जीवन है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

किसी भी लक्ष्य को निर्धारित करके उसको प्राप्त करने के लिए किया गया प्रयास ही साधना है। साधना के लिए अभ्यास की आवश्यकता है। मन की वृत्तियों को स्थिर बनाने का प्रयास ही साधना है।

योग साधना

सत्य एवं संयम के साथ रहते हुए मिथ्या भाषण न करना योग का लक्षण कहा गया है। राजस्थान में रहते हुए आपने (श्री चाँदनाथ जी) लगातार सात वर्ष तक कठिन साधना की, और साथ ही साथ आप आसनों का अभ्यास भी करते थें आपने योग साधना सदैव अपने गुरू की देख रेख में ही की थी। आपके गुरूदेव ने आपको यह पहले ही समझाा दिया था की अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचारी का पालन करना भी योग साधना में अति आवश्यक है। योग में करूणा, ममता, नम्रता तथा धैर्य रखना भी अत्यंत आवश्यक है।

योग साधना में विघ्न

राजस्थान थेड़ही बहुत पवित्र स्थल है, क्योंकि यहां पर कुछ समय सिद्ध योगी श्री तोतानाथ जी महाराज ने तपस्या की थी, उनके पश्चात् सिद्ध योगी श्री चेतनाथ जी महाराज ने तपस्या की। यह तपस्या के लिए अति उत्तम स्थान है। पवित्र होने के साथ-साथ यह स्थान बहुत मनमोहक और रमणीय है। चारों ओर खेत ही खेत हैं चारों तरफ घनी हरियाली है। जब आसपास के गांव वालों को यह मालूम हुआ कि श्री चाँदनाथ जी बाबा यहां तपस्या करते हैं, तो ग्रामवासी इकट्ठा होकर प्रतिदिन आश्रम में आने लगे। एक दिन आपने उन सब लोगों से पूछा कि आप लोग यहां पर प्रतिदिन क्यों आते हो ? सबने मिलकर आपके प्रश्न के उत्तर में कहा कि- बाबाजी! हम लोग तो आपसे कुछ कुछ सीखने के लिए आते हैं। सब भक्त आपसे तरह-तरह के प्रश्न पूछते रहते थे। इस तरह आपका अपना साधना समय नष्ट होने लगा, और योग साधना में विघ्न आने लगा। प्रतिदिन लोगों के आने से आप उन लोगों के ही प्रश्नों में उलझ गये। आपकी अपनी साधना के लिए समय कम पड़ने लगा। आपने एक दिन गुरू आज्ञा से वह स्थान कुछ समय के लिए छोड़ दिया।

विभूति गुरू

प्राचीन काल में दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी के शीश पर भभूत डालकर आदिनाथ भगवान शिव ने बड़ी प्रसन्नता से भभूत स्नान कराया था और उपदेश दिया था कि- ''हे मत्स्येन्द्र!''

जिस प्रकार तुमने मेरे इस भस्मी स्वरूप को मांगा है, तो इसी भस्मी में, जिस प्रकार काष्ठ अग्नि में जलकर भस्मी बनती है, उसी प्रकार तुम ज्ञानाग्नि में जलकर अपनी कठोरता तथा सब बूरे संस्कारों को जलाकर भस्म कर देना। और धरती रूपी भस्मी के समान जिसमें मान अपमान से परे और सुख-दुःख से दूर हो जाना। तत्पश्चात् मत्स्येन्द्रनाथ जी ने यही भस्मी स्नान अपने प्रिय शिष्य गोरक्षनाथ को कराया। आगे चलकर यही भस्मी स्नान गुरू गारेक्षनाथ जी ने अपने शिष्यों को कराया। इस प्रकार यह भभूति सतगुरू तथा भस्मी स्नान गुरू शिष्य परम्परागत से चलती आई है।

श्री बाबा चाँदनाथ जी गुरू आज्ञा से कुछ दिनों के लिए सिसोय हरियाणा में साधना के लिए ठहरे। वहीं पर सिद्ध योगी श्री मानानाथ जी महाराज ने आपको विभूति चढ़ाई। भस्मी स्नान कराया। इस प्रकार से बाबा श्री चाँदनाथ जी के विभूति गुरू श्री सिद्ध योगी मानानाथ जी हैं।

भक्ति

अच्छे कर्म करते-करते चित्त का मैल कट जाने पर ही ज्ञान का उदय संभव है। ज्ञान उदय होने के पश्चात् ''भक्ति'' का उदय होता है। ज्ञान का उदय हो जाने पर एक और तो वैराग्य उमड़ता है। तथा दूसरी ओर प्रेम का संचार होने लगता है।

साधना कहाँ करनी चाहिए, कहाँ नहीं करनी चाहिए

साधना में प्रवृत्त होने से पहले समस्त प्राचीन योगियों, अपने गुरू के श्री-चरणों का ध्यान तथा भगवान को प्रणाम करके ही साधना गुरू करनी चाहिए।

एकांत स्थान साधना के लिए सबसे उत्तम माना गया है। सुन्दर शान्ति वाले स्थान या फिर अपने घर के एक कोने में बैठकर भी साधना कर सकते हैं।

जहाँ सूखे पत्तो से ढकी हुई जमीन, अत्यंत कोलाहल पूर्ण या डरावने स्थान में, दीमक के ढेर के सामने या उसके समीप जहां अग्नि या जल से किसी भय की आशंका हो, जहाँ जंगली जानवर हो, जहां पर दुष्ट लोग रहते हो, ऐसे स्थानों में साधना करना उचित नहीं है। जब मन अत्यंत दुःखी हो या शरीर अत्यंत आलसी या बीमार हो, ऐसे समय में साधना नहीं करनी चाहिए। किसी अपवित्र स्थान पर भी साधना नहीं करनी चाहिए।

त्राटक योग साधना

ध्यान को केन्द्रित करने की एक विधि त्राटक साधना हैं हनुमानगढ़ थेहड़ी रहते हुए श्री गुरूजी ने लंबे अर्से तक त्राटक साधना का अभ्यास किया।

ध्यान कैसे करना चाहिए

सर्वप्रथम साधक को यह सोचना है, कि हमारे हृदय में एक आकाश है, और उस आकाश के अन्दर अग्निशिखा के

समान एक ज्योति उद्‌भासित हो रही है- उस ज्योति शिखा का अपनी आत्मा के रूप में चिंतन करना है। तत्पश्चात् उस ज्योति के अन्दर एक और ज्योतिर्मय आकाश की कल्पना करनी है। वही तुम्हारी आत्मा हैं वही आत्मा परमात्मा स्वरूप ईश्वर है। हृदय में उसी का ध्यान करना चाहिए। शत्रु को क्षमा कर दो, यदि इसमें सिद्ध न हो, तो भी दुःखी या भयभीत नहीं होना। धीरे-धीरे अभ्यास से सब कुछ ठीक हो जायेगा।

विषय की लालसा, भय और क्रोध छोड़कर ही भगवान का शरणागत होना चाहिए। भगवान श्री कृष्ण कहते हैं- जो किसी से घृणा नहीं करता, जो सबका मित्र है, जो सबके प्रति करूणा सम्पन्न है, जिसका अहंकार चला गया है, जो सदैव सन्तुष्ट रहते हैं, जो दृढ़ निश्चय वाला है, जिसका मन और बुद्धि मुझ में ही अर्पित हैं, वही मेरा भक्त है। जो कुछ पाता है, उसी में सन्तुष्ट है, जिसका दुःख चला गया है, जिसका जगत ही घर है, जो निंदा और स्तुति में सम्भावना सम्पन्न है, जिसका कोई निर्दिष्ट घर नहीं, जिसकी बुद्धि स्थिर है, ऐसा व्यक्ति ही मेरा प्रिय है। ऐसे व्यक्ति ही योगी होते हैं। कार्य कोई भी कठिन नहीं है, अभ्यास से सब ठीक हो जायेगा। आवश्यकता है तो केवल ध्यान की, अभ्यास की।

साधक की ध्यान मुद्रा

सर्वप्रथम अपने इष्टदेव की मूर्ति पर एकटक दृष्टि टिकाए रखनी है। उस पर मन की धारणा स्थापित करती है। ऐसी धारणा करने के पश्चात् मूर्ति हिलने लगेगी। उस समय मन

विक्षिप्त रहता है। अनेक प्रकार की चिंताओं से युक्त मन जब थोड़ा स्थिर होकर एक मुखी होगा, तब इष्टदेव की मूर्ति आंखों के सामने स्थिर हो जायेगी। जब मन पूरी तरह स्थिर हो जायेगा, तब इष्टदेव की मृणमय मूर्ति चिन्मय हो उठेगी। वे बिल्कुल जीवन्त मनुष्य की तरह हाथ-पांव हिलाने लगेगे। उस समय वह तुम्हारी भावावस्था होगी। उस सयम तुम्हारा इष्टदेव के साथ बातचीत करना सरल हो जायेगा। उस समय वह तुम्हारी साधना की चरम अवस्था होगी। इसके बाद तुम समझ सकोगे कि जिस मूर्ति के साथ तुम बातें कर रहे थे, वह सिर्फ मन का रूपान्तर था। मन भाव के अनुरूप मूर्ति धारण कर रहा था अब तुम्हारा भाव प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होते ही वह मूर्ति धीरे-धीरे विलीन हो जायेगी। इस मूर्ति के दर्शन से वंचित होकर तुम्हारा भाव व्याकुल हो उठेगा। इससे तुम्हें जिस मूर्ति के दर्शन होंगे, वह श्री गुरू कृपा से रचित होगी। तुम्हारे प्रति करूणा उपजने पर उन्होंने यह मूर्ति दिखाई है। यह मूर्ति अप्राकृत हैं उस समय इष्ट और गुरू अभेद हैं यह मूर्ति और विलीन नहीं होगी। यह सब बातें नित्य लोक की है। समझना है तो विश्वास के सिवा कोई अन्य उपाय नहीं है।

विशेष अनुभूतियाँ

ध्यान साधना के आरम्भ में साधक को कुछ विशेष अनुभूतियाँ होनी आरम्भ हो जाती है। जिनसे प्रभावित नहीं होना चाहिए, बल्कि इनको मात्र देखते ही रहना चाहिए। इनसे प्रभावित होने पर तो ये बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न कर देती है।

ध्यानसाधना के समय जब ध्यान केन्द्रित होने लगता है, तो कभी दिव्य व विभिन्न प्रकार की ध्वनियां सुनाई देने लगती है। कभी सुन्दर-सुन्दर दृश्य दिखाई देने लगते हैं कभी विभिन्न प्रकार की गंध आने लगती है। शरीर में स्फूर्ति आ जाती है। भीतर ही भीतर आनंद की अनुभूति होने लगती है, कभी-कभी अश्रुपात भी होने लगता है। जब ध्यान में अचेतन मन में प्रविष्ट होते है, तो मन में छिपे हुए कई प्रकार के विकार भी प्रकट होने लगते हैं जिससे कई शारीरिक बीमारियां भी प्रकट हो जाती है। किन्तु कुछ ही समय में वे ठीक भी हो जाती है। कर्मफलों के भोग के कारण कई अन्य व्यक्ति भी तथा कुछ परिस्थितियां भी अपने आप उसमें बाधा उपस्थित करने के लिए उपस्थित होती रहती है। दृढ़ संकल्प करके और उनसे प्रभावित हुए बिना निरन्तर ध्यान में लगे रहना चाहिए। जब उपलब्धि प्राप्त करने का अन्तिम समय आता है, तो कई पैशाचिक शक्तियाँ भय एवं प्रलोभन देकर साधु को इस मार्ग से हटाने को बाध्य करती हैं। ये साधक को भयभीत भी करती हैं। इनसे घबराना नहीं चाहिये, बल्कि अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते ही जाना चाहिए। भय एवं प्रलोभन में आकर यदि इसे बंद कर दिया तो सारा का सारा श्रम व्यर्थ हो जायेगा।

ध्यान योग साधना

सिद्ध गुरूओं की कृपा होते ही योग साधना होने लगती है। किसी साधक को साधना की अनुभूति जल्दी होने लगती है, किसी को कुछ देर में। परन्तु साधक को अनुष्ठान करते ही रहना चाहिए। श्री बाबाजी (श्री चाँदनाथ जी) को अपने गुरू का

पूर्ण रूप से आशीर्वाद प्राप्त था। इसलिए आपको बहुत जल्द ही योग साधनाओं में पूर्णता प्राप्त हाने लगी। आप सब साधनायें गुरू आदेश से ही करते थे। जो निर्देश साधना के विषय में वह आपको देते, आप उसी का पालन करते थे। गुरू कृपा कभी व्यर्थ नहीं जाती, यह कृपा तो गुरू-शिष्य में जन्म जन्मान्तरों तक चलती रहती है। किसी देश या किसी लोक में जाने पर भी मानव का पातक पुंज फल देने के लिए जैसे समय ढूंढता है, वैसे ही शिष्य पर हुई कृपा क्रियाशील होने के लिए शिष्य के पीछे-पीछे ही फिरती है। इसलिए धैर्य से, उत्साह से, अभ्यास करते रहना चाहिए।

कभी-कभी साधक को साधना का नशा सा चढ़ जाता है। मस्तिष्क भारी लगता है, तन्द्रा सी बनी रहती है। कभी-कभी अनेक प्रकार के दृष्टान्त होते हैं। सिद्धों के दर्शन होते, ज्योतियों के दर्शन होते हैं। अन्तः करण में सुख की अपूर्व लहरें उठती है। सृष्टि की सभी वस्तुयें अच्छी लगने लगती हैं ऐसे लगने लगता है मानों नये संसार का जन्म हुआ हो। साधक को अपना जीवन मधुर और आनंदमय लगने लगता है। ध्यान सदैव बराबर नहीं लगता, कभी कम लगता है, तो कभी बहुत देर तक लग जाता है। गुरू पर भरोसा रखना चाहिये, ध्यान नियम से करना चाहिए, गुरू मंत्र जपते रहना चाहिए, शुभ कर्म करते ही रहना चाहिए, सफलता तो अवश्य मिलेगी। गुरू मंत्र जप अन्तःकरण की शक्ति को क्रियाशील बनता है।

गुरू मंत्र जप प्रकट परमात्मा हैं कहते हैं कि - मंत्र, जप करने वाले का रक्षण करता है। मंत्र में गुरू मूर्तिमान् होकर

रहते हैं।

हृदय में बैठी गुरू शक्ति ही ध्यान को बढ़ाती है, एवं उसको स्थिर करती है। ध्यान ही चंचल चित्त पर विजय प्राप्त करने का अमोद्य अपाय है। ध्यान ही इच्छित फल देने वाला कल्प वृक्ष है। ध्यान ही परमामा की शक्ति को खींचने वाला चुम्बक है।

गुरू की अनिवार्यता

ध्यान साधना में गुरू की अनिवार्यता का विशेष महत्व है। यह एक ऐसा अज्ञात मार्ग है। जिस पर बिना गुरू के चलना खतरनाक सिद्ध हो सकता है। यह मार्ग देखने में बड़ा आसान व सरल ज्ञात होता है, किन्तु इसमें पग-पग पर बाधायें उत्पन्न होती रहती है। जिनका समाधान गुरू अथवा गुरू कृपा से ही संभव हैं । साधक को गुरू की महिमा का स्मरण करके ही साधना आरंभ करनी चाहिए, तथा यह स्वीकार करना चाहिए, कि ईश्वर की कृपा गुरू के माध्यम से ही बरसती हैं । गुरू का भी यह कर्तव्य बनता है कि वह अपने शिष्य की सहायता करके उसे आध्यात्मिक ज्ञान के उच्च शिखर पर पहुँचा दे। योग साधना के मार्ग पर गुरू ही शिष्य को सही मार्ग दिखा सकते हैं। गुरू कृपा प्राप्त करने के सर्वप्रथम साधक को अपनी पात्रता सिद्ध करनी होती है, फिर जाने अनजाने, प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में गुरू कृपा उस पर बरसती रहती है।

गुरू वही श्रेष्ठ हैं जिसके प्रति समर्पण भावना स्वतः ही

जाग्रत हो जाए। जिस प्रकार ध्यान किया नहीं जाता, किसी भी समय अपने आप हो जाता है। उसी प्रकार समर्पण भी किया नहीं जाता, यह अपने आप किसी अन्तः प्रेरणा से अपने आप घटित हो जाता है।

गुरू चाहे कितना ही समर्थ एवं योग्य क्यों न हो ? यदि साधक में शिष्यत्व भाव नहीं है तो गुरू का उस पर प्रयोग व्यर्थ ही सिद्ध होगा। जिस प्रकार पत्थर पर बोये गये बीज फल नहीं दे सके, ठीक उसी प्रकार शिष्य का गुरू के प्रति समर्पण भाव ही उसकी दिव्य चेतना को ग्रहण करने की उपयुक्त योग्यता है। यह ज्ञान शिक्षक एवं विद्यार्थी की भांति का बौद्धिक ज्ञान हीं है, बल्कि यह कार्य आत्मिकतल का है, जिसमें सबसे ज्यादा समर्पण भाव की ही आवश्यकता है।

गुरू को पहचानने के लिए अलौकिक क्षमता चाहिये। गुरू की परीक्षा लेने की कभी भी कोशिश नहीं करनी चाहिये। गुरू स्वयं योग्य पात्र को पहचान लेता है। गुरू आशीर्वाद से ही शिष्य अपनी साधना में दिन प्रतिदिन उन्नति करते हैं।

गुरू दक्षिणा

योगी श्री श्रेयोनाथ जी महाराज अक्सर हनुमानगढ़ थेहड़ी जाते रहते थे। वहां पर बाबा श्री चाँदनाथ जी कृषि का एवं कोठार का कार्यभार संभालते थे। योगी श्री श्रेयोनाथ जी के वैसे तो अनगिनत शिष्य हैं, किन्तु वह सबसे ज्यादा श्री चाँदनाथ जी को ही योग्य और प्रबुद्ध समझते थे क्योंकि वे उनकी योग्यता

से भली-भांति परिचित थे। उनकी हर प्रकार की परीक्षा में श्री चाँदनाथ जी उत्तीर्ण हुए। योगी श्री श्रेयोनाथ जी सदैव अपने शिष्य चाँदनाथ को कहते थे कि- ''बच्चे!'' मेरे पश्चात् तुम्हें ही मठ अस्थल बोहर की गद्दी का सारा कार्यभार संभालना होगा। किन्तु आप हमेशा उनसे यही कहते थे कि- ''गुरूजी!' मैं आपकी हर आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार हूं, किन्तु मुझसे इतनी बड़ी जिम्मेदारी नहीं संभलेगी। गुरूजी आप किसी अन्य शिष्य को यह जिम्मेदारी सौंप दीजिए। एक दिन हमेशा की ही तरह योगी श्री श्रेयोनाथ जी अपने शिष्य चाँदनाथ जी के साथ श्री बाबा मस्तनाथ नेत्र चिकित्सालय (हनुमानगढ़ थेहड़ी) के बाहर बगीचे में घूम रहे थे, घूमते-घूमते ही कहने लगे कि- बच्चे! तुझे मेरे इस आदेश का पालन तो करना ही पड़ेगा। जिस समय गुरूजी मुझसे यह सब बातें कर रहे थे, उस समय गुरूजी का मुखमंडल ब्रह्मज्योति से उद्भासित और शरीर योगाग्निमय था। उनके ऐसे गंभीर और अद्भुत भाव को देखकर मैं आश्चर्य में पड़ गया। जब मैं बार-बार मठ की गद्दी का भार वहन करने के लिए मना करता रहा, तो गुरूजी मुझसे और अधिक प्रसन्न हुए। उस समय वह मुझसे कहने लगे कि अब ये मेरा आदेश है कि अब तुम मुझे गुरू दक्षिणा प्रदान करो। तुम्हारी तरफ से मेरी यही गुरू दक्षिणा होगी कि तुम मेरे पश्चात् मठ अस्थल बोहर की गद्दी को सँभालो।

उस दिन न जाने कौन सी शक्ति के वशीभूत होकर मैंने गुरूजी की उस आज्ञा को शिरोधार्य कर लिया और मैं उनके

आदेश का पालन करने के लिए सहमत हो गया।

२१ मई सन् १९८४ के शुभ दिन, शुभ तिथि देखकर योगी श्री श्रेयोनाथ ने अपने श्रेष्ठ एवं योग्य शिष्य श्री चाँदनाथ जी को नाथ सम्प्रदाय की सर्वसम्मति से अपनी जीवित अवस्था में ही अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

गुरू बनने का दायित्व

एक बार श्री गुरूजी (महन्त चाँदनाथ योगी) ने बताया कि गुरू बनने का दायित्व अत्यंत कठिन हैं गुरू बनना कोई कम विपत्ति का काम नहीं है, गुरू बनने के पश्चात् तो अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मैंने जितने भी शिष्यों और भक्तों को मंत्र दिया है, उनका मार्ग दर्शन करना भी तो मेरा ही कर्तव्य है। यदि कभी कोई शिष्य मार्ग से भटक जाये तो उनको सन्मार्ग दिखाना गुरू का कर्तव्य है। अगर कोई शिष्य गलत कार्य करें, असत्य बोले, तो यह पाप गुरू को ही लगेगा। इसलिए गुरू मंत्र देने से पहले सबको यह बतला देते हैं कि छल, कपट, असत्य, अहंकार सबका त्याग पहले करना पड़ेगा उसके पश्चात् ही तुम गुरू मंत्र लेने के अधिकारी हो सकते हो, अन्यथा नहीं क्योंकि गुरू शिष्य संबंध तो एकदम पवित्र पिता और पुत्र का हो जाता है। इसलिए शिष्य को गुरू के प्रति कर्तव्यनिष्ठ और विश्वासपात्र होना चाहिए।

गुरू और शिष्य दोनों मधु और मिठास की तरह जुड़े होते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है। क्रिया करने से, जप से, ध्यान से सब कुछ समझ में आ जायेगा।

श्री गुरू मन्दिर का निर्माण

अपने गुरूजी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् उसी वर्ष सन् १९८५ में श्री गुरूजी ने श्री बाबा मस्तनाथ जी के समाधि-स्थल के दायीं तरफ अपने पूज्य गुरूजी की स्मृति में बहुत विशाल एवं भव्य मन्दिर बनवाकर तैयार करवाया। इस स्मृति मन्दिर में वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना देखने को मिलता है। यह मन्दिर बहुत ही आकर्षक व भव्य है।

मन्दिर सफेद व हल्के गुलाबी रंग के संगमरमर के पत्थर से निर्मित है। मन्दिर के चारों ओर बड़े-बड़े स्तम्भ हैं, जो कि हल्के स्लेटी रंग के हैं। स्मृति मन्दिर में अखंड ज्योति उसी दिन से जल रही है जिस दिन योगी श्री श्रेयोनाथ जी का कैलाशवास हुआ था।

कर्म की प्रधानता

श्री गुरूजी सदैव यही कहते हैं- ''कर्मभ्यो नमः'' उसी से निर्भरता प्राप्त होगी, उसी से सब कुछ समझ में आ जायेगा। क्रिया के द्वारा ही ईश्वर की कृपा प्राप्त की जा सकती है। गुरूजी कहते हैं कर्म करो, फल की इच्छा ईश्वर पर छोड़ दो।

सदाचार तथा शास्त्र निष्ठा

श्री गुरूजी भक्तों को समझाते हुए कहने लगे कि कर्म किए बिना, केवल ग्रन्थों का अध्यन करने मात्र से करोड़ों जन्मों में भी प्राकृत ज्ञान पाना संभव नहीं है। शास्त्र तो केवल पथ

प्रदर्शन करते हैं, किन्तु पथ पर चलकर ही गन्तव्य स्थान पर पहुँचा जा सकता है। गुरूजी सदैव कर्म करने पर जोर देते हैं कहते हैं- कर्म करो ! कर्म करते चलो ! सदा कर्म में ही रत रहो!

सत्यवादिता

वाणी द्वारा सबसे ज्यादा ऊर्जा का क्षय होता है। इसलिए अनावश्यक नहीं बोलना चाहिए। व्यर्थ की बकवास, गपशप सदा दूसरों को सलाह देते रहने से कोई लाभ नहीं होता। गुरूजी सदैव अपने उपदेश में यही कहते हैं कि कम बोलो, लेकिन सत्य बोलो। किसी भी स्थिति में सत्य का परित्याग मत करो। किन्तु यदि कोई सत्य किसी को अप्रिय लगे तो ऐसे सत्य को मत बोलो, उस समय चुप रहो। सत्य के मार्ग पर चलते हुए अडिग रहना ही जीवन है। गुरूजी को असत्य सुनने और बोलने दोनों से सख्त नफरत है।

वह कहते हैं, सत्य तो ईश्वर है। सत्य वचन मानव मन की शुद्धि के परिचायक होते हैं।

चरित्र की विशेषताऐं

गुरूजी के चरित्र की इतनी विशेषताऐं हैं, कि उन सबका शब्दों में लिख पाना अत्यंत कठिन है। उनकी विशेषताओं के लिए तो शब्दकोष भी छोटा ही होगा। खास विशेषता तो उनकी यह है कि वह किसी के प्रति अन्याय होते नहीं देख सकते। मधुरवाणी, सत्यप्रियता, अनुशासन ही उनके जीवन में खास अहमियत रखते हैं।

गुरूजी का स्वभाव

गुरूजी का स्वभाव अभिमान रहित, सरल और बालकों की तरह कोमल है। छल कपट का तो दूर-दूर तक उनमें नामों निशान भी नहीं है। दीन दुःखियों के प्रति उनकी विशेष अनुभूति हैं बच्चों और बुजुर्गों पर उनकी विशेष कृपा है। गुरूजी का स्वभाव बहुत भोला है। किसी भी व्यक्ति पर विश्वास कर लेते हैं, चाहे उन व्यक्तियों में से कोई व्यक्ति उनके साथ विश्वासघात भी कर दे, तो भी उसे वह सहजता से ही लेते हैं। और उनके अपराधों को क्षमा कर देते हैं।

गुरूजी का भोजन

गुरूजी के भोजन में प्रायः दो सूखी रोटी, मूंग की दाल और सब्जी। सब्जी में घीया, तोरई, टिण्डा और मैथी विशेष रूप से पसन्द है। गर्मियों में लस्सी, मिष्ठान में गुरूजी को रोट का प्रसाद, गर्म जलेबी एवं सर्दी में तिल वाली गजक पसंद है।

गुरूजी की दिनचर्या

गुरूजी एक सहज तपस्वी, साधक, योगी एवं महान समाज सेवी हैं। श्री गुरूजी की दिनचर्या प्रतिदिन बहुत ही व्यस्त होती है। नित्य प्रति सैकड़ों लोगों से मिलना, विश्वविद्यालय का निरीक्षण करना, मठ की समस्याओं का सुचारू रूप से चलाना, श्रद्धालु भक्तों की समस्याओं का समाधान इत्यादि गुरूजी की दिनचर्या में यह सब शामिल है।

विभिन्न धार्मिक कृत्य

श्री गुरूजी प्रतिवर्ष दो बार शिवरात्रि पर विशाल यज्ञ का आयोजन करवाते हैं (फागुन व श्रावण) यह यज्ञ पूरे ग्यारह दिन तक चलता है। शिवरात्रि से दस दिन पहले शुरू होकर ग्यारवें दिन पूर्णाहुति होती है। इस यज्ञ में बहुत विद्वान् पंडित बुलाए जाते हैं। यज्ञ में सभी साधुगण भक्तगण व उपस्थित कर्मचारी श्री गुरूजी के साथ पूर्णाहुति में भाग लेते हैं यज्ञ के पश्चात् ब्रह्मभोज होता है।

नवरात्रों में विशाल यज्ञ का आयोजन एवं विशाल भंडारा

प्रतिवर्ष नवरात्रों के अवसर पर पूज्यपाद् श्री गुरूजी मठ अस्थल बोहर में विशाल यज्ञ का आयोजन करवाते हैं। अखंड ज्योति के साथ अखंड यज्ञ भी पूरे आठ दिन तक चलता है। नवमीं को पूर्णाहुति होती है। शक्ति माता की पूजा अर्चना बड़े विधि-विधान से की जाती है पूर्णाहुति के पश्चात् विशाल भंडारा होता है। इस भंडारे में पूरे पहरावर गांव की छोटी-छोटी कन्याओं को भोजन खिलाकर उनको चुनरी एवं दक्षिणा दी जाती है। गुरूजी कहते हैं, कि दुनियाँ की हर कन्या ही शक्ति माता का रूप है, और न जाने किस कन्या के रूप में शक्ति माता के दर्शन हो जायें।

श्री ज्वाला जी हिमाचल प्रदेश में भी पूरे नौ दिन यज्ञ और भंडारा चलता है। वहाँ भी श्री गुरूजी पूरे आठ दिन रोट का प्रसाद व नवमीं को भंडारा देते हैं।

कोढ़ियों को कम्बल एवं अन्न दान

रोहतक शहर में लगभग एक पूरा मोहल्ला कोढ़ियों का बसा हुआ है। गुरूजी प्रतिवर्ष सर्दी के मौसम में उन गरीब कोढ़ियों को शरीर ढकने के लिए कम्बल भिजवाते हैं। उनकी संख्या चाहे कितनी भी हो, सबको गुरूजी की तरफ से कम्बल वितरित किए जाते हैं और भोजन की सामग्री भी दी जाती है।

इष्ट और गुरू अभेद हैं

इष्ट और गुरू एक हैं। यह भाव अन्तःकरण में होना चाहिए। जिस प्रकार से दूध और उसकी सफेदी अभेद है, ठीक वैसे ही शक्ति और शक्तिमान् अभेद हैं।

शक्ति का संचार

''शक्ति'' की कृपा के बिना अपना आत्मबोध स्थिर नहीं रहता। तुम लोग जरा से तेज से ही चकित हो जाते हो, फिर शक्ति के प्रबल तेज ताप को कैसे सहन कर सकोगे। पहले तो तुम लोगों को महाशक्ति के बल को ग्रहण करके उससे बलवान बनना होगा, तत्पश्चात् ही तुम शक्ति के सम्मुख होने पर जागृत रह सकोगे। और अपनी चेतना भी नहीं खो सकोगे। जैसे लोहा अग्नि के तेज से तेजोमय हो उठता है उसी प्रकार शक्ति की आराधना करके अपने को शक्तिमय बनाओ। यह सब गुरू के निर्देश से ही संभव है।

गुरू अपनी सिद्धि से दीक्षा-प्रार्थी के पूर्व जन्मों के कर्मों का उद्‌घाटन करके उसके लिए इस जन्म में जो उपयोगी मंत्र हैं, उसकी दीक्षा देते हैं। साधना करने पर इष्टदेव अपने आप ही भक्त को दर्शन देते हैं। मंत्र तो एक बाह्य आवरण है, शक्ति तो उसके भीतर रहती है। गुरू उस शक्ति को चैतन्य करके शिष्य को प्रदान करते हैं। वही शक्ति साधक को आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर करती है।

गुरू तत्व

गुरू का स्वरूप साधारणतया लोग देख नहीं पाते। साधक को जो दिखता है, वह उनका स्थूल रूप है परम रूप नहीं है। संसार रंजित नेत्रों से सभी अपनी-अपनी वासना के अनुरूप ही गुरू के दर्शन करते हैं।

जिस प्रकार जल में मछलियों के चलने के चिन्ह दिखाई नहीं देते, आकाश में पक्षियों के उड़ने के चिन्ह दिखाई नहीं देते, उसी प्रकार से गुरू की मति का पता लगाना भी असंभव है, उनकी थाह पाना अत्यंत कठिन है।

जैसे जलते हुए दीपक से दूसरा दीपक जल उठता है उसी प्रकार गुरू रूपी उज्जवल आधार के संस्पर्श से जब जीव की अपनी सुप्त अग्नि प्रज्वलित हो जाती है, तब उसकी अन्तरात्मा जाग उठती है। तब उसे अन्तः करण में गुरू के दर्शन होते हैं। गुरू का श्रेष्ठ रूप अव्यक्त ईश्वर है।

साधना संबंधी कुछ बातें

सच्चे ज्ञान में प्रतिष्ठित हुए बिना प्रेम प्राप्ति असंभव है। जो व्यक्ति अपना स्वरूप ठीक से नहीं जानता, वह भगवान् के स्वरूप को कैसे जान सकता है? वह भगवान के साथ कैसे प्रेम संबंध स्थापित कर सकता है? जीव भाव में रहकर भगवान के साथ प्रेम करना क्या संभव है? एकाकार न होने पर परस्पर भाव का आदान-प्रदान नहीं हो सकता। प्रेम प्राप्त करने की अनेक साधनायें हैं। सबसे पहले भाव होना चाहिए, उसके पश्चात् साधना शुरू करनी चाहिए, अन्यथा साधना सफल नहीं होगी।

श्री गुरूजी ने बताया कि अब भी मेरे पूज्य गुरूदेव अदृश्य रूप में साधना संबंधी निर्देश सदैव देते रहते हैं।

महादेवी लक्ष्मी का प्राकट्य

गुरूजी ने बताया उन दिनों मैं हनुमानगढ़ थेहड़ी में साधना करता था। उस दिन दीवाली की रात थी। हम सब साधुओं और आश्रम के सेवकों ने मिलकर पूजा की, लक्ष्मी-पूजन किया, उसके पश्चात् सबने मिलकर भोजन किया। यह सब करते-करते ग्यारह बजे का समय हो गया, सब अपने-अपने विश्राम कक्ष में चले गये। गुरूजी ने बताया सबके जाने के पश्चात् मैं भी अपने विश्राम कक्ष में चला गया। अपने विश्राम कक्ष के एक कोने में मैंने छोटा सा पूजा स्थान बनाया हुआ था। मैं वही पर बैठकर प्रतिदिन साधना करता था। दीवाली के दिन भी मैं सदैव ही की भाँति साधना के लिए बैठ गया। पूजा स्थान

पर एक बहुत ही पुराना लक्ष्मी माता का कलैण्डर टँगा हुआ था। रोज ही की तरह मैंने धूप बत्ती जलाई और साधना में बैठ गया। अभी बैठे हुए मुझे कुछ ही मिनट हुए थे कि- अचानक एक अलौकिक दृश्य उभर आया, पूरे कमरे में रोशनी फैल गई, और कलैण्डर वाली मूर्ति से साक्षात् महादेवी लक्ष्मी प्रकट हो गयीं। माँ के रोम-रोम से ज्योति निकल रही थी। उस समय मेरे विस्मय की सीमा नहीं रही। माँ लक्ष्मी पाँच वर्ष की कन्या के समान प्रतीत हो रही थी। लाल रंग की साड़ी और स्वर्ण आभूषणों से सुसज्जित खड़ी हुई थी माँ लक्ष्मी बहुत सुन्दर सौम्य और तेजोमयी रूप था लक्ष्मी माँ का, कि मैं देखता ही रहा गया। माँ के अंग-अंग से तेज निकल रहा था। वह सौम्य रूपा देवी लक्ष्मी मुझे देखकर लगातार मुस्कुरा रही थी। उनके हाथ से लगातार चाँदी के सिक्के छन-छन की ध्वनि के साथ प्रकट होते जा रहे थे। सिक्कों का ढ़ेर जमा हो गया। किन्तु उनके अंग- प्रत्यंग से निकल रहे तेज को देखकर मैं बहुत बुरी तरह डर गया, और मेरे शरीर से पसीना छूटने लगा। मैं एकदम उठकर खड़ा हुआ और बाहर निकल आया। बाहर घूमता रहा बहुत देर तक और माँ लक्ष्मी के विषय में ही सोचता रहा। जब मेरा पसीना सूख गया और मेरा डर भी कुछ कम हो गया, तो मैंने सोचा एक बार फिर से माँ लक्ष्मी के दर्शन करूँ। मैं फिर से अन्दर गया, उस समय लग रहा था, मानो माँ लक्ष्मी मेरा ही इंतजार कर रही थी। वही रूप, वही तेज। फिर देखते ही देखते वह मनोहारी सौम्य मूर्ति धीरे-धीरे विलीन होकर एक ज्योति पुंज में बदल गई।

दिव्य सुगन्ध

कभी-कभी गुरूजी के आस-पास से या उस स्थान से जो गुरूजी का निवास स्थान है, एक विलक्षण सुगन्ध आती है। यह सुगन्ध हमने भी कई बार महसूस की है। उस सुगन्ध को क्या नाम दिया जाये यह तो नहीं जानती, किन्तु इतना अवश्य कह सकती हूँ कि वह कोई साधारण सुगन्ध नहीं है, अपितु वह तो कोई दिव्य सुगन्ध है।

सिद्ध योगी गोपीचंद भर्तृहरि जी के साक्षात् दर्शन

उस दिन श्री गुरूजी को किसी कार्यवश श्री बाबा तुलसीनाथ जी के साथ राजस्थान जाना था, किन्तु ड्राइवर के समय पर न आने के कारण कुछ विलंब हो गया। वैसे भी गुरूजी सदैव स्वर-साधना के हिसाब से ही कहीं जाते हैं। गुरूजी ने बताया कि उस दिन मेरा जो स्वर चलना चाहिए था, वह नहीं चल रहा था। इसलिए गुरूजी अपना स्वर बदलने के लिए अपने विश्राम कक्ष में आकर कुछ देर के लिए बैठ गए, और स्वर बदलने की कोशिश करने लगे। उस दिन उनका स्वर बदलने का नाम ही नहीं ले रहा था। गुरूजी ने मन में विचार किया कि कुछ देर लेट कर कोशिश की जाये, लेटने से पहले सर्वप्रथम उन्होंने अपने विश्राम कक्ष का द्वार बंद कर लिया। नेत्र बंद करके वह स्वर बदलने की कोशिश करने लगे। उस दिन उनकी सब कोशिशें असफल रही, परन्तु कुछ ही देर में उनकी आँखें लग गयी। आँखें बंद होते ही उनको तीन बार

आदेश! आदेश! आदेश! स्वर सुनाई पड़ा। यह सुनते ही गुरूजी का ध्यान भंग हुआ, आँखें खुली, तो उन्होंने देखा उनके बिस्तर के निकट ही दो तेजस्वी साधु खड़े हैं। गुरूजी ने उन दिनों योगियों को आदेश! आदेश! आदेश! बोला। गुरूजी ने हमें आगे बताया कि- मैंने तो लेटने से पहले विश्राम कक्ष का द्वार बंद किया था, फिर ये दोनों साधु अंदर कैसे आये?

गुरूजी बड़ी शीघ्रता से उठकर मुख्य विश्राम कक्ष के द्वार पर गये, देखा, द्वार तो अब भी पहले की ही तरह बंद था। गुरूजी तुरंत ही अपने बिस्तर की तरफ बढ़े। देखा, वह दोनों साधु देखते ही देखते वहीं पर अन्तर्ध्यान हो गए। यह देखकर गुरूजी को बहुत अफसोस हुआ, कहने लगे- ओह! यह दोनों तो महासिद्ध योगी गोपीचंद नाथ और भर्तृहरिनाथ जी थे। मुझसे तो बड़ी भारी गलती हो गई, जो मैनें उनसे एक बात भी नहीं की। गुरूजी ने आगे बताया कि मैंने उस जगह को छूकर कई बार क्षमा मांगी। इतनी देर में गाड़ी का ड्राईवर आ गया। स्वर तो बदला नहीं, परंतु मुझे महासिद्धों के दर्शन हो गए। तत्पश्चात् गुरूजी बाबा तुलसीनाथ जी के साथ राजस्थान के लिए रवाना हो गए।

गुरूजी कहते हैं कि मुझे आज भी उन दोनों महासिद्धों का स्वरूप ज्यों का त्यों स्मरण है।

साधना से योग ऐश्वर्य का प्रकाश।

श्री गुरूजी अपने पूज्य गुरूदेव की ही भांति आयुर्वेद के ज्ञाता हैं। यह ज्ञान उन्हें अपने पूज्य गुरूदेव से ही विरासत में मिला है। श्री गुरूजी के पास नित्यप्रति कोई न कोई भक्त अपनी बीमारी लेकर आते रहते हैं। जब वे सब गुरूजी की चिकित्सा से स्वस्थ हो जाते हैं, तब सब प्रसन्नचित होकर श्री बाबा मस्तनाथ जी की समाधि पर अपना माथा टेकते हैं और प्रसाद चढ़ाते हैं, साथ ही गुरूजी को प्रणाम कर धन्यवाद देते हैं।

श्री गुरूजी के पास न जाने कितने ही सन्तानविहीन लोग आते हैं। गुरूजी उन्हें धूने की विभूति का प्रसाद देते हैं। इसी विभूति के प्रसाद से सबकी मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। जटिल से जटिल रोगों से ग्रस्त अनेक रोगी श्री गुरूजी की दवा से ठीक हुए हैं।

एक बार श्री गुरूजी ने सोचा ऐसा करने से तो मुझे साधना करने का बिल्कुल भी समय नहीं मिलता। पूरे समय ही रोगी आते रहते हैं। गुरूजी ने कुछ समय के लिए रोगियों का आना बंद कर दिया, और अपनी साधना में जुट गए। योग के उदय से ऐश्वर्य का उदय होना तो बहुत जरूरी है। साधना ध्यान में ईश्वर भाव ही ऐश्वर्य है। वह आत्मस्वरूप से पृथक् नहीं है। ज्ञान का उदय होने पर जब आत्मा से आवरण हट जाता है, तब आत्मा स्वतः ही जाग्रत हो उठती है। ज्ञान का उदय होने पर ऐश्वर्य का प्रकाश अपने आप ही होने लगता है।

जैसे फूल के खिलने पर मकरन्द का विकास स्वतः ही हो जाता है, उसी प्रकार योग ऐश्वर्य का मतलब है, परमात्मा-भाव में प्रतिष्ठित होना। आत्म-भाव न जागने पर परमात्म भाव में प्रवेश लाभ नहीं होता।

भगवान शंकर के दिव्य दर्शन

गुरू कृपा से ही अन्तः शक्ति जागती है, और उसमें दिव्य प्रेम प्रकट हो जाता है। गुरू ही सब कर्मो को मंगलप्रद बनाते हैं। क्योंकि उनके सभी कर्म परमार्थ होते हैं। गुरूजी ने बताया कि मेरे गुरूदेव ने जिसको आशीर्वाद दिया उसका मंगल हुआ, और जिसको गालियाँ दी, वे भी कीर्तिवान बन गये। मेरे पूज्य गुरूदेव का आशीर्वाद सदैव मेरे ऊपर रहा, और आज भी है। गुरूदेव आज भी मुझे साधना के विषय में निर्देश देते रहते हैं।

गुरूजी ने बताया कि एक दिन मैं और मेरा गुरूभाई नफेनाथ दोनों आश्रम का काम-काज करके छत पर चले गये। राजस्थान में वैसे भी बहुत गर्मी होती है, इसलिए दोनों छत पर ही सोते थे। उस दिन भी हम दोनों सदैव की ही भाँति लेटकर ध्यान के विषय में कुछ वार्तालाप कर रहे थे। वार्तालाप के दौरान ही गुरूभाई ने करवट ली, और उसको नींद की झपकी लग गई। मैं भी चुप हो गया। आकाश की तरफ देखते-देखते न जाने कब मेरा ध्यान लग गया। उस समय के विषय में गुरूजी ने बताया कि मुझे एक दम से ऐसा लगा, जैसे कोई

तारा टूट गया हो, मैं उसे देखता ही रह गया। उस तारे की रोशनी मेरी तरफ ही बढ़ती आ रही थी। इस चमत्कार या इस दिव्य दर्शन के विषय में मुझे बताना तो नहीं चाहिए, किन्तु मेरे पूज्य गुरूदेव ही मुझे बोलने और बताने की प्रेरणा दे रहे हैं। उस समय मैंने जो देखा था, उस विषय में तद्नुरूप बताने की सामर्थ्य मुझ में नहीं है।

वह अत्यंत प्रखर और तीव्र ज्योति थी। वह तेजस्वी ज्योति प्रकाश अनन्त प्रकार की तेजयुक्त किरणों के साथ मेरे समीप बढने लगा। उस प्रकाश को आगे बढ़ते हुए मैं प्रत्यक्ष देख रहा था। उस समय मैं परम आश्चर्य में डूब गया। उसके बाद चारों और प्रकाश ही प्रकाश फैल गया। उस प्रकाश में से भी एक दिव्य तेज पुञ्ज निकला। उस दिव्य तेज में से एकदम प्रकट हो गए भगवान शंकर। इतने तेजस्वी, सुन्दर, मस्तक पर अर्द्ध चन्द्र, जटाधारी, शीश पर गंगा, गले में सर्पो की माला, पतली लम्बी नाक, चेहरा दमक रहा था, और लम्बे थे २०-२२ फूट। भगवान शंकर के इस प्रकार दर्शन पाकर मैं अपने आपको कुछ क्षण के लिए बिल्कुल भूल गया। मैं लगातार भगवान के तेजस्वी चेहरे को देखता ही रहा। भगवान के मुखारविन्द पर अमृतमयी मुस्कान लौट रही थी। उनके हाथ में बहुत बड़ा त्रिशूल था, तथा दूसरा हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में था। कुछ देर के बाद मेरा ध्यान भंग हुआ, देखा सब कुछ साफ था। मैं बहुत देर तक सोचता रहा, कि कितना दिव्य रूप था भगवान शंकर का। कुछ समय बाद मैंने अपने गुरूभाई को उठाया और पूछा कि नफेनाथ क्या तुमने भी कुछ देखा। वह

प्रकाश, उस तारे का टूटना। नफेनाथ जी ने कहा- मैनें कुछ भी नहीं देखा।

श्री गुरूजी का चिन्मय भाव

एक बार श्री गुरूजी ने बताया कि मेरा ये शरीर चिन्मय नहीं है। एक दिन यह शरीर तुम सब लोगो के सामने ही नष्ट हो जायेगा। जिस शरीर को मैंने प्राप्त किया है, वह तो इस शरीर के भीतर है। ये सब तत्व बहुत ही गोपनीय व गूढ़ होते हैं। और भाव तो बहुत ही गूढ़ होते हैं। ये पाँच तत्व पाँच प्रकार के होते हैं। शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य, और मधुर।

जगत में इन पाँचो भावों के साधक हैं। भक्ति के साथ किसी भी एक भाव का अवलम्बन लेना होता हैं। जिस प्रकार ऋषि-मुनियों ने शांत भाव की, हनुमान जी ने दास्य भाव की, ग्वालों ने सख्य भाव की, और गोपियों ने मधुर भाव की साधना की थी। मधुर भाव ही सबसे श्रेष्ठ भाव है।

गुरू चिन्तन का फल

भगवान के चिंतन के साथ-साथ गुरू का भी चिंतन करना चाहिए, क्योंकि गुरू के माध्यम से ही भगवान के दर्शन होंगे। गुरू के विषय में सर्वप्रथम सोचो, उनका ध्यान करो, फिर देखो गुरू कृपा से कितनी जल्दी तुम भगवान के दर्शन कर सकोगे। इसमें कोई सन्देह नहीं है, आवश्यकता है तो केवल विश्वास की।

गुरू और भगवान में कोई भेद नहीं

एक दिन गुरूजी ने शिष्यों को बताया कि गुरू और भगवान एक ही हैं। फिर भी सन्देह के कारण शिष्य इस बात को समझ नहीं पाते, कि गुरू और भगवान में क्या अंतर है।

एक बार एक शिष्य जप कर रहा था। जप करते-करते ध्यान करते-करते उसी ध्यान में गुरूजी ने बताया- 'बच्चे! ये तुम्हारे इष्टदेव हैं।' इसके कुछ ही क्षण के बाद गुरूजी स्वयं इष्टदेव की मूर्ति में समा गये। यह देखकर शिष्य आश्चर्य चकित रह गया, और गुरू और भगवान को अभेद (एक) जानकर बहुत ही आनंद प्राप्त किया।

ज्योतिष विद्या का ज्ञान

एक दिन कुछ भक्तों ने मिलकर गुरूजी से पूछा- गुरूजी- आज हमें कुछ ज्योतिष के विषय में बताइये। गुरूजी ने सबके प्रश्न के उत्तर में कहा- ज्योतिष एक गंभीर विषय है। ज्योतिष वह विद्या है, जिससे भविष्य के लिए प्रकाश मिलता है। ज्योतिष विद्या के मुख्य दो अंग हैं। 'फलित' और 'गणित'।

भक्तों ने आगे पूछा- गुरूजी! कुछ लोग ज्योतिष को पाखंड बताते हैं। फलित ज्योतिष के आधार पर जो जन्म कुंडलियाँ बनाई जाती हैं, वह सब झूठी ही लगती हैं। इन झूठी कुंडलियों के कारण ही मन, शरीर और पूरे परिवार के लोग चिंतित हो उठते हैं। सबने मिलकर फिर प्रश्न किया- गुरूजी

आप हमें यह बताइये कि ज्योतिष के संबंध में कहाँ तक वास्तविकता है?

गुरूजी ने कहा- ज्योतिष बिल्कुल सत्य है, इसमें झूठ की तनिक भी गन्ध नहीं है। सम्पूर्ण विश्व में एक छिपी हुई शक्ति काम करती है। वह शक्ति अग्नि, जल, वायु आदि में स्वाभाविक ढंग से लगकर काम कर रही है। जिन्हें हम अग्निदेव, जलदेव, और वायुदेव आदि नामों से संबोधित करते हैं। इन्हीं की भाँति सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुद्ध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु नवग्रह तथा मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन ये बारह राशियाँ आकाशमंडल के महत्वपूर्ण अंग हैं। जो प्रकृति प्रदत्त अपने-अपने स्वाभाविक गुणों का प्रभाव विश्व और विश्व के प्राणियों पर सृष्टि के आदि से ही डालते आ रहे हैं। एक ही परमात्मा की शक्ति विभिन्न रूपों में गतिमान होकर जगत को धारण किए हुए है, तो क्या ऐसी दशा में ग्रह और राशियाँ क्रियाशील होने से वंचित कैसे रह जायेंगे।

ग्रह, नक्षत्र और राशियाँ ज्योतिष के मूल हैं। चाहे गणित ज्योतिष हो या फलित ज्योतिष हो, दोनों ही इनके आधार माने जाते हैं।

जन्मकाल के लग्न, राशि, ग्रह आदि की सही-सही जानकारी पाकर ही ज्योतिष जीवन फल लिखने अथवा कथन करने में समर्थ होते हैं। बिना इस जानकारी के वे एक कदम भी आगे नहीं जा सकते, क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नवग्रहों, बारह

राशियों एवं सत्ताईस नक्षत्रों से घिरा है। इन्हीं नक्षत्रों और राशियों में प्रत्येक ग्रह गतिशील रहता है।

सभी ग्रह, राशियाँ आदि गुण-दोषमय होते हैं। राशियों के गुण - दोषों को ग्रह अपने गुण - दोषों से प्रकट करते हैं, और प्रत्येक नक्षत्र के स्वामी ग्रह नक्षत्रों के गुण दोषों के प्रतीक होते हैं। ये सभी ग्रह नक्षत्रादि एक अज्ञात आकर्षण से बंधे हुए हैं। परन्तु नियम पूर्वक संचालित होकर भविष्य के लिए भ्रमणशील हैं।

गणित ज्योतिष के अध्ययन से विद्वानों को यह जानने में कोई कठिनाई नहीं आती कि आज सूर्य कितने बजे उदय होगा और कल कितने बजे उदय होगा।

जैसे वर्ष में कई बार सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण लगते हैं, उसी प्रकार गगन मंडल में नित्य जो घटना चक्र चल रहे हैं, सभी ग्रह, नक्षत्रों एवं राशियों के ही परिणाम हैं। अतः जन्मकाल में जो राशि रहती है, उसका प्रभाव भी जातक के ऊपर उसी प्रकार पड़ता है, जिस प्रकार पृथ्वी के विभिन्न भागों की स्थिति का प्रभाव वहाँ पहुँचने वाले व्यक्ति के मन मस्तिष्क और शरीर पर पड़ता है।

इसी प्रकार जन्मकाल के ग्रहों और राशियों का प्रभाव शिशु के जीवन पर अनिवार्य रूप से पड़ता है। यदि उस समय सूर्य प्रबल है तो शिशु तेजस्वी एवं प्रभावशाली होता है, और यदि चन्द्र ग्रह की प्रबलता होती है, तो शिशु शांत और कोमल

प्रवृत्ति का होता है। मंगल ग्रह के प्रबल होने पर लड़ाकू, वीर, योद्धा बनता है। इसी प्रकार अन्य ग्रह भी अपने अनुसार करते हैं।

फलित ज्योतिष की भाँति अंक ज्योतिष भी और हस्त रेखा भी भविष्य की घटनाओं को प्रकट करती हैं।

अब रही कर्मफल की बात, मनुष्य को जो भोग भोगने पड़ते हैं, वे सब अपनी सुकृति और दुष्कृति के परिणाम होते हैं। ये परिणाम ग्रहों द्वारा दिए हुए नहीं होते, और न ही ये ग्रहों की पूजा करने से छूट सकते हैं। बल्कि अपने कर्मो के अनुसार भोग अवश्य भोगने पड़ते हैं।

मनुष्य को जो फल मिलते हैं, वे 'प्रारब्ध और क्रियमाण' वर्तमान जीवन में किए गए कर्म, दोनों प्रकार के कर्मो के फल हैं।

ज्योतिष के संबंध में, गुरू ने दीन्हें ज्ञान।
आँखें उससे खुल गई, ज्योतिष विषय महान।।

योग

योग से ज्ञान लाभ होता है। ज्ञान योगी की मुक्ति के पथ में सहायक है। जिनमें योग और ज्ञान दोनों ही वर्तमान हैं, उनसे ईश्वर सदैव प्रसन्न रहते हैं। जो लोग प्रतिदिन एक बार, दो बार या फिर उससे अधिक या फिर पूरे समय योग का अभ्यास करते हैं, उन्हें देवता तुल्य समझना चाहिए। योगाग्नि मनुष्य के पाप- पिंजर को दग्ध कर देती है। तभी आत्म शुद्धि

होती है।

योग के दो प्रकार हैं- अभाव योग, महायोग

अभाव योगः- जब शून्य तथा सब प्रकार के गुण से रहित, रूप से अपना चिंतन किया जाता है, तब उसे अभाव योग कहते हैं।

महायोगः- जिस योग के द्वारा आत्मा का आनंद पूर्ण पवित्र और ब्रह्म के साथ अभिन्न रूप से चिंतन किया जाता है, उसे महायोग कहते है। योगी पुरूष इनमें से प्रत्येक के द्वारा ही आत्म साक्षात्कार कर लेते हैं।

यम, नियम, आसन, प्राणायम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये योग के विभिन्न अंग हैं।

यमः- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाँच यम हैं। यम से चित्त की शुद्धि होती है।

अहिंसाः- शरीर, मन, वचन के द्वारा कभी किसी प्राणी की हिंसा न करना या उन्हें क्लेश न देना अहिंसा कहलाता है।

सत्यः- सत्य में सब कुछ प्रतिष्ठित है।

ब्रह्मचर्य- तन, मन, वचन से सर्वदा सब अवस्थाओं में मैथुन का त्याग ही ब्रह्मचर्य है।

अपरिग्रह- अत्यंत कष्ट के समय में भी किसी मनुष्य से कोई उपहार ग्रहण न करना अपरिग्रह कहलाता है।

निम्नलिखित साधन भी योग में सफलता के लिए सहायक हैं, और वे यह हैं :-

नियमः- अर्थात् नियमित अभ्यास।

स्वाध्यायः- वेदपाठ या दूसरे किसी मन्त्रोचारण को सत्यशुद्धि कर स्वाध्याय कहते हैं।

मन्त्र जपने के तीन नियम हैं- वाचिक, उपांशु, मानसिक

वाचिक जपः- जो जप इतने ऊँचे स्वर से किया जाता है, कि सब लोग सुन सके, वो वाचिक जप है।

उपांशुः- जिस जप में होठों का स्पन्दन मात्र होता है, पर पास रहने वाला कोई व्यक्ति सुन नहीं सकता।

मानस जपः- जिसमें किसी शब्द का उच्चारण नहीं होता, केवल मन ही मन जप किया जाता है, और उसके साथ उस मंत्र का अर्थ भी स्मरण किया जाता है।

व्रतः- व्रत या अन्य उपायों से देह संयम करना शारीरिक तपस्या कहलाता है।

आसनः- वक्षस्थल, ग्रीवा, और सिर को सीधे रखकर शरीर को स्वच्छन्द रीति में रखना।

प्राणायामः- प्राण का अर्थ है- अपने शरीर के भीतर रहने वाली जीवनी शक्ति, और आयाम का अर्थ है- उसका संयम।

प्राणायाम तीन प्रकार के हैं- अधम, मध्यम, उत्तम।

ये तीन भागों में विभक्त हैं- पूरक, कुम्भक, रेचक। जिस प्राणायाम में बारह सेकेण्ड तक वायु का पूरण-भक्षण किया जाता है, उसे अधम प्राणायाम कहते हैं। जिस प्राणायाम में २४ सेकेण्ड तक वायु का पूरण-भक्षण किया जाता है उसे मध्यम प्राणायाम कहते हैं। जिस प्राणायाम में ३६ सेकेण्ड तक वायु का

पूरण किया जाता है उसे उत्तम प्राणायाम कहते हैं। अधम प्राणायाम से पसीना, मध्यम से कम्पन और उत्तम से शरीर का हल्कापन एवं चित्त की प्रसन्नता होती है। शास्त्रों के अनुसार प्रणायाम तीन अंशों में विभक्त है। रेचक अर्थात् श्वास त्याग पूरक अर्थात् श्वास ग्रहण कुम्भक अर्थात् श्वास की स्थिति या श्वास धारण।

प्राणायाम साधना- मनुष्य की समस्त क्रियाओं की प्राण शक्ति है। यह शक्ति जड़ शक्ति से भिन्न एक चेतन शक्ति है, जिसे आत्मिक शक्ति कहते हैं।

प्राणायाम वह क्रिया है जिससे प्राणों की गति को नियमित करके मन को संतुलित नियमित व शान्त किया जा सकता है। प्राणों के नियंत्रण से मन नियंत्रित हो जाता है। प्राणायाम साधना आत्म ज्ञान प्राप्ति की एक स्वतंत्र विधि भी है। जिसके प्रयोग से कई प्रकार की सिद्धियाँ भी प्राप्त होती हैं, तथा प्राणों का निरोध करके योगीजन दीर्घायु प्राप्त कर लेते हैं। हर व्यक्ति को हर प्रकार का प्राणायाम नहीं करना चाहिए, इससे हानि की संभावना रहती है। गुरू के निर्देशन में ही प्राणायाम साधना करना उचित है। किसी भी प्रकार की साधना का मार्ग अज्ञात होता है, जिसकी पूर्ण जानकारी गुरू ही दे सकते हैं। तब कहीं जाकर साधक को पूर्ण सफलता का लाभ मिलता है। प्राणायाम का प्रयोग साधना या ध्यान के लिए ही किया जाना चाहिए। बच्चों के खेल की भाँति प्राणवायु का प्रयोग करना खतरनाक हो सकता है।

प्रत्याहारः- अनुभव शक्तियुक्त इन्द्रियाँ लगातार बहिर्मुखी होकर काम करती हैं। और बाहर के सम्पर्क में आ जाती हैं। उनको अपने वश में लाने को प्रत्याहार कहते हैं। जब तक प्रत्याहार का अभ्यास न हो, तब तक मन को स्थिर कर उसे परमात्मा में लगाना असंभव है। इसलिए प्रत्याहार की साधना करना अत्यंत आवश्यक है।

धारणाः- मन का केन्द्रीकरण है, मन के भटकाव को रोककर एक स्थान पर केन्द्रित करना धारणा है। हृदय कमल में सिर के ठीक मध्य देश में या शरीर के अन्य किसी स्थान में मन को धारण करने का नाम है, धारणा। यमों की साधना से बाह्य शुद्धि होती है, नियमों की साधना से आन्तरिक शुद्धि होती हैं, आसनों के प्रयोग से शरीर पर नियंत्रण होता है। प्रत्याहार से बाह्य जगत की उपेक्षा होती है। इन सबके अभ्यास से धारणा का अभ्यास आसान हो जाता है।

ध्यानः- मन को एक स्थान में संलग्न करके फिर उस एक मात्र स्थान को अवलम्बन स्वरूप मानकर एक विशिष्ट प्रकार के वृत्ति प्रवाह उठाये जाते हैं। दूसरे प्रकार के वृत्ति प्रवाहों से उनको बचाने का प्रयत्न करते-करते वे अपना पहले तो प्रबल आकार धारण कर लेते हैं। फिर ये वृत्तिं प्रवाह कम होते-होते अन्त में बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं। एक वृत्ति शेष रह जाती है, इसे ही ध्यान कहते हैं।

ध्यान साधना से प्रसन्नता का अनुभव, शारीरिक बल की प्राप्ति, बुद्धि की प्रखरता, दिव्य चेतना की अनुभूति आदि लाभ होते हैं।

समाधिः- जब अवलम्बन की भी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती, सम्पूर्ण मन जब एक तरंग के रूप में परिणत हो जाता है, तब मन की इस एक रूपता का नाम है समाधि। समाधि ध्यान की उच्च स्थिति है। जिसमें ध्याता, ध्यान व ध्येय का लोप होकर केवल ध्येय वस्तु (आत्मा का स्वरूप) ही शेष रह जाती है, तथा अपने स्वरूप का अभाव हो जाता है। जिसमें चित्त की वृत्तियों का पूर्ण निरोध हो जाता है, उसे निर्विकल्प समाधि कहते हैं।

गुरूजी की अभिरूचियाँ

विधि के विधान के अनुसार यह सारी सृष्टि त्रिगुणात्मक होने के कारण गुण दोषों से मिश्रित है। इस संसार में हर युग में समय-समय पर महान एवं प्रभावशाली महापुरूष हुए हैं। जो अनेक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों से विभूषित थे। आज के आधुनिक युग में महान मानसिक, आध्यात्मिक नैतिक, बौद्धिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ, सभी गुणों से विभूषित है श्री गुरूजी महन्त चाँदनाथ योगी। श्री गुरूजी एक तपस्वी, साधक, योगी एवं कर्तव्यनिष्ठ समाज सेवी हैं। गुरूजी की दिनचर्या बहुत व्यस्त होती है। अन्य महापुरूषों की भाँति इनकी भी अपनी कुछ अभिरूचियाँ हैं। वे अभिरूचियाँ मात्र दिल बहलाने या समय बिताने के लिए नहीं, अपितु उनके दैनिक कार्य- कलापों से जुड़ी ये अभिरूचियाँ उद्देश्यनिष्ठ, परोपकारी, तथा सत्कर्म के दृष्टिकोण से युक्त हैं। गुरूजी की अभिरूचियाँ कुछ इस प्रकार से हैं-

शिक्षा प्रेमी, भवन निर्माण करवाना, मन्दिर निर्माण करवाना, गो-सेवा, वृक्षारोपण, दीन दुःखियों की सेवा, इत्यादि।

शिक्षा-प्रेमीः- गुरूजी आध्यात्मिक गुरू तो हैं ही, साथ ही शिक्षा के महात्मा के रूप में उनके हृदय में एक शिक्षक गुरू भी विद्यमान है। गुरूजी कहते हैं कि- शिक्षा से ही मानव कल्याण के सभी मार्ग खुलते हैं। शिक्षा से ही मानव आगे बढ़ता है। रूढ़िवाद, अन्धविश्वास से मुक्ति पाता है। विद्यादान को ही गुरूजी ने सर्वोच्च प्राथमिकता दी है, इस प्रकार गुरूजी एक शिक्षा प्रेमी महात्मा हैं।

भवन निर्माणः- श्री बाबा मस्तनाथ मठ में बाबाजी के आशीर्वाद से करनी सदैव चलती रहती है। श्री गुरूजी को भवन निर्माण कला का बहुत अच्छा ज्ञान है। भवन निर्माण के नक्शे इतने अद्वितीय और स्थान के अनुरूप बनाते हैं, कि कोई कुशल अभियन्ता की भी पहुँच के बाहर होता है। गद्दी भवन, धूणा, अतिथिगृह, गऊशाला, भंडारगृह, स्कूल, शिवालय, बद्रीनाथ धर्मशाला, हनुमानगढ़ शिव-मन्दिर, श्री गंगानगर शिवमन्दिर, अपने आप में अनुपम हैं, और ये सब गुरूजी की ही प्रेरणा से बने हैं।

गो-सेवाः- गुरूजी कहते हैं, गाय के रोम-रोम में भगवान बसते हैं। वह कहते हैं, जहाँ गऊ की सेवा होती है, वहाँ साक्षात् भगवान का वास होता है। गाय का दुध अमृत तुल्य एवं बल बुद्धिवर्धक होता है। गोमूत्र और गाय का गोबर भी आयुर्वेद औषधि के काम आता है। सन् १९९८ में गुरूजी ने गायों के लिए

बहुत ही खुबसूरत गऊशाला का निर्माण कराया है, जिसमें लगभग एक ही साथ कई सौ गाय रह सकती हैं।

वृक्षारोपणः- गुरूजी को फलों और फूलों के पेड़ पौधे लगवाने का बहुत शौक है। विद्यालयों, मन्दिरों, कालेजों व खेतों में बहुत ही सुन्दर और भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़ पौधे लगवाये हुए हैं। मठ में भी गुरूजी ने अनगिनत आयुर्वेदिक चिकित्सा से संबंधित पेड़-पौधे लगवाये हुए हैं। आश्रम में फूलदार पौधे व दीवारों से लिपटी हुई लतायें भी आश्रम को सुशोभित करते हैं। वैसे भी वृक्ष और साधु का एक ही स्वभाव होता है- परोपकार।

दीन दुःखियों की सहायताः- गुरूजी दिन दुःखियों के प्रति अपनी विशेष अनुभूति रखते हैं। वे अपने शिष्यों व भक्तों को भी यह समझाते हैं कि जो दीन दुःखियों व बुर्जुगों की सेवा करता है, वास्तव में वही ईश्वर की सच्ची सेवा करता है। दुःखी एवं पीड़ित व्यक्ति को देखकर उनका मन एकदम द्रवित हो उठता है। गुरूजी किसी बीमार को देखते ही उसका इलाज करा देते हैं। गरीब बच्चों को निःशुल्क पढ़ाते हैं। यहाँ तक कि एक बार सर्दी में अपनी गर्म चद्दर तक उतार कर केदारनाथ में एक गरीब व्यक्ति को दे दी। जो ठंड से ठिठुर रहा था। गुरूजी सदैव यही कहते हैं कि मैं श्री बाबा मस्तनाथ जी से यही प्रार्थना करता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति के पास रोटी कपड़ा और मकान होना चाहिए। उनका हृदय इतना कोमल है, कि किसी का दुःख उनसे देखा नहीं जाता। गुरूजी ने बताया कि सेवा करने का स्वाभाव इतना सुन्दर धन है, कि जिसे न शत्रु छीन

सकता है, और न ही कोई चोर चुरा सकता है।

बाढ़ग्रस्त लोगों की सहायता

रोहतक हरियाणा में सन् १९६५ ई. में बहुत ही भयानक बाढ़ आई हुई थी। बाढ़ का पानी ८-१० फूट की ऊँचाई में था। गुरूजी ने बाढ़ग्रस्त लोगों की सहायता के लिए अपनी संस्था में ही श्री बाबा मस्तनाथ नेत्र चिकित्सालय को पूरा खाली कराकर, वहाँ पर बाढ़ से पीड़ित लोगों के रूकने की व्यवस्था की। उन सब लोगों को भोजन, पानी की व्यवस्था भी मठ की ही तरफ से थी। बाढ़ पीड़ित लोगों की संख्या सैकड़ों में थी, और जो लोग अपने-अपने घरों में ही फंस गये थे, हर समय छतों पर बैठकर भोजन का इंतजार करते रहते थे, कि कहीं से प्राण बचाने के लिए थोड़ा सा भोजन मिल जाए। ऐसे समय में गुरूजी ने उन लोगों के लिए भी श्री बाबा मस्तनाथ के अक्षय भंडार से भोजन के पैकेट बनवाये और उन सब लोगों के लिए भिजवाये। मठ में कार्यरत कर्मचारी नाव में बैठकर भोजन वितरित करने के लिए प्रतिदिन जाते थे। महीने बाद जब बाढ़ का पानी कम हुआ तो, सैकड़ों लोग इकट्ठे होकर श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर में आए, और गुरूजी के श्री चरणों में श्रद्धा से प्रणाम किया। साथ ही साथ श्री बाबा मस्तनाथ जी के जयकारें लगाये। हरियाणा सरकार को भी श्री बाबा मस्तनाथ मठ के वर्तमान मठाधीश्वर योगी श्री चाँदनाथ जी को इस प्रशंसनीय कार्य के लिए पुरस्कार से सम्मानित करना चाहिए।

गुरूजी की लंदन यात्रा

लंदन में विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन था। इस सम्मेलन में विभिन्न देशों से साधुगण पधारे हुए थे। भारत वर्ष नाथ सम्प्रदाय की तरफ से गुरूजी को भी वहाँ सम्मिलित होने का सुअवसर मिला। इस धार्मिक सम्मेलन में सभी धर्मो के धर्माचार्यो ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। गुरूजी ने भी नाथ सम्प्रदाय की तरफ से अपने विचारों से हर किसी को प्रभावित किया। यह धार्मिक यात्रा लगभग पन्द्रह दिन की थी।

शिशु शिक्षा एवं श्री गुरूजी

शिक्षा शास्त्री, बालानुरागी, हिन्दु संस्कृति के महाप्राण, भारतीय संस्कृति के स्वाभिमान के रक्षक, गरिमामय व्यक्तित्व वाले, लोकप्रिय जननायक श्री गुरूजी को बच्चों के प्रति विशेष अनुराग हैं। देश का तथा समाज का मंगलमय भविष्य वह बालकों में ही देखते हैं। श्री गुरूजी कहते हैं कि बालक ही राष्ट्र की वाटिका के हँसते हुए प्रसून हैं। वह भारत के बालक बालिकाओं में आत्म विश्वास, त्याग, देश तथा समाज के प्रति दायित्व ग्रहण करने की गंभीरता तथा सफलता प्राप्त करने की आकांशा की भावना कूट-२ भरना चाहते हैं। गुरूजी बच्चों के अन्दर देश की संस्कृति, सभ्यता, तथा पुराने आदर्शो के प्रति आस्था फैलाकर आने वाले समय के लिए सुयोग्य नागरिक बनाना चाहते हैं। कहने से ज्यादा वह करने में विश्वास रखते हैं। उनकी कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं है।

मठ अस्थल बोहर में अन्य कार्यो के अतिरिक्त गुरूजी द्वारा संस्थापित अनेक शिक्षण संस्थायें शैक्षिक अभाव की पूर्ति कर रही हैं। जो गुरूजी के शिक्षा प्रेम तथा बालानुराग की ज्वलन्त प्रतीक हैं।

छात्रों में अनुशासनहीनता से गुरूजी सदैव चिंतित रहते हैं और शिक्षकों तथा अभिभावकों का ध्यान इस और सदैव आकृष्ट किया करते हैं,कि बच्चों को अनुशासित कर उनकी सुप्त प्रतिभाओं को विकसित करके समाज का उतरदायी घटक तथा राष्ट्र का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनाना, शिक्षा पद्धति तथा विद्यालय का उद्देश्य बताते हैं।

गुरूजी कहते हैं कि भारत में शिक्षा की जो भी प्रणाली अपनायी जाए, उसकी मजबूत नींव भारत की संस्कृति पर होनी चाहिए।

शिशु शिक्षा की इन आधार-भूत मान्यताओं को साकार रूप देने के लिए गुरूजी ने सन् १९८७ ई० में श्री बाबा मस्तनाथ रेजिडेन्सियल स्कूल, मठ अस्थल बोहर में, तथा सिविल रोड रोहतक में श्री बाबा मस्तनाथ पब्लिक स्कूल की स्थापना की।

गुरूजी अध्यापकों को भी सदैव यही समझाते हैं कि बच्चों को ममतामय वातावरण में रखकर उनकी बौद्धिक एवं नैतिक प्रतिभाओं को विकसित किया जाये। बच्चों की शिक्षा में गुरूजी इतनी रूचि रखते हैं, कि जब भी वह कहीं यात्रा पर

जाते हैं तो हर जगह बच्चों के स्कूलों में अवश्य जाते हैं।

गुरूजी के अनुसार बच्चों में सही संस्कार बचपन से ही समाविष्ट होने चाहिए। वह कहते हैं, जिस प्रकार कुम्हार कच्चे घड़ों का निर्माण करता है, और उसकी कमियों को ठोक-२ कर दूर करता है तथा उन्हें सुन्दर और सुड़ौल रूप प्रदान करता है। तत्पश्चात् उन पर स्वेच्छा पूर्वक सुन्दर-२ बेल बूटे अंकित करता है, जिसकी छाप उन पर सदैव बनी रहती है। उसी प्रकार शिशुओं की भी हर प्रकार से देखभाल कर उनके अज्ञान तथा अवगुणों को दूर करके उनका भावी जीवन प्रशस्त किया जाना चाहिए।

बच्चों के प्रति गुरूजी का अगाध प्रेम है। वे कहते हैं कि बालकों में विद्यमान शक्तियों को प्रकट करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। बच्चों का सर्वांगीण विकास शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक करना ही शिक्षा की सही मान्यता है। वह कहते हैं कि गुरू ही अपने शिष्यों को ऐसा 'दिव्य चक्षु प्रदान करता है, जिसकी ज्योति कभी नष्ट नहीं होती। गुरू ही वस्तुतः ज्ञान का प्रतीक है।

गुरूजी सदैव बच्चों को प्राचीन गुरूकुलों के इतिहास का स्मरण कराते हैं, क्योंकि भारत की संस्कृति अपनी प्राचीन गौरवमयी परम्परा के लिए विश्वविख्यात है। बाल विकास के लिए शिक्षकों का, अत्यधिक योगदान होता है, क्योंकि आज का विद्यार्थी ही कल के भारत का कर्णधार है। महन्त जी की यह हार्दिक इच्छा है कि बच्चों को विद्यालय में ही रखकर परिवार

स्वरूप वातावरण में सर्वांगीण विकास किया जाए।

पवित्रता के पुंज हैं श्री गुरूजी

गुरू, प्रेम, अरू सुगन्ध का झोंका है। जीवन का सर्वस्व है, जीवन का लक्ष्य, और गुरू ही ईश्वर का प्रतिबिम्ब है। जिसे हम साक्षात् अपनी आँखों से देख सकते हैं, स्पर्श कर सकते हैं। ईश्वर को हम लोगों ने भले ही न देखा हो, परन्तु गुरू के माध्यम से या गुरू में ही हमने ईश्वर को देख लिया है, उनके दर्शन कर लिए हैं।

मानव जिन्हें ईश्वर कहता है, शिव कहता है, ब्रह्म कहता है, क्या वह इस बात से परिचित है?मात्र गुरू ही इन अज्ञात स्वरूपों का ज्ञान मानव को दे सकता है। वह ही उस आत्म तत्व, या शिव तत्व से साक्षात्कार करा सकते हैं क्योंकि गुरू और ईश्वर के बीच एक कड़ी है, जो गुरू के माध्यम से ही हम उस विराट स्वरूप को, जिसे मानव ईश्वर कहता है, ब्रह्म कहता है पहिचान सकते हैं, उसे देख सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं। आज के युग में प्रत्येक मानव हर पल, हर क्षण मानसिक तनाव से पीड़ित दिखाई देता है। इसी मानसिक पीड़ा और तनाव को दूर करने के लिए वह मन्दिरों, मठों व साधु संतों के पास, नहीं तो फिर तीर्थ स्थलों पर भटकता फिरता है। वह भी कुछ क्षण आनंद का अनुभव करने के लिए। ऐसी स्थिति में मानव को किसी योग्य गुरू, योग्य मार्ग-दर्शक की आवश्यकता होती है। जो उसे सन्मार्ग दिखा सके। ऐसी अवस्था में हमारे सामने अपने आप ही एक नाम जो बड़ा पवित्र है, उभर कर

आता है। वह हैं- पूज्य गुरूदेव जी महन्त श्री चाँदनाथ श्री महाराज। जो साक्षात् पावन पुंज है, ज्ञान पुंज हैं और हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। गुरूजी के व्यक्तित्व को कागज़ पर उतारना या लिखना इतना आसान नहीं है, उनका व्यक्तित्व तो अलेखनीय और अवर्णनीय है।

गुरूजी एक ऐसी दिव्य विभूति हैं, जिनके पास बैठने मात्र से ही सारी समस्यायें, सारी चिंतायें अपने आप ही एक-२ करके समाप्त होने लगती हैं। जिनके दर्शन मात्र से ही आनंद का अहसास होने लगता है, जिनके श्री चरणों में शीश रखते ही जीवन के सभी राग-द्वेष स्वयं ही समाप्त होने लगते हैं।

गुरूजी जैसे व्यक्तित्व को जान पाना कोई सहज बात नहीं है। वह तो माता-पिता, भाई-बंधु, सखा-पुत्र एवं प्रेमी आदि अन्य भिन्न-२ स्वरूपों में प्रत्येक शिष्य के साथ हर क्षण विराजमान रहते हैं। जरूरत है तो केवल उन्हें समझने की, पहचानने की। आज के युग में गुरू को पहचानने वाले बहुत कम लोग रह गये हैं। जिनकी बुद्धि पर अज्ञानता का परदा पड़ा हुआ है, वह तो न जाने गुरूओं के विषय में क्या-२ अनाप-शनाप बोलते रहते हैं।

जैसे भगवान राम और श्री कृष्ण को भी लोगों ने नहीं समझा। समाज ने समय रहते उन्हें नहीं पहचाना। धूर्त और अज्ञानी लोग उनकी भी अलोचना करने से नहीं चूके। परन्तु एक बात यह भी सत्य है कि जिसमें कुछ होगा, या जो कोई भी अच्छा कार्य करेगा, लोग उसी को तो कुछ कहेंगे। जो कुछ

काम ही नहीं करेगा, उसको कोई क्या कहेगा? जो लोग अच्छा काम करते हैं, या फिर करना चाहते हैं, और दूसरे लोगों को उसका अच्छा कार्य करना पसंद नहीं होता, तो वे धूर्त लोग उस भले व्यक्ति पर कुछ न कुछ बुरे आरोप लगाने से नहीं चूकते, या फिर चोरी-छुपे दूसरे लोगों को पैसे देकर उस भले व्यक्ति के खिलाफ कुछ भी बुरा करने से नहीं चूकते। किन्तु यह भी सत्य है कि ये सब करने से श्रेष्ठ लोगों की श्रेष्ठता या उनकी उच्चता खत्म नहीं हो जाती। साथ ही साथ श्रेष्ठ पुरूष तो सदैव अपने शुभ कार्यों से जनता का कल्याण करते रहते हैं। अज्ञानी लोग उनको बहुत देर बाद समझ पाते हैं। जब समय बहुत आगे चला गया होता है। जब उनके अज्ञान की काली पट्टी हटती है और उन्हें साफ दिखाई देना शुरू होता है, तो उस समय उनके पास पछताने के सिवाय कुछ नहीं होता। ऐसे लोगों को हाथ में न तो माया आती हैं और न ही राम।

लेकिन, मैनें तो श्री गुरू चरणों में बैठकर उस अनिर्वचनीय आनंद को, खुशी को और उस रोशनी को प्राप्त किया है, जो मुझे अन्यत्र कहीं से प्राप्त नहीं हुई।

गुरूजी का लक्ष्य मानव को ज्ञान से भटकाना नहीं, अपितु उनको सरल भाषा में ज्ञान प्रदान करना है। उनको अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना है।

जब गुरूजी को उपनिषदों, शास्त्रों और पुराणों पर बोलते हुए देखती हूँ, तो लगता है, मानों गुरूजी को उनका एक-२ शब्द कण्ठस्थ हो। यह सब देखकर तो ऐसा लगता है,

कि इतने बड़े ज्ञान के समुद्र को अपने अंदर पूर्व समाहित कर लेना किसी साधारण मानव के बस की बात नहीं है। यह तो किसी अद्वितीय महापुरूष के बस की ही बात है।

गुरूजी की सबसे बड़ी बात तो यह है कि उन्होंने ज्ञान को समाज के प्रत्येक वर्ग से जोड़ने का प्रयास किया है। चाहे वह आयुर्वेद का क्षेत्र हो, शिक्षा का क्षेत्र हो, साधना पद्धति का क्षेत्र हो, या फिर कर्मकांड का क्षेत्र हो।

गुरूजी इतने करूणामयी और उदार हृदय हैं, जो शिष्यों में अपने समस्त ज्ञान का सागर उड़ेल देने के लिए हर क्षण तत्पर रहते हैं।

गुरूजी जैसा व्यक्तित्व बार-२ इस वसुन्धरा पर जन्म नहीं लेता। कई सदियों में एक ऐसा व्यक्तित्व सामने आता है। ऐसे व्यक्तित्व की सामीप्यता प्राप्त करनी ही अपने आप में जीवन का अहोभाग्य है।

बैकुण्ठ दर्शन

श्री गुरूजी ने बताया कि साधु बनने के कुछ ही वर्षों के पश्चात् मैं बहुत सख्त बीमार हो गया। डेढ़ दो महीने तक लगातार ज्वर ने पीछा ही नहीं छोड़ा। उन दिनों मैं हनुमानगढ़ थेहड़ी रहता था। बीमारी की वजह से मन कुछ उचट सा गया था, सोचा कुछ दिन भ्रमण पर जाना ठीक रहेगा। यही सोचकर मैं अपने गुरूभाई चन्द्रनाथ को साथ लेकर सिसाय जिला हिसार

हरियाणा की तरफ चल पड़ा। मैंने अपने गुरूभाई चन्द्रनाथ से कहा, कि अब मेरा बचना मुश्किल है, तुम गुरूजी को खबर देना, कि मेरा शरीर पूरा हो गया है। उस समय भी मेरा शरीर ज्वर से तप रहा था। बोलते-२ ही न जाने मैं कब अचेत हो गया। उसी अचेतनावस्था में मैनें देखा, एक परम पवित्र धार्मिक नगरी को। उस नगरी को देखकर मुझे बहुत आनंद का अनुभव हुआ। उस दिव्य नगरी में मैंने सर्वप्रथम देखा कि वहाँ पर हजारों की संख्या में महात्मागण बैठे हुए जप कर रहे हैं। सभी महात्माओं के मुखमंडल साधना के तेज से चमक रहे थे। मैं कुछ और आगे बढ़ा, वहाँ पर मैनें देखा, बहुत ही लुभावने बाग-बगीचे, दिव्य गंध वाले पुष्पों के वृक्ष, अनेक प्रकार के मधुरतम रसों से पूरित फलों के वृक्ष, कलकल करती हुई स्वच्छ हल्के नीले रंग की नदियाँ, चहचहाते हुए पक्षी, और वहाँ पर बहुत ही दिव्य सुगन्ध वाली वायु चल रही थी। यह सब देखकर मैं बहुत ही आनंदित हुआ। मैं फिर से कुछ आगे बढ़ा, वहाँ पर मैंने देखा श्री रामकृष्ण परमहंस जी को, वे बैठे हुए साधना कर रहे थे। उसके पश्चात् मैंने देखा देवी मीराबाई को, वह चलकर एकदम मेरे निकट आ गयीं, मैंने उनसे कहा- आप देवी मीराबाई हैं न, यह सुनकर वह मुस्कुराने लगी और बोली- हाँ मैं मीराबाई हूँ। फिर मैंने देखा स्वामी दयानंद को। इसी तरह न जाने मैंने कितने ही महापुरूषों के दर्शन किए। मैं चलते-२ बहुत दूर निकल गया, मेरे मन में रह-रहकर केवल एक ही विचार उठ रहा था, कि मुझे अनेको महापुरूषों के दर्शन हुए, किन्तु गुरू गोरक्षनाथ जी और भगवान बुद्ध के दर्शन प्राप्त नहीं

हुए। मैं उन्हें खोजता हुआ बहुत आगे पहुँच चुका था। वहाँ पर मैंने एक ऐसी जगह देखी, बहुत ही विशाल और आकर्षक भवन था वहाँ, मैं उस दिव्य भवन में प्रवेश करने लगा, लेकिन द्वार पर उपस्थित कुछ लोगों ने मुझे रोक दिया। वे कहने लगे- अभी ठहरो। ये बैकुण्ठ धाम है। यहाँ प्रवेश करना वर्जित है। लेकिन मैं दूर खड़ा-खड़ा देख रहा था कि सामने भगवान विष्णु बैठे हैं, और उनकी गोद में भक्त प्रहलाद बैठा हुआ है। उस बैकुण्ठ धाम में लगी हुई ईटें, पत्थर और वहाँ की मिट्टि सभी अलौकिक थे। वहाँ का प्रकाश सूर्य की रोशनी से भिन्न था। स्वर्ण और रजत रंग के प्रकाश से वह नगर दैदीप्यान था। वहाँ पर न तो गर्मी थी और न ही सर्दी थी। वहाँ के वृक्षों के सब पत्ते हरे थे, जो नीचे गिरे हुए थे, वे भी मुरझाये हुए नहीं थे। इस लोक के सभी व्यक्ति प्रसन्न थे। सभी वहाँ पर तरूणावस्था के थे। सबमें विशेष प्रकार की कान्ति थी। वे सबके सब तेजोमय प्रसन्नचित और पुष्ट थे। कम से कम पौने घंटे बाद मेरी चेतना वापस लौटी, मैंने देखा मेरा गुरूभाई चन्द्रनाथ मेरे पास बैठा हुआ फूट-२ कर रो रहा था। लेकिन मेरे सामने तो अभी भी वही दिव्य नगरी थी। मैंने पुनः अपने नेत्र बंद कर लिए, नेत्र बंद करते ही, वे ही दिव्य दृश्य सामने आ गये।

मैं कुछ देर के बाद उठा और बैठकर जो-२ मैंने देखा था, उसी का मनन करने लगा। जिससे कि वह दिव्य नगरी मुझे पूर्ण रूप से स्मरण रहे।

सिद्ध महात्मा से साक्षात्कार

श्री गुरूजी ने बताया कि मुझे उस समय साधु बने हुए मात्र एक वर्ष ही हुआ था। गुरू आज्ञा लेकर मैं अपने गुरूभाई चन्द्रनाथ के साथ हरिद्वार भ्रमण के लिए जा पहुँचा। वहाँ पर हम दोनों कई दिन ठहरें। प्रतिदिन कई किलोमीटर भ्रमण करने के पश्चात् हम दोनों हर की पौड़ी पर आकर बैठ जाते थे।

एक दिन हम दोनों रोज की भाँति हर की पौड़ी पर आकर बैठे ही थे कि अचानक- हमारे पास एक रहस्यमय युवा पुरूष आकर बैठ गया। उसने श्वेत वस्त्र धारण किये हुए थे, मुख पर तेज था। कुछ ही देर के पश्चात् वह युवा पुरूष हम दोनों से कुछ-२ प्रश्न करने लगे और कहने लगे कि- बाबा कुछ बताइये। गुरूजी ने कहा- हमें कुछ नहीं पता, हम दोनों तो अभी नये-२ ही साधु बने हैं। वह युवा पुरूष बार-२ कहते रहे, कुछ तो पता ही होगा, साधु हो। गुरूजी ने कहा- आपसे एक बार बोल दिया न, कि हमें कुछ नहीं पता, फिर बार-२ क्यों पूछ रहे हो। गुरूजी ने बताया कि हम दोनों उससे बुरी तरह चिढ़ गए। हमने उनसे कहा कि आप यहाँ से चले जाओ और हमारा दिमाग मत खाओ।

इतना सुनने के पश्चात् भी उन महापुरूष को तनिक भी क्रोध नहीं आया। वह हम दोनों से कहने लगे- कोई बात नहीं, मैं ही तुम्हें एक छोटा सा मंत्र का चमत्कार दिखाता हूँ। वह हम दोनों से बोले देखो, मैं मंत्र से मरी हुई चीटी को जिंदा कर

सकता हूँ।

हम दोनों ने मजाक समझकर कहा- दिखाइये चींटी को जिंदा करके। युवा पुरूष ने कहा- चींटी को अपने हाथ से उठाओ, और इसे अपने हाथ से चाहे जितनी भी मसल दो। गुरूजी ने चींटी को बुरी तरह अपने हाथ से मसल दिया। उन महापुरूष ने कुछ मंत्र बोला और वह मरी हुई चींटी झट से चलने लगी। उन्होंने हम दोनों से कहा बताओ, तुम्हें भी यह मंत्र सीखना है क्या?हमने कहा, हमें नहीं सीखना।

कुछ ही देर बाद गुरूजी के मन में विचार आया कि मैं इस मंत्र को सीख लेता हूँ। गुरूजी ने पीछे मुड़कर जैसे ही देखा, वह युवा महापुरूष देखते ही देखते मेरे सामने ही वहीं अन्तर्ध्यान हो गये।

गुरूजी अभी बताते हैं कि वह युवा पुरूष कोई साधारण मानव नहीं थे, वह तो कोई दिव्य, चमत्कारी सिद्ध महापुरूष थे।

विश्व कल्याण के लिए किए गए अनुष्ठान

श्री गुरूजी ने विश्व कल्याण के लिए अनेक बार अनुष्ठान किये है। एक दिन मैंने गुरूजी से धार्मिक चर्चा के अंतर्गत जिज्ञासा प्रकट की, कि गुरूजी आपने विश्व कल्याण के लिए कौन-कौन से अनुष्ठान किये हैं।

गुरूजी ने मेरी जिज्ञासा को समझते हुए कहा- मैंने श्री गणेश जी अनुष्ठान, भगवान श्री राम अनुष्ठान, माँ पार्वती

अनुष्ठान, भगवान श्री भैरव अनुष्ठान, श्री शिव अनुष्ठान, श्री हनुमान जी अनुष्ठान, देवी बगुलामुखी अनुष्ठान इत्यादि। आगे श्री गुरूजी ने बताया कि महात्मा तो समय-२ पर विश्व कल्याण हेतु अनुष्ठान करते ही रहते हैं।

श्री गुरूजी की कुछ पहाड़ी यात्रायें

श्री गुरूजी ने अनेक बार उत्तराखंड और हिमाचल की यात्रायें की हैं। ये यात्रायें उन्होंने कभी संतों के साथ तो कभी भक्तों के साथ की हैं। हरिद्वार से लेकर बद्रिनारायण तक की यात्रा पर्वत मालाओं से युक्त हैं। ऐसा प्रतीत होता है, कि प्रकृति देवी ने दुग्ध-धवल और हरित परिधान पहना हो। यात्रा में चारों और नेत्रों को हरित और बेदाग चादर देखने को मिलती है। मार्ग में हर तरफ परम शान्ति का साम्राज्य है।

गुरूजी को प्रकृति से बहुत प्रेम है, इसलिए पहाड़ी यात्राओं पर वे अक्सर जाते ही रहते हैं। प्राकृतिक सुन्दरता उन्हें बहुत भाति है। अपनी इसी रूचि से प्रेरित होकर गुरूजी ने ये हिम यात्रायें की हैं, और करते रहते हैं। चाहे कितनी भी कठिन चढ़ाई क्यों न हो, गुरूजी घोड़े वाले से शर्त लगाकर उससे पहले ही ऊपर चढ़ जाते हैं। यात्रा में गुरूजी अपने साथ एक छतरी भी अवश्य रखते हैं। क्योंकि गुरूजी कहते हैं कि पहाड़ों में बरसात का कोई भरोसा नहीं होता। केदारनाथ यात्रा तो गुरूजी ने अब तक तेरह बार तो कर ली है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बिना पूर्व जन्म के संस्कार और बिना दैवी प्रेरणा

के यह सब संभव नहीं।

यात्रा में नित्य प्रति नये-२ स्थानों पर जाकर गुरूजी प्राकृतिक सुन्दरता को निहारते ही रहते हैं। ऊँचे-२ पहाड़ों को पार करते हुए कहीं भी किसी मन्दिर का पता चल जाए, गुरूजी दर्शन के लिए वहीं पहुँच जाते हैं।

तुंगनाथ मन्दिर

केदारनाथ से बद्रिनाथ जाते समय मार्ग में चौपटा नामक जगह आती है। वहीं से तुंगनाथ मन्दिर की चढ़ाई शुरू होती है। यह मन्दिर अत्यंत प्राचीन एवं विशाल है। कहते हैं, यहाँ अर्जुन ने भगवान शिव की तपस्या की थी। यह मन्दिर लगभग छः हजार साल पुराना है। यहाँ की चढ़ाई कठिन होते हुए भी अति मन-भावन है। मार्ग में चारों और गहरी खाइयाँ और सुन्दर घाटियों के साथ ऊँची-२ पर्वत मालायें हैं। पर्वत की चोटियाँ बर्फ से ढकी हुई हैं। आसपास मार्ग में अनेक जड़ी बूटियाँ देखने को मिलती हैं। गुरूजी आयुर्वेद के ज्ञाता हैं, इसलिए इन जड़ी बूटियों को निहारते चलते हैं। साथ ही साथ भक्तों को भी जड़ी बूटियों के विषय में समझाते जाते हैं, कि ये कौन सी जड़ी है और कौन सी औषधि इससे बनती है।

बद्रिकाश्रम

तुंगनाथ महादेव दर्शन करने के पश्चात् बद्रिनारायण को चलते हैं। चौपटा पार करने के पश्चात् गुरूजी अपने

काफिले के साथ पहाड़ों, जंगलों में खिले हुए फूलों की गंध और सौन्दर्य का आनंद लेते हुए, विभिन्न प्रजातियों के वन पक्षियों के कलरव से मुग्ध होते हुए, तथा पहाड़ों में बसने वाले छोटे-२ गाँवों और कस्बों के रमणीक दृश्यों को देखते हुए एक के बाद एक पहाड़ को पार को करते हुए बद्रिनारायण पहुँच जाते हैं।

गुरूजी ने भक्तों को बताया कि बद्रिनारायण कलियुग का बैकुण्ठ धाम है। यहाँ पर महर्षि वेदव्यास ने तपस्या की थी। यहीं पर भगवान श्री विष्णु जी साक्षात् विराजमान हैं। यहाँ असीम शान्ति की अनुभूति होती है।

श्री बद्रिनारायण में गुरूजी ने श्री बाबा मस्तनाथ जी के नाम से एक विशाल एवं भव्य धर्मशाला का निर्माण कराया है। पूरे वर्ष यहाँ भंडारा चलता है, समय-२ पर संत-महात्माओं को कम्बल भी वितरित किये जाते हैं। पूरे वर्ष जितने भी बद्रीनाथ में संत-महात्मा हैं उनको गुरूजी की तरफ से चायपत्ती और चीनी वितरित की जाती है। यह धर्मशाला बद्रिनारायण मन्दिर एवं नये बस स्टैण्ड के समीप है।

इस धर्मशाला में श्री बाबा राकेशनाथ जी सारा कार्यभार संभालते हैं। श्री बद्रिनारायण मन्दिर के कपाट बंद होने के पश्चात् श्री बाबा राकेशनाथ जी मठ अस्थल बोहर आकर श्री गुरूजी के काम में हाथ बँटाते हैं।

जड़ी बूटियों पर चर्चा

श्री गुरूजी के साथ कई बार हमें भी बद्रिनारायण जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ पर श्री गुरूजी हमें एक ऐसे स्थान पर लेकर गये, जहाँ पर एक बहुत ही सिद्ध महात्मा रहते थे। पहाड़ में एक गुफा बनी हुई थी, गुरूजी ने गुफा में प्रवेश किया, पीछे-२ हम लोग भी गुफा में पहुँच गये। गुफा में पहुँचते ही एक महात्मा ने गुरूजी का स्वागत किया और आसन पर बैठाया। गुफा में एक तरफ साधना करने का स्थान था, दूसरी तरफ छोटी सी रसोई बनी हुई थी। उस समय हमें बहुत तेज भूख लगी हुई थी, लेकिन खाने-पीने का कुछ सामान न देखकर हम चुप ही रहे। थोड़ी ही देर के पश्चात् सिद्ध महात्मा जी, गुरूजी और हम सबके लिए चाय लेकर आ गये। ऐसी अद्‌भुत चाय तो हम लोगों ने न तो कभी देखी थी, न सुनी थी, पीने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। कुछ ही देर के पश्चात् उन्होंने गुरूजी को बताया कि, यह चाय जड़ी बूटियों की थी। पहाड़ों में ऐसी-२ जड़ी बूटियाँ होती हैं, जिनके खाने से न तो बहुत दिनों तक भूख लगती है और न ही सर्दी लगती है। अक्टूबर महीने में वहाँ बहुत सर्दी होती है, हम सबने दो-२ स्वेटर और शाल पहनी थी, लेकिन उन महात्मा जी ने अपने शरीर पर केवल एक पतला कपड़ा ही लपेटा हुआ था। हम सबने पूछा बाबा क्या आपको सर्दी नहीं लग रही? हमारा प्रश्न सुनकर वह मुस्कुराने लगे, कहने लगे, यह जड़ी बूटियों का चमत्कार है। महात्मा जी ने गुरूजी को और भी न जाने कितनी ही जड़ी बूटियों की

जानकारी दी, और दोबारा आने का भी गुरूजी को आमंत्रण दिया।

द्वारिका धाम यात्रा

द्वारिका धाम यात्रा भी श्री गुरूजी ने कई बार की है। गुरूजी ने बताया कि इस क्षेत्र में भगवान श्री कृष्ण ने न जाने कितनी ही लीलायें दिखाई हैं। हमारे देश में कहीं भी ऐसा योग ऐश्वर्य देखने को नहीं मिलता, जितना द्वारिका में मिलता है। यह भगवान श्री कृष्ण का क्षेत्र है। यही पर आद्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित शारदा पीठ भी है। यहाँ पर प्रत्येक जीव के अंदर भगवान का प्रकाश देखने को मिलता है।

जगन्नाथ पुरी यात्रा

पुरी यात्रा भी गुरूजी ने कई बार की है। पुरी चारों धामों में से एक धाम है। यहाँ पर सरिताओं के स्वामी समुद्र भी हैं। पुराणों में समुद्र स्नान को उत्तम बताया है। जिस प्रकार सूर्य उदय होने पर अंधकार का नाश होता है, उसी प्रकार समुद्र में स्नान करने से सब पापों का क्षय हो जाता हैं। यह भगवान जगन्नाथ, देवी सुभद्रा और बलराम जी का निवास स्थान है। भोग (प्रसाद) की जो व्यवस्था यहाँ है वह किसी अन्य स्थान पर नहीं है। यह भोग व्यवस्था यहाँ अतीत काल से चली आ रही है। भगवान जगन्नाथ जी के वैद्य गुरू गोरक्षनाथ जी हैं।

तारापीठ साधना

कलकत्ता में रहकर कुछ समय तक गुरूजी ने तंत्र साधना भी की है।

श्री गुरूजी ने बारह ज्योर्तिलिंग, इक्यावन सिद्ध पीठों में से अधिकतर सिद्ध पीठों के दर्शन, तिरूपति, बालाजी, नेपाल में पशुपति, अमरनाथ तथा और भी धार्मिक यात्रायें की हैं।

जब फिलिपिन्स के राजदूत श्री गुरूजी के प्रति आकर्षित हुए

कई वर्ष पहले की बात है, महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी में वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा था। उत्सव में गुरूजी भी आमंत्रित थे। मुख्य अतिथि के लिए पधारे हुए थे फिलिपिन्स के राजदूत। उनके साथ और भी अनेक लोग आये हुए थे। गुरूजी एवं मुख्य अतिथि एक ही साथ बैठे हुए थे। पूरे वक्त दोनों ध ार्मिक चर्चा करने में ही व्यस्त रहे। फिलिपिन्स राजदूत गुरूजी से बहुत प्रभावित हुए। उत्सव समाप्त होने का आभास उन्हें उस समय हुआ, जब राजदूत महोदय को भाषण के लिए स्टेज पर बुलाया गया। भाषण समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने गुरूजी को श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर देखने की इच्छा जताई। गुरूजी ने उनकी इच्छा को स्वीकार किया और कहा कि आप सब लोग मन्दिर में अवश्य पधारिये।

श्री गुरूजी महन्त चाँद नाथ योगी फिलिपिन्स राजदूत
के साथ प्रसन्न मुद्रा में बैठे हुये

सायं पाँच बजे राजदूत महोदय अपने सभी साथियों के साथ मन्दिर में पधारे।

श्री गुरूजी ने एवं उनकी शिष्य मंडली ने उनका हिन्दुस्तानी एवं अपनी साधु परंपरा से स्वागत किया। गुरूजी ने उनको एक-२ रूद्राक्ष की माला भी भेंट में दी, साथ-२ ही रूद्राक्ष के महत्व को भी समझाया। राजदूत महोदय अति प्रसन्न हुए, कुछ देर तक बातों का सिलसिला चलता रहा, फिर चाय नाश्ता दिया गया। सब लोगों ने भरपूर आनंद उठाया।

ठीक साढ़े सात बजे सन्ध्या वन्दन शुरू हुआ। गुरूजी के साथ फिलिपिन्स राजदूत एवं उनके साथ आये हुए सभी सदस्यगण मन्दिर में पूजा आरती देखने लगे। इतनी विधि-विधान से पूजा आरती देखकर वह सबके सब दंग रह गये। पूजा के पश्चात् हमेशा की ही भाँति पहले साधुओं ने, फिर उपस्थित भक्तों ने गुरूजी को आदेश प्रणाम किया। यह सब देखने के पश्चात् उन्होंने भी गुरूजी के चरण स्पर्श किए। गुरूजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। समय काफी हो चुका था, उन्होंने गुरूजी से जाने की आज्ञा माँगी, फिर सबने गुरूजी के साथ अपनी-२ फोटो खिचवाई। फिलिपिन्स राजदूत ने गुरूजी को फिलिपिन्स आने के लिए निमंत्रण भी दिया।

महान महात्मा महन्त चाँदनाथ जी महाराज

परम पूज्य गुरूजी से मेरा सम्पर्क लगभग इक्कीस वर्षों से है। इन वर्षों में बहुधा मुझे उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनकी कर्मठता, त्याग, बुद्धिमता, निर्भिकता की मेरे हृदय पर एक गहरी छाप पड़ी है। श्री गुरूजी एक उच्च कोटि के महात्मा है। उनकी कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं है।

कहते हैं महात्मा को जान जाय तो महात्मा बन जाय। संत महात्मा भगवान की कृपा से मिलते हैं। साधुओं की जितनी भी महिमा कही जाएं उतनी ही थोड़ी है। संसार में महात्मा बहुत कम हैं, हैं तो मिलना मुश्किल, भेंट हो जाय तो पहचानना मुश्किल। महात्मा गुरू के लक्षण होते हैं, जिनके दर्शन, स्पर्श, स्मरण, वार्तालाप से ईश्वर की स्मृति, सद्‌गुण, सदाचार की वृद्धि हो, वे ही साधु कहलाते हैं।

साधु-महात्मा के संग से झूठ, चोरी, व्यभिचार- ये दुर्गुण दूर हो जाते हैं। महात्मा के दर्शन से नेत्र पवित्र हो जाते है। उनके दर्शन हो जाय तो हृदय पवित्र हो जाते है। मन में उनकी स्मृति हो तो मन पवित्र हो जाता है। संतो के संग से अपने दोष भाग जाते हैं। शास्त्रों की मर्यादा के अनुसार- अपने से यदि कोई दोष हो जाय, तो उसका प्रचार कर दें; प्रायश्चित हो जाता है, दोष कम हो जाते हैं। ईश्वर और महात्मा के सामने अपने अपराध का प्रचार करे तो प्रायश्चित हो जाता है। ईश्वर और गुरू के सामने झूठी सफाई न दे, उनके आगे साफ कह

दे, कि अपराध हो गया। महात्मा परमात्मा को प्राप्त किये हुए पुरूष होते हैं, अतएव ईश्वर के आगे कहना और उनके आगे कहना समान ही है।

श्री गुरूजी के लिए कुछ अज्ञानी लोग तो यह कहते हैं कि ये तो एक विरक्त संन्यासी हैं, इनका तो एकमात्र कार्य केवल एकांत साधना और भगवान का भजन होना चाहिए। शिक्षण संस्थाओं का निर्माण, निर्वाचन में भाग लेना आदि तो ऐसे कार्य हैं, जिनकी भ्रमवश लोग आलोचना करते हैं परन्तु यदि हम सब गंभीरता पूर्वक विचार करें और भारत के प्राचीन इतिहास पर दृष्टि डाले तो शायद हमें यह ज्ञात हो जायेगा, कि इस देश का निर्माण साधु-संत, महात्माओं एवं ऋषि-मुनियों द्वारा ही हुआ है। प्राचीन काल से ही साधु-महात्मा हमारे सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सार्वजनिक जीवन को उत्साहित एवं अनुप्रमाणित करते आयें हैं। चाहे वह साहित्य सृजन का कार्य हो, चाहे आश्रम या मठ संबंधी कार्य हो, चाहे शिक्षा का कार्य हो, या फिर चिकित्सा तंत्र में अनुसन्धानात्मक कार्य हो, सभी क्षेत्रों में ही हम ऋषि-मुनियों एवं संत-महात्माओं को ही अग्रणी पाते हैं।

यहीं नहीं, समय-२ पर उन्होंने राज्य सत्ता पर भी नियंत्रण किया है। अत्याचारी एवं अन्यायी राजाओं को पद्च्युत करने एवं सुयोग्य, लोकप्रिय भू-पतियों को राजतिलक प्रदान करने में भी वे सदा अग्रणी रहे हैं। भारत के सभी दर्शनों के वे ही निर्माता रहे हैं। युद्ध क्षेत्र में भी अनेक संत महात्माओं ने

प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भाग लिया है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जो साधु-महात्माओं से अछुता रहा हो।

परम पूज्य गुरूजी एक उच्च कोटि के महात्मा हैं। इनका आविर्भाव धर्म एवं समाज के कल्याण के लिए ही हुआ है। वास्तव में श्री गुरूजी कर्म के सच्चे पुजारी हैं। गुरूजी सदैव यही कहते हैं, कि कर्म के बिना शरीर यात्रा संभव नहीं मनुष्य मात्र को कर्म करना पड़ता है। कर्म करना ही मानव का स्वभाव है। मानव की सत्ता का प्रधान उपादान ही कर्म है। उसकी भीतरी और बाहरी प्रकृति उसे बलपूर्वक कर्म करने में लगाती रहती है।

पूज्य गुरूजी अपने गुरूदेव की ही भाँति एक सच्चे कर्मयोगी हैं। निष्काम भाव से जनता की सेवा के लिए ही उनका जीवन समर्पित है। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया है वह इसका जीता जागता उदाहरण है। श्री गुरूजी का प्रत्येक कार्य यज्ञीय है। अब तक जितने भी लोग गुरूजी के सम्पर्क में आये हैं, वे परम सौभाग्यशाली हैं, और धन्य है। गुरूजी वह पारस हैं जो इनकी शरण में आया वही स्वर्णमय हो गया।

श्री गुरू की महानता

अगर हम ईश्वर से साक्षात्कार करना चाहते हैं, तो वह केवल हमें गुरू ही करा सकते हैं। जब तक गुरू की कृपा से हमारी अन्तः शक्ति नहीं जागती, तब तक अन्तः ज्योति प्रकाशित हो

ही नहीं सकती। अन्तः शक्ति जगाने के लिए हमें मार्ग दर्शक की आवश्यकता होती है। जैसे प्राण बिना जीना संभव नहीं, उसी तरह गुरू बिना ज्ञान संभव नहीं। जीवन को सार्थक बनाने के लिए ज्ञान रत्नों की आवश्यकता होती है, और वे ज्ञान रत्न हमें गुरू से ही प्राप्त होते हैं। गुरू के बिना शक्ति का विकास नहीं होता, अंधकार का नाश नहीं होता।

गुरू की महिमा अति रहस्यमय और दिव्य होती है। गुरू ही मानव को नवजीवन प्रदान करते हैं। साधना सिखाकर शिष्य को ईशानुरागी बनाते हैं। गुरू माता हैं, पिता हैं, और सबके पूजनीय हैं।

पूज्य गुरूजी एक महान और सिद्ध योगी हैं। ऐसे गुरू को साधारण जड़बुद्धि वाले नहीं समझ सकते। गुरूजी सर्वज्ञ होते हुए भी अनजान जैसी स्थिति में रहते हैं। गुरूजी के पास अनेकों सिद्धियाँ हैं, उनको न जताने पर भी वे अपने आप ही क्रियाशील हो जाती है। जहाँ सिद्धियाँ हैं, ऋद्धियाँ भी वहीं अपना निवास बना लेती हैं।

ऐसे सिद्ध योगियों को पाकर धरती माँ भी अपने को सनाथ समझती है। गुरू सत्य है, परम हितैषी है और कल्याणकारी है। वह शिष्य के धन को नहीं अपितु उसके अज्ञान का हरण करता है। गुरू शिष्य से किसी द्रव्य की आकांक्षा नहीं करता बल्कि उसकी चिंता और पाप का हरण करता है।

श्री गुरूजी महाराज एक कृपालु एवं महान योगी हैं,

दर्शनार्थी उनको साधारण समझदार परित्याग न करे। गुरू की महानता तो तब समझ में आती है, जब हम पर गुरूदेव की पूर्ण कृपा होती है।

श्री गुरू ध्यान

जन्म-जन्मान्तर के पुण्यों के परिणाम स्वरूप ही हमें गुरू की चरण शरण मिलती है।अपने इष्टदेव के प्रति एकाग्र युक्त ध्यान का महान स्थान है, परन्तु पूज्य गुरूदेव ने भी हमारे अन्तःकरण की शक्ति को जगाया है। गुरूजी कहते है, मनुष्य जिस का भी ध्यान करता है, उसी के अनुरूप बन जाता है। ध्यान के विषय में गुरूजी ने बताया- मेरे पास आकर सभी गृहस्थी लोग यही कहते हैं कि- बाबाजी हम ध्यान लगाने का प्रयास तो करते हैं, लेकिन बैठते ही कुछ कुछ बातें सामने आ जाती हैं। आफिस, घर, बाल बच्चे, रिश्तेदार क्या करें? यानि बिल्कुल भी नहीं लगता, बड़े परेशानी में हैं।

गुरूजी ने कहा- अरे! तुम तो बड़े ध्यानी हो, तुम्हारा तो बड़ा ही अच्छा ध्यान लगता है। तुम्हारे बाल-बच्चे, घर, आफिस का ही जगह, हर समय ध्यान आना, ये ध्यान ही तो है, फिर तुम लोग इसे ध्यान क्यों नहीं समझते?

देखो ! हमारी भी ऐसी ही स्थिति है। हमने अपने गुरूदेव का ध्यान किया, उनकी बतायी हुई साधना की और उनसे प्रेम किया, पूज्य गुरूदेव के श्री चरणों को हृदय में धारण किया। अब यह स्थिति है कि बारम्बार गुरूदेव का जाप मन में उठता है। स्वप्न में भी गुरू दर्शन होते हैं, मुख से बार-बार यही

निकलता है कि- हे गुरूदेव! आपसे सदैव यही प्रार्थना है कि सारा संसार सुखी रहे, सबकी अहंकार की भावना खत्म हो जाए, और सब ज्ञान की ओर अग्रसर हो जाए।

गुरूजी ने बताया- मन की वृत्तियों के स्वच्छ प्रवाह के बिना मोक्ष की प्राप्ति और दु:ख की निवृत्ति नहीं हो सकती। मन को जीते बिना मानव के सभी काम निष्फल हैं। इसलिए मन को सबसे पहले काबू में करने की आवश्यकता है,तभी ध्यान साधना संभव है।

श्री बाबा मस्तनाथ जी के प्रत्यक्ष दर्शन

बात बहुत पुरानी है, एक दिन अचानक ही न जाने मुझे क्या हो गया। उस समय रात के साढ़े ग्यारह बजे थे। मैं सोचने लगा कि मैंने तो कभी भी श्री बाबा मस्तनाथ जी के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं किये। मन में विचार आया कि यदि बाबाजी की समाधि इतनी चेतन है, और लोग कहते हैं कि बाबाजी यहाँ साक्षात् विराजमान हैं, तो उन्होंने आज तक मुझे दर्शन क्यों नहीं दिये। ये बात मेरे महन्त पद पर आसीन होने से भी बहुत पहले की है।

उस दिन मैं हनुमानगढ़ से मठ अस्थन बोहर आया हुआ था। गुरूजी ने मुझे किसी कार्य से बुलाया था। उस समय मैं अपने विश्राम कक्ष में अकेला था। कुछ घंटे ध्यान करने के पश्चात् मैं अपने बिस्तर पर लेट गया। मेरा विश्राम कक्ष बाबाजी की समाधि के निकट ही था।

रात के सवा दो बजे का समय होगा, मेरे कक्ष का द्वार स्वयं ही खुल गया। आवाज से मेरी आँखें खुल गई। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि किन्हीं अज्ञात हाथों ने दरवाजा खोला हो। दरवाजे के खुलते ही मेरे सामने काला कम्बल लपेटे हुए एक महान तेजस्वी महात्मा खड़े थे। उनके अंग-प्रत्यंग से तेज फूट-२ कर निकल रहा था। मैं महात्मा जी को देखकर भौंचक्का रह गया। मेरा रोम-रोम सिहर उठा और मैं बुरी तरह से घबरा गया।

यह सब क्या था, मैं जाग रहा था या सो रहा था, उस समय मुझे कुछ भी मालूम नहीं। वह तेजस्वी महात्मा मुझसे कहने लगे कि- अभी और कुछ भी देखना है क्या?

मैं घबराकर उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। महात्मा जी से कहने लगा, मुझे क्षमा कर दीजिए, मुझे क्षमा कर दीजिए अब और कुछ देखने की इच्छा नहीं है। कुछ देर के बाद मैं बिल्कुल चेतन अवस्था में था। वह दिव्य तेजस्वी महात्मा मेरे कक्ष से बाहर चले गये। मैं खड़ा हो गया, मैंने खिड़की से बाहर झाँककर देखा, मेरे देखते ही देखते वह महान तेजस्वी महात्मा श्री बाबा मस्तनाथ जी की समाधि मन्दिर में प्रवेश कर गये।

मैंने द्वार की तरफ देखा, वह अच्छी तरह बंद था। अन्दर से ज्यों की त्यों चिटकनी लगी हुई थी। उसके बाद मुझे नींद नहीं आई, मैं बाबाजीके विषय में ही सोचता रहा। सोचते-२ न जाने फिर मेरा ध्यान कब लग गया।

श्री गुरूजी द्वारा दिये गए कुछ मंगल उपदेश

श्री गुरूजी ने अपनी अमृतमयी वाणी में बताया कि- मानव आत्मा ही एक ऐसी है, जो सदैव ज्ञान की ओर अग्रसर रहती है। आत्मा का एकमात्र भोजन ज्ञान ही है। यदि मानव, आत्मा के मूल- निर्देश और संकेत को समझने का प्रयत्न करे, तो जीवन अपने आप ही सही दिशा में बढ़ता चला जायेगा, और हम सही मार्ग पर चलते जायेंगें। परम सत्य तो ये है कि आत्मा की सारी प्रक्रियाऐं ही हमारे जीवन निर्माण के लिए हैं। हमें पशु से मनुष्य बनाने के लिए हैं। मनुष्य जन्म लेने के बाद जीवन का अर्थ है- देवत्व लाभ अर्थात् परमात्मा के दर्शन।

मानव जन्म लेने के पश्चात् जिसने भी आत्मा को समझा, उसके संकेत को समझा, वास्तव में तो उसी के जीवन का सच्चे अर्थों में निर्माण हुआ है।

आत्मा 'सत्य' है और परमात्मा है 'परम सत्य'। मानव दुःखी क्यों होता है? वह दुःखी इसलिए होता है, कि वह न तो सत्य से परिचित है और न ही परिचित है परम सत्य से। 'सत्य तो जीवन जगत और आत्मा परमात्मा का प्राण है उसका साक्षात्कार है। सत्य की खोज नहीं की जाती। खोज सदैव उस वस्तु की जाती है, जो वस्तु असत्य होती है। सत्य के लिए खोज शब्द व्यर्थ है। खोज तो उस वस्तु की जाती है जो हमारे पास नहीं होती या फिर जिसकी हमें आवश्यकता होती है।

आत्मा क्या है?आत्मा अस्तित्व है और सत्य के रूप में

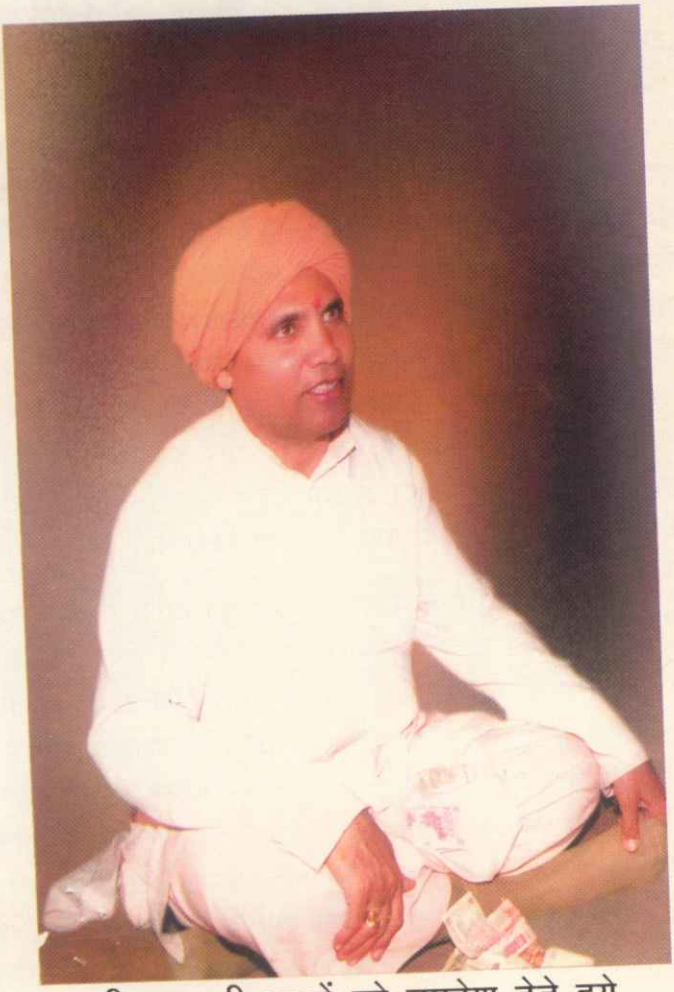

श्री गुरू जी भक्तों को उपदेश देते हुये

प्रतिष्ठित है, वहाँ है आत्मा जहाँ पर शून्य है। वही आत्म शक्ति का केन्द्र है। आत्मा सत्य है, और उस सत्य की शक्ति प्रकृति के रूप में संपूर्ण विश्व में फैली हुई है।

सत्य को पाना एक तप है, श्रम है। इसके विपरीत हमें असत्य के लिए किसी त्याग या श्रम की आवश्यकता नहीं होती। सत्य को समझने के लिए उसको जानने के लिए सर्वप्रथम हमें जीवन के तथ्यों को जानना पड़ेगा। जो मनुष्य अपने जीवन के तथ्यों को नहीं जानता, वह सत्य को कैसे जान पायेगा। सत्य के तथ्य चाहे कितने ही कड़वे, तीखे या चुभने वाले हों, उन्हें जान लेना अत्यंत आवश्यक है। इसके विपरीत असत्य की कल्पनायें कितनी भी सुखद और मधुर क्यों न हो?वे मात्र कल्पनायें ही रहती हैं। असत्य सदैव असत्य रहता है। उस पर चढ़कर कोई भी प्राणी मात्र सत्य की यात्रा नहीं कर सकता।

आधुनिक युग के वैज्ञानिक सत्य की खोज में लगे रहते हैं, लेकिन उनको सत्य के स्थान पर शक्ति की उपलब्धि होती है। इसी से विज्ञान बराबर शक्तिशाली होता जा रहा है। आज का विज्ञान भले ही शक्तिशाली हो, किन्तु सत्यशाली नहीं है। मानव के पास शक्ति तो बहुत है, उसका भंडार भरा हुआ है, लेकिन सत्य का पूर्णतया अभाव है। इसी कारण से आज भयंकर खतरा पैदा हो गया है, अशान्ति पैदा हो गई है। मानव तृष्णा अभी बुझी नहीं है, वैज्ञानिकों के विचार डाँवाडोल हो रहे हैं, वे कहाँ जा रहे हैं उन्हें स्वयं ज्ञात नहीं, कि वे किस शक्ति की खोज में हैं, उन्हें ये भी ज्ञात नहीं है। परन्तु यह भी सत्य है

कि 'सत्य' के नाम पर विज्ञान की शक्ति की खोज ने मानव समाज को इतनी भयंकर कठिनाइयों में डाल दिया है, कि उसकी अब तक की उपलब्धियों के कारण उसने अपने भीतर के आयामों को खोजने की प्रवृत्ति को नजर अंदाज कर दिया है। इसका परिणाम यह हुआ कि सहस्रों वर्षों में भगवान बुद्ध, महावीर, रामकृष्ण आदि जैसे युग पुरूषों को संसार पैदा न कर सका। यह इसलिए कि ऐसे अवतारी पुरूष भीतर के आयामों से उत्पन्न हुआ करते थे। आज के युग में बाहरी आयाम की ही खोज हो रही है, भीतर की और न तो किसी का अब तक ध्यान गया है और न ही जा रहा है।

सत्य के निर्माण और अविष्कार के लिए संसार में न कोई साधन है और न ही कोई उपाय है। सत्य तो स्वयं निर्मित है, सत्य तो स्वयंभू है, सनातन है।

मानव को यह मालूम होना चाहिए कि जहाँ सत्य होगा, वहाँ शान्ति अवश्य होगी। वहाँ संघर्ष कभी हो ही नहीं सकता। जहाँ सत्य होगा- वहाँ प्रेम होगा, वहाँ घृणा हो ही नहीं सकती।

जीवन में, व्यवहार में, व्यक्तित्व में हम लोग जैसे बाहर हैं, वैसे भीतर नहीं है। जो सत्य है, वास्तविकता है उसे तो मनुष्य छिपा देता है, और जो मिथ्या है उसकी चादर ओढ़े फिरता है। उसी को सत्य समझने लगता है, लेकिन प्राणी मात्र को ये कदापि नहीं भूलना चाहिए कि असत्य को सत्य साबित करना संभव नहीं, असत्य की चादर तो एक न एक दिन फट जायेगी। इसलिए उस मिथ्या चादर को फिर क्यों लपेट कर

फिरना।

सत्य की प्राप्ति के लिए सबसे पहले मनुष्य को, अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को सत्य पर प्रतिष्ठित करना होगा। हमारा व्यक्तित्व जैसा भी है, वैसा ही सीधा, सरल और स्वच्छ होना चाहिए। हम जैसे भी हैं, जो भी है- व्यक्तित्व की स्वीकृति भी वैसी ही होनी चाहिए। उसमें असत्य की मिलावट नहीं होनी चाहिए।

सत्य की खोज का पहला चरण है- अपने प्रति सच्चा होना। सत्य तो स्वतंत्रता हैं, जो मनुष्य सत्य को स्वीकार नहीं करता, वह जीवन में कभी आनंदित नहीं हो सकता। उसे तो कभी आनंद का अनुभव भी नहीं हो सकता। वह सदैव दुःख में जीयेगा और असत्य के कारण दुःख में ही मर जायेगा।

मानव के भीतर सत्य को जानने की आकाक्षा तो अवश्य है, लेकिन केवल ये आकांक्षा ही काफी नहीं है। सत्य को जानने के लिए सत्य की प्यास ही अकेली पर्याप्त नहीं है। सत्य के लिए हमें अपने भीतर असत्य की इन दीवारों को भी तोड़ देना हैं, जो कि हमने स्वयं ही खड़ी कर ली हैं। असत्य की दीवारें टूटने से ही हमारा सत्य से संपर्क संभव है।

सत्य वही है, जो स्वयं जाना जाये। दूसरे का ज्ञान दूसरे का अनुभव हमारा ज्ञान और अनुभव नहीं बन सकता। सत्य सदैव ही व्यक्तिगत अनुभव होता है।

उत्तम कौन है, उत्तम वह हैं, जो कभी मलिन न हो, नष्ट न हो, खत्म न हो। साधारण जनमानस अपने इस शरीर को ही उत्तम समझ बैठते हैं। शरीर के विषय में यह सोचना, समझना एकदम गलत है, कि ये कभी नष्ट ही नहीं होगा। मानव केवल इसी बात पर ध्यान देते हैं, कि हमारा ये शरीर ही सब कुछ है।

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता में बताया है, कि हमारा यह शरीर उत्तम नहीं है। शरीर को तो एक न दिन नष्ट हो जाना है, मलिन हो जाना है। इस संसार में जितनी भी जड़ व चेतन वस्तुऐं हैं, उन सबको एक न एक दिन अवश्य ही नष्ट हो जाना है। इसके विपरीत उत्तम कौन हुआ?उत्तम और श्रेष्ठ तो आत्मा है, परमात्मा है, जो कभी नष्ट नहीं होती। परमात्मा की महिमा, उसकी उत्तमता का वर्णन करना तो अत्यंत कठिन है, क्योंकि परमात्मा के विषय में जितना भी बोलें, सुनें, समझे वह बहुत कम है।

परमात्मा के विषय में एक बार एक महान संत अपने उद्‌गार व्यक्त करते हैं, कहते हैं- यदि मेरे हाथ में हजारों तारों का साज हो, और हे परमात्मा मैं तेरे गीत गाने चलुं, तेरी महिमा के गीत गाऊँ, तेरी महिमा का वर्णन करूं और तेरी महिमा के गीत गाता ही चला जाऊँ, और वो गीत कभी खत्म

ही न हों। मेरे हाथ से हजारों तारों वाला साज टूट जाये, मेरे श्वास भी खत्म हो जाये, किन्तु 'हे ईश्वर, हे परमात्मा! तेरी महिमा का वर्णन, तेरे गीत कभी खत्म ही न हो।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी भगवान के विषय में कहा है-?

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता।
कहहिं सुनहिं बहु विधि श्रुति संता।

गुरूजी ने आगे बताया कि ज्ञानी मनुष्य इस अनित्य एवं नाशवान संसार और शरीर के प्रति न तो अभिमान करते हैं और न ही इसमें अनुरक्त रहते हैं। बल्कि कमल के पत्ते पर जल बिन्दु के समान अपनी दृष्टि को रखते हैं। आत्म चिंतन प्रभु भजन में सर्वदा लीन रहते हैं। संसार की हर गति विधि को उसकी लीला मात्र मानते हैं। भगवान ऐसे मानव के साथ हर क्षण विद्यमान रहते हैं।

श्री गुरूजी ने अपने मंगल संदेश में बताया कि जन्म दिवस से ही मृत्यु की शुरूआत हो जाती है। जिस दिन हम पैदा होते हैं, उसी घड़ी से हम मृत्यु की ओर अग्रसर होना शुरू हो जाते हैं। न जाने वह कब और कहाँ आ जाए। जन्म और मृत्यु के बीच के अंतराल को हम जीवन की संज्ञा देते हैं। इसी जीवन

को सफल बनाने के लिए हमें परमात्मा की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहना पड़ता है।

आत्मा परमात्मा का अंश है। हम उस परमात्मा रूपी समुद्र की बूँदें हैं। जब तक आत्मा परमात्मा से नहीं मिलती, तब तक उसका जन्म-मरण के दुःखों से कभी किसी हाल में छुटकारा नहीं हो सकता। परमात्मा ने सारी दुनियाँ की रचना करके इसे चौरासी लाख योनियों में बाँट दिया जाता है। चौरासी लाख को भी चार योनियों में बाँट दिया है- स्वेदज, अंडज, उद्भिज और जरायुज मानव को परमात्मा ने सब कुछ सोचने समझने की शक्ति दी है। बिना सोचे समझे यह जीवन निरर्थक एवं रसहीन है। परमात्मा की उपलब्धि ही जीवन की सार्थकता है। ध्यान, साधना, संकीर्तन गुरू मंत्र जप कलिकाल में सबसे बड़ा यज्ञ है।

जीव में जो चैतन्य है, वही परमात्मा है। वही साध्य है। चराचर जगत में जो भी लौकिक एवं अलौकिक है, वह उसी एक परमात्मा का प्रकाश है। जितने भी साधु, संत फकीर हैं, वे उसी के तेजपुंज के अंश हैं।

श्री गुरूजी ने आगे बताया- अगर आप लोग खुशी व आनंद चाहते हो, तो केवल परमात्मा को याद करो। वहीं सबसे पवित्र व सच्चा घर है। यदि आप लोग परमात्मा को अपने मन में बसा लोगे तो परमात्मा के दर्शन तुम्हें अपने आप ही हो जायेंगे। सदैव यही सोचो कि परमात्मा ही हमें सब कुछ देने

वाला है, सुख-दुःख, लाभ-हानि, इज्जत-बेइज्जती, रोग या फिर कोई भी मुसीबत। सबको भगवान का ही प्रसाद समझो।

परमात्मा की भक्ति में इतने लीन हो जाओ, कि परमात्मा को स्वयं ही तुम्हारे पास आना पड़े। जैसे भगवान राम की भक्त शबरी थी, और भगवान राम स्वयं शबरी के पास बेर खाने जंगल में गये थे। शबरी उनको बेर खिलाने अयोध्या नहीं गई थी । वह भगवान की सच्ची भक्त थी और भगवान सदैव भक्त के ही वश में होते हैं। भगवान को बाहर ढूँढने की आवश्यकता नहीं है, वह तो हमारे अंदर ही विराजमान है। उनको तुम राम कहो या फिर मरा कहो, लेकिन कहो नम्रता से, श्रद्धा से, अहंकार से नहीं। फिर देखो भगवान तुम्हारें पास आते कि नहीं। वह जरूर तुम्हारे पास आयेंगे विश्वास रखो। लेकिन बात इतनी है, कि जितना हम आपको याद रखेंगे वह उतना ही हमारे करीब रहेगा। वह देवता है, दाता है। देवता का मतलब ही देने वाला होता है। वह हमें इतना दे सकते हैं, कि हम लेते-२ थक जायेंगे। कोई भी प्राप्ति साधन पर निर्भर करती है। साधन अच्छे हैं तो लक्ष्य शुभ होगा, और प्राप्ति के साधन गलत ढंग के हैं तो प्राप्ति होगी तो अवश्य किन्तु वह शुभ लक्षणों से युक्त नहीं होगी।

कामी, क्रोधी तथा लालची व्यक्ति कभी भी भगवान की भक्ति नहीं कर सकते, कोई शूरमा और बहादुर ही इन विकारों में से निकलकर भगवान की और जा सकते हैं। जो मानव सदैव प्रभु भजन में लीन रहता है उसका जन्म-मरण के दुःखों

से छुटकारा हो जाता है। प्रभु का बाहर ढूँढ़ने में अपना समय व्यर्थ करना तो समय की बरबादी ही है। आत्मा में ही परमात्मा का दिव्य धाम है।

ईश्वर का घर दूर नहीं, रहता मन के माय।
जैसे मस्त मृग के, कस्तूरी महकाय,
कस्तूरी महाकाय मगर उसको है इसका ध्यान नहीं।
बस उसी तरह से मानव को भी आत्म ज्ञान नहीं।
मालूम यदि मृग को हो जाये, तो बन में फिरे हैरान नहीं।
हम भी मृग तृष्णा में फिरते, यों आता नजर भगवान नहीं।
ज्ञान बिना ध्यान नहीं, गुरू बिन ज्ञान नहीं।
नयन हृदय के खोल, देख दूर भगवान नहीं।।

सारी दुनियाँ का सताया हुआ मानव अगर कहीं सुख पा सकता है, तो वह जगह है, भगवान के श्री चरण कमल। सारी दुनियाँ ने तो उसे ठुकरा दिया है, उसे दुःख ही दुःख दिये हैं। इसलिए उसे भगवान के श्री चरणों में ही शान्ति और सुख का अनुभव हुआ है। लेकिन मानव को इतना भी निर्बल और कमजोर नहीं होना चाहिए, कि वह किसी भी छोटी से छोटी मुश्किल को देखकर ही परेशान हो जाए, दुःखी हो जाए। किसी भी मनुष्य को एकदम से यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं तो किसी भी मुसीबत का सामना नहीं कर सकता।

गुरूजी कहते हैं कि कोई भी कार्य मुश्किल अवश्य होता

है, लेकिन असंभव नहीं। कर्म करने से, परिश्रम करने से हर असंभव कार्य भी संभव हो सकता है। अपने आपको छुई-मुई के पौधे की तरह नहीं समझना चाहिए, जो मात्र अंगुली दिखाने से ही मुरझा जाए। मनुष्य को अपने आप को मजबूत बनाना चाहिए। चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाये। उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए। फिर देखो परिस्थिति तुम्हारे अनुकूल होती है, या नहीं। हर हाल में मनुष्य को प्रसन्न रहना चाहिए, सुख-दुःख तो जीवन में आते ही रहते हैं। परिस्थिति के अनुरूप ढल जाना ही इंसान की सही पहचान है। अगर हम परिस्थिति के अनुरूप ढल जायेगें तो वे खुद बेखुद ठीक होती चली जायेंगी और अगर उनसे डरकर भाग गये तो वे बिगड़ती ही चली जायेगी। इसी संदर्भ में गुरूजी ने बहुत ही प्यारी एवं सुन्दर कथा कही-

एक बार भगवान कृष्ण, बलराम और सात्यिकी कहीं जा रहे थे। मार्ग में रात्रि हो गई। वहाँ बहुत सघन वन था। जंगली जानवरों की डरावनी आवाजें आ रही थीं। तीनों ने मिलकर एक तरकीब सोची। कहने लगे जंगल बहुत घना है, और रात्रि तो अब हो ही गई है, ऐसा करते हैं, कि यहीं किसी पेड़ के नीचे विश्राम करते हैं। बारी-२ से एक-२ जन पहरा देगा। सबसे पहले सात्यिकी ने कहा- मैं पहले पहरा दूँगा। आप दोनों आराम से सो जायें। पहरा देते-२ कुछ ही समय बाद सात्यिकी को नींद सताने लगी। इसलिए उसने सोचा थोड़ा घूम लेना चाहिए। वह घूमता-२ थोड़ी ही दूर पहुँचा था कि अचानक उसने देखा, समीप ही एक सुन्दर उपवन है। वहाँ रंग-बिरंगे

फूल, विभिन्न प्रकार के फलों से लदे हुए वृक्ष और चारों ओर रंग-बिरंगी रोशनी फैली हुई थी। यह सब देखकर सात्यिकी आश्चर्यचकित रह गया। वह सोचने लगा कि इस सघन वन में यह सब कैसे संभव हुआ। सोच-विचार के मध्य ही उसको सावधान रहने की बड़ी भयानक गर्जना सुनाई पड़ी। उसी समय सात्यिकी के सम्मुख एक विशालकाय राक्षस आकर खड़ा हो गया। वह राक्षस चीख-२ कर कहने लगा कि तुमने यहाँ आने का साहस कैसे किया। बिना आज्ञा के यहाँ प्रवेश करने वाले को मुझसे युद्ध करना पड़ेगा। दोनों में युद्ध आरंभ हो गया। युद्ध करते-२ राक्षस ने अपना रूप और भी विकराल कर लिया। युद्ध होते-२ प्रथम पहर समाप्त हो गया। सात्यिकी थककर चूर हो चुका था। सात्यिकी भाग कर गया और उसने बलराम को जगा दिया। बलराम को युद्ध के विषय में उसने कुछ भी नहीं बताया। बलराम जी पहरे पर तैनात हो गये। सात्यिकी निद्रा के वशीभूत थे, और युद्ध के कारण थके हुए थे। इसलिए वह जल्द ही सो गये। बलराम जी के साथ भी वही हुआ, उन्हें भी नींद सताने लगी, घूमते-२ वह भी उसी स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ सात्यिकी के साथ राक्षस ने युद्ध किया था। उन दोनों में भी भंयकर युद्ध हुआ। बलराम क्रोध से लाल पीले हो रहे थे । युद्ध करते-२ दूसरा पहर भी समाप्त हो गया। युद्ध को छोड़कर बलराम जी ने भी उसी तरह से वापिस आकर श्री कृष्ण जी को जगा दिया और राक्षस से युद्ध करने की घटना से भी अवगत नहीं कराया। सोचा, बताने में समय व्यर्थ होगा, मुझे सोने के लिए कम समय मिलेगा। इसलिए वह चुपके से सो गये। तीसरे

पहर में श्री कृष्ण पहरे पर तैनात हो गये। वह भी कुछ देर बाद निद्रा के वशीभूत हो गये, उन्होंने भी सोचा कि थोड़ा घूम लेता हूँ। उनको भी वैसा ही उपवन दिखाई दिया। राक्षस ने श्री कृष्ण जी से भी वे ही प्रश्न किये, कि बिना आज्ञा के उपवन में प्रवेश करने पर उस व्यक्ति को मुझसे युद्ध करना पड़ेगा। श्री कृष्ण ने कहा- ठीक है। युद्ध आरंभ हो गया, श्री कृष्ण ने राक्षस से बड़े प्यार से युद्ध किया। राक्षस को बड़ा क्रोध आया कि मैं तो इससे युद्ध कर रहा हूँ और यह तो हँसता ही जा रहा है।राक्षस क्रोध ा से और भी लाल-पीला होता जा रहा था। श्री कृष्ण उसके क्रोध ा को देखकर और भी मुस्कुराते जा रहे थे। राक्षस ने अपना आकार और बढ़ा लिया। श्री कृष्ण जी ने अपनी मन्द-२ मुस्कान से राक्षस को बहुत परेशान कर दिया। राक्षस ने मन में विचार किया कि बड़ी अजीब बात है, मैं तो युद्ध करते-२ थक चुका हूँ, इसका तो अभी कुछ नहीं बिगड़ा। राक्षस को एक तरकीब सूझी उसने अपना आकार बिल्कुल छोटा कर लिया। मक्खी के आकार का बनकर वह राक्षस श्री कृष्ण के हाथ पर आकर बैठ गया। अपने हाथ पर बैठा देखते ही श्री कृष्ण ने झट से उसे पकड़ लिया और अपने पीताम्बर में बाँध लिया। अब तीसरा पहर खत्म हो चला था। वह बलराम और सात्यिकी के पास पहुँचे। वे दोनों श्री कृष्ण को देखते ही कहने लगे, कि हमारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। शरीर दर्द कर रहा है। उन्होंने उन दोनों से कहा क्यों भाई शरीर क्यों दर्द कर रहा है । सर्वप्रथम सात्यिकी ने कहा कि रात्रि के प्रथम पहर में एक विकराल राक्षस के साथ मुझे युद्ध करना पड़ा, इसीलिए थकावट से मेरा

शरीर टूटा जा रहा है। बलराम ने भी यही कहा कि, मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही घटित हुआ। श्री कृष्ण ने उनकी यह घटना सुनी और खिलखिलाकर हँसने लगे। उन्होंने पीताम्बर से बँधा हुआ वह राक्षस बाहर निकाला और कहने लगे कि- वह राक्षस यही है क्या?उन दोनों ने देखा, तो कहने लगे, यह कैसे संभव हुआ। यह राक्षस तो वही है।

श्री कृष्ण जी कहने लगे कि इस राक्षस का नाम है- क्रोध एवं आवेश। वह कहने लगे कि क्रोध को जितना बढ़ाओगे, वह उतना ही बढ़ता जायेगा। जितना घटाओगे उतना ही घटता जायेगा। तुम दोनों ने क्रोध में आकर उस राक्षस से युद्ध किया, इसलिए उसका आकार बढ़ता ही चला गया। परन्तु मैने उसी क्रोध रूपी राक्षस को प्यार व मुस्कुराहट से पराजित कर दिया। अब वही राक्षस तुम्हारे सामने है। अब तुम इसे अपने नेत्रों से देख लो। इतना कहकर राक्षस को श्री कृष्ण ने अपनी अंगुली से मसल दिया।

श्री कृष्ण जी ने उन दोनों को समझाया कि, ये क्रोध ही तो है जो अत्याचार को बढ़ावा देता है, और इस अत्याचार से रक्त की नदियाँ तो अवश्य बहती है। किन्तु समय आने पर वह अत्याचार करने वाला स्वयं ही उस नदी में डूब जाता है। इसलिए क्रोध रूपी राक्षस को अधिक बढ़ावा नहीं देना चाहिए। इस क्रोध व आवेश रूपी राक्षस को तो जल्द से जल्द ही समाप्त कर देना चाहिए। वह भी प्यार-प्रेम से, झगड़े व विवाद से नहीं। अगर विवाद से इसे खत्म करने की कोशिश करेंगे तो वह

अपना और भी विकराल रूप धारण कर लेगा।

मानव को समय के अनुसार ही ढलना चाहिए, नहीं तो वह कभी भी विजयी नहीं हो सकता। किसी को भी यह नहीं समझना चाहिए कि मैं इस कार्य को नहीं कर सकता। अगर मानव कोशिश करे तो हर असंभव कार्य को भी संभव बना सकता है।

श्री गुरूजी ने अपने मंगल संदेश में बताया- 'यदि तुम कुछ प्राप्त करना चाहते हो, तो पहले कुछ अर्पित करना सीखो।' इस सनातन नियम को अपने जीवन में अच्छी तरह अनुभव करके देखो।

धर्म शास्त्रों के अनुसार- सद्‌गुण तीन बताये गये हैं- आशा, विश्वास और दान। दान सबसे बढ़कर है। दान देने वाले को धन के अभाव में कभी कष्ट नहीं होता।

शिव पुराण के ग्यारहवें अध्याय में अन्न दान का भी बहुत बड़ा महत्व बताया है। अन्न दान करने वालों को शास्त्रों में प्राण दाता कहा गया है, और प्राण दाता संपूर्ण दान करने वाला कहा जाता है। इसलिए अन्न दान करने से समस्त दानों का फल मिल जाता है। अन्न में साक्षात् ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर जी है। दान के विषय में गुरूजी ने एक और अति सुन्दर कथा कही- सोरठा के राजा वीरभद्र बड़े ही दानी थे। उनके द्वार

से कोई भी भिक्षुक खाली हाथ नहीं जाता था। एक समय ऐसा आया कि खजाना खाली हो गया।

इसी कारण राजा कमजोर पड़ गये। मौका मिलते ही पास के राजा ने उनके राज्य पर चढ़ाई कर दी। राजा रानी दोनों को बंदी बना लिया।

कुछ ही दिनों के पश्चात् वह जेल से भाग निकले। चलते-२ एक गाँव में जा पहुँचे। रानी ने कहा- सुना है कि सम्भल देश के एक सेठ पुण्य खरीदते हैं। राजा ने कहा- जाएं कैसे, भूख लगी है खाना तो है नहीं। रानी गाँव में किसी के घर से आटा ले आई और जंगल में ही गाँव के समीप लकड़ी इकट्ठी करके आग जलाई और उसी में चार रोटियाँ सेंकी। तभी एक भिखारी आ गया, उनमें से दो रोटी उसे दे दी। एक-२ रोटी स्वयं खा ली, और नगर की और चल पड़े।

सम्भल सेठ के घर जाकर बोले- सुना है, आप पुण्य खरीदते हैं। सेठजी ने कहा- हाँ खरीदता हूँ। आप अपना जो कुछ भी बेचना चाहते हैं, उसे एक कागज पर लिखकर इस तराजू पर रख दें। राजा ने ऐसा ही किया परन्तु तराजू नहीं झूकी। सेठ ने कहा- आपने अपनी मेहनत की कमाई का दान दिया हो तो याद करके लिखिए, दोनों सोचने लगे, अचानक उनको याद आया कि तीन-चार दिन पहले एक भिखारी को दो रोटियाँ दान में दी थी। उन्होंने उसको तराजू पर लिखकर रख दिया, तराजू नीचे झुक गई और उस पर पूरी ५०० सोने की मोहरे चढ़ी। तब सेठ जी ने कहा- राजा! पहले जो दान तुमने

किया था, वह केवल नाम के लिए किया था, वह मात्र एक दिखावा था। श्रेष्ठ दान तो केवल यही था।

गुरूजी सदैव यही समझाते हैं- अगर कोई भिक्षुक भिक्षा माँगे तो अवश्य दो, कभी इंकार मत करो। कुछ न कुछ तो अवश्य दो, नहीं तो वह तुम्हारे सारे पुण्यों का हरण कर ले जायेगा। अगर तुमने उसे भिक्षा दी, तो तुम उसके पुण्यों का आकर्षण कर लोगे।

श्री गुरूजी कहने लगे कि लगभग सारा भारत वर्ष मैंने देख ही लिया है। इस पवित्र मिट्टी, को मैं अपने मस्तक पर लगाकर करोडों बार प्रणाम करता हूँ क्योंकि इस परम पवित्र मिट्टी में भगवान खेले हैं । इसलिए यह मिट्टी, मिट्टी ही नहीं यह तो वरदायिनी बन गई है। विश्वास के साथ इस पावन मिट्टी का तिलक लगाकर मानव अपनी इच्छायें पूर्ण कर सकता है। लेकिन जो लोग आधुनिक काल के चक्र में फँस गये हैं, उनको इस धरती माता की पवित्रता का जरा भी ज्ञान नहीं है।

भारत की भूमि में तो देवता भी मनुष्य का शरीर धारण कर अपने को भाग्यशाली मानते हैं। देवताओं और सिद्धियों-ऋद्धियों व मुनियों के स्पर्श से यह मिट्टी विभूति बन गई है। पूरी दुनियाँ में केवल भारत ही एक ऐसा देश है, जिसकी धरती पर देवी-देवताओं ने अवतार धारण किया है।

दुष्टों से भक्तों की रक्षा की है। धर्म की हमेशा जीत कराई है।

श्रद्धालुओं को बताते हुए गुरूजी ने कहा कि कोई भी मनुष्य जन्म से दुष्ट या साधु नहीं होता। उसके विचार, व्यवहार और उसके कर्म ही उसे दुष्ट या साधु बनाते हैं। साधु सत्कर्म स्वयं भी करता है और दूसरों को भी सिखाता है। दुष्ट सदैव दूसरों का उत्पीड़न करते हैं।

भारत वर्ष में समय-२ पर महान आत्मायें ही हमें दुष्टों से बचाने के लिए हमारे बीच धर्माचार्य बनकर आती हैं। जैसे श्री कृष्ण जी ने गीता में कहा है।

यदा-यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

अर्थात- जब-२ इस भारत वर्ष में धर्म का पराभव होने लगता है, और अधर्म बलवान होने लगता है, तब-२ मैं स्वयं देह धारण करता हूँ।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।।

'सज्जनों का संरक्षण करने और दुर्जनों का विनाश करने के लिए, धर्म की संस्थापना हेतु, मैं युग-२ में अवतार धारण करूँगा।'

महान आत्मायें ही हमारी पथ-प्रदर्शक बनकर हमें सन्मार्ग की ओर अग्रसर करती हैं। जैसे नदी, झरना, कुआँ

सबमें जल होता है और सबका गुण भी एक ही होता है- शीतलता प्रदान करना, सबकी प्यास बुझाना। उसी प्रकार दुःख से संतप्त मानव को खुशी देने के लिए ही धरती पर परमात्मा या उसके पवित्र अंश का शुभागमन होता है। वे महान आत्मायें ही मनुष्य को शांति और ज्ञानपथ की ओर अग्रसर करती हैं।

गुरूजी ने आगे बताया कि भारत का हर मनुष्य अच्छे संस्कारों से भरा हुआ है, आवश्यकता है तो केवल उन संस्कारों को जागृत करने की। तभी मानव को शांति मिलेगी। गुरू के मार्ग-दर्शन से अज्ञान के परदे को हटाने की आवश्यकता है। तभी तो मनुष्य सुसंस्कृत होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि आज का युग आधुनिक तो अवश्य है, किन्तु यह बात नहीं है कि मनुष्य अपनी प्राचीन संस्कृति या परमात्मा को ही भूल जाये।

भगवान, परमात्मा, ईश्वर, प्रभु कितने सुन्दर नाम हैं। इनके सुनते ही मन प्रसन्न हो उठता है। रोम-२ रोमांचित हो उठता है। गुरूजी कहते हैं कि भगवान के विषय में तुम्हें जो भी व्यक्ति कुछ सुनाता है, बताता है या फिर कुछ कहता है, उन सभी शब्दों को प्यार से समझना चाहिए। समझकर दूसरों को भी समझाना चाहिए। प्रभु के नाम से प्रेम करो, क्योंकि प्रेम ही ऐसी चीज है, जिससे हर वस्तु प्राप्त हो सकती है। इसलिए मन

को एकाग्र करके सबको प्रेम की नजर से देखो। फिर तुमको हर जीव में भगवान ही नजर आयेंगे।

मन को एकाग्र करके देखने से हमें केवल एक ही राह नजर आयेगी(यह सब ध्यान के द्वारा ही संभव है,) अर्थात् हमें अपनी दोनों आँखों से ध्यान हटाकर तीसरी आँख (ज्ञान चक्षु) पर टिकाना है। वहीं पर हमें एक राह दिखाई देगी। परम पवित्र परमात्मा की राह, जिसका कोई अंत नहीं है। क्योंकि परमात्मा अनन्त है। उसका कोई अंत नहीं है।

परमात्मा के अत को कोई नहीं जान सकता, वह तो हर जीव में समाया हुआ है। जब हमें परमात्मा की राह का आनंद आने लगता है, तब हमें सुख और आनंद का अनुभव स्वयं ही होने लगता है। जब हमें इस रस का स्वाद पता चलता है, तो हमें मुक्ति का मार्ग दिखलाई देने लगता है। चारों ओर आनंद ही आनंद का अनुभव होने लगता है।

यह भी सत्य है कि आजकल सब लोग कलियुग के काल के दायरें में फँसे हुए हैं, और उसी के साथ सबकी जीवन की गाँठ बंधी हुई है। समय के साथ-२ पृथ्वी पर काल का प्रभाव भी बढ़ता ही जा रहा है। काल ने अपना रूप इतना विकराल और विस्तृत किया हुआ है कि हर चीज उसमें धँसती ही जा रही है। जो भी जीव इस धरती पर जन्मता है, वह काल की चपेट में उसी वक्त आ जाता है। किन्तु यदि हम गुरू कृपा से, उनकी सहायता से परमात्मा की राह पर ठीक पहुँच जायेंगे तो काल हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा। चाहे वह कितना भी

विकराल रूप धारण कर ले। गुरूजी ने आगे बताया कि- वे लोग बड़े ही भाग्यशाली हैं, जिनको गुरू की शरण मिलती है। गुरू सभी भक्तों को समान प्यार करते हैं। वह कहते हैं कि तुम लोग अपनी इच्छा से जो भी करना चाहते हो करो, लेकिन मेरी इच्छा से तो केवल तुम अपने अन्तःकरण में प्रभु को बसा लो, प्रभु के नाम को बसा लो। क्योंकि प्रभु नाम ही तुम्हारे दुःख और क्लेश काट सकता है। परमात्मा तो बहुत ही दयालु है। वह सब जीवों के पापों को क्षमा कर देता है। वह मानव को गुरू शरण में भेजकर एक नया रास्ता दर्शाता है। जो मानव एकाग्र चित्त होकर गुरू की सेवा करता है, असल में तो वही परमात्मा के घर का भागी है।

मन पर नियंत्रण रखना अति आवश्यक

श्री गुरूजी सदैव सबको यही संदेश देते हैं कि अपने धर्म का पालन करना चाहिए। उसी के अनुसार आचरण करना चाहिए। सत्य का मार्ग कभी नहीं छोड़ना चाहिए, अपने लक्ष्य से कभी नहीं भटकना चाहिए। सदैव अनुशासन में रहना चाहिए।

गुरूजी की ऐसी मान्यता है कि व्यक्ति विशेष के हृदय की शुद्धता के लिए 'मन' के ऊपर नियंत्रण करना अति आवश्यक है। मन के पवित्र होने पर ही प्रभु का दर्शन संभव हैं। मन के पवित्र होने पर ही सांसारिक विषय वासनायें भी छूट

जाती है। सांसारिक विषय वासनायें ही मनुष्य के दुःख का मूल कारण हैं।

सभी बुराइयों से छुटकारा पाने का मात्र एक ही तरीका है- मन को बाहर जाने से रोकना। अपनी अमृतमयी वाणी में गुरूजी ने भक्तों को बताया-

भक्तो मन की माला फेरो, यह मन बाहर जाता हेरो। अच्छे कर्मों के क्रियान्वयन के लिए मन का तैयार होना इतना आसान नहीं है, जितना कि लोग सोचते हैं। हमारा यह मन विकृति की ओर बहुत जल्द अग्रसर हो जाता है। थोड़ी सी विकृति आने पर हमारा तन मन विकारग्रस्त होकर संपूर्ण समाज पर अपना दुष्प्रभाव छोड़ देता है काम, क्रोध, लोभ, मोह, आदि मनुष्य के शत्रु हैं, जो मौका मिलते ही अपना वार करने से नहीं चूकते। इन्हीं शत्रुओं के कारण विकृत मानसिकता का जन्म होता है। एक अवगुण ही मनुष्य का सर्वनाश करने में पर्याप्त होता है। जहाँ एक अवगुण मन में बसाया, दूसरे अवगुण तो अपने आप ही चले आते हैं। इसलिए सबसे आवश्यक है, मन को अपने बस में करना, मन बस में होते ही कोई भी विकृति नहीं पनप सकती।

शक्ति की कुंजी सदैव गुरू के हाथ में

तंत्र साधना के विषय में पूछने पर गुरूजी ने बताया- तांत्रिक शक्ति साधना के सूत्रों को गुरू सदैव ही गुप्त रखते हैं। जिसे वे योग्य समझते हैं, उसी को वह गुप्त ज्ञान बताते हैं। तंत्र और योग मार्ग में इसीलिए गुरू शिष्य परंपरा है। गुरू जिसे योग्य शिष्य समझते हैं, उसी को वह साधना का रहस्य बताते हैं। वह इस बात का सदैव ध्यान रखते हैं, कि कहीं तांत्रिक शक्ति के स्रोत का पता किसी अयोग्य शिष्य के हाथों में न पड़ जाए। शक्ति के मूल स्रोतों की कुंजी शास्त्रों में कहीं नहीं मिलेगी। यदि यह कुँजी मिलेगी तो केवल गुरू के पास ही मिलेगी। कुंजी के विषय में पूछने पर गुरूजी ने बताया कि 'तंत्र' में जिसे मंत्र कहते हैं, जिसे दीक्षा कहते हैं, वहीं है कुंजी।

तांत्रिक गुरूओं की सदैव यही कोशिश रहती है कि, तंत्र से संबंधित शास्त्र लिखने की बजाय कंठस्थ हो जाए। वह कहते हैं कि लिखने से विषय साधारण हो जाता है, सामान्य हो जाता है। वह अच्छे-बुरे सभी व्यक्तियों के पास पहुँच जाता है, फिर उस पर नियंत्रण रखना कठिन हो जाता है। तंत्र की जानकारी के लिए सबको गुरू की शरण में, उनके सम्पर्क में जाना ही पड़ेगा। इसीलिए किसी भी साधना के लिए गुरू का स्थान सर्वोपरि होता है।

समय गतिशील है, वह किसी का इंतजार नहीं करता

यात्रा के दौरान गुरूजी से अलग-२ तरह की जानकारियाँ प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। केदारनाथ यात्रा के दौरान गुरूजी ने बताया कि कई बार लोग कहते हैं कि मैं समय काट हूँ, या मेरा समय कट रहा है। लेकिन जन-साधारण को यह नहीं मालूम कि ब्रह्माण्ड में कोई ऐसा शस्त्र नहीं- जो समय को काट सके। समय आपको काट सकता है, आप समय को स्पर्श तक नहीं कर सकते, उसे काटना तो बहुत दूर की बात है। समय तो अक्षय है, कभी कटेगा भी नहीं, समय को काटने वाले सब विलीन हो जाते हैं। लेकिन समय की शाश्वतता अपनी जगह बनी रही है और ऐसे ही बनी रहेगी।

समय पर मृत्यु का भी कोई प्रभाव नहीं है, समय की कभी भी मृत्यु नहीं होती। जैसे नदी की धारा बहती रहती है, और जमीन को काटती रहती है, ऐसे ही हमारा अस्तित्व समय की धारा में कटता रहता है। फिर एक दिन हम क्या पाते हैं?हम पाते हैं कि हमारा अस्तित्व कण-२ कर काल के प्रवाह में बह गया। जिस दिन हम पूरे बह जाते हैं, उस दिन हम कहते हैं- 'मृत्यु' हो गई। काल के प्रवाह में हम प्रतिपल बह रहे हैं, रूक नहीं सकते, रूकने का कोई उपाय भी नहीं है।

जो व्यक्ति समय के साथ एकता साध लेता है, वह परमात्मा के साथ एकता साध लेता है। समय के साथ तादात्म्य

का अर्थ है- परमात्मा के साथ तदाकार स्थापित कर लेना। इसी का नाम योग है।

समय के साथ कोई विरोध नहीं होना चाहिए, अपितु समय के साथ पूरा तालमेल स्थापित करना चाहिए। समय जहाँ भी ले जाए, वह ही ठीक है, बीमारी, बुढ़ापा, अच्छा-बुरा, बाहर-भीतर, मृत्यु जो भी हो सब ठीक है। तभी आप समय को जान पायेंगे कि समय क्या है । सच्चे योगी सदैव समय के साथ रहते हैं। इसीलिए उनकी विचारशक्ति, मनः शक्ति, आत्मशक्ति कभी क्षीण नहीं होती।

जन्म और मृत्यु

दोनों पर हो हमारा अधिकार नहीं है। ये दोनों तो परमेश्वर के हाथ में हैं। हम न तो किसी को जन्म दे सकते हैं और न ही किसी को मार सकते हैं। हम स्वयं भी न तो जन्म ले सकते हैं, और न ही मर सकते हैं। इसके विपरीत अगर हम यह सोचते हैं कि हम अपने को मार रहे हैं या मैं अपने को मार रहा हूँ- तो वह एकदम हमारा भ्रम है। सच तो यह है, कि कोई भी अपने को मार नहीं सकता। जब तक की मौत ही मारने को न आयी हो। आपके मन में यदि आत्म-हत्या करने का विचार आता है- वह विचार भी आपका नहीं हैं, क्योंकि भगवान के बिना

तो एक पत्ता भी नहीं हिल सकता, तो ये विचार भी आपका नहीं है, करने वाला तो परमेश्वर है।

आत्मतृप्ति कब होती है?शिष्यों के पूछने पर गुरूजी ने बताया- जब हम कोई भी सार्थक कर्म करते हैं तभी आत्म तृप्ति होती है। सबने पूछा सार्थक कर्म क्या हैं?

गुरूजी ने समझाया- जिस कर्म का फल शुभ हो, और तत्काल प्राप्त हो जाए, वह सार्थक कर्म है। जैसे किसी अबोध शिशु को देखते ही हम मुस्कुरा उठते हैं, एकदम फूल की तरह खिल उठते हैं। हमें अपने मुस्कुराने का फल तुरंत ही प्राप्त हो जाता है- यह है सार्थक कर्म। जिस कर्म का कोई फल न निकले, वह व्यर्थ कर्म है।

ऐसे ही गुरूजी ने एक और उदाहरण दिया, कहने लगे- रास्ते में एक अंधा व्यक्ति चला जा रहा है, अचानक से वह ठोकर खाकर गिर पड़ता है। हम दौड़कर उसे उठा देते हैं। किसी का मार्ग में कोई सामान गिर पड़ता है। हम उठाकर उसे थमा देते हैं। किसी बीमार व्यक्ति की निःस्वार्थ सेवा कर देते हैं। ये कृत्य तो हैं बहुत छोटे और साधारण, मगर ये छोटे-२ कर्म भीतर बहुत बड़ा अर्थ रखते हैं। दूसरे के प्रति इतना करने का जो सद्भाव हैं- वह हमारे भीतर तुरंत ही आनंद भर देता है,

और हमारी आत्मा अनजाने में ही तृप्ति का अनुभव कर लेती है।

अन्त में गुरूजी ने कहा, कि मेरे कहने का मतलब केवल इतना है कि सद्भाव पूर्ण किया गया कोई भी सत्कर्म चाहे वह छोटा सा हो या फिर बड़ा हो, वह कर्म आत्मा में फलित होता है, क्योंकि सत्कर्मों में से ही वास्तविक प्रेम की सुगन्ध आती है।

जिस ज्ञान से आत्मा तृप्त हो वही वास्तविक ज्ञान है। वही सार्थक ज्ञान है। बाकी सब व्यर्थ है।

काशी विश्वनाथ से आते समय रेलगाड़ी में ही गुरूजी ने बताया- हमारा देश योग तांत्रिक की दृष्टि से एक महायोनि पीठ है। वह त्रिकोणमय है। ऊपरी कोनों पर महासरस्वती पीठ (काश्मीर) और महालक्ष्मी पीठ (कामरूप)है, और नीचे महाकाली पीठ (कन्याकुमारी) है। मध्य में शिव महाकालेश्वर (उज्जैन) में स्थित है।

ऊपर की तरफ हिमालय की गोद में कुछ क्षेत्र एकदम खाली है, बिल्कुल शून्यमय है। योगियों की भाषा में इस क्षेत्र को महा हिमक्षेत्र या फिर महाश्मशान का क्षेत्र कहते हैं। मत्स्येन्द्र नाथ जी तथा उनके शिष्य गोरखनाथ जी ने इसी महाश्मशान

में साधना की थी। गोरखनाथ जी की अखंड धूनी से निकलने वाली धूमशिखा आज भी किसी भाग्यवान को आकाश का स्पर्श करती हुई दिखलाई पड़ जाती है । उसी हिम प्रदेश में हिमशिखरों से टकराती हुई 'अलख-निरंजन' की आवाजें कभी-२ लोगों को सुनाई पड़ जाती हैं।

योगी की दृष्टि में मृत्यु

सच्चे अर्थ में योगी मृत्यु को कभी जीवन का अंत नहीं समझता। उनके लिए मृत्यु एक गहन विश्राम है, शांति है। उसी प्रकार जैसे हम दिन भर के परिश्रम के बाद रात में सो जाते हैं, और उस अवस्था में विश्राम और शांति का अनुभव करते हैं। निद्रा भी एक प्रकार की अल्पकालीन मृत्यु ही है। हम दिन भर जागते हैं, परिश्रम करते हैं, और रात में सो जाते हैं। उस समय नींद हमारे लिए अमृत तुल्य होती है। दिन भर की थकान और दिन भर का परिश्रम नींद में समाप्त हो जाता है। सवेरे हम प्रफुल्लित और तरोताजा उठते हैं, पुनर्जीवित हो उठते हैं। फिर श्रम यात्रा पर निकल पड़ते हैं।

अगर दिन भर की थकान के बाद रात्रि में सो न सके, तो जानते हो, पागल हो जाओगे। जीवन की शक्ति ही समाप्त हो जाएगी। उत्साह और उमंग सब समाप्त हो जायेगा। इसलिए प्रतिदिन रात में सोना अति आवश्यक है, ताकि अगली सुबह हमें नया जीवन, नयी उमंग और नयी स्फूर्ति मिल सके।

रात में जो जितनी गहरी नींद में सोयेगा, वह उतनी ही

ताजगी से सुबह जागेगा भी, नींद जितनी गहरी होगी, वह उतने ही मृत्यु के समीप पहुँच जायेगा।

अगर किसी कारणवश रात में ठीक से सो न सके, बेचैन रहे, तो सवेरे मरे-२ ही उठोगे, न उमंग होगी, न उत्साह होगा। सत्य तो यह है कि जो रात में सोने की यानि मरने की कला नहीं जानता- वह सवेरे जीने की कला भी नहीं जान सकता।

गहरी नींद के लिए स्वप्न सबसे बड़ा बाधक है। इसी प्रकार गहरी मृत्यु के लिए सबसे बड़ी बाधा है- जीवन की स्मृति। अगर मृत्यु के समय जीवन की स्मृति बनी रही तो मृत्यु हमारे लिए परम और गहन विश्राम कदापि न बन सकेगी।

अगर मरने के बाद भी जीवन की तमाम स्मृतियाँ बनी रहीं, उसके जाल में उलझे रहे, तो अगले जन्म में हम जीवन भर अशांत, बेचैन, उत्साहीन ही रहेगें।

सत्य तो यह है कि मृत्यु के बाद जीवन की स्मृतियों से छुटकारा मिलना वास्तव में अत्यंत कठिन है। स्मृतियों से मुक्त होने का केवल एक ही उपाय है- वैराग्य।

सनातन धर्म के विषय में भक्तों की शंका निवारण

एक बार कुछ भक्तों ने गुरूजी से विनती की और कहा- गुरूजी आप हमें सनातन धर्म के विषय में कुछ समझाइये। गुरूजी ने सबकी भावना का मान रखते हुए कहा- सनातन धर्म अत्यंत

प्राचीन धर्म है। 'सनातन' का अर्थ है- अनन्त से अनन्त काल तक रहने वाला। इस धर्म के सिद्धांत, वेदशास्त्र, उपनिषद् आदि से सहमत हैं। परमात्मा से संबंधित ज्ञान-विज्ञान इसमें भरा पड़ा है।

सनातन धर्म में परमात्मा को निराकार और साकार, निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में अपने-२ सहज स्वभाव सरलता, पवित्रता, लग्न, श्रद्धा, भक्ति, विश्वास आदि के साथ उनकी उपासना की जाती है परन्तु निराकार और निर्गुण, अव्यक्त और अरूप भाव से परमेश्वर की उपासना कठिन होती है। अतः देह में अभिमान रखने वाले लोग उससे सफलता पाने में असमर्थ रहते हैं, क्योंकि निराकार में मन स्थिर करना कठिन होता है।

सगुण साकार स्वरूप की उपासना सरल होती है। उसमें भगवान के नाम, रूप, लीला तथा धाम का स्मरण किया जाता है। पवित्र नवधा भक्ति (श्रवण, मनन, गुणगान, गुरू, सेवा, मंत्र, जप, सर्वात्म दर्शन, सन्तोष, भगवत्मरोस) परायण होकर भगवान के नाम का जप करना, भगवान के लिए कष्ट सहना, उनका पूजन करना, कीर्तन और गुणगान करना होता है। इष्टदेव में ध्यान लगाने से मन स्थिर होता है। भगवान विष्णु, शिव, शक्ति, गणेशजी और सूर्य इन पाँचों देवताओं में से किसी एक को अपना इष्ट देवता मानकर उनके दिव्य मंगल विग्रह की श्रद्धा भक्ति से सेवा करना, उनकी दिव्य मूर्ति को मन-मन्दिर में स्थापित और प्रतिष्ठित कर उनका पूजन, अर्चन, वन्दन करना पड़ता है और गुरू की सेवा में पाये हुए

'गुरू मंत्र' रूपी भगवान के नाम का जप करने से उनके रूप में प्रीति हो उठती है और भगवान से साक्षात्कार के लिए मन लालायित हो उठता है। तप एवं तीर्थाटन करने तथा संतों की सेवा करने से सदाचार एवं सद्‌गुणों की वृद्धि होती है। जिससे परमात्मा की कृपा पाने में सहायता मिलती है। अर्थात् सनातन धर्म पवित्र और महान धर्म है।

भक्तों ने जिज्ञासु होकर फिर पूछा- गुरूजी! सनातन धर्म में मूर्ति को प्रतिष्ठित करके उनकी पूजा की जाती है। मूर्तियाँ भगवान द्वारा नहीं बनाई जाती, उन्हें तो शिल्पकार अपनी कल्पना के अनुरूप ही बनाता है। फिर हम पत्थर को भगवान कैसे मान सकते हैं। पत्थर तो पत्थर ही है, न वह मूर्ति हिलती है न बोलती है। गुरूजी ने कहा- इसका मतलब यह है कि मूर्ति पूजा के विषय में तुम्हारा अध्ययन गंभीर नहीं है। इसलिए अज्ञान के कारण तुम सबने यह बातें कहीं हैं, मूर्ति पूजा के संबंध में, अन्यथा तुम कभी नहीं कहते। गुरूजी ने बताया- ये जो जगत है वह मूर्तिमय ही तो है। ये सब मनुष्य रूपी मूर्तियाँ भगवान की ही तो हैं। मनुष्य रूपी सभी मूर्तियों में भगवान ही जो विराजमान हैं। भगवान जड़ व चेतन रूप में स्वयं भिन्न-२ दिखलाई देते हैं। किन्तु तुम लोग अपनी आँखों से जड़ वस्तु में केवल जड़ता का ही दर्शन करते हो, मूर्ति में जो चेतन रूप है उसे नहीं देखते।

सब जग ईश्वर रूप है, भला बुरा नहीं कोई।
जैसी जिसकी भावना, तैसा ही फल होय।।

पत्थर की मूर्ति में ही प्राण-प्रतिष्ठा होने से वही पत्थर की मूर्ति चेतन हो जाती है।

उदाहरण- हरिद्वार श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में जिस दिन श्री गोरक्षनाथ जी की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठित होनी थी, उसी दिन तीन साधुओं ने अचानक अपने प्राण त्याग दिये थे, यह तो कुछ ही वर्ष पहले की बात है, एक तरफ मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा की जा रही थी दूसरी तरफ साधुओं ने अपने योगबल से अपने शरीर को पंच तत्व में विलीन कर लिया। गोरक्षनाथ जी की मूर्ति एकदम चेतन है। गोरक्षनाथ जी के कितने ही चमत्कार भक्तों ने देखे हैं। ऐसे ही और भी बहुत से उदाहरण देखने में मिलते हैं जैसे- त्रेता युग में सीता स्वयंबर के समय जब जानकी अपनी सखियों के साथ माँ पार्वती की पूजा करने गई थी, तो वहाँ पुष्प वाटिका में भगवान राम और लक्ष्मण को बगीचे में देखकर बड़ी हर्षित होती हैं। उसी समय वे माँ पार्वती जी से वर माँगती हैं, और प्रार्थना करती हैं कि हे माँ! हे जगदम्बा! आप तो सबके हृदय में निवास करती हैं, मेरो इच्छा को भी आप अच्छी तरह जानती हैं। इतना कहकर सीता माँ के चरणों को पकड़ लेती हैं।

माँ पार्वती सीता के प्रेम को देखकर अत्यधिक प्रसन्न होती हैं और उनके गले से माला खिसक कर नीचे गिर जाती है और मूर्ति मुस्कुराने लगती है। सीता ने श्री राम को वर के रूप में पाने के लिए माँ से प्रार्थना की थी। सीता माला को प्रसाद रूप में ग्रहण कर लेती है। साथ ही साथ पार्वती माँ ने

सीता से कहा कि- हे सीते! हे पुत्री! तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।

सुनु सिय सत्य असीस हमारी।
पूजिहि मन कामना तुम्हारी।।

इस प्रकार सीताजी माँ पार्वती का आशीर्वाद पाकर अपनी सखियों के साथ प्रसन्न होकर महल में जाती हैं।

इसी प्रकार त्रेता युग में भगवान राम जी द्वारा भारत के दक्षिण में 'रामेश्वरम्' शिवलिंग की स्थापना करना और भगवान शिव द्वारा शिवलिंग से प्रकट होकर रामजी को आशीर्वाद देना। कलियुग में भी एक ऐसा ही उदाहरण देखने को मिलता है। तुलसीदास जी के लिए वृन्दावन में भगवान कृष्ण की मूर्ति रामजी के रूप में मुस्कुराने लगती है। अभी कुछ ही वर्ष पहले मठ अस्थल बोहर रोहतक में श्री बाबा मस्तनाथ जी की मूर्ति को एक भक्त ने भगवान शंकर के रूप में देखा हैं। कलकता में स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने काली माँ का मूर्ति में साक्षात् दर्शन किया था। किन्नु हिमाचल प्रदेश में एक भक्त ने माँ का साक्षात् दर्शन किया था, वह एकदम लाल साड़ी, बीस फूट की होगी लगभग, और पॉव में पायल पहने छम-छम करके उनकी तरफ ही चली आ रही थी। उनके देखते ही देखते अन्तर्धान भी हो गई। इसलिए भगवान की मूर्ति के विषय में कभी भी सन्देह नहीं करना चाहिए। गुरूजी समझाने लगे कि देखो- सबकी बुद्धि समान नहीं होती। कोई किसी बात को बहुत शीघ्र ही समझ लेते हैं और किसी को समझने में देर लग जाती है। पूर्व

संस्कारों के अनुसार सबकी बुद्धि का स्तर भिन्न-२ होता है। और उसी के अनुसार अन्तःकरण की शुद्धि भी वैसी ही होती है। यह कलियुग है, सतयुग नहीं। धर्म केवल एक अंग पर आधृत है, अतः युग धर्म के अनुसार ही मूर्ति पूजा, तीर्थ-सेवन, सत्संग स्वाध्याय आदि के साधन का विधान किया गया है।

स्वर साधना

स्वर साधना के विषय में हम कुछ भक्तों की बहुत जिज्ञासा थी। एक दिन संध्या वन्दन के पश्चात् मैंने श्री गुरूजी से पूछा कि- गुरूजी! हम सबकी स्वर साधना के विषय में जानने की बहुत इच्छा है। आप हमें इसके विषय में बताने की कृपा करें।

गुरूजी ने हम सबकी भावना का आदर करते हुए बतलाया- मानव शरीर में कुल बहत्तर हजार नाडियाँ हैं। जिनसे प्राण संचय होता है लेकिन इन सभी नाड़ियों में जो मुख्य नाड़ी हैं वे तीन हैं:-

1- इड़ा नाड़ी या चन्द्र नाड़ी 2- पिंगला नाड़ी या सूर्य नाड़ी 3- सुषुम्ना नाड़ी

यदि दाहिनी नासिका से श्वास चलती हो तो उस समय पिंगला या सूर्य नाड़ी काम कर रही होती है, और जब बायीं नासिका से श्वास भीतर आती है तथा बाहर जाती हो तो चन्द्र अथवा इड़ा नाड़ी काम करती है।

प्रातः काल यदि सूर्य नाड़ी काम कर रही हो तो सबसे पहले दायें पैर को जमीन पर रखकर पूर्व या उत्तर दिशा की और चलना अच्छा रहता है। नाड़ी के अनुसार प्रातःकाल बिस्तर से उठते समय दायें पैर का जमीन पर रखना लाभदायक होता है। चन्द्र नाड़ी काम कर रही हो तो बायें पैर को जमीन पर रखते हुए दक्षिण या पश्चिम दिशा की ओर चलना चाहिए।

प्रातःकाल उठकर अपनी दाहिनी हथेली देखना शुभ होता है। नाड़ी के अनुसार हथेली को चेहरे से छूना बड़ा ही शुभ है। यदि सूर्य नाड़ी काम कर रही हो तो दायीं हथेली को चेहरे पर घुमाना चाहिये।

रविवार, मंगलवार तथा शनिवार ये तीन दिन सूर्य नाड़ी के लिए हैं। सोमवार, बुद्धवार, गुरूवार तथा शुक्रवार चन्द्र नाड़ी के लिए हैं। सुषुम्ना के समय कोई भी प्रश्न पूछने से सफलता नहीं मिलती।

गुरूजी ने आगे बताया कि हर ढाई घड़ी पर अथवा हर घंटे के पश्चात् इड़ा तथा पिंगला नाड़ी में परिवर्तन होता रहता है।

सुषुम्ना के समय ईश्वर का नाम लेना चाहिये।

इड़ा नाड़ी के समय पवित्र कार्य करने चाहिये। सूर्य नाड़ी के समय भोजन करना चाहिये। इड़ा सभी अंगों में अमृत संचार करती है।

चन्द्र नाड़ी के समय लम्बी यात्रा, तीर्थ यात्रा का समय निकालना चाहिए। मूर्ति उद्घाटन करना चाहिये। नये घर में प्रवेश करना चाहिए। गुरू पूजा ईश्वर चिंतन अथवा अध्ययन करना चाहिए। सूर्य नाड़ी के समय व्यायाम करना भी ठीक है।

कुंभ मेले में साधु-महात्माओं द्वारा श्री गुरूजी का स्वागत

गुरूजी अपनी शिष्य मंडली के साथ सदैव कुंभ मेले में जाते रहते हैं। २२ जनवरी सन् २००१ प्रयागराज कुंभ पर्व स्नान के लिए भी गुरूजी अपनी शिष्य मंडली के साथ पधारे। वहाँ पहुँचने पर गुरूजी का भव्य स्वागत हुआ। गुजरात, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, बंगलौर, उत्तरप्रदेश, मद्रास यहाँ तक कि देश-विदेश से भी महात्मा पधारे हुए थे।

देश-विदेश से श्रद्धालु तो पुण्य लाभ के लिए आते ही हैं। साथ ही साथ इस भारत भूमि के हर प्रदेश से एक विशाल जन समुदाय एकत्रित होता है। हर सम्प्रदाय के संतों का संगम इस त्रिवेणी के पावन तट पर होता है। समूचा वातावरण विभिन्न ध्वजा पताकाओं से आच्छादित होता है। कहीं धार्मिक प्रवचन, कहीं कथा-वार्तायें, कहीं उपदेशों का एक अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। स्नान के लिए सभी हर-२ महादेव के नाद के साथ निकलते हैं।

अगले दिन सभी भक्तों ने मिलकर गुरूजी से पूछा कि

कुंभ मेले में हमें क्या करना है। गुरूजी ने बताया संगम में स्नान करो, जितने भी साधु महात्मा हैं उनको आदेश नमस्कार करो, ज्यादा से ज्यादा महात्माओं के दर्शन करो, पता नहीं किसको, किस वेष में भगवान के दर्शन हो जाये। मेले में घुमो, शोभा बढ़ाओ इत्यादि।

कुंभ पर्व से कुछ ही दिन पहले किसी ज्योतिषी ने गुरूजी को बताया कि- आपको कुंभ में भगवान के दर्शन होगें। चाहे किसी भी रूप में दर्शन हों, होगें अवश्य। उस ज्योतिषी ने यह भी बताया कि वैसे तो आपको ग्यारह बार भगवान के दर्शन हो चुके हैं, किन्तु आपको पाँच या छः बार के ही दर्शन याद हैं।२४ जनवरी सन् २००१ रात्रि के दस बजकर पैंतालीस मिनट पर गुरूजी अपने पाण्डाल में अकेले बैठे हुए जप कर रहे थे। कड़कड़ाती ठंड में उसी समय गुरूजी के पाण्डाल में अकस्मात् ही दो तेजस्वी साधुओं ने प्रवेश किया। उन दोनों को किसी ने भी मुख्य द्वार से आते हुए नहीं देखा, क्योंकि द्वार पर हर समय एक सेवादार (चौकीदार) रहता था। पाण्डाल में प्रवेश करते ही उन दोनों ने गुरूजी को प्रणाम किया। इतनी रात में उन दोनों साधुओं को आया देखकर गुरूजी कुछ क्षण के लिए आश्चर्य में पड़ गये। क्योंकि महंतों के पाण्डाल में बिना आज्ञा प्रवेश करना वर्जित होता है। अचानक दो साधुओं का इस तरह से प्रकट होना कोई कम अचम्भे की बात नहीं थी।

उन दोनों साधुओं ने शरीर पर केवल एक-२ पतला कपड़ा ही लपेटा हुआ था। उन्होंने कहा कि हम दोनों ज्ञानगंज

से आये हैं। हमारे गुरू ने हमें आपसे कम्बल लाने के लिए भेजा है। उन दोनों महात्माओं के चेहरे साधना के तेज से चमक रहे थे।

गुरूजी ने उन्हें बैठने के लिए आसन दिये, भंडारी को बुलाकर दोनों महात्माओं के लिए भोजन परोसने के लिए कहा।

उसी समय उन दोनों महात्माओं ने कहा- हमें भोजन की इच्छा नहीं है। थोड़ी चाय हो तो ठीक रहेगी। गुरूजी ने चाय मंगवायी। चाय पीते-२ ही वह दोनों गुरूजी से बहुत देर तक साधना के विषय में चर्चा करते रहे। तत्पश्चात् उन्होंने ज्ञानगंज के विषय में भी बहुत सी जानकारी दी। वह दोनों संस्कृत भाषा का प्रयोग अधिक कर रहे थे।

कुछ देर के पश्चात् गुरूजी ने योगी आनंदनाथ जी (मन्त्री जी) से दो-२ कम्बल मंगाये, और उन दोनों साधुओं को भेंट देने लगे। दोनों ने कम्बल लेने से इंकार कर दिया। कहने लगे- इच्छाओं को बढ़ाने से कोई लाभ नहीं है, हम तो केवल एक ही कम्बल ग्रहण करेंगे। हमारे गुरूदेव ने केवल एक ही कम्बल हमसे मंगवाया था। कम्बल ग्रहण करने के उपरांत उन्होंने गुरूजी से कहा कि अब हमें जाने की आज्ञा दीजिए। गुरूजी ने उन्हें आज्ञा दी, प्रणाम करके वे दोनों गुरूजी के पाण्डाल से बाहर आये। उनके बाहर आते ही गुरूजी स्वयं भी पाण्डाल से बाहर आये, लेकिन पलभर में ही वह दोनों महात्मा न जाने कहाँ अन्तर्ध्यान हो गये। गुरूजी ने उसी समय कई कर्मचारियों को उन्हें ढूँढने भेजा, लेकिन उनका कहीं भी पता नहीं चला उस समय लगभग ११.४५ मिनट रात्रि का समय था।

गुरूजी ने बताया उनकी उम्र तीस पैंतीस वर्ष के बीच की ही थी।

महाकुंभ पर्व

महाकुंभ पर्व तीनों लोकों में महान अमृतमय पर्व है। महाकुंभ पर्व का पौराणिक आधार यह है-

जब क्षीर सागर में विष्णु अवतार कच्छप पीठ पर देव और दानवों ने मन्दराचल पर्वत को, वासुकी नाग की रस्सी बनाकर मन्थन किया तो वहाँ से चौदह रत्न, विष-वारूणि, ऐरावत हाथी, पुष्पक विमान, उच्चैश्रवा, लक्ष्मी, रम्भा, चन्द्रमा, कौस्तुभ मणि, कामधेनु, विश्वकर्मा, धन्वतारि तथा अन्त में अमृत कुंभ उत्पन्न हुआ। अमृत प्राप्त करने के लिए देवताओं और दानवों में विवाद छिड़ गया। उस समय धन्वतारि से इन्द्र पुत्र जयन्त अमृत कुंभ लेकर भागे। दानवों ने जयन्त का पीछा किया। बारह दिन (मानवों के बारह साल) जयन्त अमृत कुंभ लेकर भागते रहे। इस अवधि में जयंत ने बारह स्थानों पर कुंभ रखा। इन्हीं बारह स्थानों पर कुभ होता है। चार कुंभ पर्व तो भारत में (मृत्यु लोक) होते हैं, और आठ कुंभ पर्व स्वर्ग लोक में होते हैं जो कि अज्ञात हैं।

शास्त्र के आधार पर महाकुंभ पर्व

प्राकृतिक दृष्टि से देवताओं के गुरू बृहस्पति, सूर्य, चन्द्र तीनों गृह विशिष्ट स्थिति में कुंभ पर्व पर अनुकूल योग करते हैं। जब हरिद्वार में महाकुंभ होता है, तब बृहस्पति कुंभ राशि में और सूर्य मेष राशि में योग करते हैं। जब प्रयाग में महाकुंभ होता है जब

प्रयाग में महाकुंभ होता है । तब बृहस्पति वृष और सूर्य मकर राशि में अनुकूल योग करते हैं। जब उज्जैन में महाकुंभ होता है, तब बृहस्पति सिंह और चन्द्र सूर्य मेष राशि में भ्रमण करते हैं। नासिक कुंभ पर्व में (सिंह पर्व) बृहस्पति चन्द्र सूर्य तीनों सिंह योग में होते हैं।

नाथ सिद्ध योगियों का महाकुंभ पर्व

नाथ सिद्ध योगी योग द्वारा अपने घट में योग का मन्थन तथा गुरू का चिंतन करके अमृत पान करते हैं। जिससे वे अमृतत्व को प्राप्त होते हैं।

योगी महापुरूष अपने शरीर को ही समस्त तीर्थों का निवास मानते हैं। जहाँ षट चक्र को योग द्वारा कुंडलिनी जाग्रत करके तथा षट्चक्र भेदन करके जब ब्रह्मरन्ध्र सहस्रार में प्रवेश करती है, अर्थात् नवग्रह रूपी द्वार खोलकर दसवें द्वार में प्रविष्ट होती है, तब वहाँ के अमृत कुंभ से अमृत का पान करते हैं, और फिर अमृतत्व को प्राप्त करते हैं।

नासिक (त्र्यम्बक) कुंभ पर्व

पौराणिक कथा- त्रेता युग तथा द्वापर युग में भगवान परशुराम जी शस्त्र विद्या में श्रेष्ठ थे। एक बार श्री राम जी ने उन्हें निस्तेज किया था। उनको अपनी शस्त्र विद्या पर बहुत अभिमान था। उन्होंने इक्कीस बार क्षत्रियों से युद्ध करके उन्हें पृथ्वी से नष्ट किया था। कालान्तर में ब्राह्मण होने की वजह से उनमें सात्विक भाव जाग्रत हुए और वे पश्चाताप की अग्नि में जलने लगे। वे अपनी क्रूर वृत्ति पर अत्यंत क्षोभ करने लगे।

पाप से मुक्ति पाने के लिए वे तीर्थ, स्नान, दान, व्रत इत्यादि धार्मिक तत्वों का सहारा लेने लगे। किन्तु उन्हें इन सबसे शान्ति नहीं मिली।

एक बार वे यात्रा करते-२ गोदावरी के उद्गम स्थान तथा ज्योतिलिंग त्र्यम्बकेश्वर में पधारे। यहाँ कौलागढ़ पर्वत, गुफायें, जलाशय, अनुपान शीला, गंगाद्वार, सिद्ध योगी मत्स्येन्द्रनाथ तपोगुफा, ब्रह्मगिरि कुशावर्त इत्यादि पवित्र भूमि में आकर अत्यंत प्रसन्न हुए। यहाँ आकर परशुराम जी को शान्ति तथा आत्म तृप्ति मिली। यहाँ पर परशुराम जी ने रोटक व्रत किया। व्रत करने के पश्चात् भगवान आदिनाथ जी ने गुरू गोरक्षनाथ जी के रूप में उनको दर्शन दिये।

नाथ सिद्ध योगियों का त्र्यम्बक महाकुंभ पर्व

त्र्यम्बक महाकुंभ पर्व पर सभी राज्यों, देश-विदेश से नाथ सिद्ध योगी तथा भेष बारह पंथ योगी महासभा के अधिकारी महात्मा त्र्यम्बक क्षेत्र में एकत्रित होते हैं। योगी सिद्ध कुंभ पर्व में पात्र-पूजन प्रधान मानते हैं। नाथ सिद्ध योगियों को पात्र देवता पूजन में सम्मिलित होना अत्यंत आवश्यक होता है।

हरिद्वार महा कुंभ पर्व

हरिद्वार पुरातन काल से देवी-देवताओं, ऋषियों-मुनियों तथा साधु-संन्यासियों की बसायी हुई नगरी है। हरिद्वार बिल्व पर्वत तथा नील पर्वत के बीच बसा हुआ अनन्य धार्मिक क्षेत्र है। जो गंगाद्वार, मायापुरी, कुंभ नगरी, भगवापुर, तीर्थनगरी इत्यादि नामों से प्रसिद्ध है।

पौराणिक पहचान

हरिद्वार कनखल में एक बार राजा दक्ष ने यज्ञ करवाया। उस यज्ञ में उन्होंने अपनी पुत्री सती एवं जामाता भगवान शंकर को नहीं बुलाया। आमंत्रण के बिना ही सती अपने पिता के घर यज्ञ में उपस्थित होने के लिए चली गई। किन्तु वहाँ पर अपने पति का अपमान देखकर अग्नि कुंड में उन ने अपने शरीर का त्याग कर दिया। इससे शिवगण अत्यंत क्रोधित हुए, और यज्ञ को विध्वंस कर दिया। दक्ष का शीश काटकर यज्ञ कुंड में फेंक दिया गया।

भगवान शंकर को बहुत क्रोध आया किन्तु दक्ष के क्षमा याचना करने पर भगवान शंकर ने दक्ष को बकरे का सिर लगाकर उन्हें क्षमा कर दिया। शंकर भगवान क्रोध में आकर सती का शव कंधे पर उठाकर वहाँ से चल दिये। भगवान शंकर के क्रोध से बचने के लिए भगवान विष्णु ने अपना सुदर्शन चक्र छोड़कर शव के टुकड़े-टुकड़े कर बिखेर दिये। जहाँ-२ पर माता सती के शव के टुकड़े गिरे, वहीं-२ पर सिद्ध पीठ बने। हरिद्वार में माता सती का हृदय गिरा, जो कि हरिद्वार के बीचों-बीच मायादेवी के मन्दिर के रूप में प्रतिष्ठित है। पश्चाताप करने के लिए दक्ष ने यहीं पर तपस्या की थी। जो कि दक्षेश्वर महादेव के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

नाथ सिद्धों के प्रति हरिद्वार मान्यता

सिद्ध योगी भर्तृहरिनाथ जी एवं सिद्ध योगी गोपीचन्दनाथ जी ने अपने अवन्तिका राज्य को छोड़कर जीवन का उत्तरार्द्ध

हरिद्धार में ही बिताया । यहीं पर भर्तृहरिनाथ जी ने श्रृंगार-नीति-वैराग्य शतक जैसे ग्रन्थों की रचना की । वहीं भर्तृहरि गुफा गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर के नाम से आज भी प्रचलित है इसी गुफा में भर्तृहरिनाथ जी ने घोर तपस्या की थी यहीं पर गोरक्षनाथ जी ने उन्हें शिव-स्वरूप के रूप में दर्शन देकर उपदेश दिया था। इसी गुफा में श्री भर्तृहरिनाथ जी ने शिवलिंग स्थापित कर तपस्या की और नाथ पन्थ का ध्वज फहराया।

भर्तृहरिनाथ जी ने राजा विक्रमादित्य को राज सिंहासन पर बैठाया। एक बार जब राजा विक्रमादित्य हरिद्वार स्नान करने व दर्शन मेला हेतु आये, तब सिद्ध योगी भर्तृहरिनाथ जी ने उन्हें गंगा का महात्म्य सुनाकर उन्हें गंगा स्नान का भी महत्व बतलाया। गंगा स्नान का महात्म्य सुनकर विक्रमादित्य ने गंगा तट पर भर्तृहरि की पौड़ियों का निर्माण कराया। कालान्तर में वह 'हर की पौड़ी' के नाम से प्रचलित हो गई। पहले इन्हें भर्तृहरि की पौड़ियाँ कहा जाता था। गुरू गोरक्षनाथ जी ने गोपीचंद एवं भर्तृहरिनाथ जी को यहीं इसी गुफा में वरदान दिया था कि - जब तक धरती है, तब तक गोपीचंद एवं भर्तृहरिनाथ का नाम अजर-अमर रहेगा।

जिस गुफा में गुरू गोरक्षनाथ जी ने गोपीचंद एवं भर्तृहरि को दर्शन दिये थे, अब वहाँ बहुत ही विशाल एवं भव्य मन्दिर नाथ योगियों द्वारा बनवाया गया है। यहीं अखिल भारत वर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ (योगी- महासभा) का प्रधान कार्यालय है।

उज्जैन महाकुंभ पर्व

उज्जैन प्राचीन समय में अवन्तिका नगरी के नाम से विख्यात थी। सप्तपुरियों में अवन्तिका एक पुरी क्षेत्र है। जनश्रुति के अनुसार अवन्तिका नगरी समस्त पृथ्वी की नाभि मानी जाती है।

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग यहीं पर स्थापित है। यहीं पर रूद्र सागर के निकट हर सिद्धि देवी की सिद्ध पीठ है। जो इक्यावन सिद्ध शक्ति पीठ में से एक है। यहाँ सती का कुर्पर (कुहनी) गिरी थी। राजा विक्रमादित्य इसी देवी को अपनी आराध्य देवी मानते थे। देवी का मूल स्थान सौराष्ट्र द्वारिका समुद्र की खाड़ी में पर्वत पर है। वहीं से प्रसन्न करके राजा विक्रमादित्य देवी को यहाँ लाये थे।

द्वापर युग में भगवान कृष्ण, बलराम, और सुदामा सांदीपन ऋषि के आश्रम में यहीं पर रहे थे। श्री कृष्ण ने सोलह कला और चौंसठ विद्यायें यहीं पर सीखी थी। भगवान विष्णु की देह से उत्पन्न क्षिप्रा नदी यहीं बहती है।

एक बार भगवान विष्णु ने भगवान शिव को जल भिक्षा मांगने पर अपनी तर्जनी अंगुली दिखला दी। भगवान शिव ने क्रोध में आकर उनकी तर्जनी अंगुली को ही काट डाला, और रक्त धारा के नीचे अपना कपाल लगा दिया। उसके पश्चात् भी रक्त बहता रहा। तभी से इसे क्षिप्रा नदी कहते हैं।

इसी नगरी में भक्त प्रहलाद ने स्नान करके हरि के प्रत्यक्ष दर्शन किये थे। यहीं पर चित्रगुप्त ने भी महान यज्ञ किया था। इसलिए इसे चित्रगुप्त तीर्थ भी कहते हैं। बौद्ध धर्म की पाली भाषा का जन्म भी यहीं हुआ। यहाँ जैन धर्म के संस्थापक महावीर ने चौबीस तीर्थ करके श्मशान में तपस्या की थी। तभी से अवन्तिका को उज्जैन का नाम मिला। नवग्रहों में मंगल ग्रह की जन्म भूमि भी यहीं है।

नाथ सिद्धों के प्रति उज्जैन

योगी बनने से पूर्व श्री भर्तृहरिनाथ जी अवन्तिका नगरी के राजा थे। एक बार राजा भर्तृहरि जंगल में शिकार करने गये, हरिण का शिकार करते हुए राजा भर्तृहरि की भेंट सिद्ध योगी गोरक्षनाथ जी से हो गई। हरिण भर्तृहरि जी के निशाने से मर गया। उसी समय योगी गोरक्षनाथ जी ने अपने योगबल से मृत हरिण को जीवित कर दिया और राजा से कहा- हे राजन! जो जीवन दान देता है, उसी प्राणी को किसी के मारने का अधिकार है, अन्यथा किसी को नहीं। राजा भर्तृहरि सिद्ध योगी गोरक्षनाथ जी की इस प्रकार से बात सुनकर अत्यंत प्रभावित हुए, और उन्हीं से दीक्षित हुए। उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर आज भी वह गुफा विद्यमान है, जहाँ भर्तृहरिजी ने तपस्या की थी। इस गुफा में बहुत संकुचित मार्ग से जाना पड़ता है। कहते हैं यहीं से चारों धाम जाने का रास्ता भी है जो कि बंद कर दिया गया है। गुफा के निकट ही कुछ ऊपर चलकर सिद्ध योगी गुरू गोरक्षनाथ जी का भव्य मन्दिर है।

प्रयाग राज महाकुंभ पर्व

प्रयागराज समस्त तीर्थों का राजा है, इसलिए प्रयागराज को तीर्थ-राज कहते हैं। यहीं पर सृष्टि के रचयिता श्री ब्रह्माजी का प्रकट यज्ञ सम्पन्न हुआ था। तभी से इसका नाम तीर्थराज है। प्रयागराज में स्नान करने से समस्त पापों से मुक्ति मिलती है। इस क्षेत्र में श्री कृष्ण भगवान के बारह रूप विराजमान हैं इसलिए इसे वैष्णव पीठ भी कहते हैं। इस क्षेत्र के दर्शन मात्र से ही महात्माओं को सिद्धि प्राप्त हो जाती है। बनवास में जाते समय श्री राम, लक्ष्मण व सीताजी ने भी यहाँ स्नान किया था।

नाथ सिद्धों का महाकुंभ पर्व

इस पवित्र भूमि में नाथ सिद्धों का कुंभ पर्व स्नान होता है। यहाँ असंख्य योगी, सिद्ध महात्मा, एवं संत एकत्रित होते हैं। सबकी पूजन विधि, निवास, भोजन इत्यादि का प्रबंध योगी महासभा को ही करना पड़ता है।

योगी महासभा के अध्यक्ष की अनुमति से प्रधानमंत्री गंगा-पट्टी पर जमीन लेते हैं। जितने एकड़ जमीन ली जाती है, उसी के बीचों-बीच एक सुन्दर व आकर्षक चबूतरा बनाया जाता है। उस चबूतरे पर ध्वजा रोहण किया जाता है। एक तरफ श्री नाथ जी का धूना लगाया जाता है। ध्वजा चबूतरे के सम्मुख ही सत्संग पंडाल बनाया जाता है। ध्वजा चबूतरे के कुछ ही दूरी पर मगर सामने भंडार गृह बनाया जाता है।

ध्वजा रोहण पूजा

प्रयागराज में पात्र पूजा के स्थान पर श्री नाथ जी की ध्वजा पूजा की विधि की परंपरा है। चबूतरे के मध्य श्री गुरू गोरक्षनाथ जी की मूर्ति या पादुका स्थापन की परंपरा है। मूर्ति के समक्ष पूजा साहित्य इत्यादि रखते हैं। पूजा का समस्त कार्य पुजारी एवं पंरव मिलकर करते हैं। मानधारियों तथा १२-१८ के महंत योगियों के स्पर्श से श्री नाथ जी की स्थापना तथा श्री गणेश जी की स्थापना की जाती है।

श्री नाथ जी का ध्वज भगवा रंग का, बहुत बड़ा बनाया जाता है। ध्वजा पर 'ॐ शिव गोरक्ष योगी' लिखते हैं। ध्वजारोहण के समय शंखध्वनि, नागफनी, ध्वनि के साथ जय-जयकार की घोषणा की जाती है। उसके पश्चात् रोट का भोग लगाया जाता है। आरती पूजा के पश्चात् मानधारियों को तथा अन्य सिद्धों को आदेश नमस्कार किया जाता है।

कुंभ मेले में आये हुए योगीगण दिन में कथा, कीर्तन, प्रवचन आदि करते हैं। दर्शनार्थी भक्तगण सिद्ध योगियों के दर्शनों से अपने को धन्य समझते हैं। चारों ओर महात्माओं को देखकर ऐसा लगता है कि यह सारी भूमि ही ऋषि-मुनियों की भूमि है।

योगी महासभा कार्यकारिणी समिति पदाधिकारियों का चुनाव

योगी महासभा कार्यकारिणी समिति पदाधिकारियों का चुनाव महाकुंभ पर्व या अर्द्धकुंभ हरिद्वार या प्रयाग में होने वाले महासभा के अधिवेशन में होता है। (इसका पूरा विवरण आप नाथ रहस्य श्री बाबा विलास नाथ जी द्वारा लिखित पुस्तक में पढ़ सकते हैं)

श्री गुरूजी का आत्म परिचय

श्री गुरूजी ने बताया कि जब साधना-भजन करने के पश्चात् मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ, तो हृदय में पूर्ण आनंद ही आनंद हो गया। कुछ ही समय के पश्चात् एक दिन मेरे मन में विचार आया कि इस आनंद को संपूर्ण तरीके से भक्तों में भी वितरित करना चाहिए। गुरूजी कहते हैं कि मेरे सामने जो भी भक्त आता है, चाहे वह स्त्री हो या पुरूष हो, मैं बहुत प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद देता हूँ। सबको आनंद प्रदान करना मुझे बहुत अच्छा लगता है । जब सबको मैं खुश देखता हूँ तो खुद भी बहुत आत्मविभोर हो जाता हूँ।

तृप्ति लोगों के प्राणों में शांति की मधुर धारा उड़ेलना ही मेरा उद्देश्य है। मेरे हृदय से हमेशा यही बात निकलती है, कि जो भी दुःखी मनुष्य हो, वह सब मेरे पास चले आओ। अपने सारे दुःख लेकर आओ और सुख लेकर चले जाओ। मैं सबके दुःखों का भार हरण करने के लिए तैयार हूँ।

श्री गुरूजी ने अपनी अमृतमयी वाणी में कहा कि जब तुम लोगों ने मुझे अपना गुरू बनाया है, तो मैं भी चाहे वह कोई भी सच्चा, झूठा, पाखंडी या विश्वासघाती मेरे पास आयेगा, मैं उसको भी खाली हाथ नहीं लौटाऊँगा। उन्हें भी मैं कम से कम शांति तो अवश्य प्रदान करूँगा।

मैं कोई भी निश्चित कार्य लेकर इस संसार में नहीं आया। ये सब आश्रम, मन्दिर, विद्यालय, मठ इत्यादि गुरू कृपा से अपने आप ही बनते ही जा रहे हैं। मुझे यह नहीं मालूम कि यह सब बनाने के लिए धनराशि कहाँ से आती है। विद्यालय चलेगा या नहीं, यह सब बाबाजी का काम है। मुझे तो केवल कर्म करना है।

मठ, विद्यालय, मन्दिर, आश्रम, युनिवर्सिटी तो सब गुरू कृपा से बन गये परन्तु मैं जो गुरू बना हूँ, वह तो सब श्री बाबा मस्तनाथ जी की ही इच्छा है। मेरा तो सारा जीवन, सारे कर्म उन्हीं के श्री चरणों में समर्पित हैं। वह जो भी करेंगे अच्छा हो या बुरा मैं उसे सहर्ष स्वीकार करने को हर समय तैयार रहता हूँ।

श्री गुरूजी पुरस्कार से सम्मानित अर्न्तराष्ट्रीय गोल्ड स्टार सहस्राब्दि पुरस्कार

पूर्वी अन्तर्राष्ट्रीय समिति की बैठक में श्री गुरूजी को सन् २०००-२००१ में इंडो-नेपाल संधि एवं आर्थिक सहयोग के लिए नेपाल में पुरस्कृत किया गया।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी सद्भावना पुरस्कार

पूज्य पाद गुरूजी द्वारा संस्थापित एवं संचालित बहुजनोपयोगी कार्यों का वैसे तो मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, किन्तु आपके प्रयासों के परिणाम स्वरूप आज जो रूप श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय का है वह देखते ही बनता है। जिसमें तमाम पढ़े-लिखे लोगों को व्यवसाय मिला हुआ है। अनेको छात्र एवं छात्रायें विभिन्न कालेजों से डिग्रियाँ ग्रहण कर सरकारी-अर्द्ध सरकारी तथा स्वरोजगार को स्थापित कर अपनी जीविका चला रहे हैं।

इन सभी कार्यों से प्रभावित होकर स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गाँधी के ८३वें जन्म दिवस पर श्री गुरूजी को राष्ट्र की अद्वितीय, निःस्वार्थ सेवा के लिए श्रीमती इंदिरा गाँधी सद्भावना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कुछ दिव्य अनुभूतियाँ एवं संस्मरण

पुजारी जी, मठ अस्थल बोहर

श्री पुजारी जी (हजारीनाथ जी) मठ अस्थल बोहर में बाबा मस्तनाथ मन्दिर में चालीस वर्षों से विधि-विधान से पूजा - अर्चना करते आ रहे हैं। पुजारी जी वर्तमान मठाधीश्वर महंत श्री चाँदनाथ जी योगी के चीरा गुरू हैं। श्री गुरूजी के विषय में पूछने से उन्होंने बताया कि गद्दी के महंत श्री बाबा मस्तनाथ स्वरूप होते हैं। उनको हम सब योगीगण श्री बाबा मस्तनाथ स्वरूप ही मानते हैं। वह कहने लगे कि श्री महंत जी के विषय

में कुछ भी बताना तो श्री बाबा मस्तनाथ के विषय में ही बताना होगा। इसलिए इनके विषय में कुछ भी कहना मेरे लिए अत्यंत कठिन होगा। वैसे भी गद्दी पर विराजमान सिद्धों के चमत्कार एवं सिद्धियाँ तो अवर्णनीय हैं। महंत जी के विषय में मेरी जो भावना, श्रद्धा, भक्ति व विश्वास है उसको बताना मेरे लिए असंभव है। बहुत आग्रह करने पर यह कहने लगे कि-

श्री महंत जी विद्वत्ता के साथ-२ शिक्षाप्रिय, अगर दूसरे शब्दों में कहें तो शिक्षा-जगत के युगदृष्टा हैं। वह समाज सुधारक होने के साथ-२ धर्म-परायण, अनुसानप्रिय, कर्तव्य-परायण, गुरू प्रिय, गुरू-सेवी, गुरू आज्ञाकारी एवं उच्च कोटि के साधक हैं। मठ, मन्दिर, स्कूल, कालेजों का जितना भी कार्य है, वह सब श्री महंत जी बाबा मस्तनाथ जी व अपने पूज्य गुरूदेव की प्रेरणा से ही करते हैं। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि इतनी विस्तृत संस्था का कार्य कैसे चल रहा है, यह तो श्री बाबा मस्तनाथ ही जानते हैं क्योंकि उनका ही वरदान है कि 'जो खोलेंगा, उसकी खोलूँगा, और जो बंद करेगा, उसकी बंद करूँगा।' मतलब एकदम साफ है, कि इस गद्दी पर बैठने वाले महंत जितने अधिक धर्म-परायण कार्य करेंगे, उसको मैं मुक्त हाथ से लक्ष्मी प्रदान करूँगा, और जो ठीक से कार्य नहीं करेगा उसकी आय के स्रोत स्वयं ही बंद हो जायेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज तक जितने भी महंत इस गद्दी पर विराजित हुए हैं उनको श्री बाबाजी ने खुले हाथ से ही लक्ष्मी प्रदान की है।

श्री महंत जी खुले हृदय से धर्म-परायण और परोपकार परायण कार्यों में जुटे हुए हैं। आगे बाबा की मर्जी। होगा वही जो बाबा रचि राखा।

विनय सचदेवा, आशा सचदेवा
देहरादून

श्री विनय सचदेवा एवं श्रीमती आशा सचदेवा देहरादून निवासी हैं। लेकिन दिल्ली में सरकारी नौकरी करते हैं। श्री बाबा मस्तनाथ जी एवं श्री गुरूजी में इनकी अटूट श्रद्धा है। यह दोनों पति-पत्नी कहते हैं कि हमारे गुरू श्री चाँदनाथ जी महाराज साक्षात् बाबा मस्तनाथ स्वरूप हैं। दोनों ही हर समय गुरू चिंतन में लीन रहते हैं। इन्होंने श्री गुरूजी की फोटों में ही उनके चेहरे पर इतना तेज देखा, कि उसी दिन से इनको अपना गुरू स्वीकार कर लिया। हर काम श्री गुरूजी का नाम लेकर ही करती हैं। उन्होंने अपने साथ हुई घटना का वर्णन करते हुए बताया-

लगभग दो वर्ष पहले की बात है, कहने लगी कि हमारा बेटा मोनू उन दिनों बहुत अधिक बीमार चल रहा था। बहुत से कुशल चिकित्सकों से उसका इलाज कराया, लेकिन उसे कुछ भी लाभ नहीं हुआ। एक दिन उन्होंने फोन पर ही गुरूजी से इस विषय में बातचीत की। गुरूजी ने टेलिफोन पर ही उनको आशीर्वाद दिया, कहने लगे घबराओं नहीं, आपका बेटा हर हालत में ठीक होगा। दवा नहीं तो दुआ काम करेगी, आशीर्वाद काम करेगा। आप बिल्कुल निश्चिंत रहे। आशीर्वाद सत्य

साबित हुआ, उनका बेटा बहुत जल्द ही ठीक हो गया।

गुरूजी के विषय में उन्होंने बताया कि हम अभी इतने बड़े नहीं हुए कि हम गुरूजी के विषय में कुछ बता सकें, उनके प्रति हमारी जो श्रद्धा और विश्वास है उसका वर्णन करना तो कठिन है। यह तो केवल हम स्वयं ही अनुभव कर सकते हैं। हमारे पूज्य गुरूजी एक उच्च कोटि के महापुरूष हैं। उन्होंने बताया कि अगस्त २००१ का दिन मेरे जीवन का बहुत ही शुभ दिन था, उस दिन मैंने श्री गुरूजी के प्रत्यक्ष दर्शन किए।

दर्शन शर्मा
गुड़गाँव हरियाणा

इस पवित्र भारत भूमि में समय-२ पर महान आत्माओं का अवतरण होता आया है। जब कभी भी अधर्म, अनीति, अन्धविश्वास बढ़ता है, तभी दिव्य विभूतियों ने धर्म की रक्षा के लिए अपने आप को मनुष्य रूप में अवतरित किया है। श्री गुरूजी उन्हीं दिव्य विभूतियों में से एक हैं।

भारतीय संस्कृति में गुरूओं का स्थान समाज में सर्वोच्च माना गया है। गुरूजी मात्र धर्माचार्य या मठाधीश ही नहीं है, अपितु वे एक कर्मठ जनसेवी भी हैं। पूज्य गुरूजी निर्भीक, स्पष्टवादी एवं दृढ़निश्चयी हैं। उनका हृदय कोमल, विशाल और अपनत्व की भावना से भरा हुआ है।

गुरू चरणों में जाते हुए मुझे सत्तरह वर्ष हो गए हैं। अतः उनका मेरे जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा है। एक पूज्य

स्थान के पूज्य महंत होते हुए भी गुरूजी महंत के सुख-वैभव से दूर ही रहते हैं। सादा रहना, और सादे खाने में ही आपको विश्वास है।

गुरूजी ने सर्वप्रथम शिक्षा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। ऐसे शिक्षा-प्रेमी महात्मा का अभिनंदन कौन नहीं करेगा, अतः सभी उनका हृदय से अभिनंदन करते हैं। शिक्षा संबंधित कार्य करने से तो उनके हृदय की विशालता ही प्रकट होती है।

गुरूजी में वह सब गुण विद्यमान हैं, जो एक सच्चे महात्मा में होने चाहिए। वह आगे कहने लगी- कि गुरू ही हमारे अंदर वह प्रकाश उत्पन्न करते हैं, जिसकी रोशनी में हम सब सन्मार्ग पर चलते हैं। गुरू चरण-शरण में आकर ही हमें सीधे और सुखी जीवन जीने का ज्ञान होता है।

गुरूजी की वाणी प्रेम और मिठास से परिपूर्ण है। जिसे सुनकर सब भक्तगण भाव-विभोर हो जाते हैं। उनकी वाणी मधुर, करूणामयी होते हुए भी अति जांशपूर्ण है।

श्रीमती शर्मा आगे बताने लगी कि अगर मुझे कभी भगवान और गुरू दोनों एक साथ मिल जायें तो मैं बेझिझक पहले श्री गुरू के श्री चरण स्पर्श करूँगी, तत्पश्चात् भगवान के श्री चरण स्पर्श करूँगी।

गुरू माता गुरू हैं पिता, गुरू स्वयं भगवान।
ईश्वर आज्ञा ढाल दूँ गुरू आज्ञा को मान।।

गुरू ही हमारे अंदर के मोह रूपी अंधकार का नाश करते है। गुरू ही हमें भगवान के पास जाने का रास्ता बताते हैं।

श्री गुरू से विमुख होना घोर पाप है। गुरू के सम्मुख कपट भाव कदापि नहीं रखना चाहिये, यह पतन की जड़ है।

शकुन्तला, गोल मार्किट

शकुन्तला दिल्ली रहती है। सरकारी नौकरी करती है। उसने बताया गुरूजी बहुत बड़े साधक है, यह तो उनका चेहरा देखते ही कोई भी बता सकता है। उनके चेहरे से साधना का तेज एकदम झलकता है। वह कहने लगी कि गुरूजी की वाणी बहुत मधुर है, हर बात को बड़े ध्यान से सुनना, फिर बड़े धीरे-धीरे हर बात का उत्तर देना यह उनकी बहुत बड़ी विशेषता है। एक महान महापुरूष में जो गुण होने चाहिए, वह सब गुरूजी में विद्यमान हैं।

श्री बाबा जुगतीनाथ, हथवाला, जींद

श्री बाबा जुगतीनाथ जी ने बताया कि महंत जी से मेरी बहुत घनिष्टता है। किसी भी घनिष्ट व्यक्ति के विषय में बता पाना मेरे लिए संभव नहीं। महंत जी के विषय में एक बात शुरू करते ही पुरानी बातों का मेला सा लग जाता है। समझ में नहीं आता कि क्या बताया जाये और क्या छोड़ा जाये। वही स्थिति

मेरी भी है।

महंत जी मेरे गुरू भाई हैं। मैं उन दिनों को कभी नहीं भूला सकूँगा। लगभग दो वर्ष पहले की बात है, मेरे पेट में बहुत दर्द रहता था। पेट की तकलीफ की वजह से मैं बहुत चिंता ग्रस्त रहने लगा था। मैंने गुरूभाई को अपनी सारी तकलीफ के विषय में बताया। यह सुनते ही उन्होंने कहा कि मैं आपको किसी कुशल चिकित्सक को दिखाऊँगा। रोहतक में सबसे कुशल चिकित्सक को मुझे दिखाया, और मेरी जाँच कराई। उसके पश्चात् मुझे स्वयं चंडीगढ़ पी.जी. आई अस्पताल में लेकर गये। वहाँ जाँच कराने के पश्चात् मुझे कुछ दिनों तक अपने पास ही रखा। जब मेरे स्वास्थ्य में कुछ सुधार हो गया, तो रोहतक मेडिकल कालेज में मेरा पेट का आपरेशन कराया। आपरेशन के पश्चात् गुरू भाई ने अपने पास रखकर ही मेरा बहुत ख्याल रखा। जब तक मैं पूरी तरह से स्वस्थ हुआ, तब तक मैं मठ में ही रहा।

मैं श्री बाबा मस्तनाथ जी से यही कामना करता हूँ कि वह मेरे गुरूभाई की शिक्षा संबंधित, धर्म संबंधित और योग संबंधित हर मनोकामना को पूर्ण करें।

मेरे गुरूभाई एक सच्चे कर्मयोगी हैं। मैं उनके इस लक्ष्य 'योग कर्मषु कौशलम्' से अत्यंत प्रभावित हूँ। अपने अब तक के जीवन में गुरूभाई ने अनेक क्षेत्रों में कार्य किया है, जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिस पर गुरूभाई ने अपनी अमिट छाप न डाली हो। मेरे गुरूभाई ने संन्यासी होते हुए भी

अपनी गतिविधियों को केवल धार्मिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रखा। उनका अटल विश्वास है कि सच्चा मोक्ष केवल एकांत साधना में ही नहीं वरन् जन-२ की सच्ची सेवा में है।

उषा रावत, नैनीताल रामनगर

श्रीमती उषा रावत नैनीताल निवासी हैं। गुरूजी के विषय में पूछने पर बताने लगी कि मुझे गुरूजी की हर बात पर, उनके द्वारा बोले गए हर शब्द पर विश्वास ही नहीं बल्कि अटूट विश्वास है। उनकी मात्र कुछ ही दिन ज्ञानप्रद व अमृततुल्य बातें सुनकर मैं नास्तिक से आस्तिक हो गई हूँ। आगे उन्होंने बताया कि जैसे भवसागर में डूबते को तिनके का सहारा ही बहुत लगता हैं, उसी प्रकार से मुझ अज्ञानी को गुरूजी की अमृततुल्य बातें सुनकर ही बहुत सहारा मिला। मैं तो मोह-ममता में इस प्रकार फँसी हुई थी, कि मुझे किसी की भी खैर-खबर नहीं थी। गुरूजी ने ही मुझे इस मोह-ममता की दुनियाँ से बाहर निकाला है।

मुझे अब मालूम हुआ है कि गुरू ही मानव को सच्चा रास्ता दिखाते हैं, वही उसके सच्चे पथ प्रदर्शक हैं। बल्कि दुनियाँ तो एक भ्रम मात्र हैं।

आगे श्रीमती उषा जी ने बताया कि- गुरू ने मेरी आँखें खोल दी हैं। अज्ञान और ज्ञान का मूल तत्व समझा कर मेरे ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है।

आँखें खोली आपने चेत कर दिया आज।
भूले को मार्ग दिखा दिया आपने गुरू महाराज।।
मुझ भूली को सन्मार्ग दिखा, आपने बहुत बड़ा उपकार किया।
मेरे कोटि पाप सन्ताप हरे और बिगड़ा जन्म सुधार दिया।।
अज्ञानी पर दया करके, मुझे पशु योनि से पार किया।
अज्ञान और ज्ञान का, मूल तत्व समझा करके उद्धार किया।।

श्री बाबा बालकनाथ जी
सोनीपत, हरियाणा

श्री बाबा बालकनाथ जी का आश्रम जिन्दामोई सोनीपत हरियाणा में है। कुछ ही दिन पहले उनसे श्री गुरूजी के विषय में उनके कुछ विचार जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सबसे पहले उन्होंने मुझे बताया कि गुरू से कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए। गुरू के समक्ष सदैव सच बोलने पर उन्होंने जोर दिया। कहने लगे कि मैं गुरू को भगवान से भी बड़ा मानता हूँ, लेकिन गुरू वह है जो हमें सन्मार्ग दिखाये। आज के इस आधुनिक युग में बहुत कम लोग हैं जो गुरू की सिद्धियों को और उनके ज्ञान को जानते हैं।

महंत जी मेरे गुरू है। उनके विषय में कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है, इतने योग्य गुरू के लिए शब्दकोष के शब्द कम पड़ जायेगें।

गुरूजी ने न जाने कितने ही डिग्री कालेज, स्कूल, मन्दिर, आश्रम, धर्मशालायें बनवाई, यह सब करना किसी

साधारण मानव का काम नहीं है। कहाँ तक वर्णन करूँ श्री गुरूजी की धर्म परायणता का, उनके विषय में जितना भी सोचते जायेंगें, विषय उतना ही गंभीर होता चला जायेगा। गुरू के प्रति मेरी भावना व श्रद्धा का वर्णन शब्द नहीं कर सकते-

धन्य हैं वे सब लोग, जिनको साक्षात् शरीर में जीवित जाग्रत गुरू मिले हैं। जिनको योगी श्री चाँदनाथजी जैसे धर्मात्मा, पुण्यात्मा और सरस्वती साधना में दिन रात अग्रसर गुरू मिले हैं, उनके सौभाग्य से तो देवता भी ईर्ष्या करते हैं।

टीकाराम भटराई, नेपाल

नेपाल निवासी टीकाराम भटरई बहुत ही गुरू भक्त है। आजकल वह मठ अस्थल बोहर में ही कार्यरत है। उसका कहना है कि गुरूजी तो साक्षात् शिव स्वरूप है। मुझे गुरूजी के भंडार में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त होगा, यह तो मैं कभी सोच ही नहीं सकता था। ये संस्कार मेरे पिछले जन्म के हैं जो इस जन्म में गुरू सेवा का मौका मिला।

भंडार में कार्य करते हुए मुझे लगभग तीन वर्ष हो गए हैं। गुरूजी मुझे बच्चे-२ कहकर पुकारते हैं, सुनकर मुझे बहुत ही प्रसन्नता होती है। घर से दूर रहने पर भी मुझे कभी घर की याद नहीं आई। गुरूजी ने इतना प्यार दिया कि मुझे कभी माँ-बाप की भी कमी महसूस नहीं हुई। गुरूजी के साथ रहकर मैंने कितने ही तीर्थ स्थानों और आश्रमों के दर्शन किये हैं जो

मैं कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता था।

मेरी श्री बाबा मस्तनाथ जी से यही प्रार्थना है कि मुझे हर जन्म में श्री गुरूजी के श्री चरणों में रहने का और उनकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हो।

श्रीमती प्रेम राजकुमार
दिल्ली

श्रीमती प्रेम राजकुमार दिल्ली राणा प्रताप बाग में रहती हैं। सरकारी अस्पताल में कार्यरत हैं बहुत गुरू भक्त एवं भगवद् भक्त हैं। धर्म परायण एवं परोपकार परायण की भावना तो उनमें देखते ही बनती है। किसी का भी दुःख नहीं देख सकती, बहुत बड़ी समाज सेविका हैं।

गुरूजी के विषय में पूछने पर उन्होंने बताया- कि गुरूजी सर्वगुण सम्पन्न हैं। गुरू बिना गति नहीं, गुरू बिन मुक्ति नहीं। गुरू शिष्य को सदैव सन्मार्ग की ओर लगाते हैं। गुरू सेवा से ही हमें आशीर्वाद रूपी मेवा प्राप्त होता है। जिससे कि हमें मानसिक खुशी मिलती है। आज मैं अपने परिवार सहित बहुत प्रसन्न रहती हूँ, यह सब गुरू आशीर्वाद ही तो है।

जिनके गुरू नहीं हैं, या फिर जानबूझ कर गुरू नहीं बनाते, वे लोग जीवन में कभी भी सफलता हासिल नहीं कर सकते।

जिस प्रकार से पवित्रता का चिन्ह कमल कीचड़ में

खिलता है, परन्तु कीचड़ कमल की पवित्रता, सुन्दरता व स्वच्छता को छू भी नहीं सकता, उसी प्रकार से गुरू के पास भी अज्ञानी, दीन, दुःखी, साधारण जनमानस कोई भी आ जाए, वह उनको बराबर मात्रा में ज्ञान प्रदान करेंगे। किसने कितना ज्ञान ग्रहण किया, वह सब उनकी बुद्धि पर निर्भर करता है।

किसी भी भटके हुए व्यक्ति को सही मार्ग पर केवल गुरू ही ला सकते हैं। कभी उसको डांटकर कभी सहारा देकर, जिससे वह भटका हुआ व्यक्ति बन सके एक पूर्ण कुंभ.... जिसमें छलछलाहट हो, जल ही नहीं वरन् प्रेम, करूणा, ममता और दया का ऐसा अमृत हो, जिससे अनेक लोग तृप्त हो सके।

एक दिन अचानक श्री गुरूजी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनके चरणों में बैठने का और उनके अमृत तुल्य वचन सुनने का सुअवसर मिला। गुरूजी के तेजस्वी मुखारबिन्द को देखकर मैं कुछ क्षण के लिए सब कुछ भूल गई। उनके मुख पर इतना तेज था कि मैं अपने शब्दों से उस तेज का वर्णन नहीं कर सकती। अचानक गुरू दर्शन हो जायेंगे यह मैंने कभी सोचा भी नहीं था। मैं गुरूजी के पवित्र वचन सुनकर अत्यंत प्रभावित हुई। एक ही बार के साक्षात् दर्शनों से ही बार-२ मिलने की इच्छा मेरे और मेरे परिवार के मन में जाग्रत हुई।

शिक्षा के क्षेत्र में की गई उन्नति श्री गुरूजी की महानता की एक मिशाल है। गुरूजी केवल एक महंत या योगी ही नहीं बल्कि मैं तो यही कहूँगी कि यह तो माँ सरस्वती की प्रतिमूर्ति हैं।

श्री जे.सी. शर्मा
श्याम विहार

श्री जे.सी. शर्मा रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया में कार्यरत हैं और दिल्ली निवासी हैं। गुरूजी के विषय में उनसे उनके विचार जाने। उनके विचारों से मैं अत्यंत प्रभावित हुई। वह बताने लगे कि पिछले कई जन्मों के पुण्य उदय होते हैं, अच्छे संस्कार होते हैं, जब कोई मानव योनि प्राप्त करता है। उससे भी बड़ा भाग्य उसका यह है कि जब मानव योनि प्राप्त करने के पश्चात् शिष्य बन जाता है। उसके पुण्य संस्कारों के कारण ही उसे शिष्यता प्राप्त होती है। कितने ही शिष्यों को तो केवल गुरू का नाम ही मिलता है, या फिर उनका चित्र ही मिलता है, साक्षात् गुरू दर्शन तो उन्होंने किए ही नहीं होते। जैसे गुरू गोरक्षनाथ जी, बाबा मस्तनाथ जी, आद्य शंकराचार्य जी की हमें शिष्यता तो अवश्य प्राप्त हुई है, लेकिन हमने कभी भी उनको प्रत्यक्ष नहीं देखा।

शर्मा जी ने आगे बताया कि इस पवित्र गद्दी पर हर कोई नहीं बैठ सकता। यह गद्दी तो सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी की गद्दी है। इस पर तो वह ही विराजित होगा जिसने न जाने कितने ही जन्मों-२ तक जप और तप किया है।

गुरूजी एक महान योगी हैं। इनके तेज के आगे सब कुछ फीका लगता है। ये कोई साधारण मानव नहीं बल्कि यह

तो कोई दिव्य विभूति हैं, जो अनेक वर्षों के बाद अपनी धर्म संस्कृति व विद्या का प्रचार प्रसार करने के लिए ही जन्म धारण करती है।

इस जन्म में मुझे ऐसे ज्ञानी, ध्यानी गुरू से साक्षात्कार करने का सौभाग्य मिला, इसके लिए मैं श्री बाबा मस्तनाथ जी एवं श्री बाबा लक्खीनाथ जो का कोटि-२ धन्यवाद करता हूँ।

शिक्षा के क्षेत्र में गुरूजी का नाम सबसे अग्रणी है। इतनी कम उम्र और इतने कम समय में इतने डिग्री कालेज चलाना किसी साधारण मानव के बस की बात नहीं है। यहाँ पढ़े हुए न जाने कितने ही छात्र-छात्रायें बड़े-२ आफिसर और विद्वान् बन चुके हैं। हजारों बच्चे यहाँ हर वर्ष विद्यादान पाते हैं।

शर्माजी आगे कहने लगे कि नवयुवकों का तमाम शिक्षण फजूल है, अगर उन्होंने सद्व्यवहार और गुरू का आदर करना नहीं सीखा। कहने लगे गुरू के हृदय से निकला हुआ कोई भी वचन कभी निष्फल नहीं होता। इसलिए गुरू द्वारा बोला गया हर शब्द ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए, न जाने कौन से शब्द से हमारा कल्याण हो जाए और हम भवसागर से पार हो जायें। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि हमारे गुरूजी बाबा चाँदनाथ जी जैसे गुरू सबको मिले। अन्त में वह कहने लगे कि बाहर का प्रकाश तो सूर्य करता है, लेकिन अंदर का प्रकाश गुरू ही करते हैं।

कर्मवीर, राजस्थान

श्री कर्मवीर जी सिलारपुर अलवर राजस्थान के रहने वाले हैं। आजकल श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर में ही सेवा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि आज तक जो भी इस सिद्ध मन्दिर में आया है, उसको श्री बाबा जी ने कभी भी खाली हाथ नहीं लौटाया। यहाँ आकर प्रत्येक भक्त की मनोकामना पूर्ण होती है।

श्री गुरूजी के विषय में उन्होंने बताया कि इतने कम समय में देखते ही देखते इतना विस्तृत शिक्षण संस्थान खड़ा करना कोई आसान बात नहीं है। इस शिक्षण संस्थान को देखकर तो ऐसा लगता हैं कि इस युग में महात्मा भी शिक्षा के प्रति कितने जागरूक हैं।

नेपाल में एक बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ और शिक्षा के क्षेत्र में श्री महंत जी को प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया। शिक्षण संस्थान बिना किसी सरकार की सहायता से इतनी सुचारू रूप से चल रही है, इसको देखते हुए तो लगता है कि हरियाणा सरकार का ध्यान अब तक इस शिक्षण संस्थान की ओर क्यों नहीं गया? और श्री महंत जी को इसके लिए क्यों नहीं सम्मानित किया गया। विदेश में श्री महंत जी को पुरस्कार से नवाजा गया, किन्तु दिये तले अंधेरा। लगता है हरियाणा सरकार की नजरें शायद अभी तक इधर आई ही नहीं हैं।

श्री नाथूराम, खेड़ा हरियाणा
जिला महेन्द्रगढ़

हरियाणा में नौकरी कर रहे सब इंसपेक्टर की श्रद्धा श्री बाबा मस्तनाथ जी में कूट-२ कर भरी है। उन्होंने बताया कि मैं बहुत दिनों तक चिन्तित, तनावग्रस्त और दुःखी रहा, क्योंकि मेरे हाथ में बहुत भयानक दर्द रहता था। डाक्टरी इलाज से कोई लाभ न होने के कारण मेरा विश्वास सभी डाक्टरों से उठ चुका था।

एक दिन अचानक जैसे आकाशवाणी होती है, बिल्कुल वैसे ही मैंने श्री बाबा जी की आवाज सुनी- कि बच्चे समाधि पर आकर माथा टेको, तुम बिल्कुल स्वस्थ हो जाओगे।

श्री नाथूराम जी समाधि पर आये, लेकिन दर्द से तड़प रहे थे। समाधि के अन्दर पर पहुँचने पर उन्होंने श्री बाबाजी की समाधि पर माथा टेका, कहने लगे कि- हे गोरक्ष स्वरूप! बाबा मैं आपकी शरण में आया हूँ। मेरे दर्द का निवारण अब केवल आप ही कर सकते हैं। मेरी रक्षा कीजिए। माथा टेककर जैसे ही उन्होंने अपना सिर ऊपर उठाया, वह एकदम स्तब्ध खड़े रह गये। उनका जो हाथ हिल भी नहीं रहा था, अब वही हाथ पूर्ण रूप से ठीक था। श्री नाथू राम जी बताने लगे कि आज तक फिर दुबारा मेरे हाथ में दर्द नहीं हुआ।

श्री गुरूजी के विषय में पूछने पर कहने लगे कि- श्री

गुरूजी ही श्री बाबाजी की गद्दी को संभालने में पूर्ण रूप से सक्षम हैं। क्योंकि इस गद्दी पर वह श्री बाबा जी की और अपने गुरूदेव की आज्ञा और उनके ही आशीर्वाद से ही आसीन हुए हैं। एक उच्चकोटि के महात्मा होने के साथ-२ महंत जी एक शिक्षक गुरू भी हैं। शिक्षा से महंत जी को अत्यधिक लगाव है।

श्री पालनाथ जी, मेरठ उत्तरप्रदेश

श्री बाबा पालनाथ जी का आश्रम उत्तरप्रदेश मेरठ में है। शिव मन्दिर में नित्यप्रति पूजा अर्चना, भक्तों को उपदेश देना और परोपकार के कार्य करना ही उनके जीवन का उद्देश्य है।

एक दिन सौभाग्य से मठ में ही उनसे बातचीत करने का सुवअवसर प्राप्त हुआ। बातों ही बातों में मैंने उनसे प्रार्थना की और कहा कि- बाबाजी! आप मुझे बाबा मस्तनाथ जी एवं गुरूजी के विषय में कुछ बताये। पहले तो वह मेरी तरफ देखकर चुप हो गये, फिर थोड़ी देर बाद अपने ही आप कहने लगे कि-

भोला इस संसार में दो ही बात में चार।
श्रद्धा और विश्वास बिना, सब कर्म बेकार।।

दम दमा दम दम, दम लगाने से न जाने कब निकल जायें दम। कहने लगे कि अगर मानव में श्रद्धा और विश्वास नहीं है

तो कोई भी काम करने का लाभ नहीं है। मान लो किसी ने किसी को कुछ दान दिया, मगर उस दान देने में उसकी बिल्कुल भी श्रद्धा नहीं हैं, तो इस प्रकार का दिया हुआ दान फलता नहीं है। इसी प्रकार से बिना श्रद्धा के किया गया कोई भी अनुष्ठान और यज्ञ व्यर्थ है। श्रद्धा और विश्वास इसलिए आवश्यक हैं क्योंकि ये जीवन में मानव को सत्यता का अनुभव कराते हैं।

जीवन में मानव का चाहे कुछ भी खो जाए, उसका कोई गम नहीं, किंतु यदि मानव का श्रद्धा और विश्वास खो जाए तो समझ लो कि मानव का पूरा सत्यनाश ही हो गया।

मानव को कोई भी कार्य करने से पहले उसमें उसका श्रद्धा और विश्वास होना अति आवश्यक है। आध्यात्मिक पथ का आधार ही श्रद्धा और विश्वास है। श्री बाबा मस्तनाथ जी में मेरी बहुत श्रद्धा है। आज मैं जो भी हूँ, मेरे पास जितनी भी सिद्धियाँ हैं, वे सब बाबा की ही देन हैं।

तत्पश्चात् उन्होंने दम शब्द पर भी बहुत जोर दिया, कहने लगे कि दम क्या है? दम दम है, दम जोश है, जोर है, जान है। दम लगाना, जैसे साधु चिलम पीकर लगाते हैं। श्री पालनाथ जी आगे बताने लगे कि- दम दमा दम दम, दम लगाने से न जाने कब निकल जाये दम।

दम लगाकर ही भगवान की भक्ति करो, दमा अर्थ यहाँ एक प्रकार की श्वास की बीमारी से है। ज्यादा दम लगाने से

न जाने कब हमारी श्वास तेज चलने लग जाए, और दम लगाने से न जाने कब हम समाधि में प्रवेश कर जायें और हमारा यह शरीर पंच तत्व में विलीन हो जायें। हम इस संसार से मुक्ति पा जायें। न जाने भक्ति का दम लगाने से हमें प्रभु के श्री चरणों में कब शरण मिल जाये। न जाने दम लगाने के विषय में उन्होंने और भी क्या-क्या उदाहरण दे डाले।

श्री महंत जी के विषय में श्री पालनाथ जी बताने लगे कि इनमें हमारी श्रद्धा और विश्वास बहुत है। यह एक उच्चकोटि के साधक हैं, विद्वान् है, श्री बाबा मस्तनाथ जी की गद्दी के उत्तराधिकारी हैं। जितनी श्रद्धा और विश्वास हमारी श्री बाबा मस्तनाथ जी में हैं, उतनी ही श्री महंत जी में है। क्योंकि गद्दी का महंत हमारे लिए श्री बाबा स्वरूप ही है।

महंत जी एक शिक्षा प्रेमी महात्मा हैं। महंत जी महान कर्मयोगी हैं। श्री बाबा मस्तनाथ शिक्षण संस्थान को अपनी देख रेख में बहुत सुचारू रूप से चला रहे हैं।

श्री हरिराम, रोहतक

श्री हरिराम की उम्र अस्सी वर्ष के लगभग है। रोहतक में रहते हैं। श्री बाबा मस्तनाथ जी एवं गुरूजी के प्रति उनमें श्रद्धा कूट-२ की भरी है। उन्होंने बताया कि गुरूजी को हम श्री बाबा मस्तनाथ स्वरूप मानते हैं। वह बताने लगे-

इस मठ में अनेक सिद्ध महात्मा हुए हैं, और आज भी हैं। संतों की वजह से ही हम सब फल-फूल रहें हैं। संत महात्मा जो भी यज्ञ, अनुष्ठान करते हैं, वे सब जगत कल्याण के लिए ही करते हैं। आज हम लोग जो कुछ भी हैं, वह सब इन्हीं संतों की बदौलत ही हैं, इन्हीं के आशीर्वाद से हैं। इस मन्दिर मठ के संतों की लीला अपरम्पार है।

महंतजी शिक्षा-प्रेमी महात्मा हैं। अपने गुरू के द्वारा शुरू किया गया कार्य यह बेखुभी निभा रहे हैं। शिक्षा की ज्योति इनके द्वारा निरंतर जल रही है। महंत जी ने अपने परिश्रम और लगन से मठ की श्री-वृद्धि में चार चाँद लगा दिए हैं। यह मठ इन्हीं की लगन और परिश्रम से आज फल-फूल रहा है।

सत्यावती, दिल्ली

भाग बिन गुरू न मिले और गुरू बिन लगे न रंग।
रंग लगे बिन होय नहीं, संतों का सत्संग।।
संतों का सत्संग मिले बिना जीव का उद्धार नहीं।
सुख बिना शांति नहीं होती, शांति बिन आधार नहीं।।
आधार अगर मिल जाय कहीं, तो डूबे जीव मझधार नहीं।
मझधार से पार न हो कोई, जब तक कि खेवनहार नहीं।।

श्रीमती सत्या बहुत सालों से मठ अस्थल बोहर आती हैं। श्री बाबा मस्तनाथ में बहुत श्रद्धा रखती हैं। कोई भी कार्य करने से पहले श्री बाबा मस्तनाथ जी को स्मरण करती हैं।

आगे उन्होंने बताया कि योगी चाँदनाथ जी जैसे गुरू तो बड़े ही भाग्य से मिलते हैं। ये शायद मेरे कोई पिछले संस्कार ही थे, जो मुझे इस जन्म में श्री गुरूजी से साक्षात्कार करने का सुअवसर मिला।

गुरूजी को हम साक्षात् गुरू गोरक्ष स्वरूप मानते हैं। वह कहने लगी कि अगर मैं कुछ क्षण गुरूजी को लगातार देख लेती हूँ तो मुझे गुरूजी दस बारह वर्ष के बच्चे दिखने लगते हैं। गुरूजी के चरण स्पर्श करने से पूरे शरीर में कंपन सा हो जाता है। यह सब इनके जप तप का ही प्रभाव है।

आगे वह कहने लगी कि भगवान और गुरू के हृदय में भक्त का जितना आदर सम्मान है, उतना आदर सम्मान करने वाला इस संसार में दूसरा कोई नहीं है।

आर.पी. भारद्वाज
दिल्ली

कुमारी आर.पी. भारद्वाज दिल्ली के एक सरकारी अस्पताल मे असिस्टैन्ट नर्सिंग सुपरिण्टेन्डेन्ट हैं। बहुत ही दयालु प्रवृत्ति की हैं, हर समय गुरू ध्यान में लीन रहती हैं। कहती हैं-

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।

श्री गुरूजी के विषय में उनके विचार जाने, वह कहने लगी- कि गुरूजी सर्वगुण सम्पन्न हैं। सत्यप्रियता, सादगी, शिक्षा, अनुशासन ये गुरूजी के जीवन के लक्ष्य हैं। सादा जीवन साधु जीवन व साधनामय जीवन ये तीनों ही गुण गुरूजी में विद्यमान हैं।

बहनजी ने आगे बताया कि मैं गुरूजी से इनके पूज्य गुरूदेव श्री श्रेयोनाथ जी के समय से ही परिचित हूँ। उस समय तो इनकी आयु मात्र २४-२५ वर्ष की ही थी। उस समय मैंने इनके चेहरे पर एक अद्‌भुत तेज देखा था। तेज इनकी साधना का ही था। श्री बाबा श्रेयोनाथ जी अपने शिष्य श्री चाँदनाथ जी यानि श्री गुरूजी को बहुत ही प्रेम करते थे। वह श्री बाबा लक्खीनाथ जी को बहुत बार कहते थे कि मेरा ये शिष्य बहुत योग्य है।

वह बहुत ही शुभ दिन था, श्री बाबा मस्तनाथ नवमी उत्सव् का दिन। उस दिन मैंने श्री गुरूजी को प्रथम बार देखा था। जब मैं समाधि पर माथा टेकने गई तो गुरूजी ने ही मुझे घड़े से विभूति निकाल कर दी। उस समय मैं इतनी प्रसन्न थी कि मेरे पास उस खुशी को बताने के लिए कोई शब्द ही नहीं थे। मैंने श्री बाबा मस्तनाथ को हृदय से धन्यवाद किया कि मुझे ऐसे तेजस्वी साधु के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आगे उन्होंने बताया कि भगवान और गुरू के सिवाय कोई भी ऐसा नहीं है, जो सदा हमारा मार्ग-दर्शन करता रहे।

प्रत्येक मनुष्य को भगवान की तरफ चलना ही पड़ेगा, चाहे आज चले, या अनेक जन्मों के बाद, तो फिर देरी क्यों?

श्री मोतीनाथ जी, हरिद्वार

जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि गुरूजी को पहाड़ी यात्राओं में बहुत रूचि हैं। सन् १९९६ में गुरूजी के साथ कुछ साधु संत व कुछ भक्तगण भी गये थे बद्रीनारायण यात्रा पर, बद्रीनारायण में गुरूजी का प्रोग्राम तीन दिन ठहरने का था। पहले दिन सबने गुरूजी के साथ भगवान बद्री विशाल के दर्शन किये, फिर आकर सबने नाश्ता किया। तत्पश्चात् गुरूजी के साथ सब मिलकर श्री सिद्ध योगी सुन्दरनाथ जी की गुफा के दर्शन करने गये। आगे चलकर वेद व्यास गुफा, गणेश गुफा, भीम पूल व सरस्वती नदी देखने गये। यह सब माना गाँव में हैं। जो कि भारत का आखिरी गाँव है। यह सब देखने के पश्चात् धर्मशाला में आकर गुरूजी ने भोजन किया, फिर सबने बैठकर भोजन किया। उस समय पौने दो बजे दोपहर का समय था। अचानक गुरूजी ने ध्यान में देखा कि कुछ घटित होने वाला है। गुरूजी ने बाबा मोतीनाथ जी और सभी भक्तों को बुलाकर कहा कि शीघ्र ही चलने की तैयारी करो। दस मिनट के अंदर ही हमें यह स्थान छोड़ देना चाहिए।

गुरू आज्ञा शिरोधार्य! सब लोग दस मिनट में ही तैयारी करके आ गये। पहले गुरूजी की गाड़ी उसके बाद दूसरी

गाड़ियों का काफिला चल पड़ा। अभी जोशीमठ भी नहीं पहुँचे थे कि तेज बर्फीली हवाओं के साथ बारिश शुरू हो गई। बारिश बंद होते ही बर्फ का गिरना आरंभ हो गया। जगह-२ पर लैंड स्लाइड हो गई। शाम तक कई किलोमीटर तक का मार्ग बंद हो गया। बद्रीनाथ में हजारों तीर्थ यात्री फँस गये। सड़के ठीक होने में दस-बारह दिन का समय लग गया। यात्री कड़कती ठंड में फंसे रहे, किन्तु गुरू कृपा से हम सब निकल आये।

रात्रि में सब लोग गुरूजी के साथ होटल बद्रीनाथ में ठहरे। सबने गुरूजी से पूछा - गुरूजी आपने ध्यान में क्या देखा था, जो कि आप सबको इतनी जल्दी वहां से ले आये।

गुरूजी कहने लगे कि-जो कुछ अब वहां घटित हो रहा है, वह सब ही देखा था।

श्री गोवर्धन नाथ जी, बद्रीनाथ

श्री बाबा गोवर्धननाथ जी को सब उड़िया बाबा कहते हैं क्योंकि वे उड़ीसा के ही रहने वाले है। श्री बाबा राकेशनाथ जी के शिष्य है। वह बताने लगे कि गुरूजी ने अनेकों बार जगन्नाथ पुरी यात्रा की है। कभी भक्तों के साथ कभी संतों के साथ, मैं भी इन सभी यात्रओं में गुरूजी के साथ रहा हूँ । पुरी यात्रा करने का एक बार हमें भी अवसर मिला। उस समय यात्रा में गुरूजी के साथ चार अन्य लोग भी थे। गुरूजी ने वहाँ पहुँचकर हमें अनेक मन्दिरों के दर्शन कराये। मन्दिरों का इतिहास भी गुरूजी साथ-साथ बताते जा रहे थे। एक दिन मन्दिरों के दर्शन

करके हम वापस लौट रहे थे कि मार्ग में गोवर्धननाथ जी ने गुरूजी को बताया कि- यहाँ एक बरनई देवी का प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर है। गुरूजी ने कहा चलो फिर देवी के दर्शन कर लेते हैं। यह यात्रा हमने दिसम्बर माह में की थी। शाम का समय हो गया था, इसलिए शाम की कालिमा धीरे- धीरे फैलने लगी। जब हम देवी के मन्दिर में पहुँचे, उस समय पौने सात बज चुके थे। मन्दिर का मुख्य द्वार संध्या वन्दन के पश्चात् बंद हो चुका था। पुजारी ने बताया कि आरती करने के पश्चात् माँ के मंदिर का द्वार बंद करके हम लोग चले जाते है, क्योंकि पहाड़ों पर जंगली जानवर आ जाने का बहुत खतरा है। आरती ६ बजे कर ली जाती है क्योंकि यहाँ बिजली का भी प्रबंध नहीं है।

पुजारी ने बताया कि मंदिर बंद करने के पश्चात् दोबारा नहीं खोला जाता। अगले दिन प्रातः काल पूजा के लिए ही खोला जाता है। हम लोगों को यह सुनकर दुःख हुआ कि इतने ऊपर चढ़कर आये और माता के दर्शन भी नहीं हुए। गुरूजी ने कहा- कोई बात नहीं, वापस चल पड़ते है। जैसे ही गुरूजी नीचे उतरने के लिए मुड़े, हम लोग भी उनके पीछे-पीछे चल पड़े।

गुरूजी एक ही सीढ़ी नीचे उतरे थे, कि अचानक से पुजारी के मस्तिष्क में पता नहीं क्या आया। उसने टार्च की रोशनी में गुरूजी को देखा, और कहने लगा- महात्माजी ! मैं क्षमा चाहता हूं। यह नियम शुरू से ही बना हुआ है कि आरती के पश्चात् मन्दिर का द्वार बंद कर दिया जाता है। लेकिन

गुरूजी के चेहरे को देखते ही वह समझ गया, कि यह तो कोई महान महात्मा है, उसने कहा- महात्मा जी एक मिनट रूकिये मैं मन्दिर खोल देता हूँ । आप माँ के दर्शन कर लीजिए। मन्दिर का द्वार खोलते ही गुरूजी के साथ हमने भी माँ के दर्शन किये।

मन्दिर के पुजारी ने कहा कि बाबा यह पहला मौका है कि द्वार बंद होने के पश्चात् आज दोबारा खोला गया है। यह हमारे लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था। बाबा गोवर्धन नाथ जी कहने लगे कि यह सब माँ और गुरूजी का आशीर्वाद ही है कि हम लोगों को भी श्री गुरूजी के साथ माँ ने दर्शन दिये।

भूतपूर्व सरपंच श्रीमहासिंह
गांव बोहर, रोहतक

२३ मार्च सन् २००२ श्री बाबा मस्तनाथ नवमी मेले के अवसर पर गाँव बोहर रोहतक के बहुल से बुर्जुग लोगों और भूतपूर्व सरपंच श्री महासिंह जी से बातचीत करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने वहाँ पर उपस्थित सभी भक्तगणों से श्री बाबा मस्तनाथ जी एवं श्री गुरूजी के विषय में उनके विचार जाने। उनसे मैंने यह भी पूछा कि आप लोगों की बाबाजी में किस प्रकार की आस्था है।

सभी ने मेरे प्रश्न के उत्तर में कहा- यह मठ हमारे लिए हमारी आस्था विश्वास की त्रैलोक न्यारी कैलाश

पुरी है। यहाँ भगवान शिव अवतार महायोगी गुरू गोरक्षावतार सिद्ध शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी महाराज सगुण-साकार रूप में निवास करते हैं। उनकी महिमा महात्मा लोग भली-भांति जानते हैं। हम सब ग्रामीणवासी भी मठ के महात्माओं के दर्शन करके अपने को धन्य समझते हैं। मठ की गद्दी की बहुत मान्यता है। इसलिए मठ की गद्दी पर जो भी महात्मा बैठता है, उसको हम सब भी श्री बाबा मस्तनाथ स्वरूप ही मानतें हैं।

ग्रामीण वासियों ने यह भी बताया कि ये सब विचार केवल हमारे ही नहीं अपितु हमारे सभी ग्रामीण वासियों के हैं। हम सभी सदैव इस गद्दी के प्रति नत-मस्तक रहते हैं। श्री बाबाजी के प्रति हमारे मन में यह विश्वास कब, क्यों और कैसे जागृत हुआ? यह सब तो इतनी जल्दी बताना कठिन है। कठिन ही नहीं अपितु नामुमकिन भी हैं। हम लोगों ने यहां बाबा मस्तनाथ जी के अनेक चमत्कार देखे हैं। हम लोग यहां आकर जो भी कामना करते हैं, वह बाबाजी की कृपा से बहुत जल्द ही पूर्ण हो जाती है।

ग्रामीण भक्तों ने तो यह भी बताया कि हमारे पशुओं का दूध तब तक प्रयोग नहीं किया जाता जब तक कि एक दिन का पूरा दूध समाधि पर न चढ़ा दिया जाए। दूध चढ़ाने के पश्चात् ही हम लोग दूसरे दिन दूध घर में प्रयोग करते हैं। शादी-ब्याह के पश्चात् भी पहले वर-वधू का माथा बाबा पर आकर टिकाते हैं फिर दूसरा काम शुरू करते हैं।

श्री महंत जी के विषय में उन्होंने बताया कि गद्दी के

महंत को हम बाबा मस्तनाथ स्वरूप मानतें हैं। महंत जी हमारे लिए पूजनीय हैं , आदरणीय हैं। गद्दी पर बैठने वाला महंत कोई साधारण व्यक्ति नहीं होता। मठ की गद्दी पर तो वास्तव में कोई सिद्ध योगी ही बैठ सकता है। गद्दी पर तो वही विराजित हो सकता है जिसने जन्मों-जन्मों जप, तप, गुरूसेवा और गुरू आज्ञा पालन किया है।

श्री महंत जी पहुँचे हुए विद्वान् हैं, गुणों का भण्डार हैं। शिक्षा के उत्थान के लिए महंत जी सदैव प्रयासरत रहते हैं। बहुत कम समय में अनेक कालेजों की भव्य व आकर्षक इमारत बनवाना कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है। यह तो शिक्षा के प्रति एक मिशाल है। अनुशासन और सादगी तो इनमें देखते ही बनती है। इनकी धर्म परायणता, हिन्दू संस्कृति एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता के देखते हुए ही इनको राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गऐ। गाँव के बच्चे जो योग्य हैं और विश्वविद्यालय की शर्तो को पूर्ण करते हैं। महंत जी उनको बेझिझक प्रवेश लेने के लिए बुलाते हैं।

ग्रामीणवासी भक्तों ने यह भी बताया कि यह एक योग्य गुरू के योग्य शिष्य हैं। महंत जी कर्म को प्रधान बतातें हैं।

सब लोग मिलकर कहने लगे कि :-

गुरू हमारे मन मन्दिर में, गुरू हमारे प्राण।
वे हैं सारे जग के दाता,नारायण भगवान।।

श्री महासिंह जी के साथ ग्रामवासियों ने यह भी बताया

कि गाँव के पाँच प्रतिशत लोग ऐसे भी हैं, जो मठ के विषय में अनाप-शनाप प्रचार-प्रसार करने से नहीं चूकते। लेकिन ऐसे असामाजिक तत्व व गंदगी फैलाने वाले धर्म-विरोधी लोगों से गाँव का कोई भी व्यक्ति बातचीत नहीं करता। भक्तों ने यह भी बताया कि जो व्यक्ति गुरूओं की एवं मन्दिरों की इज्ज़त नहीं करता वह हिन्दुत्व के नाम पर एक धब्बा है, कलंक है। उनके सामने कितने ही सत्संग, प्रवचन करो, उनकी समझ में कुछ नहीं आता। 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' ऐसे नास्तिक लोग सदैव ही कष्ट पाते हैं।

कर्म नहीं मिटे मिटाए, एक दिन आगे आए।
बोयें पेड़ बबूल के, आम को कैसे खाए।।
राजा सगर का था बड़ा बहुत सुनो परिवार।
कपिल मुनि के जाय कर ठोकर दीनी मार।।
ठोकर दीनी मार कुटुम्बी बिना अग्नि जल गये सारे
लग गया श्राप का ताप तभी, जीते जी आप बल गये सारे।।

साधु-संतों महात्माओं को सताने वाला कोई भी मानव आज तक सुखी नहीं रह सका, अगर महात्माओं की सेवा नहीं कर सको तो उनको कभी भी कटु वचन मत बोलो। जो लोग गुरू के साथ उसे अपना बनाकर विश्वासघात करता है, वह घोर नरक का भागी होता है। गुरूद्रोही लोग अवश्य ही नरक में जाते हैं। विश्वासघाती दरिन्दों से तो ये धरनी भी काँपती हैं।

रखें सब पेट कतरनी, कपट की रखे सुमरनी।
जग प्रलय हो जाए, पाप से काँपी धरनी।।

बाबा कृष्णनाथ जी,
मठ अस्थल बोहर

श्री बाबा कृष्णनाथ जी महाराष्ट्र के हैं, इनके गुरू ने इन्हें यहाँ श्री महंत जी के पास पढ़ाई के लिए भेजा है। पहली से बारहवीं तक की पढ़ाई श्री बाबा मस्तनाथ रेजिडेन्सियल स्कूल में पूरी कर चूके हैं। आजकल धूने पर श्री गुरूजी की आज्ञा से तपस्वी वेष में पूजा अर्चना करते हैं।

एक दिन वह दिल्ली किसी कार्यवश आ रहे थे। गाड़ी में ही उनसे बातचीत करने का अवसर मिला। श्री बाबा मस्तनाथ जी के विषय में पूछने पर उन्होंने बताया बाबाजी यहाँ सूक्ष्म रूप से साक्षात् विराजमान हैं। मन का हर मनोरथ यहाँ आकार पूर्ण होता है।

गुरूजी के बिषय में उन्होंने बताया कि हमारे पूज्य गुरूदेव (महन्त श्री चाँदनाथ जी) श्री बाबा मस्तनाथ स्वरूप हैं। गद्दी की प्रचलित परम्परा को बेखूबी निभा रहे हैं। दया, सहानुभूति की प्रतिमूर्ति अगर आज कोई है, तो वे केवल श्री गुरूजी ही है।

श्री बाबा मस्तनाथ शिक्षण संस्थान का सारा श्रेय गुरूजी को ही जाता हे। वह चाहते हैं कि भारत का हर मानव शिक्षित हो। प्रत्येक मनुष्य को अपनी धर्म, संस्कृति एवं अपने अच्छे-बुरे सोचने का ज्ञान होना चाहिए। गुरूजी के अनुसार अशिक्षित

मनुष्य को कोई भी बहला-फुसला देता है। इसके विपरीत शिक्षित मनुष्य के लिए ये संभव नहीं।

गुरूजी की मेरे ऊपर सदैव असीम अनुकम्पा बनी रही। उनका आशीर्वाद भी सदैव मेरे ऊपर रहा। मैं श्री बाबा मस्तनाथ जी से यही प्रार्थना करता हूं कि गुरूजी ने शिक्षा के प्रति जो ज्योति जगायी है वह निरन्तर प्रज्जवलित रहे।

कर्नल श्री जे० एस० यादव
काशी, विश्वनाथ

काशी विश्वनाथ यात्रा के दौरान हम लोग श्री गुरूजी के साथ कर्नल जे० एस० यादव जी के निवास स्थान पर रात्रि का भोजन कर रहे थे। भोजनोपरान्त मैंने श्री यादव जी से गुरूजी के विषय में उनके विचार जाने। यादव जी बहुत ही खुश मिजाज किस्म के आफिसर हैं। पहले तो वह बहुत देर तक मजाक ही करते रहे, फिर गंभीर होकर कहने लगे- श्री महंत जी जैसे दैवी-सम्पदा के सर्वश्रेष्ठ स्वामी, हिन्दु धर्म के रक्षक, नीति-निपुण नायक श्री गुरूजी के श्री चरणों में सर्वप्रथम मेरा शत-शत प्रणाम।

श्री महंत जी धर्माचार्य होने के अतिरिक्त महान शिक्षा सेवी भी हैं। निर्भीक, स्पष्टवादी, दृढ़निश्चयी, युवादृष्टा तथा दूरदर्शी भी हैं। महंत जी का हृदय कोमल विशाल और अपनत्व की भावना से ओत-प्रोत है। वे बहुमुखी प्रतिभा के एक सुरूचि सम्पन्न महापुरूष हैं। श्री महंत जी ने शिक्षा के क्षेत्र में इतने कम

समय में इतने ज्यादा डिग्री कालेज खोले हैं, कि जहाँ से प्रत्येक दृष्टा निस्संदिग्ध चित्त से उनके व्यक्तित्व की ऊँचाई को देखने में असमर्थ है। इनके विचार और कार्य किसी एक क्षेत्र में सीमित नहीं है। इनकी सूझबूझ और दूरदर्शिता विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई हैं।

श्री यादव जी ने आगे बताया कि इस युग में भी सच्चे अर्थों में साधु मौजूद हैं। जिन्हें देश-विदेश और लोक-परलोक का गहरा ज्ञान है। श्री महंत जी उन्हीं सच्चे साधुओं में से एक हैं। यह केवल भगवा वस्त्र पहनने वाले साधु ही नहीं अपितु समाज की उन्नत धारा में प्रवाहित विभिन्न विषयों में रूचि लेकर उन्हें सही दिशा प्रदान करने वाले युगदृष्टा हैं।

राधा, तुंगनाथ

तुंगनाथ निवासिनी राधा गुरू को भगवान से ज्यादा प्रेम करती है। उसका कहना है- भगवान को अपने आप देखना संभव नहीं, जब तक की गुरू मार्ग दर्शन न करें। पहाड़ी यात्रा के दौरान ही उससे मुलाकात हुई। गुरूजी से वह बहुत वर्षों से परिचित है। यात्रा के दौरान ही उन्हें गुरूजी के चरण स्पर्श करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। राधा जी कहती है- गुरूजी कहते हैं कि मैं घर में बैठकर या फिर मन्दिर में जाकर भगवान का ध्यान करूँ। कई साधनायें भी सिखाई है। लेकिन वह तो कहने लगी कि मुझे तो गुरू का ये तीर्थ रूपी शरीर ही मन्दिर

लगता है।

गुरूजी के दोनों चरण-कमल मन्दिर का आधार हैं पाँव के दाहिने अंगूठे में सारे तीर्थ प्रवाहित हैं। दोनों टांगें मन्दिर के स्तम्भ है। जिस पर यह मन्दिर स्थापित है। गुरूजी का वक्षस्थल उस मन्दिर के मुख्य भाग का घेरा है। हृदय उस मन्दिर का गर्भ गृह हैं, प्राण मन्दिर के देवता है। ग्रीवा मन्दिर का शिखर-सेतु है। मस्तक मन्दिर का सर्वोच्च गुंबद, गुरूवाणी मन्दिर में गुंजारित वेदध्वनि है। नेत्र मन्दिर सरोवर में खिले हुए कमल है। गुरू भोजन भक्तों को प्राप्त होने वाला प्रसाद है। श्री गुरू स्वयं ही साक्षात् देव है।

आगे वह बताने लगी कि ऐसे दिव्य मन्दिर को छोड़कर मैं और किस देवालय में जाऊं। किस चौखट पर अपना माथा रगड़ूं, किस देवता को घ्याऊं।

मेरे लिए तो गुरू ही शिव है, शिव के समान नहीं, अपितु साक्षात् शिव ही हैं। गुरू और शिव में कोई भेद नहीं। इन दोनों में जो भेद करता है या भेद समझता है वह जीवन में कभी पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता।

दर्शन, गुड़गांव

श्रीमती दर्शन गुड़गांव हरियाणा में रहती है। इनके पति पेशे से ठेकेदार हैं इनके पति सावन माह में कई वर्षों से

लगातार कावड़ लेकर आते हैं सन् १९९८ में जब वह हरिद्वार से कावड़ लेकर वापस आ रहे थे तो मार्ग में उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया और उनको तेज बुखार ने जकड़ लिया। साथ ही साथ उनके पांव में छाले हो गए। छालों की वजह से उनके लिए चलना भी दुभर हो गया। भगवान भोले का नाम लेकर फिर भी वह धीरे-धीरे चलते ही रहे। शायद यह इनकी परीक्षा की ही घड़ी थी। तीन चार दिन बाद वह अपने घर में फोन कर ही लेते थे। बीमारी की वजह से श्रीमती दर्शन घबराई और उन्होंने अपने घर पर फोन किया। फोन पर बात करते-करते वह रोने लगी। कहने लगी कि कल शिवरात्रि है, भगवान पर जल चढ़ाना है। सारी बात सुनकर उनके घर वालों ने गुरूजी को फोन किया, कि गुरूजी ऐसे-ऐसे बात है दर्शन के पति की तबियत रास्ते में खराब हो गई है, कल शिवरात्रि है, अब क्या होगा ?

सारी स्थिति जानने के पश्चात् गुरूजी ने ध्यान लगाकर देख और कुछ ही देर बाद फोन पर कहने लगे कि घबराने की आवश्यकता नहीं है, सब कुछ ठीक हो जायेगा। कुछ ही देर के पश्चात् दर्शन का फिर फोन आया, कि जो लोग अभी गांव में पहुंचने वाले थे, कावड़ वाले, उन चार लोगों का ऐक्सीडेंट हो गया है। यह सुनकर तो सबके होश ही उड़ गये। हम लोगों ने घबराकर फिर से गुरूजी को फोन किया। गुरूजी ने कहा- घबराओं मत सब कुछ बाबा मस्तनाथ जी की कृपा से ठीक होगा। पूरे दस मिनट के अन्दर ठेकेदार घर पहुंच जाऐगा। आशीर्वाद देकर गुरूजी ने फोन रख दिया। दस मिनट के

अन्दर ही वह गांव में पहुंच गया। यह देखकर घरवाले अत्यंत प्रसन्न हुए और गुरूजी को कोटि-कोटि नमन किया।

अन्त में उन्होंने बताया कि मुझे गुरूजी का आशीर्वाद मिलने के पश्चात् कोई चिंता नहीं रहती। मुझे यह भली-भाँति मालूम है कि गुरू का आशीर्वाद जब शिष्यों पर होता है तो उनका कभी बुरा हो ही नहीं सकता।

रूद्रप्रिया, नजफगढ़

रूद्रप्रिया जी अक्सर मठ अस्थल बोहर जाती रहती है क्योंकि वहां पर इनके पूज्य गुरूदेव श्री बाबा लक्खीनाथ जी का समाधि है। श्री बाबा मस्तनाथ जी एवं गुरूजी के विषय में मैंने उनके विचार जानने चाहे। उन्होंने बताया कि श्री बाबा मस्तनाथ जी एवं गुरूजी के प्रति मेरे साथ मेरे पूरे परिवार की भी पूरी श्रद्धा एवं विश्वास है। उन्हेंने अपने साथ घटित एक घटना भी मुने बताई।

वह बताने लगी- एक दिन मैं अपनी भांजी के साथ घर जाने के लिए तैयार हुई। लेकिन बस स्टाप पर पहुंचने पर अचानक से मेरे मन में क्या विचार आया पता नहीं ? मैं घर जाने की बजाय दूसरी बस में बैठ गई। श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर जाने के लिए अक्सर दो बसें बदलनी पड़ती है। अभी हम दोनों पहली बस में ही थे, न जाने कब और कहां मेरा पर्स

कट गया, मुझे पता ही नहीं चला। दूसरा बैग जिसमें कपड़े थे वह भी कट चुका था।

हम दोनों बस से नीचे उतरे और दूसरी बस में बैठ गये। मन्दिर पहुंचने से कुछ ही दूर पहले अचानक से बैग पर और पर्स पर बैठे-बैठे यों ही नजर पड़ गइ। देखा, पर्स बिल्कुल चीथड़े-चीथड़े हो रखा था। घबराकर अन्दर से चैक किया तो उसमें से एक भी पैसा गायब नहीं था। हम दोनों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, क्योंकि उस दिन पर्स में कुछ पैसे भी अधिक थे। घर जाने का इरादा था, नया घर बन रहा था, मजूदरों की पेमेन्ट करनी थी।

शाम छः बजे हम दोनों मन्दिर में पहुंचे। जाकर गुरूजी को सारी घटना बताई। गुरूजी ने कहा- यह तो बाबा का चमत्कार है। पूरा पर्स कटने के पश्चात् एक पैसे का भी गायब न होना, यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। ऐसे ही न जाने और भी कितने ही चमत्कार हमने देखें हैं।

ऐसे ही मन्दिर के एक भक्त ने और बताया कि मेरे पैसे भी एक महीने से नहीं मिल रहे थे। ढूंढ-ढूंढ कर पूरा परिवार परेशान था, लेकिन पैसों का कुछ पता ही नहीं चल रहा था। एक दिन उन्होंने गुरूजी से यह बात बताई। गुरूजी ने कहा- पूरे पैसे घर में ही जल्दी मिल जाऐंगे।

ऐसा ही हुआ, पूरे पैसे घर में ही मिल गये।

इन सभी चमत्कारों को देखकर मन में श्री बाबाजी एवं गुरूजी के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

रामप्यारी भारद्वाज,
श्याम विहार

रामप्यारी जी ने बताया कि मेरी आयु इस समय पचपन वर्ष है। जब मैं पाँच वर्ष की थी, तक से ही मुझे सिर-दर्द की बीमारी है। मैंने हर जगह कुशल से कुशल डाक्टर से इलाज कराया, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। हौम्योपैथिक, आयुर्वेदिक, ऐलौपैथिक, यूनानी, नेचुरोपैथी इत्यादि सब तरह के इलाज कराये। यहां तक की मैं एक साल पूरे दूसरे देश में भी रहकर आई, कोई लाभ नहीं हुआ।

मेरे सिर दर्द के विषय में गुरूजी ने सुन तो अवश्य रखा था, किन्तु कभी देखा नहीं था। एक दिन मैं बिल्कुल ठीक थी, सोचा गुरूजी को मिलकर आती हूं। वहाँ पहुँचकर मेरे सिर में दर्द शुरू हो गया, साथ ही उल्टियाँ भी शुरू हो गई। उस दिन पहली बार गुरूजी ने मेरा सिर दर्द देखा कहने लगे- बहनजी को तो बहुत भयानक सिर दर्द होता है। उसी दिन और उसी समय गुरूजी ने कहा कि मैं आज ही बहनजी के लिए दवा तैयार कराऊँगा। आयुर्वेदिक औषधि तैयार होने में पूरे महीने का समय लगा। तीन महीने की दवा दी गई। गुरूजी ने दवा लेने का तरीका एवं परहेज बहन जी को समझा दिया।

तीन महीने औषधि खाने के पश्चात् दोबारा कभी सिर दर्द नहीं हुआ। नहीं तो एक महीने में पूरे बीस पच्चीस दिन सिद दर्द रहता था। यह औषधि ही नहीं बाबा मस्तनाथ जी का आशीर्वाद था।

श्री बाबा मस्तनाथ जी एवं गुरू कृपा से नवजीवन की प्राप्ति

शिवानी, दिल्ली

यह घटना २४ जून सन् १९९७ की है। मैं अपनी मौसी के साथ श्री बाबा मस्तनाथ मन्दिर गई। जैसा कि हम पहले भी समाधि मन्दिर में जाते ही रहते हैं। वहाँ पहुँचकर पहले हमने समाधि पर आदेश नमस्कार किया, फिर पुजारी जी से मिले, तत्पश्चात् गुरूजी के पास पहुँचे। हम दोनों को देखते ही गुरूजी ने कहा- इतनी गर्मी में कैसे आये? हमने कहा- गुरूजी मन्दिर में आने के लिए सर्दी गर्मी का क्या देखना। यहाँ पर आकर हमें जो सुख-शांति मिलती है वह तो अवर्णनीय है। यहाँ आकर हर किसी की इच्छा पूरी होती हैं उस समय दोपहर के साढ़े बारह बज चुके थे। गुरूजी कहने लगे कि पहले तुम लोग भोजन कर लो। हमने थोड़ा-थोड़ा भोजन किया और गुरूजी के पास आकर बैठ गये। कुछ ही देर के बाद गुरूजी आराम करने चले गये। हम भी बाहर आकर थोड़ी देर लेट गये। पाँच बजे गुरूजी बाहर आये, सबने चाय ली, छः बज चुके थे, हमने कहा- गुरूजी छः बज गये हैं अब हमें चलने की आज्ञा दीजिए।

गुरूजी कहने लगे- अभी थोड़ी देर ठहरों, धूप बहुत तेज हैं इसी तरह वहीं पर बैठे-बैठे हमें साढ़े छः बज गये। गुरूजी अपनी आँखें बंद किए हुए बैठे थे। हमने फिर से कहा-

गुरूजी साढ़े छः बज गये अब तो हमें आज्ञा दे ही दीजिए।

गुरूजी ने बड़े ही धीमें और गंभीर स्वर में कहा- चलो ठीक है अब तुम जाओ, किन्तु ध्यान से जाना। उनकी वाणी से ऐसे प्रतीत हो रहा था, जैसे वह हमारी किसी बुरी घड़ी को ही टालने के लिए हमें कुछ देर और रूकने के लिए कह रहे हो।

जैसे ही हम गुरूजी को प्रणाम करके बाहर निकले, उसी समय हमें गऊशाला में कार्यरत श्री बाबा वीरनाथ जी मिल गये। हमने उनको भी आदेश नमस्कार किया। वह हमसे पूछने लगे कि तुम लोग ठीक-ठीक हो न, कब आये। हमारा हालचाल जानने के पश्चात् वह भी कहने लगे कि ठीक से जाना। जब तक गाड़ी नहीं आई, वे हमारे पास ही खड़े रहे। गाडी में बैठने के पश्चात् ही वे वहां से चले।

जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि रोहतक जाने के लिए हमें दो गाड़ियां बदलनी पड़ती है, लेकिन उस दिन हमें चार गाड़ियां बदलनी पड़ी। हम अपने निवास स्थान पहूँचने ही वाले थे कि अचानक से एक मारूति वैन से हमारी रिक्शा टकरा गई। एक बार टकाराई, फिर दोबारा से टकरा गई। बहुत भयंकर ऐक्सीडेन्ट हो गया। कुछ देर के लिए तो मैं बिल्कुल ही मर गई थी। मेरी मौसी को भी बहुत ज्यादा चोट लगी, लेकिन उन्होंने अपनी चोट की परवाह किए बिना ही मुझे कृत्रिम श्वास देती रही और किसी भले व्यक्ति की सहायता से मुझे अस्पताल में पहुंचा दिया। वहां पर मुझे एक लंबी सांस आई। सुचेता कृपलानी अस्पताल के डाक्टरों ने कहा- इन्हें जल्दी से राममनोहर

लोहिया अस्पताल ले जाओ, क्योंकि सिर में गहरी चोट लगी है। वहाँ पर मुझे आठ घंटे के पश्चात् होश आया। ऐसा ऐक्सीडेन्ट होने के पश्चात् भी श्री बाबा मस्तनाथ जी की कृपा से हम दोनों का एक बूंद रक्त भी नहीं निकला, ठीक होने में जरूर हमें तीन महीने का समय लगा। लेकिन गुरू आशीर्वाद से बिल्कुल ठीक हो गए। मरकर दोबारा बचना हमारे लिए कम आश्चर्य की बात नहीं थी। यह तो एक बहुत बड़ा चमत्कार था।

रामसेवक, उड़ीसा

उड़ीसा के रहने वाले रामसेवक जी से मैंने गुरूजी के विषय में उनके विचार जानें वह गुरूजी का पक्का भक्त है। थोड़ा बहुत मैं भी उनसे परिचित हूँ वह बताने लगे कि साधु-महात्मा जहाँ भी जाते हैं, उस धरती की शोभा ही बढ़ाते हैं, असल में नुकसान तो उन स्थानों को एवं उन लोगों को होता है, जो जान बूझकर साधु-महात्माओं को परेशान किया करते हैं। दुर्जन लोग बिना किसी कारण ही साधुओं को पत्थर मारते हैं, दुष्प्रचार करते हैं। लेकिन जब ये हंस रूपी साधु उन स्थानों को छोड़कर और कहीं चले जाते हैं, तब उन्हें इस बात का एहसास होता है। फिर वे लोग पछताते हैं, कहते हैं कि हमसे तो बहुत बड़ी भूल हो गई। मठ में रहने वाले सभी साधुगण मेरे लिए पूजनीय है। मठ अस्थल बोहर तो साधुओं का सरोवर है। और इस सरोवर में चारों तरफ हंस रूपी साधु निवास करते हैं। अपने ज्ञान को सदैव भक्तों में वितरित करते रहते है। साधुओं

का आचरण तो एकदम स्वच्छ होता है। इसीलए उन्हें स्वच्छंदता ही प्रिय होती है।

आजकल अज्ञानी लोग अपने को कुछ ज्यादा समझदार समझकर गुरूओं को ही सिखाने चल पड़ते हैं। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि गुरू जो सिखाते है। वह करना चाहिए, गुरू जो करें वह नहीं करना चाहिए। गृहस्थी लोगों को तो कदापि गुरूओं के कार्य में दखल अंदाजी नहीं करनी चाहिए।

गुरूजी एक बहुत बड़े शिक्षा-प्रेमी महात्मा हैं, ज्ञान का भंडार हैं। अंत में मैं यही कहूँगा कि गुरू बिना ज्ञान नहीं, मुक्ति नहीं।

लेखिका के कुछ निजी अनुभव

सन् १९९३ नवम्बर माह की घटना हैं रात्रि का भोजन करने के पश्चात् मैं कुछ देर बाहर घूमती रही, साथ-साथ में जप भी करती जा ही थी। ग्यारह बजे में अपने बिस्तर पर आकर लेट गई। लेटे-लेटे भी जप कर रही थी, कब मुझे नींद आ गई मुझे नहीं मालूम। जब मैं सुबह ड्यूटी जाने के लिए उठने लगी, तो मैं उठ ही नहीं सकी। मुझे बहुत तेज बुखार हो गया था । उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था। सब जांच कराई, पूरी तरह ठीक थी । समझ में नहीं आ रहा था कि बुखार का क्या कारण है ?

एक रात मैं बहुत दुःखी होकर बिस्तर में लेटी हुई थी, बुखार के कारण नींद नहीं आ रही थी। बाबा का नाम ले रही

थी और साथ-साथ में गुरू मंत्र का जप कर रही थी। उस समय सुबह के चार बज चुके थे। एकदम से मेरा कमरा एक विचित्र सी सुगन्ध से भर उठा। दूसरे ही क्षण मेरा कमरा शुभ्र वर्ण के प्रकाश से चमक उठा। उस प्रकाश में से भी सुनहरी किरणें निकल रही थी। धीरे-धीरे वह प्रकाश पुंज एक मनुष्य के आकार में बदलने लगा और अन्त में उस एक ही पुंज से दो चिन्मय शरीरधारी महात्मा प्रकट हो गए। दोनों महात्माओं के चेहरे पर एक अलौकिक तेज था, उनके नेत्रों में प्रखर ज्योति थी। एक महात्मा के शरीर का रंग बादामी था। सिर पर लम्बी-लम्बी जटाऐं थी, दूसरे महात्मा का रंग एकदम काला था। उन दोनों के शरीर से एक अनिर्वचनीय सी सुगन्ध निकल कर पूरे कमरे में फैल गई। मैं लेटी-लेटी सब कुछ बहुत अच्छी तरह से देख रही थी। वे बिना सहारे के हवा में ही पद्मासन लगाये हुए बैठे थे। दोनों एक छोटे शिशु की तरह मुस्करा रहे थे।

ऐसा प्रतीत हो रहा था, मैं इन दोनों महात्माओं से अच्छी तरह परिचित हूँ एक महात्मा तो साद्दश्य में वही थे, जो सिद्ध स्मृति भवन में श्री बाबा मस्तनाथ जी की मूर्ति है। और दूसरे महात्मा बिल्कुल वैसे थे जैसे कमलेश्वरम् मन्दिर में गुरू गोरक्षनाथ जी की मूर्ति है। (श्रीनगर में बद्रीनारायण मन्दिर जाते समय आता है) वही मूर्ति मुझे चिन्मय रूप में दिखाई दी, किन्तु काले महात्मा जी की शक्ल एकदम गुरूजी जैसी थी। मैंने लेटे-लेटे ही दोनों महात्माओं को नमस्कार किया, तत्पश्चात् मैंने उनसे कहा- बाबाजी मेरी तबीयत बहुत खराब है। दोनों

महात्मा मेरी तरफ देखकर मुस्कराने लगे, कहने लगे इसीलिए तो हम आयें है। इतना कहकर दोनों ने हाथ ऊपर करके मुझे आशीर्वाद दिया, और क्षणभर में ही दोनों चिन्मय एवं दिव्य शरीरघारी महात्मा अन्तर्ध्यान हो गये। मेरा कमरा पहले जैसा ही हो गया, पलभर में ही सब कुछ साफ हो गया, न कोई रोशनी थी, न सुगन्ध, न महात्मा। कुछ देर तक मैं सोच-विचार में ही डूबी रही, फिर पता नही मुझे कब नींद लग गई। जब मैं सुबह उठी तो मेरा बदन एकदम फूल जैसा हल्का था। बुखार का कहीं नामोनिशान नहीं था। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ हुआ ही न हो। इस प्रकार से मैं बाबा के आशीर्वाद से एकदम स्वस्थ हो गई।

पलभर में ही शंका निवारण

मठ अस्थल बोहर एक सिद्ध भूमि है, इसमें कोई सन्देह नहीं। श्री बाबा मस्तनाथ जी की अपने भक्तों पर असीम कृपा रहती है। यहाँ शीश झुकाने वाले सदैव सुख-समृद्धि पाते हैं। यहाँ पर अपने भक्तों को यश प्रदान करने वाले श्री बाबा मस्तनाथ जी का सदैव गुणगान होता रहता है। यहाँ पर आने वाले सभी भक्त अज्ञान और शोक को दूर करने वाले श्री बाबा को कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं। सभी को यह भली-भाँति ज्ञात है कि श्री बाबाजी का नाम ही उन्हें पाप मुक्त करता है। बाबाजी शिवातार श्री महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी का ही अवतार है।

यह सब ज्ञान होने के पश्चात् भी एक दिन मेरे मन में

कुछ शंका उत्पन्न हो गई। घटना केवल चार वर्ष पहले की ही है। उस समय शाम के साढ़े सात बजे थे, बाबाजी की आरती हो रही थी। वहाँ पर उपस्थित भक्त और साधु-महात्मा पूजा करके अन्दर शिव मन्दिर में चले गये। मैं अपनी मौसी के साथ बाबाजी के समाधि स्थल पर ही थी। मैंने समाधि के समक्ष ही खड़े होकर मन में सोचा कि सब लोग दूर-दूर से यहाँ आकर मन्नत मांगते हैं और सबके मनोरथ पूर्ण भी हो जाते हैं, लेकिन मैंने मन्दिर के अन्दर आज तक कोई भी चमत्कार नहीं देखा। अगर बाबा की समाधि चेतन है तो मुझे आज तक कोई चमत्कार क्यों नहीं दिखाया। मैं अभी सोच ही रही थी कि अचानक काले कम्बल सहित पूरी समाधि एकदम से टेढ़ी हो गई, जो पुष्प मालाऐं चढ़ी हुई थी वे भी हिलकर टेढ़ी हो गई। मैं तो यह देखकर बुरी तरह से घबरा गई। मेरी आँखों से एकदम मोटे-मोटे आसूं बह निकले और मैं पसीने-पसीने हो गई। जोर-जोर से मौसी-मौसी चिल्लाने लगी। मेरी समझ में यह बिल्कुल भी नहीं आया कि अचानक से यह मुझे क्या हो गया है? दस पन्द्रह मिनट तक मैं बहुत डरी हुई और सहमी खड़ी रही। जब मैं कुछ ठीक हुई तो मैंने सारी घटना अपनी मौसी को बताई। सब कुछ जानकर मौसी ने मुझे बहुत डांटा, कहने लगी- तुझे बाबा के विषय में शंका करने की क्या आवश्यकता थी। तत्पश्चात् उन्होंने मुझे समझाया कि बाबा की समाधि बहुत चेतन है, तेरी शंका निवारण करने के लिए ही बाबाजी ने तुझे यह प्रत्यक्ष चमत्कार दिखाया है।

गुरूजी के रूप में भगवान श्री कृष्ण के दिव्य दर्शन

सर्विस वाले लोगों के लिए एक ही समय पर प्रतिदिन ध्यान करना इतना आसान नहीं है, खासकर उन लोगों के लिए जिनकी ड्यूटी प्रतिदिन बदलती रहती है। मैं भी उन्हीं लोगों मे से एक हूं। मुझे भी जब समय मिलता है। तभी थोड़ा बहुत ध्यान कर लेती हूँ। कभी-कभी तो मन में अच्छे-बुरे ख्याल आते हैं और कभी-कभी बहुत आनंद आता है, कहां से कहां पहुंच जाती हूँ। ध्यानावस्था में मुझे पता ही नहीं चलता। एक दिन मैंने देखा जैसे गुरूजी बहुत लम्बे हो गये हैं। उनकी लम्बाई कम से कम पच्चीस फुट तो अवश्य होगी, शरीर भी बहुत हृष्ट-पुष्ट था। उनके मुखमंडल पर उस समय एक अपूर्व तेज था । मैं जैसे ही गुरूजी को नमस्कार करने के लिए नीचे की ओर झुकी तो गुरूजी के श्री-चरणों को देखकर आश्चर्य चकित रह गई। उन्होंने सारा श्रृंगार भगवान कृष्ण की तरह किया हुआ था। पाँव में पैंजनी, अंगुलियों में अंगूठियां पहनी हुई थी। मैं मन ही मन सोचने लगी कि इतने सादे कपड़े पहने वाले गुरूजी को आज क्या हो गया है ? शरीर पर गेरूआ वस्त्र के स्थान पर पीताम्बर सुशोभित हो रहा था, गले में वैजन्ती माला और होठों पर मन्द-मन्द मुस्कान थी। मैंने थोड़ी हिम्मत जुटाई और जिज्ञासा वश गुरूजी से बड़े धीमे स्वर में पूछा। गुरूजी आज आपने ऐसा वस्त्र एवं इतने सारे आभूषण क्यों पहने हुए हैं। ऐसे आकर्षक आभूषण तो मैंने कभी नहीं देखे। आज ये सब पहनने के पीछे क्या रहस्य है-

गुरूजी आप मालिक संसार के, और हो बड़े दातार।
मेरा संशय दूर करो, करो मेरा उद्धार।।
उसी समय गुरूजी ने अपनी अमृतमयी वाणी में कहा
मतलब तुम्हारी बात का, नहीं सका मैं जान।
इच्छा क्या तुम्हारी है, सच-सच करो ब्यान।।

मैंने गुरूजी से कहा- हे गुरूदेव! आज मुझे अपने इस लिबास के पीछे छिपे रहस्य का खोलकर वर्णन कीजिए- मेरी बात को सुनकर गुरूजी मंद-मंद मुस्कुराने लगे और कहने लगे-

हम तो रमते राम हैं, कहीं नहीं घर गाम।
जल योगी करते नहीं, अपना एक मुकाम।
अपना कहीं मुकाम नहीं, मोह ममता का वास नहीं।
अपना पराया एकसा, दूनियां में हमें विश्वास नहीं।।
एक अलख नाम आधार है, किसी और वस्तु का ख्याल नही।
हर हाल में खुश रहना मुझे, करते चित्त उदास नहीं।।

उसके पश्चात् मैंने गुरूजी से कहा- आपके पाँव में भी इतनी अंगूठी हैं, इनमें से एक मुझे दे दीजिए। मेरे प्रश्न के उत्तर में गुरूजी ने कहा- बच्चे, तुझे ये अंगूठी छोटी लग रही है लेकिन तू इसका भार सहन नहीं कर सकती। ये सब के सब दिव्य आभूषण हैं, ये आभूषण जो तूने आज देखें हैं, वे सब तो मैं रोज ही पहनता हूँ। किन्तु तुम सब लोगों को इन आँखों से ये दिखाई नहीं देते।

इतना सुनकर मैंने गुरूजी के फिर से चरण पकड़ लिए, गुरूजी ने मुझे आशीर्वाद दिया। वह छवि गुरूजी की आज भी मेरे हृदय से नहीं निकलती। वह रूप अवर्णनीय था, बहुत ही मनोहर प्रतीत हो रहा था।

स्वप्न में गुरू दीक्षा

सन् १९९४ की बात है, मैं रात की ड्यूटी करके सुबह नौ बजे दूसरे कमरे में सोने के लिए गई। जब तक नींद नही आई तक जप करती रही, फिर कब मुझे नींद आ गई नहीं मालूम। नींद में मैंने इतना सुन्दर स्वप्न देखा जो कि मैंने कभी सोचा भी नहीं था। तब तक मुझे यह नहीं मालूम था कि गुरू मंत्र या गुरू दीक्षा क्या होती है ?

उस दिन मैंने देखा जैसे मैं एक घने जंगल से गुजर रही हूं। मैंने भगवा रंग के वस्त्र धारण किए हुए हैं, और मैं भागती हुई जा रही हूँ (हू-ब-हू स्वप्न का वर्णन करना अत्यंत कठिन है) अचानक से मार्ग में गुरूजी प्रकट हो गये, उस समय उनका मुखमंडल एक अलौकिक तेज से दमक रहा था। मैंने गुरूजी को प्रणाम किया और फिर चलने लगी। चलते समय गुरूजी ने मुझे बड़े गंभीर स्वर में कहा- बच्चे! मार्ग में किसी से कोई बात मत करना, प्रभु भजन में लीन रहना। जप करते जाना और शांत रहना।

दोहा - जो तुम इस संसार में रहो शील शांत व्रतधार।
तो निश्चय ही मानव तन का हो जाए उद्धार।।

श्री गुरूजी ने एक बार फिर समझाया- बच्चे! मार्ग में तुझे कई प्रकार की कठिनाईयाँ आयेगी, बड़े ही शांत भाव से उनका मुकाबला करना, क्रोध करने की आवश्यकता नहीं है। तुझे कई प्रकार की सिद्धियाँ सिखानी है, यह सुनकर मैं अति प्रसन्न हुई। मेरे देखते ही देखते गुरूजी वहीं पर अन्तर्ध्यान हो गये। मैं फिर से चलने लगी, अभी कुछ ही दूर पहूँची थी कि- अचानक से न जाने कहाँ से छोटे-छोटे बालक मेरे पीछे लग गये। उनकी आयु दस वर्ष से अधिक नहीं थी। सब के सब मिलकर जोर-जोर से शोर करने लगे और उत्पात मचाने लगे। कहने लगे-साध्वी आ गई। साध्वी आ गइ! उनका शोर सुनकर मुझे बहुत क्रोध आया, किन्तु गुरू आज्ञा शिरोधार्य कर मैं चुपचाप से भागी जा रही थी। मैंने किसी से भी बातचीत नहीं की। उसके बाद पहाड़ी रास्ता शुरू हो गया, बहुत ही ऊँचे-ऊँचे गगन चुंबी पहाड़ थे। रास्ता कठिन से कठिन होता जा रहा था, मैं चलती ही जा रही थी। अभी पहाड़ों पर कुछ ही दूर पहूँची थी, कि वे सब उत्पाती बालक अपने आप ही न जाने कहाँ गायब हो गये। चलते-चलते अन्त में जाने कहाँ पहूँच गई, मुझे पता ही नहीं चला। वह एक पहाड़ की बहुत ही ऊँची चोटी थी। ऊपर चढ़कर सबसे पहले मैंने चारों ओर देखा। चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़, घाटियां और बहुत ही सुन्दर वन नजर आ रहे थे। उस समय रात हो चुकी थी, चाँदनी रात थी, रूपहला चाँद निकला हुआ था। इतने सुन्दर दृश्य देखकर मैं बहुत ही प्रसन्न हुई। किन्तु अचानक से एक विचित्र एवं अद्‌भुत दृश्य को देखकर मैं एक दम स्तब्ध खड़ी रह गई। मेरे समक्ष गुरूजी खड़े

थे। मैंने बड़े आश्चर्य से उनकी तरफ देखा और पूछा- गुरूजी आप यहाँ किधर से आये, मैंने तो आपको कहीं से भी आते हुए नहीं देखा।

गुरूजी ने कहा- ज्यादा बातें करने, और इधर-उधर देखने से ऊर्जा क्षीण होती है। इसलिए जितना मौन रहो उतना ही ठीक है। वहाँ पर एक पत्थर का आसन रखा हुआ था। गुरूजी ने मुझे एक शिव मंत्र बतलाया और कहा कि उस आसन पर बैठकर इस मंत्र का जप करती रहना, जब तक मैं नहीं बोलूँ तब तक जप करती रहना।

मैंने गुरूजी का आशीर्वाद लिया और जाकर आसन पर बैठ गई, और जप करने लगी। जप करते-करते मुझे कई घंटे बीत गये, गुरूजी ने फिर अपने आप ही कहा कि अब नीचे आकर कुछ प्रसाद ग्रहण करो। मैं नीचे आई, और गुरूजी से कहने लगी कि पहाड़ों में यह प्रसाद कहाँ से आया। प्रसाद में भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यजंन थे। गुरूजी ने कहा कि व्यर्थ की बातें मत कर और इसे ग्रहण कर। साधना के लिए भोजन करना अति आवश्यक है, नहीं तो शरीर क्षीण हो जायेगा और क्षीणता के कारण साधना करना कठिन हो जायेगा।

प्रसाद ग्रहण करने से पहले मैंने गुरूजी को प्रणाम किया। जैसे ही मैंने उनके चरण छुए तो एकदम से गुरूजी का स्वरूप ही बदल गया। यह देखकर मैं बुरी तरह सहम गई, डर गई और घबरा गई। उस समय उनका मुखमंडल बहुत तेजमय था, मस्तक के मध्य से प्रकाश देदीप्यमान हो रहा था।

मैं उस समय बहुत डरी हुई थी, फिर भी कुछ दूर हटकर मैंनें उनसे पूछा- आप कौन है ? हमारे गुरूजी कहाँ चले गये?

वह महात्मा जी मुझे बताने लगे- बच्चे! घबराने की आवश्यकता नहीं है। मैं तो परशुराम हूँ ऋषि परशुराम! तत्पश्चात् मैंने भगवान परशुराम जी के श्री चरण कमलों की वन्दना की। उन्होंने मुझसे कहा- आज यह मंत्र जो मैंने तुम्हें बतलाया है, सदैव इसी का जप करती रहना। इतना कह वह अन्तर्ध्यान हो गये। उस खुशी का वर्णन करना मेरे लिए संभव नहीं।

गुरू के लिए श्रद्धा अति आवश्यक

सूर्य तो रोज उगता हैं पूर्व दिशा में, और ठीक बारह घंटे बाद अस्त भी होता है। उल्लू देखे ही नहीं सूर्य को, और उल्लू अगर कहे कि सूर्य होता ही नहीं, तो इसमें सूर्य का क्या दोष है। यदि गुरू रास्ता बताए और शिष्य देखे ही नहीं या फिर देखना ही नहीं चाहें तो इसमें गुरू का क्या दोष है। गुरू तो शिष्य को साधना के पथ पर अग्रसर करता ही है, परंतु यदि शिष्य उस ज्ञान को अपने जीवन में न उतार पाएँ तो इसमें दोष गुरू का नहीं, शिष्य का है। गुरू तो दे रहा है आप उसे ग्रहण ही नहीं कर पाते, इसलिए आपके जीवन में समस्याऐं बनी ही रहती है। ये पंक्तियाँ राजा भर्तृहरि ने अपने अनुभव के आधार पर लिखी है।

जब बुद्धि असहाय हो जाती है, थक कर बैठ जाती है, तब श्रद्धा एवं विश्वास के फूल खिलते हैं। श्रद्धा का भाव न हो

तब तक कोई भी ज्ञान खतरनाक सिद्ध हो सकता है। कोई भी ज्ञान स्वयं खतरनाक नहीं होता, किन्तु ज्ञान जिसको उपलब्ध होता है, उसके पास यदि श्रद्धा का हृदय नहीं है तो उस ज्ञान का खतरनाक होना निश्चित है। क्योंकि ज्ञान परमात्मा की परम-शक्ति है। ''ज्ञान परमात्मा का प्रकाश है'' इसलिए श्रद्धा होना अति आवश्यक है और ज्ञान देने वाले गुरू हैं। इसलिए गुरू पर या उनके द्वारा बताऐ गए किसी भी शब्द पर सन्देह करना ठीक नहीं।

यह भी मेरा स्वयं का ही अनुभव है। छः वर्ष पहले की बात है, शाम की आरती के पश्चात् मैं आकर सोफे पर लेट गई और मन में सोचने लगी कि- हे शंकर भगवान! आज मुझे गुरूजी का असली रूप दिखा दीजिए। सन्देह उत्पन्न होते ही मैं वहीं पर ध्यान में बैठ गई। ध्यान में बैठने के कुछ ही क्षण बाद गुरूजी की मूर्ति जोर-जोर से हिलने लगी। ऐसे लग रहा था मानों, कोई तूफान आ गया हो। कुछ देर बाद तूफान तो शांत हो गया, साथ ही साथ गुरूजी की मूर्ति भी गायब हो गई। पूरे कमरे में प्रकाश फैल गया। स्वर्णिम प्रकाश से सारा घर जगमगा उठा। वहां पर रखी हुई प्रत्येक वस्तु चमक रही थी। वह प्रकाश कोई साधारण प्रकाश नहीं था। कुछ देर के पश्चात् और ज्यादा प्रकाश हो गया और उसी प्रकाश में श्री गुरूजी प्रकट हो गए। कुछ ही देर बाद गुरूजी उसी प्रकाश में विलीन हो गए। उनके स्थान पर प्रकट हो गए एक महात्मा! बहुत लंबे-चौड़े स्वस्थ, रंग सांवला, सिर पर लंबी-लंबी जटाऐं, भगवा वस्त्र, आयु लगभग साठ-पैंसठ वर्ष अवश्य होगी, हाथ में

कमण्डल और चेहरा साधना के तेज से साफ चमक रहा था। महात्मा जी के ऐसे दिव्य तेज को देखकर मैं डरकर पसीने-पसीने हो गई। थोड़ी देर के बाद जब मेरा ध्यान भंग हुआ तो देखा मेरी आँखों में आँसू थे। ऐसा लग रहा था जैसे शरीर में जान ही नही है। उस समय मुझमें उठने की ताकत भी नहीं थी। दस मिनट बाद उठी और फिर से लेट गई। मेरे प्रश्न का उत्तर मुझे मिल चुका था।

उसी रात मैंने सपना देखा जैसे मैं मन्दिर में गई हूँ समाधि पर आदेश नमस्कार करके मैं गुरूजी के पास अन्दर पहूँची। गुरूजी उस समय समाचार सुन रहे थे। उनके पास उनका एक भक्त भी बैठा था। समाचार देखते-देखते बीच-बीच में उनकी ध्यान के विषय में चर्चा भी जारी थी। मुझे देखकर गुरूजी ने अपने समीप बैठे हुए भक्त से कहा- महेन्द्र! ये मुन्नी मुझ पर सन्देह करती है। आज शाम को ये पूछ रही थी कि हे भगवान शंकर! मुझे गुरूजी का असली रूप दिखा दीजिए। उसी समय इसने देख भी लिया, इसीलिए यहां अब मुझसे मिलने आई है।

यह सुनकर एकदम से जैसे मेरे पांव तले से जमीन की निकल गई। मैं सोचने लगी यह बात तो मैंने किसी को भी नहीं बताई गुरूजी को कैसे मालूम हुई।

गुरूजी मुस्कुराने लगे और मुझसे कहा- कोई बात नहीं, लेकिन आगे से कभी भी गुरूओं के विषय में ऐसे नहीं सोचना, उन पर सन्देह नहीं करना। योग्य गुरू की खोज करते

हो, किन्तु पहले अपने को भी तो योग्य बनाओ।

सिद्ध स्मृति भवन में स्वर्ग का दृश्य

एक दिन मैंने देखा, सिद्ध स्मृति भवन में एक तेजस्वी महात्मा सन्ध्या वन्दन कर रहे हैं। उनके मुखमंडल पर अपूर्व तेज था। वह सरल प्रवृत्ति के साथ बहुत ही मृदुभाषी थे। दाढ़ी मूंछ और सिर पर लंबे-लंबे बाल थे। उनकी शरीर मांसल न होते हुए भी पुष्ट गठित और स्वस्थ थी। भगवा वस्त्र में वह बहुत ही सुन्दर दिख रहे थे। उनकी आँखें तेज से चमक रही थी। पूजा की थाली उनके हाथ में थी, थाली में एक दीपक जल रहा था, और एक धूप बत्ती भी जल रही थी। धूपबत्ती से अत्यंत लुभावनी, मन्द-मन्द सुगन्ध आ रही थी। सुगन्ध से सिद्ध स्मृति भवन का सारा वातावरण सुगन्धित हो रहा था।

भवन में मैं अपनी मौसीं के साथ बैठी-बैठी पूजा का सारा विधान देख रही थी। आरती जिस भाषा में थी वह हमारी समझ में नहीं आ रही थी। हम दोनों चुपचाप से बैठे-बैठे जप कर रहे थे। बहुत देर के बाद मुझे जोरों से भूख सताने लगी। मैंने अपनी मौसी के कान में धीरे से कहा- मुझे भूख लगी है। पूजा करते हुए महात्मा जी ने मेरे मन की बात को समझ लिया। उन्होंने चुपचाप से आकर पूजा की थाली में से मुझे एक केला उठाकर दे दिया। मैंने केला खा लिया। मुझे नहीं मालूम वह केला कैसा था, वह साधारण फल नहीं था, वह कोई दिव्य फल था। वह केला खाते ही क्षणभर में ही सब कुछ बदल गया।

सिद्ध स्मृति भवन पूरा का पूरा सोने का हो गया। भवन में बने हुए सभी बड़े-बड़े स्तम्भ सोने के हो गए। पूरे भवन में स्वर्णिम प्रकाश तीव्र गति से फैलने लगा । मैं अचम्भित होकर वह सब देख रही थी। मेरे मन में न कोई भय था न ही मुझे दुनियाँ की कोई जानकारी थी। तत्पश्चात् मैंने जो देखा वह लिखना तो मेरे लिए अत्यंत कठिन है। कहते हैं कोई भी कार्य कठिन अवश्य है लेकिन असंभव नहीं है। इसलिए कोशिश करके देखती हूँ ।

भवन की सभी मूर्तियाँ चैतन्य हो उठी। मन्द-मन्द वायु चलने लगी, पूरा वातावरण महकने लगा। बादलों जैसी एकदम श्वेत रंग की धुन्ध कभी आ जाती थी कभी चली जाती थी। भवन में विराजित श्री बाबा मस्तनाथ जी की मूर्ति साक्षात् भगवान् शिव के रूप में परिवर्तित हो गई। बाबा तोतानाथ जी साक्षात् विष्णु भगवान के रूप में हाथ में गदा और चक्र लिए हुए पदमासन मुद्रा में बैठे थे। श्री बाबा मेघनाथ जी ब्रह्मा जी के रूप में प्रकट हो गए उनके चार मुख सामने दिख रहे थे। बाबा मोहरनाथ जी भगवान राम के रूप में प्रकट हो गए, हाथ में धनुष और पीछे तरकश में बाण लगे हुए स्पष्ट दिख रहे थे। बाबा चेतनाथ जी ने कृष्ण, भगवान का रूप धारण कर लिया। बाबा पूर्णनाथ जी ने भी किसी देव का रूप धारण कर लिया । उनका नाम मुझे ज्ञात नहीं। श्री बाबा श्रेयोनाथ जी का रूप देखकर तो मैं आश्चर्य चकित रह गई। उनका रूप इतना सुन्दर और सौम्य था कि मुझे उठकर उनके पास जाना ही पड़ा, उन्होंने माँ सरस्वती का रूप धारण कर लिया, उनका

दुग्धधवल परिधान था, हाथ में वीणा और दूसरे हाथ में पुस्तक थी। धीरे-धीरे उन्होंने अपने वीणा के तारों को बाजाना शुरू किया। उस वीणा के संगीत से वहाँ पर उपस्थित सभी देवगण उस संगीत में खो गए। सब के सब वहाँ पर बैठकर झूमने लगे। मैं वहाँ पर बैठी हुई सबको निहार रही थी। सबके सब मेरे समक्ष ही बैठे हुए थे। उस समय मैं भी ऐसी नहीं थी, जैसी अब हूँ मेरा रंग रूप भी कुछ दूसरा ही था। मैंने सभी देवताओं से बातचीत की, ऐसा लग रहा था मानो, मैं इन सबसे बहुत पहले से ही परिचित हूँ उस समय मेरे दिल, दिमाग में बहुत शांति थी। ऐसा आनंद परम आनंद मुझे दोबारा कभी भी अनुभव नहीं हुआ। मेरी शांति और आनंद तब भंग हुए जब मेरा ध्यान भंग हुआ।

ब्रह्मलीन महंत श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज

महंत श्री दिग्विजयनाथ जी का जन्म उदयपुर के राणावंशीय परिवार में सन् १८६४ में बैशाखी पूर्णिमा को हुआ। बचपन में श्री दिग्विजयनाथ जी राणा नान्हु सिंह के नाम से विख्यात थे। उनका आविर्भाव बाप्पा रावल के उस इतिहास प्रसिद्ध वंश में हुआ, जिसमें उत्पन्न होकर राणा सांगा और महाराणा प्रताप जैसे स्वदेशाभिमानी वीरों ने देश और धर्म की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया था। महाराणा प्रताप की तलवार ने जिस वंश के इतिहास के त्याग, वीरता और आत्म-निश्वास, आत्म-सम्मान का इतिहास बना दिया था, जिस धरती को शत्रुओं के खून से सींच-सींच कर पवित्र और पूज्य बनाया था, उसी उदयपुर की भूमि पर सिसौदिया वंश में जन्म लेकर राणा नान्हु सिंह ने भी अपने जीवन को त्याग और बलिदान का आदर्श प्रतीक बना दिया।

विधि का विधान बड़ा ही अटल होता है, अखिल मानव वर्ग का नाथ होने के लिए ही मानों वे बाल्यकाल में ही अनाथ हो गये। इनके चाचा ने इन्हें बाबा फूलनाथ जी के श्री-चरणों में गोरक्षनाथ मन्दिर में समर्पित कर दिया।

मन्दिर की ओर से ही बालक दिग्विजय की प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था की गई। यह बालक विद्यालय के सभी कार्यक्रमों में बड़े उत्साह से और बढ़ चढ़ कर भाग लेता था। नेतृत्व, निर्भीकता, स्वाभिमान, अनुशासन और कार्यकुशलता

ब्रहमलीन महन्त श्री दिग्विजय नाथ जी महाराज

उनके जीवन के प्रधान गुण थे। छात्र जीवन में वे हाकी के श्रेष्ठ खिलाड़ी थे। मैदान में उतरने के बाद वे अपने व्यक्तित्व, व्यवहार और क्रीड़ा-कौशल के कारण समूचे जन समूह पर छा जाते थे।

विद्यार्थी जीवन में ही राणा नान्हु सिंह के हृदय में हिन्दू जाति, हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति के प्रति पूरी आस्था उत्पन्न हो गई थी। जिस समय वे आठवीं कक्षा के छात्र थे, उस समय स्कूल के निकट बने एक शिव मन्दिर को लेकर एक विवाद खड़ा हो गया । स्कूल के पास की भूमि रेलवे कर्मचारियों के आवास के लिए ली जा रही थी। उसी भू-भाग में निर्मित शिव मन्दिर उपासना का बड़ा केन्द्र बन चुका था। जब उसे गिराने का प्रयास किया जाने लगा, तो राणा नान्हु सिहं के नेतृत्व में विद्यार्थियों के एक विशाल जनसमूह ने रेलवे के चीफ इंजीनियर का बंगला घेर लिया उस समय छात्रों के साथ नृसिंह प्रसाद ऐडवोकेट भी थे। छात्रों की विशाल परेड का नेतृत्व करने के कारण राणा नान्हु सिंह और स्थानीय रईस का बाबू पुरषोत्तमदास जी को पकड़ कर हवालात में डाल दिया गया। बाद में समझौता हुआ, और मन्दिर गिरने से बच गया।

सन् १६१८ में जब वे नौवीं कक्षा के छात्र थे उस समय गोरक्षनाथ मन्दिर के प्रांगण में ईसाईमत प्रचारक कैम्प लगाकर अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे और कई वर्षों से वे यह कार्य करते आ रहे थे। हिन्दू मन्दिर में हिन्दू धर्म के विरूद्ध प्रचार किया जाए, इसे राणा नान्हु सिह सहन न कर सके। विद्यार्थियों

का एक विशाल जन समूह लेकर उन्होंने ईसाईमत प्रचारकों के कैम्पों पर आक्रमण कर दिया, कैम्प उजाड़ डाले गए ईसाई मत, धर्म की पुस्तकों को पोखरे में जल समाधि दे दी गई। इसके बाद कभी ईसाई प्रचारकों को मन्दिर के पावन प्रांगण में जाने का साहस न हुआ।

राजनीतिक गतिविधियों से सम्पर्क

राणा नान्हु का विद्यार्थी जीवन भारतीय पराधीनता का कठोरतक समय था। अंग्रेजी शासन के खिलाफ साधारण जनता में आवाज उठाने की हिम्मत न थी, तथापि उस अवस्था में भी राष्ट्र से प्रेम रखने वाले लोगों की कमी न थी।

सन् १६२० में महात्मा गांधी ने गोरखपुर बाले के मैदान में एक विशाल जनसमूह को सम्बोधित किया था। राणा नान्हु सिंह ने गाँधी जी के कार्यों की निर्विघ्न समाप्ति के लिए ''वालेन्टियर कोर'' का संगठन किया था और उनके कार्यों को पूरा करने के लिए तन मन धन से सहयोग किया था। किन्तु कुछ ही दिनों के पश्चात् चौरी-चौरा की ऐतिहासिक घटना ने यह सिद्ध कर दिया कि राणा नान्हु महात्मा गांधी के समझौतावादी सिद्धांतों के पोषक न थे। क्योंकि कांग्रेस ने मुस्लिम-तुष्टीकरण की नीति अपनाई, तथा भारत की अखंडता और हिन्दू-हितों को एक-एक कर मुस्लिम लीग की बलि-बेदी का बकरा बनाना शुरू कर दिया । जातीय गौरव की महाचेतना से अनुप्राणित उनका मन विद्रोह कर उठा, और वे वीर सावरकर के साथ हिन्दुओं

के हितों को सुरक्षित करने में जुट गये। वे आजीवन हिन्दू महासभा के गणमान्य व्यक्ति रहे। लंबे समय तक प्रदेशीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के उपाध यक्ष और बाद में महासभा के ग्वालियर महाअधिवेशन के समय हिन्दू राष्ट्रपति भी चुन गये।

सन् १६३५ में महन्त ब्रह्मनाथ के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् श्रावण पूर्णिमा के दिन १५ अगस्त सन् १६३५ में पूज्य दिग्विजयनाथ जी गोरखपुर में गोरखनाथ मन्दिर के पीठाधीश्वर पद पर अभिषिक्त हुए। जिस समय पूज्य महन्त जी ने गोरखनाथ पीठाधीश्वर का उत्तरदायित्व पूर्ण पद ग्रहण किया, उस समय मन्दिर की स्थिति ठीक नहीं थी। पूज्य महंत जी ने मन्दिर के विकास की योजनायें बनायी और तत्काल योजनाबद्ध रूप से अपने कार्यों में जुट गये। मन्दिर के पुनः निर्माण के लिए उन्होंने सफलता पूर्वक संचालन किया। उनकी प्रतिभा एवं समय की गतिविधियों को पहचान कर कार्य करने की अद्‌भुत सूझबूझ ने दो तीन दशकों में ही मन्दिर को भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ ओर पर्यटन केन्द्र बना दिया।

महंत दिग्विजयनाथ जी ने मन्दिर को नवीन रूप से व्यवस्थित किया। महंत जी ने इसे नाथ योग के प्रचार-प्रसार का प्रमुख केन्द्र बना दिया।

महंत जी भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा जगत के महान आचार्य थे। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में भी उनकी अग्रणी भूमिका रही है।

सन् १९६७ में महंत जी ने गोरखपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से हिन्दू महासभा को प्रत्याशी के रूप में कांग्रेस के प्रत्याशी को पराजित कर लोकसभा का चुनाव जीता। लोकसभा में वे हिन्दू महासभा के एकमात्र सदस्य थे। अकेले होते हुए भी लोकसभा के प्रत्येक विवाद में अपनी वाग्मिता चातुर्य के कारण उन्होंने सदैव सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। वे अपने विचारों को निर्भीकता के साथ अभिव्यक्त करने से नहीं चूकते थे। इसी कारण हिन्दू विचारधारा के कारण मुसलमानों और साम्यवादी सदस्यों में उत्तेजना का वातावरण पैदा हो जाता था।

सितम्बर १९६९ के अन्तिम सप्ताह में महंत जी अस्वस्थ हो गए। डाक्टरों ने पूर्ण निष्ठा के साथ श्री महंत जी का इलाज किया। २६ सितम्बर से २८ सितम्बर तक वे दवा के बल पर रहे, इस बीच उन्हें कई बार दिल के दौरे पड़े। किन्तु उस समय भी उनका मस्तिष्क हिन्दुओं को बचाने और उनकी समस्याओं का समाधान करने में लगा हुआ था।

सितम्बर २८ को अपराह्न में उनकी स्थिति और बिगड़ने लगी और उसी दिन ५ बजकर ३० मिनट शाम को उन्होंने चिर समाधि ले ली।

देश के कोने-कोने से राजनेता, श्रद्धालुगण उनके दर्शन करने के लिए गोरखपुर मन्दिर में उपस्थित हो गये। उनका ब्रह्मलीन पार्थिव शरीर २४ घंटे मन्दिर के प्रागंण में रखा

गया। लगभग १५ लाख व्यक्तियों ने उस महामानव के दर्शन किए और उनके प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री महंत जी हिन्दुओं के लिए आधुनिक युग के महाराणा प्रताप थे। उनमें ब्रह्मबल और क्षात्रबल का अद्‌भुत समन्वय था। उनकी स्मृतियां चिरकाल तक जन-मानस पर छाई रहेगी।

महन्त श्री अवेद्यनाथ जी महराज

महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् उनके सुयोग्य शिष्य योग दर्शन के मनीषी श्री अवेद्यनाथ जी महाराज उत्तराधिकारी के रूप में गोरक्षपीठाधीश्वर पद पर अधिष्ठित हुए और अपने पूज्य गुरूदेव की पुण्य स्मृति में अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का जन्म हिमालय की गोद में स्थित पौड़ी गढ़वाल जनपद के काण्डी ग्राम में सूर्यवंशी क्षत्रिय कुल में १८ मई १९२१ ई० को हुआ। इनका परिवार समृद्ध और पवित्र निष्ठाओं का धनी था।

अवेद्यनाथ जी की प्रारम्भिक शिक्षा उच्चतर माध्यमिक श्रेणी तक ही हो पाई । उसके पश्चात् वाराणसी में निवास कर उन्होंने संस्कृत के अध्ययन में बड़ी रूचि दिखाई। इन्होंने समस्त भारतीय दर्शन शास्त्रों का अध्ययन किया और योग दर्शन के महत्व को समझने में निरन्तर प्रयासरत रहे।

श्री महंत जी मानसरोवर कैलाश, तिब्बत, उत्तरांचल के

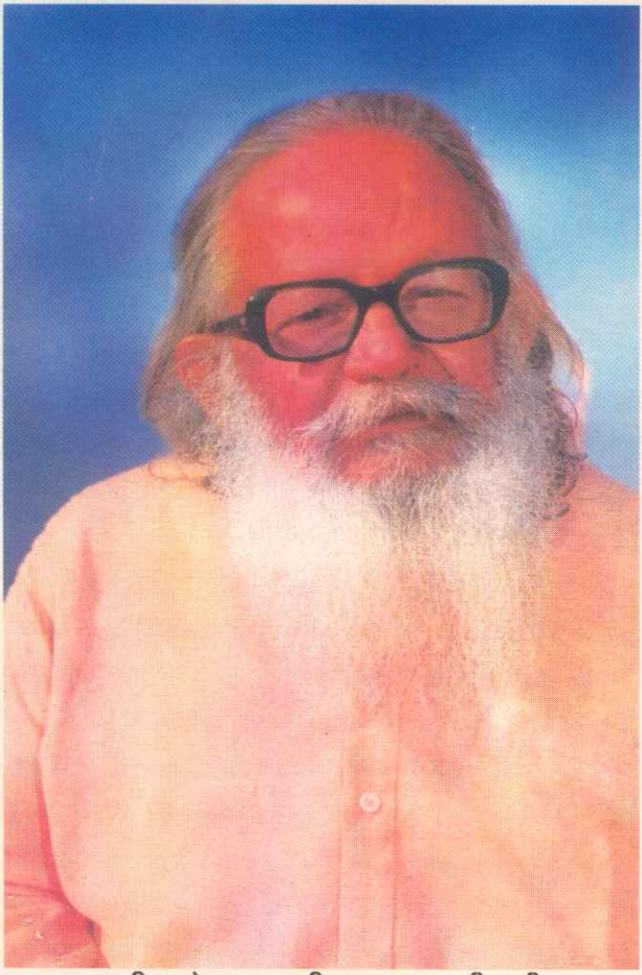

महन्त श्री अवेद्यनाथ जी महाराज, पीठाधीश्वर
गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर गोरखपुर भूतपूर्व संसद सदस्य

अनेक तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हुए साधु महात्माओं का सत्संग भी करते थे। नाथ सम्प्रदाय के सिद्धांतों के अनुशीलन में इन्होंने समय का सदुपयोग भी किया। इस कार्य में उन्हें योगी श्री गंभीरनाथ जी के दार्शनिक शिष्य महात्मा शांतिनाथ और उन्हीं के गुरूभाई निवृत्तिनाथ जी का सहकार प्राप्त हुआ।

योगी श्री दिग्विजयनाथ जी को एक योग्य शिष्य की खोज थी। श्री शांतिनाथ जी ने अवेद्यनाथ जी को गोरखपुर मन्दिर की ओर आकर्षित किया और वे उन्हीं के साथ गोरखनाथ मन्दिर में उपस्थित हुए। महंत दिग्विजयनाथ जी की हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उन्होंने सन् १६४२ ई० में अवेद्यनाथ जी को अपना शिष्य स्वीकार कर योगदीक्षा प्रदान कर विधिवत् अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

पीठाधीश्वर होने से पहले श्री अवेद्यनाथ जी महाराज देश के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में अपनी भूमिका निभाते हुए आध्यात्मिक पथ पर अडिग रहे। अपनी लोकप्रियता से श्री अवेद्यनाथ जी महाराज पाँच बार उत्तर-प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये तथा तीसरी बार भारतीय संसद में लोकसभा के सदस्य के रूप में गोरखपुर से निर्वाचित हुए।

अपने पूज्य गुरूदेव श्री दिग्विजयनाथ की गौरव परम्परा को निष्ठा पूर्वक आगे बढ़ाने वाले उनके उत्तराधिकारी महंत श्री अवेद्यनाथ जी भी अपने गुरूदेव की ही भाँति कर्त्तव्य-परायण, दूरदर्शी तथा देश एवं धर्म के प्रति निष्ठा रखने वाले हैं। आश्रम

की उन्नति के साथ-साथ अपने पूज्य गुरूदेव महंत श्री दिग्विजयनाथ जी की नीतियों का पूर्ण प्रचार एवं प्रसार भी किया है।

अवेद्यनाथ जी वेदान्त दर्शन और योग-दर्शन के महान विद्वान् हैं। श्रीमद्भगवद्गीता के आसाधारण तत्वज्ञ भी हैं। श्री महंत जी की कार्यकुशलता, प्रबन्ध कुशलता योग-साधना से गोरखनाथ मन्दिर में चार-चाँद लग गये हैं।

ब्रह्मलीन श्री सिद्ध योगी लक्खीनाथ जी महाराज

सिद्ध योगी श्री लक्खीनाथ जी महाराज का जन्म गांव बिहोली हरियाणा की प्रसविनी भूमि पर एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। बाबा लक्खीनाथ जी का प्रारम्भिक जीवन दिव्य संस्कारों और आध्यात्मिक मनोवृत्तियों से सम्पन्न था। श्री बाबा लक्खीनाथ जी का परिवार समृद्ध और पवित्र निष्ठाओं से परिपूर्ण था। विधि ने भाग्य में योग लिखा था, तो भोग के प्रति वैराग्य के संस्कारों का उनकी बाल्यावस्था में उदय होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

श्री बाबा लक्खीनाथ जी के पिताजी ने उनके पालन -पोषण और शिक्षा में बड़ी सर्तकता से काम लिया। श्री बाबा जी के मन में योगी जीवन के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। उन्होंने अनेक भारतीय दर्शन शास्त्रों का अध्ययन किया और योग को समझने में वह सदैव ही प्रयासरत रहते थे। उन्होंने बाल्यकाल में ही अनेक तीर्थ स्थलों की यात्रा की। यात्रा के साथ-साथ उन्हें अनेक महात्माओं के दर्शनों का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण उन्हें योगी श्री नन्दूनाथ जी के दर्शन हुए।

सिद्ध योगी श्री नन्दू नाथ जी को लम्बे अर्से से एक योग्य शिष्य की खोज थी और उस दिन बाबा नन्दूनाथ जी को दैवीय कृपा से सोनीपत में योग्य शिष्य की प्राप्ति हुए।

श्री बाबा नन्दूनाथ जी उन्हें लेकर ''शिव मन्दिर''

ब्रह्मलीन श्री सिद्ध योगी श्री लक्खीनाथ जी महाराज

कुर्सियाँ घाट दिल्ली आ गए। वहाँ आकर बाबा नन्दूनाथ जी ने बाबा लक्खीनाथ जी की हर तरह से परीक्षा ली और उन सब में बाबा लक्खीनाथ जी उत्तीर्ण हुए। तत्पश्चात् ही बाबा नन्दूनाथ जी ने बाबा लक्खीनाथ जी को अपना शिष्य स्वीकार कर उन्हें योग-दीक्षा प्रदान कर विधिवत् अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

श्री बाबा लक्खीनाथ जी ने अनेक वर्षों तक जंगलों में रहकर कठोर साधना की। परीक्षित गढ़ के जंगलों में भगवान शंकर और हनुमान जी ने उन्हें साक्षात् दर्शन दिए।

श्री बाबा मस्तनाथ जी ने भी ध्यान में उन्हें कई बार दर्शन दिए। दिल्ली शिव मन्दिर में जब बाबा लक्खीनाथ जी दोपहर में विश्राम करते थे तो उनके साथ एक विशालकाय नाग सोता था। एक दिन अचानक कोई सेवक किसी कार्यवश अन्दर चला गया तो उसने देखा कि एक विशालकाय नाग श्री बाबा लक्खीनाथ जी के पास पड़ा हुआ है। वह सेवक बुरी तरह

चिल्लाया और घबरा गया। श्री बाबा लक्खीनाथ जी ने जब देखा कि सेवक बुरी तरह डरा हुआ है तो उन्होंने उसी समय नाग देवता को कहा- अब आप जाइये, इतना सुनते ही नाग देवता वहीं पर अन्तर्ध्यान हो गए।

श्री शिव मन्दिर परिसर में अन्य दर्शनीय स्थल

समाधि स्थल- मन्दिर के भीतर ही श्री बाबा लक्खीनाथ जी के पूज्य गुरूदेव श्री नन्दूनाथ जी एवं उनके दादागुरू श्री पन्नानाथ जी की समाधि है।

श्री हनुमान मन्दिरः- मन्दिर की दायीं ओर बहुत प्राचीन श्री हनुमान जी की अत्यंत आर्कषक मूर्ति प्रतिष्ठित है। हनुमान जी की मूर्ति के एकदम ऊपर एक अति प्राचीन त्रिवेणी (पीपल, वट और नीम) वृक्ष है। मंगलवार के दिन हजारों की संख्या में लोग श्री हनुमान जी के दर्शन करने तथा प्रसाद चढ़ाने आते हैं।

श्री यमुना जी :- मन्दिर के सामने तरण तारिणी, भक्ति दायिनी यमुना जी अपने शीतल एवं पवित्र जल के साथ बह रही है। यमुना किनारे ही यह शिव मन्दिर स्थित है।

इस शिव मन्दिर की शिव रात्रि पूरी दिल्ली में विख्यात है। शिवरात्रि के दिन सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगना शुरू हो जाता है। पूरे दिन भजन कीर्तन चलते हैं। रात्रि में चारों पहर की पूजा बड़े ही विधि-विधान से की जाती है। जिसमें सहस्त्रों श्रद्धालुगण भाग लेते हैं।

श्री बाबा लक्खीनाथ जी ब्रह्मलीन होने से एक सप्ताह पूर्व

उन दिनों श्री बाबा लक्खीनाथ जी बहुत अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी स्थिति काफी बिगड़ी हुई थी। उनके कई सेवक उनके निकट बैठे हुए थे। श्री बाबाजी ने उनसे पूछा- कि आज कौन सा दिन है। उन्होंने कहा कि बाबा जी ! आज शिवरात्रि का पर्व है। शिव रात्रि सुनकर बाबाजी कहने लगे कि आज के बाद तुम सब लोग शिवरात्रि अपने-अपने घर पर ही मनाया करो। जब मैं मन्दिर में था, तक कुछ और बात थी, अब वहाँ का वातावरण ठीक नहीं है, दिन प्रतिदिन वहां का वातावरण दूषित ही होता जायेगा। यदि तुम लोगों को कुछ दान करना हो, तो यहीं पर आकर करना। यह बाबा मस्तनाथ धाम बहुत ही पवित्र भूमि है, तपोभूमि है, पावन भूमि है। इस सिद्ध भूमि पर किया गया कोई भी दान कई गुणा ज्यादा फलित होता है।

वर्तमान मठाधीश्वर महंत चाँदनाथ जी योगी (पीर जी) के विषय में उन्होंने बताया कि पीर जी एक उच्चकोटि के साधक है, बहुत विद्वान् हैं और श्री बाबा मस्तनाथ स्वरूप हैं। इसलिए मेरे जाने के पश्चात् सदैव इनकी छत्रछाया में ही रहना है।

श्री बाबा लक्खीनाथ जी ने आगे कहा- जाना तो मुझे आज था लेकिन आज से बाबा मस्तनाथ नवमी के भी कुछ ही दिन शेष रह गये हैं। इसलिए मैंने सोचा मैं उसी दिन अपना ये भौतिक शरीर त्याग दूँगा। तुम सब ऐसे करना नवमी को

थोड़ी जल्दी आ जाना।

श्री बाबा मस्तनाथ नवमीं का पावन दिन आ गया। उस दिन बाबाजी के कहने के अनुसार उनके सभी भक्तगण पहले की अपेक्षा जल्दी पहुँच गये। उनके सभी भक्तों ने श्री बाबाजी को आदेश नमस्कार किया, गुरू पूजा की। उसके पश्चात् सभी उनके पास ही बैठ गए।

श्री बाबाजी ने कहा- तुम सब जाकर अब बाबा मस्तनाथ जी की पूजा करके आओ। जैसे ही सब लोग समाधि पर जाने की तैयारी करने लगे, उसी समय श्री बाबा जी ने अपना शरीर छोड़ दिया। यह देखकर उनके सभी सेवक रोने लगे। वह बड़ा ही हृदय विदारक दृश्य था। उस दिन लाखों की संख्या में श्रद्धालुगण श्री बाबा मस्तनाथ जी के दर्शनों व गद्दी पर उपस्थित महंत जी के दर्शन करने के लिए आते हैं किन्तु यह समाचार देने के लिए कि श्री बाबा लक्खीनाथ जी ने अपना शरीर त्याग दिया है। मैं बड़ी ही मुश्किल से वहाँ पहुँची, और उनको यह दुःखद समाचार सुनाया। श्री महंत जी ने उसी समय मेरे साथ एक साधु को भेज दिया। जैसे ही हम कमरे में पहुँचे. तो हमारे आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा। बाबा लक्खीनाथ जी तो सबसे बातें कर रहे थे। यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। बाबा लक्खीनाथ जी कहने लगे कि मैं तो केवल पाँच मिनट के लिए यह भौतिक शरीर छोड़कर सूक्ष्म शरीर से श्री बाबा मस्तनाथ जी को आदेश नमस्कार करने गया था।

यह चमत्कार देखकर सभी उपस्थित भक्तगण अत्यंत प्रसन्न हुए। श्री बाबा मस्तनाथ जी एवं श्री बाबा लक्खीनाथ जी के जयकारों से पूरा हाल गूँज उठा। उन्होंने अपने सभी भक्तों से कहा- मैं अब बिल्कुल ठीक हूँ तुम सब जाकर जल्दी से बाबा की पूजा करके आ जाओ।

जैसे कि पहले भी बताया जा चुका हैं कि सिद्ध जब अपनी यात्रा का समापन करते हैं और दिव्य लोक जाने की तैयारी करते हैं। तो वे पहले से ही कुछ न कुछ संकेत देना शुरू कर देते हैं। श्री बाबा लक्खीनाथ जी ने भी अपने भक्तों को पहले ही बता दिया था, कि मुझे बाबा मस्तनाथ नवमीं को जाना है। श्री बाबा लक्खीनाथ ने अपने भक्तों को बताया कि इस शरीर को कितना भी सजाकर रख लो, इसको तो एक न एक दिन जाना ही है। पुराने वस्त्रों को तो फटना ही है।

भक्तों को आशीर्वाद

दोपहर एक बजकर पाँच मिनट पर बाबा लक्खीनाथ जी के सभी सेवक सदैव ही की भाँति एक साथ समाधि पर माथा टेकने गए। पूजा-अर्चना के पश्चात् सभी सेवक बाबा लक्खीनाथ जी के पास जाकर बैठ गये। बाबा लक्खीनाथ जी ने सभी भक्तों को आशीर्वाद दिया, और कहने लगे कि तुम सब सदैव नवमीं उत्सव इकट्ठे होकर ही मनाना। सब सुखी रहो, मेरे जाने के पश्चात् कोई भी दुःखी मत होना, मैं सदैव तुम्हारे पास रहूँगा। मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा।

श्री बाबा लक्खीनाथ जी के भौतिक शरीर का परित्याग

२ मार्च सन् १९६३ ई० दोपहर एक बजकर बीस मिनट पर श्री बाबा लक्खीनाथ जी ने ॐ श्री बाबा मस्तनाथयाय जी नमः के उच्चारण के साथ फाल्गुन नवमी शुक्ल पक्ष को अपना भौतिक शरीर त्याग दिया। जिस समय उनहोंने अपने भौतिक शरीर का परित्याग किया, वह पद्मासन मुद्रा में पहले ही बैठ गये थे। देखते ही देखते सिद्ध योगी श्री लक्खीनाथ जी महाराज का शरीर पाँच तत्वों में विलीन हो गया।

श्री बाबा लक्खीनाथ जी के सभी भक्तगण आँखों में अश्रु लिए हुए श्री बाबा लक्खीनाथ जी अमर रहे के जयकारे लगा रहे थे। इस प्रकार काल ने श्री बाबा लक्खीनाथ जी को हमसे छीन लिया।

दोपहर दो बजकर तीस मिनट पर समाधि दिए जाने से पहले सैकड़ों लोगों ने श्री बाबा लक्खीनाथ जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दो बजकर चालीस मिनट पर उनको धरती माता को समर्पित कर दिया।

श्री बाबा लक्खीनाथ जी एक सिद्ध योगी थे। उन्होंने अपने भक्तों को न जाने कितने ही प्रत्यक्ष चमत्कार दिखाए। समय-समय पर अब भी वे अपने भक्तों का मार्गदर्शन करते रहते हैं।

मैं श्री बाबा मस्तनाथ जी से प्रार्थना करती हूँ कि उस ज्योति को अपनी दिव्य ज्योति में समाहित कर दिव्य लोक में स्थान प्रदान करें।

एक महत्वपूर्ण स्मृति

बहनजी, दिल्ली

श्री बाबा लक्खीनाथ जी सदैव यही कहते थे कि यदि मन्दिर में जप किया जाए तो अति उत्तम होता है। उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है। यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक उत्तम यदि समुद्र तट पर किया जाए। पर्वत में उससे भी श्रेष्ठ और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो बहुत ही श्रेष्ठ होता है। इन सबसे श्रेष्ठ होता है यदि गुरू चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरू अपने आश्रम अर्थात् गुरूधाम में ही साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ हो ही नहीं सकता।

श्री बाबाजी कहते थे कि कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहाँ दिव्य शक्तियाँ सदैव वास करती है, जो सद्गुरू होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरूधाम में पहुँचकर गुरू से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरू चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उस जितना सौभाग्यशाली कोई हो ही नहीं सकता।

श्री बाबाजी बहुत बार यह कहते थे कि तुम्हें जो कुछ भी करना हो, दान, दक्षिणा, साधना तो श्री पीरजी (महंत चाँदनाथ जी योगी के आशीर्वाद) एवं श्री बाबा मस्तनाथ धाम में ही करना। यहाँ किया हुआ कोई भी कार्य लाखों गुणा ज्यादा फलित होता है।

श्री बाबा जी की स्मृतियाँ लिख पाना कोई साधारण कार्य नहीं है, जितना लिखते जायेंगे वह कम ही लगता जायेंगा

ब्रह्मलीन श्री धनीनाथ जी महाराज

श्री बाबा धनीनाथ जी महाराज ''कोठारी जी'' के नाम से प्रसिद्ध थे। वह एक शक्तिशाली एवं धनी व्यक्तित्व के महात्मा थे। वास्तव, में वे एक सम्मानित व्यक्ति थे। उनका जीवन सेवा और त्याग का जीवन था। सादा जीवन उच्च विचार उनके जीवन का मुख्य आदर्श था।

श्री कोठारी जी जीवन भर कृषि के क्षेत्र में मठ अस्थल बोहर के लिए सक्रिय रूप से काम करते रहे। श्री सिद्ध योगी श्रेयोनाथ जी महाराज के निर्वाचन के समय में तो मठ का सारा कार्यभार ही श्री कोठारी जी के कंधों पर होता था। वे बहुत ही सुलझे हुए विचारों के महापुरूष थे।

वैसे तो श्री बाबा धनीनाथ जी से हमारी मुलाकात होती ही रहती थी। किन्तु एक बार हमें हरिद्वार कुंभ मेले में उनसे बातचीज करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुंभ में भीड़ की वजह से एक-एक कमरे में कई-कई लोग ठहरे हुए थे। हमारे कमरे में भी चार लोग थे। सब मिलकर हम कोठारी बाबाजी के कमरे में चले गए। उस समय शाम की पूजा हो चुकी थी। सबने मिलकर पूछा- बाबाजी! हमें भक्ति के विषय में कुछ बताइये।

श्री कोठारी जी ने एकदम कहा- समर्पण ही भक्ति का

आधार है। हमारा पूरा देश धर्म से बधा हुआ है और धर्म से हटने पर किसी का कल्याण नहीं हो सकता। धर्म नहीं, तो भक्ति कैसे होगी। जो व्यक्ति भक्ति करके बदले में कुछ लेना चाहता है, वह भक्त नहीं, अपितु लेन-देन वाला व्यापारी है। भगवान् अपने भक्त की सभी इच्छाओं को जानते है, क्योंकि हमारे अन्दर जो आत्मा है वह उन्हीं का स्वरूप है। इसलिए सब कुछ परमात्मा के ही समर्पित कर दो तभी भक्ति कर सकोंगे, नहीं तो मोह-माया में ही फँसे रहोगे।

श्री बाबाजी ने ऐसे ही सेवक के विषय में उदाहरण दिया, कि सच्चे सेवक कैसे होते हैं ? सच्चे सेवक वह होते हैं, जो सदैव सेवा का अवसर ढूंढा करते हैं। वे बने हुए सेवक नहीं होते। वे अपने आप को सेवक घोषित नहीं करते। जब सेवा का अवसर नहीं होता तब वे आसपास घूम-घूमकर यह विज्ञापन नहीं करते कि हम सेवक हैं। लेकिन सच्चे सेवक की वृत्ति निरन्तर ही सेवा का अवसर ढूंढती रहती है। जहाँ भी अवसर मिला वहीं अपना सर्वस्व देकर सेवा में प्रवृत्त हो जाते हैं।

मानवता को समर्पित एक मसीहा

मानवता के मसीहा दुनियां में सदा नहीं रहते, लेकिन उनके आदर्श उनकी शिक्षायें हमेशा-हमेशा युग-युगान्तर तक जिन्दा रहती हैं। सिद्ध योगी श्री श्रेयोनाथ जी के शिष्य श्री धनीनाथ जी गंगानगर चक में कृषि का कार्यभार सँभालते थे।

श्री बाबा धनीनाथ जी भक्तों को सदैव यही उपदेश देते थे कि कर्म करो, समय की कीमत समझो। जीवन का अर्थ

ब्रह्मलीन श्री सिद्ध योगी श्री धनीनाथ जी महाराज बीच में बैठे
हुए हरिद्वार कुम्भ मेले में भक्तों को उपदेश देते हुये

समझो, परोपकार करो। वह कहते थे कि यह जीवन क्या है? यह केवल एक बुलबुले की तरह है, एक पानी का बुलबुला है, जो उठा फूंक मारी समाप्त हो गया। ऐसा ही मनुष्य जीवन है।

मनुष्य जीवन में हमेशा छटपटाहट बनी रहती है, क्योंकि वह कुछ कर नहीं सकता। उसे यह भी एहसास है कि वह कमा रहा है, पुत्र पैदा किया है, प्रतिदिन खाना भी अच्छा ही खाता है, फिर भी उसके जीवन में आनंद नहीं है, क्योंकि उसके विकार समाप्त ही नहीं होते, उनमें कुटिलता बनी रहती है।

श्री बाबाजी बड़े ही गंभीर स्वर में कहने लगे कि- लोगों में अनमोल वचन सुनने की जिज्ञासा तो है, और परोपकार करने की इच्छा भी है, लेकिन दुःख केवल इस बात का है, कि अच्छे लोगों का संग, साधु-महात्माओं का सत्संग और पवित्र प्रवचन सुनने के पश्चात् भी मानव इस पर अमल नहीं कर पाता।

श्री गंगानगर-चक का शिव मन्दिर अति आक़र्षक व भव्य है, यहाँ नित्यप्रति सैकड़ों लोगों का आना जाना लगा रहता है। बाबाजी अपने सेवकों को यही समझाने की कोशिश करते थे और कहते थे-

सदा न जवानी स्थिर रहे, सदा न मौज बहार।
यह परिवर्तनशील है, सारा जग संसार।।
सारा जग संसार, करम अनुसार यह रंग बदलता है।
कुल बारह राशियों पर नवग्रह का कर्म इसी विधि चलता है।।
कोई संभल-संभल कर गिर जाता, कोई गिरकर तुरंत संभलता है।
जैसे की सूरज उदय होय, हर रोज शाम को ढलता ह

वह कहते थे कि जवानी सदैव स्थिर नहीं रहती। भगवान का नाम लेना है, तो जवानी में लो, बुढ़ापा आने पर तो तरह-तरह की बीमारियाँ शरीर के चारों ओर आकर खड़ी हो जाती हैं। उस समय तो बीमारी और दवाई की ही याद रहती है, और कुछ नहीं। इसलिए भगवान के नाम का ही अभ्यास करो, वही स्मरण रखो, अन्त में वही नाम काम आयेगा। बाकि सब कुछ तो हमारा पतन ही करेंगे, भगवान ही हमारा उत्थान करेंगे।

श्री गुरूजी (बाबा चाँदनाथ जी) से कोठारी जी के विषय में पूछने पर ज्ञात हुआ कि कोठारी जी से गंगानगर-चक का प्रत्येक व्यक्ति भली-भांति परिचित था। उनके द्वारा जनता में भारतीय संस्कृति का प्रचार एवं हिन्दू जनता का महान उपकार हुआ है। वे हर प्रकार से जन समाज के लिए व्यवहारिक एवं पारमार्थिक जीवन के महान उपकारी थे। ऐसे महापुरूष का दर्शन भी वर्तमान समय में दुर्लभ है।

३ अप्रैल सन् २०००ई० की प्रभात बेला में वे प्रतिदिन की ही भाँति प्रातः चार बजे पूजा के लिए शिव मन्दिर की ओर जा रहे थे, मन्दिर के सामने पहुँचने पर अचानक से उनको दिल का दौरा पड़ा, और उन्होंने वहीं मन्दिर के सामने भगवान के समक्ष उसी समय चिर समाधि ले ली। मन्दिर में उस समय उनके सेवक व अन्य कर्मचारी भी सुबह के कामकाज की तैयारी में जुटे हुए थे। अचानक से कोठारी को देखकर वे अत्यंत दुःखी हुए। कोठारी जी के ब्रह्मलीन होने का समाचार बहुत तेजी से हर जगह फैल गया। सुबह छः बजे तक तो वहां सहस्त्रों की

संख्या में श्रद्धालु इकट्ठा हो गये थे। आसपास के गाँव वाले भी उनके अन्तिम दर्शनों के लिए पहुँचे चुके थे।

श्री महंत जी ने जब सुबह-सुबह फोन से आकस्मिक श्री कोठारी जी के ब्रह्मलीन होने का दुःखद समाचार सुना तो उनको अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। श्री कोठारी जी एवं महंत जी का आपस में बहुत ही घनिष्ठ संबंध था। मार्च में वह बाबा मस्तनाथ जी के नवमीं पर्व पर अस्थल बोहर आये थे, तो श्री महंत जी ने बाबा मस्तनाथ जी से उनके स्वस्थ होने की मंगल कामना की थी। किन्तु श्री महंत जी यह नहीं जानते थे, कि काल की इस गति को रोकना संभव नहीं है।

श्री महंत जी ने फोन से सभी भक्तों को श्री कोठारी जी के ब्रह्मलीन होने का दुःखद समाचार दिया। सुनकर सभी को बड़ा गहरा धक्का लगा, क्योंकि हम लोग भी उनसे कुछ ही दिन पहले मिले थे। जब हम लोग मठ में पहुँचे तो पहले से ही वहां श्रद्धुलओं की भीड़ उपस्थित थी। दूर-दूर से और भी साधु महात्मा पहुँच रहे थे।

हम लोग दिल्ली से अस्थल बोहर एक बजे पहुँचे। बाबा की समाधि पर आदेश नमस्कार करके अंदर गुरूजी के पास पहुँचे, देखा, गुरूजी बड़े उदास और चुपचाप बैठे हुए थे उनकी आँखों में आँसू थे। शाम चार बजकर बीस मिनट पर ब्रह्मलीन श्री बाबा धनीनाथ जी के पार्थिव शरीर को लेकर उनके सेवक और भक्तगण मठ अस्थल बोहर पहुँचे।

श्री बाबा धनीनाथ जी के पार्थिव शरीर को पद्मासन लगाकर गद्दी भवन में श्रद्धालुओं के दर्शनों हेतु रखा गया।

सर्वप्रथम श्री गुरूजी (महंतजी) ने पुष्पमाला अर्पित की, जिस समय उन्होंने अपने श्रद्धा-सुमन भेंट किए, उस समय तो वे फूट-फूट कर रोने लगे। बड़ा ही हृदय विदारक दृश्य था। तत्पश्चात् उपस्थित साधुओं ने भक्तों ने एवं श्रद्धालुओं ने अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। सबकी आँखों में आँसू थे, सबके कंठ अवरूदध थे, सूखे होंठ और गीले नेत्रों के साथ सब हाथ जोड़कर खड़े हुए थे।

श्री बाबा मस्तनाथ जी की समाधि स्थल के ठीक दायीं ओर श्री कोठारी जी के लिए समाधि स्थल तैयार कराया गया। पाँच बजे साँय मन्त्रोच्चारण के साथ श्री बाबा कोठारी जी को समाधि दे दी गई।

नाथ सम्प्रदाय के एक शक्तिशाली धनी व्यक्तित्व का अंत

(महंत चाँदनाथ योगी)

नियति के कर्म को, प्रकृति के चक्र को कौन रोक सकता है? कोठारी जी नहीं रहे। लेकिन ऐसा लगता है, मानो अब भी वह हमारे साथ ही है। कोठारी जी का ब्रह्मलीन होना नाथ सम्प्रदाय के लिए एक महान क्षति है। कोठारी जी के अभाव में सामाजिक और धार्मिक जीवन शून्य हो गया है। श्री गंगानगर-चक के जन जीवन के तो वे प्राण थे। वहाँ के तो वह आधार स्तम्भ थे।

मठ अस्थल बोहर के लिए कृषि के क्षेत्र में उन्होंने जीवन भर सक्रिय रूप से काम किया। मठ के लिए उन्होंने हर

महत्वपूर्ण कार्य किया, जिससे कि मठ का उत्थान हो। कोठारी जी बहुत धनी व्यक्तित्व के महात्मा थे। अपने अनुयायियों, प्रशंसकों तथा साधु-संतों का प्रेम तथा आदर उन्हें विशेष रूप से प्राप्त था। कृषि से उन्होंने मठ की श्री-वृद्धि में श्रेष्ठता हासिल की।

श्री कोठारी जी एक महान कर्मयोगी महात्मा थे। अपनी कर्तव्यनिष्ठा, कर्तव्य-परायणता के प्रति वे प्रयत्नशील थे।

राजस्थान गंगानगर व आसपास के सैकड़ों गाँवों की जनता तो उन्हें अपना वरिष्ठ न्यायाधीश मानती थी। जब कभी भी किसी गाँव में विवाद हो जाता था तो वहाँ के सब लोग इकट्ठे होकर श्री कोठारी जी के पास मन्दिर में बेझिझक पहुँचे जाते थे।

श्री कोठारी जी पहले सबकी बात सुनते थे तत्पश्चात् ही अपना फैसला देते थे। जो भी फैसला श्री बाबाजी देते थे, वह फैसला सबको मान्य होता था।

श्री कोठारी जी की स्मृति नाथ सम्प्रदाय उनके शिष्यों और राजस्थान के लोगों के मानस पटल पर दीर्घ काल तक छाई रहेगी। ऐसा दुर्लभ जीवन वस्तुतः न भूतो न भविष्यति।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

सिद्ध योगी श्री हजारी नाथ जी महाराज
मठ अस्थल बोहर (रोहतक)

सिद्ध योगी श्री हजारीनाथ जी महाराज
'' पुजारी जी'' मठ अस्थल बोहर

श्री हजारी जी शिष्य है, ज्ञान दिया श्री श्रेयोनाथ।
तन मन से पूजा करें, बने पुजारी नाथ।।

जिन-जिन महान आत्माओं ने इस पवित्र तपो भूमि (मठ अस्थल बोहर) पर अपना पग रखा है। उन्होंने भगवान की सृष्टि के रहस्य और तत्व को जानकर तदनुकुल आस्था, श्रद्धा और विश्वास के साथ अपना जीवन प्रशस्त किया है। श्री पुजारी जी कहते हैं कि मेरा पूरा जीवन ही श्री बाबा मस्तनाथ जी के श्री चरणों में समर्पित है।

श्री पुजारी जी का लम्बा शरीर कद औसत से कुछ ऊँचा ही है। लम्बी-लम्बी जटायें, सफेद दाढ़ी, कानों में कुण्डल, तेजस्वी चेहरा, तेजस्वी आँखें स्वयं में एक आकर्षण हैं। जो भी पुजारी के सम्पर्क में आया, उनके गुणों से और उनके सन्त सरल स्वभाव से मुग्ध हो गया! अपनी हर बात को बड़ी सीधी और स्पष्ट भाषा में कहते हैं। पुजारी जी की हर बात बड़ी नपी-तुली होती है। प्रत्येक बात हृदय को स्पर्श करने वाली होती है। उनमें प्रत्येक व्यक्ति को परखने की अद्‌भुत क्षमता है। चरित्र की दृढ़ता कूट-कूट कर भरी है। अपने विचारों को लेकर अविचल वट वृक्ष की भाँति स्थिर रहते हैं।

प्रातः काल दो बजे उठकर नित्य क्रिया के पश्चात् श्री बाबा मस्तनाथ जी की विधि-विधान से पूजा-अर्चना करते हैं। लगातार चालीस पैंतालीस वर्ष से पूजा करते आ रहे हैं। आयु

अस्सी वर्ष के लगभग हो चुकी है। अपने छोटे-छोटे शिष्यों को भी पारम्परिक आरती-पूजा बड़े ही विधि-विधान से सिखाते हैं।

श्री पुजारी जी में ममता और प्रेम की भावना भी कूट-कूट कर भरी है। मठ में रहने वाले सभी छोटे-बड़े शिष्यों को बड़े प्यार से रखते हैं । छोटे शिष्यों की स्कूल की छुट्टियों में उन सबको अपने साथ रखते हैं। धर्म, संस्कृति व आध्यात्मिक ज्ञान से भी अवगत कराते रहते हैं। उनके खेलने व खाने का भी पूरा ध्यान रखते हैं। नाथ सम्प्रदाय के विषय में भी उनको जानकारी देते रहते हैं।

जोगी जन को चाहिए करना परोपकार।
भला करे संसार का निज आपे को मार।।
निज आपे का मार, अपने उपदेश से जन-जन का उद्धार करे।
प्रमाण सहित देकर के ज्ञान, ऐहसान जान इक बार करे।।
निर्गुण सगुण का भेद जान, कुछ मन में सोच विचार करे।
वह आप पार को जाता है, जो कुल दुनियाँ को पार करे।।

श्री पुजारी जी को फूलों और वृक्षों से बहुत प्रेम है। इस विषय में उनकी जानकारी को देखकर बड़े-बड़े माली भी चकित रह जाते हैं। जहाँ भी वह यात्रा पर जाते हैं तो अपने साथ कोई न कोई फल व फूल का पौधा अवश्य लेकर आते हैं। आश्रम में आकर उस पौधे को लगाकर आश्रम की शोभा बढ़ाते है।

श्री पुजारी जी के चरणों में बैठने का और उनसे बातचीत करने का सौभाग्य हमें मिलता ही रहता है। उनके चरणों में बैठकर एक महान अनुभूति का अनुभव होता है। हमें

तो यही लगता है कि इन महान योगी के चरणों में बैठकर हम धार्मिक और सामाजिक जीवन की दीक्षा ले रहे हैं। ऐसे लोक रंजक साधु आज के युग में विरले ही मिलते हैं।

श्री पुजारी जी का स्वरूप अतीत के ऋषियों की धरोहर को प्रकट करता है। पुजारी जी सच्चे अर्थों में एक महान ऋषि है।

योग्य गुरू के योग्य शिष्य

अपने परम पूज्य गुरूदेव की गौरवमय परम्परा को निष्ठा पूर्वक आगे बढ़ाने वाले महंत श्री चाँदनाथ योगी अपने गुरू के ही समान दूरदर्शी, कर्तव्यपरायण, धर्मपरायण, परोपकारपरायण, कल्याणकारी तथा देश एवं धर्म के प्रति निष्ठा रखने वाले हैं। गुरू के प्रति अगाध श्रद्धा व प्रेम के फलस्वरूप ही श्री महंत जी ने श्री बाबा मस्तनाथ शिक्षण संस्थान का निर्माण कराया है। इस शिक्षण संस्थान ने अब विश्वविद्यालय का रूप ले लिया है।

यह श्री महंत जी की कार्य के प्रति दृढ़ता एवं संकल्प की भावना का परिणाम है। आपकी छत्रछाया में आश्रम की उन्नति दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। साथ ही साथ आपके पूज्य गुरूदेव योगी श्री श्रेयोनाथ जी महाराज की नीतियों का पूर्ण प्रसार एवं प्रचार हो रहा है। यही है आपकी आपके गुरू के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि एवं गुरू भक्ति की पराकाष्ठा जो हिम शिखर को मात करती मिलती है।

संत निन्दक महा पातकी

चुभते वाक्य और निंदा से, दुष्ट सताते संतो को।
पर संत क्षमा कर उनको, सुख देते खुद के मन को।।

साधु-संतो की निंदा करना ईश्वर की निंदा करने के बराबर है। अपने आप में ही अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर है। संसार के अज्ञानी लोगों को यह ज्ञात नहीं होता, और न ही यह ज्ञान होता है कि वे किसकी निंदा कर रहे हैं। अज्ञानता वश वे साधु-संतों के विषय में कुछ भी अनाप-शनाप बोल बैठते हैं। निन्दको के चक्कर में आ जाते हैं। इतना ही नहीं, कई लोग तो अपने इस विषवमन का प्रचार-प्रसार भी जोर शोर से करने लग जाते हैं। जन समाज को, ईश्वरीय मार्ग में, परम कल्याणकारी मार्ग को, संतों से विमुख करने का घोर अपराध और जघन्य पाप करने में लग जाते हैं। आरंभ में तो उन्हें कुकर्मों का पता नहीं चलता, लेकिन, बाद में प्रकृति कहो, या फिर कर्म का सिद्धांत कहो, ईश्वरीय कानून उन अभागे निन्दकों की खबर अवश्य लेता हैं

संत महापुरूष तो यह जानते हैं कि ये अज्ञानतावश ही ऐसा कर रहे हैं। इसीलिए ऐसे नराधमों के लिए भी उनके हृदय में कारूण्य उमड़ता है। संत सदैव अपनी अमृतमयी वाणी से लोगों को सावधान भी करते रहते हैं, कि ''हे मूर्ख अज्ञानियों! तुम अपने आत्म हनन से बचो।

साधु-संतो पर कदापि दोषारोपण नहीं करना चाहिए। इसी सन्दर्भ में परम पूजनीय गोस्वामी तुलसी दास जी कहते हैं-

हरि-हर निन्दा सुनह जो काना। होइ पाप गो घात समाना।।
हरि गुरू निन्दक दादुर होई। जनम सहस्त्र नर पावइ सोई।।

संत कबीरदास जी ने भी संत निन्दकों के विषय में कहा है-

कबीरा निन्दक ना मिलो, पापी मिलो हजार।
एक निन्दक के माथ पर, लाख पापिन को भार।।

गुरू के साथ विश्वासपात्र रहो, विश्वासघाती नहीं

निर्दोषों को दोष भी चाहे दे संसार।
मगर सांच को आँच नहीं लोगों करो विचार।।
लोगों करो विचार साँच को आँच दिखाना ठीक नहीं।
सूरज की ज्योति घटाने को, यों धूल उड़ाना ठीक नहीं।।
इस पावन मठ में रहकर के लोगों, यूं विघ्न जगाना ठीक नहीं।
इन धर्म मूरति संतो कों, यूं दोष लगाना ठीक नहीं।।
सदा न जीना जगत में, एक दिन जाए जान।
झूठ साँच को जान ले, न्यायकारी भगवान।।
न्यायकारी भगवान बैठ खुद, आप वो ही इंसाफ करें।
जो जान बूझ कर करे पाप, वो कभी न उसको माफ करे।।
उसका विधान अटल जान, वो दूध पानी को साफ करे।
पड़ेगा ईश्वर के घर जाना, झूठ सच जाता छाना।।
तिल भर छिपे ना झूठ वहाँ, पापियों को पड़ेगा पछताना।।

गुरूओं के साथ विश्वासघात करना घोर अपराध है, पाप है। भगवान के घर भी ऐसे अपराध के लिए क्षमा नहीं है। गुरू तो आशीर्वाद के रूप में हमें इतना देते रहते हैं, कि उसके लिए हमारी झोली भी छोटी पड़ जाती है। फिर भी गुरू के साथ

गद्दारी क्यों? धोखा क्यों? कपट क्यों? मिथ्या चरण क्यों?

गुरू तो उनके कष्टों को सहन करके भी सदैव परोपकार के कार्यों में लगे रहते हैं। किसी भी प्रकार के कष्ट या दुष्प्रचार का उन पर कोई असर नहीं होता। कल्याणकारी कार्यों में वे यह नहीं देखते, कि कौन अपना है? कौन पराया है, कौन शत्रु है? कौन मित्र है? या फिर कौन गुरू द्रोही है? उनके हृदय में तो सबके लिए समान प्यार उमड़ता है। वे तो सबको एक ही भाव से देखते हैं और सबको अपने हृदय का वास्तविक अपनत्व प्रदान करते हैं।

आज का युग ऐसा है कि इसमें सज्जन और द्रोही मनुष्य को पहचानना अत्यंत कठिन है। यहाँ तक की बड़े-बड़े विद्वान् और अनुभवी लोग भी कई बार इन्हें पहचान में धोखा खा जाते हैं। इसलिए सहसा किसी की बात पर विश्वास करना ठीक नहीं। इससे अनिष्ट होने की संभावना रहती है। इसीलिए किसी का विश्वास करने से पहले उसको भली-भांति परख लेना आवश्यक है। उदाहरण के तौर पर अग्नि को प्यार से बोले या गुस्से से बोले, वह जलायेगी अवश्य, इसलिए उसका विश्वास करना ठीक नहीं। किसी को भी परखे बिना विश्वास करने से धोखा ही मिलता है।

दुर्जन के तो मेल से, भला नर्क का वास।
कभी न करना चाहिए, दुर्जन पर विश्वास।।
दुर्जन पर विश्वास करे तो, सब ही नाश हो जाता है।
विषधर तो कभी क्षमा कर दे, पर दुर्जन डंक चलता है।।

विषधर का डसा तो बच जाए, पर दुर्जन का नहीं बच पाता है।

कुटिल हृदय और ईर्ष्या रखने वाले, मुंह में राम-राम बगल में छुरी रखने वाले लोगों पर कदापि विश्वास नहीं करना चाहिए। ऐसे लोग किसी भी प्रकार की दया के पात्र नहीं होते।

शिष्य धर्म

शिष्य का तात्पर्य देह से नहीं है, शिष्य का तात्पर्य खड़े होकर हाथ जोड़ने से भी नहीं है, शिष्य का तात्पर्य केवल गुरू को पैसे चढ़ाने से भी नहीं है। शिष्य का तात्पर्य कोई दीक्षा लेने से भी नहीं है। यह सब तो केवल एक भाव हैं, कि हम दीक्षा लेकर अपने आपको पूर्ण रूप से गुरू चरणों में समर्पित करके गुरू से एकाकार हो जाये, वहाँ से तो हमारी शिष्यता प्रारंभ होती है। हमारा नवजीवन शुरू होता है।

शिष्य का वास्तविक तात्पर्य है- गुरू के अनुरूप बनना, गुरू आज्ञा का पालन करना। यदि हमने गुरू से तर्क-वितर्क किया तो हम शिष्यता की भावमूमि से परे हट जाते हैं। सेवा और आज्ञा के माध्यम से शिष्य आगे की ओर अग्रसर होता हुआ पूर्णता प्राप्त कर सकता है। जो सेवा नहीं कर सकता, वह समर्पण भी नहीं कर सकता। जहाँ समर्पण नहीं है वहाँ शिष्यता भी नहीं है।

शिष्य के सामने कोई गुरू पर प्रहार करे, शब्दों के माध्यम से या प्रश्न के माध्यम से और वह चुपचाप सुन ले, या फिर यदि गुरू की निन्दा हो रही है। और वह सुन ले तो उससे

बड़ा पापी इस संसार में कोई नहीं है।

शिष्य की पूँजी केवल तीन चीजें होती हैं। वह हैं- समर्पण, सेवा और श्रद्धा।

गुरू जैसा कहें वैसा करने की जरूरत है। गुरू जैसा करे वैसा शिष्य को करने की जरूरत नहीं।

शिष्य के जीवन में चरित्र ही सफलता और असफलता का द्योतक है, चरित्र सफल है तो जीवन सफलता की ओर बढ़ेगा। किन्तु चरित्र असफलता की ओर अग्रसर है तो जीवन अवश्य पतन की ओर उन्मुख होगा।

शिष्य के लिए प्रायश्चित की तीन सीढ़ियां है- आत्मगिलानी, पाप न करने का निश्चय, और आत्मशुद्धि।

शिष्य को चाहिए कि गुरू जो भी मंत्र दे, उसे पूर्ण भक्ति भाव से ग्रहण करें। गुरू या मंत्र के प्रति कभी भी अश्रद्धा न लावें।

गुरू और गुरूकार्य को त्यागने वाले व्यक्ति को कहीं भी शरण नहीं मिलती। गुरू के मात्र चरण ही नहीं, अपितु उनके आचरण को श्रद्धा भाव से ग्रहण करना चाहिए। चरण तो सभी छूते हैं, किन्तु उनके आचरण को ग्रहण करना ही शिष्य का परम कर्तव्य है।

दिव्य भूमि मठ अरथल बोहर

मठ अरथल बोहर अत्यंत प्राचीन एवं प्रख्यात मठ है। इस भूमि पर न जाने कितने ही सिद्ध योगियों एवं साधु-महात्माओं ने तपस्या की, और अपनी सिद्धियों के चमत्कार

दिखलाये। इसी भूमि पर सिद्ध योगी चौंरगीनाथ जी ने खाँड के बोरों को नमक में परिवर्तित कर दिया था, और फिर नमक को खाँड में परिवर्तित कर दिया था। इसी भूमि पर सिद्ध चौरंगीनाथ ने एक बार ''बारह वर्ष'' की अवधि पर्यन्त समाधि लगाई। समाधि के दौरान उन्होंने अपने शिष्यों को अपनी शरीर रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया।

बारह वर्ष उपरान्त जब समाधि से सिद्ध योगी उठे, तो उन्होंने देखा उनके शिष्य बहुत कमजोर हो गये हैं। कारण जानने के पश्चात् उन्होंने पूरे जैन नगर को विध्वंस कर डाला। देखते ही देखते वह पूरा नगर योगी जी के योगबल से ध्वस्त हो गया।

आज भी वह प्रख्यात नगर, एक विशाल टीले के रूप में मठ अस्थल बोहर से केवल दो फरर्लांग की दूरी पर ध्वस्त पड़ा है। इसका वर्णन पहले किया जा चुका है।

वास्तव में सिद्ध चौंरगीनाथ कौन थे? नवनाथ सिद्धों में सिद्ध योगी चौरंगीनाथ जी अजर-अमर हैं। ये चन्द्र देवता के अवतार हैं और अठारह भार वनस्पति स्वरूप माने जाते हैं।

देवताओं और दैत्यों के समुद्र मन्थन करने पर जो विष निकला था। उसको आदिनाथ ने पी लिया था। विष के पीते ही उन्हें अग्निदाह होने लगा। उसे शांति करने के लिए आदिनाथ ने कंठ में शेष तथा मस्तक पर चन्द्र देवता को धारण किया था। उसके पश्चात् उन्होंने नीलकंठ पर्वत पर साठ हजार वर्ष तक तपस्या की। उस समय चन्द्रदेवता की उनकी काया में अमृत वर्षा होती रही। आदिनाथ के हलाहल का दाह शांत होने पर

उनको शान्ति प्राप्त हुई। आदिनाथ ने चन्द्रदेवता की स्तुति की, स्तुति सुनकर चन्द्र देव को अभिमान हो गया। उनके मन में विचार आने लगे कि मैने ही आदिनाथ जी को दाह से शिथिलता प्रदान की है, मैं सोलह श्रृंगार हूं एवं आदिनाथ के शीश पर शोभायमान होकर बैठा हुं जब शेषनाग ने आदिनाथ जी से नाथ दीक्षा एवं वरदान लिया तब चन्द्रदेव के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई कि मैं भी दीक्षा लूँ। अतः उन्होंने भी आदिनाथ के नाथ स्वरूप को तथा योग दीक्षा को माँगा। आदिनाथ जी ने उनसे कहा- हे चन्द्रदेव! आपको मेरा नाथ स्वरूप अवश्य प्राप्त होगा। किन्तु तुमने ईर्ष्या एवं अहंकार वश होकर यह माँगा है। इसलिए तुम जिस माता-पिता के यहाँ जन्म लोगे, उनके ही सुख से तुम वंचित रहोगे। तुम्हारे माता-पिता ही तुम्हारे हाथ-पाँव कटवाकर जंगल में फेंक देंगे। वही पर तुम्हे मेरी तपस्या करनी होगी। तब तुम्हारा उद्धार करने के लिए मेरे शिष्य मत्स्येन्द्रनाथ एवं मेरे ही स्वरूप गोरक्षनाथ तुम्हारे पास आयेगें और तभी तुम्हारा उद्धार होगा, उसके पश्चात् ही तुम मेरे नाथ स्वरूप को प्राप्त करोगे।

इस प्रकार से चन्द्रदेव ने स्यालकोट के राजा शालीवाहन के घर पुत्र रूप में जन्म लिया। उनका नाम कृष्ण रखा गया। चौदह पन्द्रह साल की उम्र तक वह गुरूकुल में पढ़े, इसी बीच उनके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। जब वह राजमहल वापस आये तो देखने में बहुत सुन्दर दिख रहे थे। अतः राजा की दूसरी पत्नी उनकी विमाता इन्हें देखकर आसक्त हो गयी। किन्तु इन्होंने इसका विरोध किया। विमाता ने झूठा कलंक

लगाकर, राजा से कहकर उसके हाथ-पाँव कटवाकर जंगल के एक कुँऐं में फेंक दिया। पूरण ने उसी अवस्था में बारह साल तक ''ॐ'' नमः शिवायः मंत्र से तपस्या की।

एक दिन अचानक मत्स्येन्द्रनाथ जी एवं गोरक्षनाथ जी घूमते-घूमते वहाँ पहुँचे। वहाँ पर उन्होंने अपने यौगिक चमत्कार से पूरण को पूर्णांग किया पूर्ण अंग होने पर उनका नाम पूर्णनाथ पड़ा। कश्मीर में अमरनाथ गुफा में गोरक्षनाथ जी ने उन्हें सम्पूर्ण जड़ी-बूटी एवं अठारह भार वनस्पतियों का ज्ञान प्रदान किया, साथ ही साथ उन्होंने चौरंगीनाथ जी को तंत्र, मंत्र, योग सिद्धि, महायोग ज्ञान से परिपूर्ण कर दिया।

इसी दिव्य भूमि में सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज ने पाई देवी के पति हरिसिंह को अपना विराट रूप दिखलाया। इसका वर्णन आगे किया जा चुका है।

श्री बाबा मस्तनाथ जी साक्षात् गोरक्षावतार है। गुरू गोरक्षनाथ जी स्वयं शिव आदिनाथ, ज्योति स्वरूप हैं।

इसी भूमि में बाबा मस्तनाथ जी ने भक्त शीलका की सभी शंकाओं का निवारण किया।

शीलका हरियाणा राज्य में रहने वाला एक धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसके गाँव का नाम भालोट था। उस गाँव के सभी लोग प्रभु-भक्त व धार्मिक प्रवृत्ति के ही थे। शीलका सन्तों-महात्माओं तथा योगियों का बहुत आदर-सम्मान करता था। वह प्रभु भजन से ज्यादा साधु सेवा को प्राथमिकता देता

था। इसलिए वह अपने पूरे गाँव में विख्यात था।

जब शीलका ने सुना कि उनके गाँव के पास ही खोखराकोट के जंगलों में सिद्ध योगी श्री बाबा मस्तनाथ जी पधारे हैं, तो वह उनके दर्शनों के लिए उसी ओर चल पड़ा। उसने अपने साथ दूध से भरा हुआ पात्र भी प्रसाद के रूप में ले लिया। वह खोजता-खोजता उसी स्थान पर जा पहुँचा, जहाँ बाबाजी तपस्या कर रहे थे।

जंगल होने की वजह से वहां भिन्न-भिन्न प्रकार के जंगली पशु-पक्षी धूम रहे थे। चारों ओर फलों और फूलों के वृक्ष थे। हरियाली के साथ-साथ वह स्थान अत्यंत मनोरम व रमणीय था।

वहां पहुंचकर सर्वप्रथम शीलका ने श्री बाबाजी के श्री चरणों में अपना शीश नवाया और उनकी चरण वन्दना की दूध से भरा पात्र उसने धूने पर चढ़ा दिया।

इस प्रकार शीलका ने प्रतिदिन वहां जाने का नियम बना लिया। प्रतिदिन गाय का दूध लेकर वह बाबाजी के पास धूने पर आने लगा।

एक दिन बाबाजी ने उसे समझाया कि- भक्त! तुम प्रतिदिन यहां न आया करो। जंगल में सदैव जंगली जानवरों व चोरों डाकूओं का भय रहता है।

शीलका ने कहा- बाबाजी! मुझे चोरों डाकूओं से भय नहीं है और न ही मुझे जंगली जानवरों से भय है। बाबाजी ने मन में विचार किया कि इसे अपने ऊपर बड़ा अहंकार है।

उसके अहंकार को दूर करने के लिए बाबाजी ने निश्चय कर लिया।

धूने पर दूध चढ़ाकर वह वापस जा ही रहा था कि- मार्ग में उसे एक बड़े ही विकराल डाकू ने ललकारते हुए कहा- अपने अस्त्र वस्त्र शस्त्र सब कुछ उतारकर दे दे। वह डाकू के भय से थर-थर कांपने लगा। सारे वस्त्र शस्त्र उसे दे दिये। जैसे ही रात्रि हुई वह छिपते-छिपते अपने घर पहुंचा। अपनी माँ से जाते ही वह कहने लगा- माँ! मुझे शीघ्र ही मेरे वस्त्र लाकर दे दो। माँ ने कहा- शीलका! दिन में तू ही तो अपने वस्त्र रखकर गया था।

माँ की बात सुनकर वह तुरन्त ही समझ गया, कि स्वयं श्री बाबाजी ने ही रूप बदलकर उसके मन के अहंकार को मिटाने के लिए यह लीला दिखाई है।इसी प्रकार एक दिन फिर से शीलका के मन में बाबाजी की रात्रिचर्या जानने की इच्छा जागृत हुई। उस दिन वह एक वृक्ष पर छिपकर बैठ गया, जहां से उसको बाबाजी और उनका धूना स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

दिन ढलने लगा, सांझ हो गई। इस प्रकार देखते ही देखते रात्रि भी हो गई, जिसका उसे इन्तजार था। आधी रात के समय जंगल में चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश फैल गया। सुन्दर-सुन्दर बाग-बगीचे, जिनमें सुन्दर-सुन्दर रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। सारा जंगल उन दिव्य फूलों की महक से सुगंधित हो रहा था। बाग-बगीचों के बीच में ही एक सुन्दर सरोवर था, जिसका जल स्वच्छ और निर्मल था। पेड़ पर बैठा

हुआ शीलका सब कुछ देख रहा था। कुछ ही देर में वहाँ पर देवताओं की सभा जुड़ गई। चौरासी सिद्ध भी वहाँ पर पहुँच गए। शीलका ने देखा - सबसे ऊँचे व्याघ्रचर्म पर श्री बाबा जी पद्मासन लगाए बैठें है। उनके मुख-मंडल पर मंद-मंद मुस्कान थी। ऐसा लग रहा था जैसे प्रकृति का सारा सौन्दर्य ही उनकी मुस्कुराहट में छिपा हुआ था।

रात ढलने पर देव सभा भंग हो गई। सभी देवता अपने-अपने स्थानों को प्रस्थान कर गए।

शीलका ने देखा, बाबाजी पहले की ही भांति अपनी धूनी पर विराजमान हैं। वह समझ गया की बाबाजी तो साक्षात् सिद्ध योगी हैं, भगवान हैं। इनके रहस्य को समझना अत्यंत कठिन है।

प्रातःकाल होते ही वह पेड़ से उतरा और बाबा जी के चरणों में गिर पड़ा।

श्री बाबा मस्तनाथ जी ने कहा - साधु-महात्माओं का कभी पीछा नहीं करना चाहिए। न ही कभी योगियों की सिद्धियों पर संशय करना चाहिए।

इस घटना से शीलका को वैराग्य हो गया।वह सपरिवार बाबाजी के पास आया और उनसे विनय करने लगा कि - उसे और उसके परिवार को अपना शिष्य बनाने की कृपा करें। बाबाजी ने उन्हें बहुत समझाया कि योग मार्ग बड़ा कठिन मार्ग है, तुम सब गृहस्थ में रहकर ही भगवद् आराधना करो। किन्तु वह सब आग्रह करते रहे, उसके पश्चात् बाबाजी ने उन्हें योग मार्ग की दीक्षा दी। उन्होंने तपस्या से और और बाबा के

आशीर्वाद से अनेकों सिद्धियाँ प्राप्त की। शीलका दीक्षा के पश्चात् शीलनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुए।

इसी सिद्ध भूमि पर बाबाजी ने अपने एक भक्त 'जोगराज' को उसके आग्रह करने पर सिद्ध योगी गोपीचंद नाथ व सिद्ध योगी भर्तृहरिनाथ जी के साक्षात् दर्शन कराये थे। उन दोनों के दर्शन करने के पश्चात जोगराज ने उन दोनों सिद्ध योगियों से गुरू गोरक्षनाथ जी के दर्शनों की इच्छा व्यक्त की। जोगराज की बात सुनकर दोनों महासिद्धियों को हँसी आ गई। उन्होंने कहा- भक्त! यह जो बाबा धूनी रमाएँ बैठे हैं, यही गोरक्षनाथ जी हैं। उनका संकेत बाबा मस्तनाथ जी की ओर था। इसी दिव्य भूमि पर बाबाजी ने सिद्ध संत हरिदास जी के कमण्डल को घी से भरने का चमत्कार दिखलाया था।

इसी भूमि पर सिद्ध योगी रणपतनाथ तथा धातानाथ ने साक्षात् गंगा तथा यमुना को प्रकट कर दिया था।

लगभग दो सौ पच्चीस वर्ष पहले की घटना है। बोहर गाँव में एक परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो गई। दाह संस्कार के उपरांत हिन्दू धर्म शास्त्रों के अनुसार तीसरे दिन अस्थिओं को गंगा विसर्जन के लिए लेकर जाते हैं। उस परिवार के कुछ लोग इकट्ठा होकर, अस्थियों को लेकर गंगा में विसर्जित करने के लिए चल पड़े। मार्ग में श्री बाबाजी का धूना पड़ता था। उन्होंने सोचा कुछ देर के लिए धूने पर सेवा करेंगे, तत्पश्चात् ही गंगाजी जाऐंगें। उस समय धूने पर श्री बाबा मस्तनाथ जी के शिष्य रणपतनाथ तथा धातानाथ तपस्वी थे। वह दोनों ही सिद्ध योगी थे। श्री बाबाजी के आशीर्वाद से उन्हें

अष्ट सिद्धियों एवं नव निधियों का वरदान प्राप्त था। इसलिए उनके लिए कुछ भी करना असंभव नहीं था। ग्रामवासी सेवा में इतने व्यस्त हो गये कि उन्हें यह भी याद नहीं रहा कि उन्हें गंगा में अस्थियाँ विसर्जित करने के लिए जाना है।

शाम हो गई, वे सब बाबा रणपतनाथ तथा धातानाथ जी से कहने लगे कि - बाबाजी! अब तो गंगाजी पहुँचना अत्यंत कठिन है, हम तो बड़ी दुविधा में फँस गए हैं।

दोनों योगियों ने उनसे पूछा - भक्तों! तुम्हारी क्या समस्या है? ग्रामवासियों ने उन्हें पूरी बात बता दी।

सिद्ध योगियों ने कहा - तुम लोग चिंता छोड़ दो, हम गंगा को यहीं प्रकट कर देते हैं। यह कहते ही दोनों ने वहीं पर त्रिशूल गाढ़ दिया, फिर क्या था। देखते ही देखते मुक्तिदायिनी, भक्तिदायिनी गंगा, यमुना की निर्मल धारा प्रकट होकर बहने लगी। ग्रामीण भक्तों ने बाबा की जय जयकार की, और अस्थियों को वहीं पर प्रवाहित कर दिया।

इस प्रकार इस चमत्कार को देखकर लोगों का विश्वास मठ के प्रति और बढ़ा। सभी कहने लगे, कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। यहीं पर गंगा है और यहीं पर यमुना है।

आज भी धूने पर दो बड़े-बड़े मटके रखे हैं, एक में यमुना का जल है तथा दूसरे में गंगा जल है। कहते हैं कि यहाँ पर आज भी गंगा गुप्त रूप में बहती है।

इस पुस्तक में दिव्य शब्द का प्रयोग अनेक बार किया गया है, इसलिए इस शब्द का अर्थ समझना आवश्यक है-

दिव्य - स्वर्ग से सम्बन्ध रखने वाला, अलौकिक, सुन्दर।

प्राचीन एवं धार्मिक स्थल मठ स्थल बोहर

मठ अस्थल बोहर अत्यंत प्राचीन तथा धार्मिक मठ है। यह मठ रोहतक 'हरियाणा' में स्थित है। प्राचीन समय में यहाँ रोहितकी (रूहेड़ा) नामक वृक्षों का सघन वन था। उस समय वहाँ पर दूर-दूर तक कोई जन बस्ती नज़र नहीं आती थी। किन्तु श्री बाबा मस्तनाथ जी के काल में मठ के समीप एक छोटा-सा गाँव बसा हुआ था। गाँव का नाम बोहर था। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित (रोहतास) के नाम से इस शहर का नाम रोहतासगढ़ था, किन्तु कालान्तर में रोहतासगढ़ से रोहतक हो गया।

बदलते समय के साथ-साथ वन स्वतः ही खत्म होते चले गये, कुछ काट दिए गये। इस तरह देखते ही देखते यह भारी सुन्दर वन प्रदेश एक मैदानी इलाके में परिवर्तित हो गया।

वर्तमान समय में वन व वृक्ष न होने की वजह से मठ की सुरक्षा हेतु चारों ओर अत्यंत आकर्षक जालीदार दीवार बना दी गई है।

चार दिवारी करा दी, द्वार पर पहरेदार।
अर्जित शान्ति सुरक्षा, दक्ष कार्य व्यवहार।।

मठ का प्रवेश द्वार अत्यंत भव्य व विशाल है। मठ में प्रवेश करते ही दायीं और बायीं ओर विस्तृत कृषि क्षेत्र है। इसी कृषि क्षेत्र में बायीं तरफ अत्यंत खूबसूरत श्री बाबा मस्तनाथ आयुर्वेदिक औषधि वाटिका है। इस वाटिका में लगभग एक सौ

आठ प्रकार के वृक्ष हैं।दूसरी ओर देवालय नामक सरोवर है। देवालय सरोवर प्राचीन होने के कारण जीर्ण-शीर्ण हो गया था, इसलिए वर्तमान मठाधीश्वर महंत श्री चाँदनाथ जी योगी ने सरोवर के नवनिर्माण का कार्य प्रारंभ करा दिया है। कुछ आगे चलने पर पता चलता है कि जामुन, पीपल तथा वट वृक्ष सब पंक्तिबद्ध खड़े हैं। समीप ही एक प्राचीन वट वृक्ष के नीचे एक प्राचीन धूना है। धूने के चारों ओर एक जालीदार चारदिवारी है। इस धूने पर सैकड़ों साधु एक साथ बैठकर पूजा-अर्चना करते हैं।

श्री बाबा मस्तनाथ जी की समाधि के सामने बहुत आकर्षक उद्यान है। ऐसा लगता है जैसे हरे रंग का कालीन बिछा हो। दीवारों पर रंग-बिरंगी लतायें मन को लुभाती रहती हैं। धूने की ओर से आने वाला समाधि का प्रवेश-पथ फूलों के अनगिनत पौधों के बीच से होकर जाता है। सिद्धों की समाधियों के सामने एक विशाल बेलपत्र की वाटिका है। कुछ ही आगे बहुत बड़ी गऊशाला है।

अन्दर जाकर पता चलता है सुन्दर गद्दी भवन, गीता भवन इत्यादि हैं। बिल्कुल सामने हैं अतिथि निवास, संत निवास। उससे भी अन्दर जाकर देखने से पता चलता है, अत्यंत प्राचीन धूना, शिव मन्दिर, सत्संग भवन, महंत निवास, शिव मन्दिर जो कि काशी के राजा ने महंत पूर्णनाथ जी को भेंट किया था। यह शिव मन्दिर अलग-अलग करके लाया गया था। इसका प्रत्येक हिस्सा अलग-अलग है। मन्दिर के सामने ही श्री बाबा का अक्षय भंडार-गृह है। यह भंडार गृह बाबाजी के काल

से ही विद्यमान है।

पुराणों में और प्राचीन इतिहास में तपोवन का वर्णन पढ़कर मानस पटल पर जो दृश्य अंकित होता है, इस आश्रम मन्दिर, मठ में आने पर वैसा ही चित्र प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। यहां पर साधुओं के तेजोद्दीप्त मुखमंडल तथा मन, वचन और कर्म से कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा देखने को मिलती है।

इसके अतिरिक्त मठ में गुरू चरण, शास्त्र अध्ययन, संस्कृत अध्ययन, सन्ध्या वन्दन, योगियों की तपस्या जैसे प्राचीन तपोवन के अक्षुण्ण दृश्य देखने को मिलते हैं।

सिद्ध भूमि मठ अस्थल बोहर का माहात्म्य

धरती पर जब भी धर्म की हानि हुई है, और अधर्म की वृद्धि हुई है, तब-तब भगवान ने धर्म की रक्षा हेतु किसी न किसी रूप में अवतार लेकर जगत का उपकार किया है। इसी तरह महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी ने सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी के रूप में अवतरित होकर अनेक प्रकार की यौगिक लीलायें और अद्‌भुत सिद्धियाँ दिखाते हुए जग का उद्धार किया। और पथ भ्रष्ट लोगों को सन्मार्ग दिखाया।

इसी मठ अस्थल बोहर को सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी ने अपनी तपस्थली बनाया। श्री बाबाजी जिनके चरण-कमलों का स्मरण सम्पूर्ण कष्टों को इस प्रकार नष्ट कर देता है, जैसे सूर्य देव सम्पूर्ण अंधकार का हरण कर लेता है।

और सब जगह अपने प्रकाश की किरणें फैला देता है।

इस मठ में शुरू से ही महान सिद्ध योगियों ने तपस्या व सिद्धियां प्राप्त की है। इसलिए यह भूमि सिद्ध है।

साधकों को यदि ईश्वर से साक्षात्कार करना हो, तो सर्वप्रथम गुरू के निर्देश से अपने भीतर सोई हुई शक्ति जगानी पड़ती है, यह सोई हुई शक्ति गुरूधाम, धार्मिक स्थान या फिर किसी तीर्थ स्थान में रहकर ही संभव है। आत्म शक्ति का विकास प्रत्येक स्थान पर नहीं होता। उसके विकास के लिए सदैव किसी अनुकूल स्थान की आवश्यकता होती है। गुरूधाम से अनुकूल और पवित्र और कौन सा स्थान हो सकता है ?

गुरूधाम तो देवघर है, महातीर्थ है। शिष्यों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि गुरूओं के रोम-रोम से हर क्षण शक्ति के प्रकाश-पुंज निकलते रहते हैं। इसलिए उनको यह भी ज्ञान होना चाहिए कि जहां सबका मंगल करने वाले सर्वमंगलमय, परमाराध्य, गुरू चैतन्य रूप में निवास करे हैं, वह क्षेत्र तो तीर्थों का भी तीर्थ महातीर्थ है।

श्री बाबा मस्तनाथ जी महायोगी गुरू गोरक्षावतार है व योग स्वरूपी होने के कारण सूर्य की भांति तेजस्वी है। यह मठ उनकी तपोभूमि है। इसलिए श्रद्धालुओं, शिष्यों, भक्तों सभी को यह भली-भांति जान लेना आवश्यक है कि सिद्धों की योग-साधना के शक्ति पुंज, तेज पुंज सदैव उनकी तपोभूमि में रहते हैं।

श्री बाबा मस्तनाथ सिद्ध पीठ की महत्ता

गुरूजी के पास प्रतिदिन अनेक व्यक्ति आते रहते हैं। वहां आने के पश्चात् सभी की एक ही इच्छा होती है, कि हम भी गुरूजी की ही भाँति बड़े बने। एक ही अभिलाषा होती है धन की। वैसे तो मनुष्य की इच्छायें अन्तरहित है किन्तु इनके मन में पारमार्थिक इच्छा का कोई भाव नहीं आता, मिलने वालों को देखिये या फिर वहाँ पर काम करने वालों को ही ले लीजिये, सभी लोग यही कहते हैं कि मैं महंत जी के ज्यादा नजदीक, मैं ज्यादा नजदीक!

गुरूजी ने बताया कि मैं सभी भक्तों को यही कहता हूँ कि जिस पर बाबा की कृपा हो जायेगी। वह ही कुछ बन पायेगा। लेकिन कुछ ही दिन बाद गुरूजी को उपद्रव और पीड़ा पहुँचाने वाले स्वर भक्तों में सुनाई देने लगे। जिससे ईर्ष्या-द्वेष, विडम्बना और आडम्बर बढ़ने लगा। जितनी मात्रा में यह सब बढ़ा उतना ही गुरूजी का ध्यान घटने लगा। वह क्या बोल रहा है? वहाँ क्या हुआ? वह कहाँ जाता है? वह बताकर नहीं गया? मुझे सब आता है? हमारी बात तो बाबा सुनता है? फिर दूसरे से क्यों कहे? ऐसा जाल फैलने लगा कि लोग अपने में ही दर्प और दम्भ की मात्रा बढ़ाते चले गये। बहुत भारी विघ्न खड़ा हो गया। जहाँ सब पाप दूर होने चाहिऐ थे, जहाँ निष्पाप और निर्मल बनाना चाहिए था, वहाँ ऐसा रोग फैला कि बस.....

ध्यान करने वाले साधक को याद रखना चाहिए कि

गुरू प्रेम के प्रभाव से अन्तः करण की शुद्धता और सात्विकता तो दिन प्रतिदिन बढ़ती है। उसी प्रकार ईर्ष्या, मात्सर्य तथा विषयाचरण, वृत्ति से ये शुभ भावनायें दिन प्रतिदिन घटती हैं।

आश्रम में रहने वाले सभी श्रद्धालुओं को सावधानी से जीवन बिताना चाहिए। सिद्ध पीठ गुरूजनों का दरबार, धधकती हुई प्रज्वलित योगाग्नि का केन्द्र है। जैसे यह अग्नि पाप को पूर्णतया जलाकर आपको योगेश्वर बना देती है वैसे ही आश्रम में रहते हुए साधना रहित, विषय विकारों से मुक्त जीवन बिताने से पुण्य को घटाकर निस्तेज भी कर देती है । आश्रम में वासनाओं का विलास कदापि नहीं होना चाहिए। आश्रम में रहने वालों को अन्य सभी आश्रम वासियों में अपने आत्मरूप गुरूदेव को ही देखना चाहिए। इससे ध्यान बढ़ता है । आश्रम में जाने वाले साधकों को कभी भी दूसरों के गुण- दोष नहीं देखने चाहिए। जो दोष देखते हैं वे दोषों को बढ़ाते हैं। और योग की शक्ति को घटाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लोगों का ऐसा सोचना कि अब इधर आनन्द नहीं है। कहीं और चलना चाहिए- यह विचार सबसे बुरा व घटिया वृत्ति वाले लोगों का है।

आश्रम, मठ गपशप का स्थान भी नहीं हैं । आश्रम में रहने वालों व वहाँ पर जाने वालों को अमर्यादित स्वच्छन्द, मन - माना व्यवहार करके अपनी प्राप्त शक्ति को नष्ट करके पथ - भ्रष्ट नहीं होना चाहिए। बैठक जमाना, गप्पेबाजी करना, जहाँ मर्जी हो वहीं बैठ जाना, जिससे लोकनिंदा, संशय या दोषारोपण

आये- ऐसा व्यवहार योग सिद्धि को नष्ट कर देता है । आश्रम के प्रति निष्ठा, श्रेष्ठ आचरण, सत्कर्म इत्यादि करने चाहिए ।

आश्रम में रहते हुए आपस में कभी भी एक -दूसरे को क्रोध, दोष, पाप-दृष्टि अथवा भेद-दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। आश्रम के विरूद्ध कोई भी व्यवहार नहीं करना चाहिए। सिद्धाश्रम की मान्यता, उसकी विशेषता, उसकी महत्ता को समझकर की आश्रम की ओर कदम श्रद्धा व भक्ति के साथ उठाना चाहिए । नहीं तो वह हानिकारक सिद्ध हो सकता है ।

सिद्धों की संगति में तथा सिद्ध आश्रमों में सदैव जागरूकता से रहना चाहिए। व्यर्थ बातें करना आश्रम की नीति एवं उनकी मर्यादा के विरूद्ध होती है। गुणहीन लोगों की संगति आश्रम के भंडार को नष्ट कर देती है। सिद्ध पीठ के आसपास वृक्ष, लतायें, फल-फूल, पशु, पक्षी के रूप में, अन्दर-बाहर शक्ति पुंज निवास करते हैं तथा परम्परा के महासिद्ध योगी समुदाय पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखते हैं। सिद्ध आश्रमों, मठों में गुरूजनों की परम्परा के सभी योगी साधकों को अदृश्य रूप से देखते रहते हैं, यह कभी नहीं भूलना चाहिए।

आश्रम का सार्वभौमिक एवं सार्वदैशिक प्रभाव

श्री बाबा मस्तनाथ मठ से गुरू शक्ति बंगाल, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराँचल, हिमाचल, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र आदि भारत के विभिन्न क्षेत्रों और दूर सुदूर तक फैलने लगी।

राजकीय अधिकारी भी मठ के कार्य कलापों की ओर आकर्षित होकर मठ को देखने के लिए आने लगे, और मठ की सच्चाई से अवगत होकर मठ के प्रति भारी श्रद्धा दिखाने लगे। श्रद्धालु भक्तजन मठ की महिमा को तो पहले से ही जानते थे, किन्तु जो कुछ लोग नहीं जानते थे, वे मठ की महिमा जानने के लिए इसकी ओर आकर्षित होने लगे। इस प्रकार से यह मठ श्रद्धालु भक्तजनों ने एक तीर्थ स्थान के रूप में परिवर्तित कर दिया।

मठ में धार्मिक संस्कृति, योग साधनाओं के साथ-साथ अनेक शिक्षण संस्थायें भी उपलब्ध हैं। संस्कृत विद्यालय के सभी छात्रों को मठ की ही ओर से निःशुल्क शिक्षा व भोजन दिया जाता है। श्री बाबा मस्तनाथ भंडार में पूरे बारह मास सदाव्रत चलता रहता है।

श्री बाबा मस्तनाथ चिकित्सालयों में रोगियों को निःशुल्क औषधि, भोजन एवं दूध निःशुल्क दिया जाता है। नेत्र चिकित्सालय में चश्में भी गरीब, लाचार व संतों को निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं।

वर्तमान मठाधीश्वर श्री महंत चाँदनाथ जी ने बताया कि कुछ ही समय में एक वृद्धाश्रम खोलने की भी योजना है। वैसे देखा जाए तो यह मठ मोठे तौर पर हर दृष्टि से आत्म-निर्भर है।

श्री बाबा मस्तनाथ मठ का आध्यात्मिक महत्व

महायोगी गुरू गोरक्षावतार सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी के नाम को कौन-सा ऐसा राज्य है, भारत वर्ष में, जो उन्हें नहीं जानता। श्री बाबाजी की दिव्य आभा उन

महापुरूषों में से है, जिन्होंने अपनी योग साधना से न केवल मठ अस्थल बोहर को बल्कि पूरे भारत वर्ष को चमत्कृत कर दिया है। उनका दिव्य तेज, यौगिक साधनायें आज भी हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, उत्तराँचल, बंगाल के आध्यात्मिक भाव का प्रकाश पुँज बना हुआ है। बाबाजी ने लोगों को अज्ञान से दूर हटाकर ज्ञान के पथ की ओर अग्रसर किया। सिद्ध बाबाजी भारतीय आध्यात्मिक चेतना के ऐसे उज्ज्वल प्रतीक हैं, कि जिनका नाम स्मरण करते ही मन महान अनुभूतियों से भर उठता है।

श्री बाबाजी ने इसी मठ को अपनी तपस्थली बनाया जिस समय बाबाजी यहाँ पधारे थे, उस समय यह स्थान एक निर्जन सघन वन था। यहीं पर बाबाजी ने अनेक योग साधनायें की।

हरियाणा के प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों में यह स्थान प्रमुख सिद्ध पीठ है। यह सिद्ध पीठ ठीक उसी जगह स्थित है, जहाँ श्री बाबाजी को समाधि दी गई थी।

आदिकाल से प्रकृति के नियमानुसार जो इस संसार में आया है, उसको जाना भी अवश्य हैं। इसी प्रकृति के नियम के अन्तर्गत इस परम पवित्र मठ की समृद्धि को भी तेरहवीं से अठारवीं शताब्दी के मध्य ग्रहण सा लग गया। किंतु कालान्तर में प्रतिकूल परिस्थितियों के बाद यह मन्दिर आध्यात्मिक प्रेरणा का एवं योग साधना का केन्द्र बना रहा। श्री बाबाजी की तपस्थली होने के कारण यह मठ नाथ योगियों, साधु-महात्माओं एवं विद्वान् ब्राह्मणों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

देश के कोने-कोने से श्रद्धालुगण इस सिद्ध मन्दिर के दर्शन हेतु आते रहते हैं।

वास्तव में यह दिव्य तपस्थली हरियाणा राज्य का एक महान धार्मिक एवं पूजनीय धाम है।

इस मन्दिर की मुख्य तीन विशेषतायें हैं। पहली यह की श्री बाबाजी की पावन दिव्य तपोभूमि है। यहीं पर श्री बाबाजी का समाधि स्थल है।

सिद्ध समाधि की दोनों वक्त विधिवत् पूजा-अर्चना की जाती है। प्रातः तीन बजे शंख, घंटे, घड़ियाल, नाद, नागफनी के साथ श्री बाबाजी की पूजा की जाती है। उस समय सभी एकत्र होकर समाधि पर आदेश-नमस्कार करते हैं । उसके पश्चात् श्री महंत जी को आदेश नमस्कार करते हैं।

सिद्ध मन्दिर की दूसरी विशेषता यह है कि यहाँ पर सात परम पवित्र अखंड ज्योतियाँ सैकड़ों वर्षो से आज भी जलती आ रही हैं। इन ज्योतियों के दर्शनों से मनोवाञ्छित फल प्राप्त होते हैं। यहाँ पर अपना मस्तक झूकाने वाले सुख-समृद्धि पाते हैं। ये पवित्र अखंड ज्योतियाँ आध्यात्मिक पवित्रता का प्रतीक हैं।

इस दिव्य तपोभूमि का तीसरा आकर्षण है परम पवित्र अखंड धूना। इस धूने में सिद्ध चौरंगीनाथ जी द्वारा प्रज्वलित पवित्र अग्नि आज भी विद्यमान है। साधु-महात्मा धूने पर बैठकर ही तपस्या और भजन किया करते हैं। भक्तों को प्रसाद रूप में साधुगण विभूति का ही प्रसाद देते हैं। जिसे भक्तगण बड़ी श्रद्धा भाव से अपने मस्तक पर लगाते हैं, और प्रेम पूर्वक उसे खाते

हैं।

जिस समय सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी ने सिद्ध योगी श्री चौरंगीनाथ जी की तपोभूमि को अपनी सिद्धियों एवं चमत्कारों से पवित्र किया था, उस समय इस क्षेत्र के लोग काफी पिछड़े हुए थे। बहुत कम लोग ही यहाँ रहते थे। उस समय आस-पास न गाँव थे, न सड़कें थी, न वाहन और न अन्य यातायात के साधन ही थे। इस सघन और निर्जन वन को ही सिद्ध चौरंगीनाथ और सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी ने अपनी तपस्थली बनाया। इसी स्थान को ही उन्होंने अपनी तपस्या के लिए क्यों चुना? ये सब बातें तो केवल वे ही जानते थे। इस क्षेत्र में रहने वाले लोग इस दिव्य साधु के प्रति आकर्षित होने लगे। उसके पश्चात् दूर-दराज से भी श्रदालु महात्मा के दर्शनों हेतु आने लगे। बाबाजी तो सदैव ही आध्यात्मिक चिंतन में लीन रहते थे। बाबाजी का सांसारिक वार्ताओं की ओर ध्यान जाता ही नहीं था। साधारण जनता उनके प्रति स्वतः ही आकर्षित होकर श्रद्धावनत होने लगी। श्री बाबाजी कभी किसी भक्त की सेवा स्वीकार कर लेते, तो वह अपने को बहुत सौभाग्यशाली समझता था।

इस दिव्यात्मा महान विभूति ने इस क्षेत्र और पूरे वातावरण को ही आध्यात्मिक बना दिया। जन साधारण को यह अनुभव हुआ कि साक्षात् भगवान ही श्री बाबा मस्तनाथ जी के रूप में उनके मध्य विराजमान हैं। भक्त लोग उन्हें सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी के नाम से पूजने लगे। बाबाजी की दिव्यता एवं अलौकिक योगबल की चर्चा समस्त

क्षेत्र और देश में फैल गई। उनकी अलौकिक जीवनचर्या और सरल शिक्षा सच्चे श्रद्धालुओं एवं अध्यात्म प्रेमियों को त्याग, तपस्या और योग साधना की प्रेरणा देने लगी। बाबा के व्यक्तित्व के प्रभाव से स्वतः यहाँ एक सिद्ध साधनाश्रम बन गया। उनकी अनुकम्पा से उनके शिष्य आध्यात्मिक जागरण के पथ पर आश्चर्यजनिक प्रगति करने लगे। आज भी मठ अस्थल बोहर में उनकी आध्यात्मिक उपस्थिति के अस्तित्व का प्रत्येक भक्त अनुभव करता है।

मठ का आध्यात्मिक क्षेत्र दिनों-दिन विकसित होता गया। बाबाजी की कृपा से अमरत्व प्राप्त कर रहा यह मठ सम्पूर्ण देश को सतत् प्रेरित उत्साहित कर योगबल, योगसाधना एवं आध्यात्म की प्रेरणा दे रहा है।

समाधि स्थान पर कोई भी मूर्ति प्रतिष्ठित नहीं है, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से वहाँ पर साक्षात् श्री बाबाजी विद्यमान समझे जाते हैं। योगियों के ध्यान और पूजा का परम उद्देश्य परमतत्व का चिन्तन और मनन है, इस तत्व का न तो रूप है और न ही नाम है।

यह परम पवित्र मठ कई शताब्दियों से स्थित है। इस मठ के योगियों ने करोड़ों लोगों को अध्यात्म के पथ की ओर प्रेरित किया है। मठ के योगियों की एक लम्बी परम्परा है। दीर्घकाल से ही यह मठ योग-संस्कृति का केन्द्र रहा है।

इस मठ की तपोभूमि वरदायिनी है। यहाँ आकर सबकी

मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

संस्था के महंत जहाँ निवास करते हैं, उसे मठ कहते हैं। मठाधीश्वर का निवास अत्यंत आदरणीय, श्रद्धास्पद एवं पूजनीय समझा जाता है। क्योंकि उनको श्री बाबा मस्तनाथ जी का उत्तराधिकरी या प्रतिनिधि, या फिर उन्हीं का मूर्तिमान स्वरूप समझा जाता है।

श्री महंत ही सभी योगियों का आध्यात्मिक गुरू माना जाता है। महंत ही सिद्ध शिरोमणि का प्रधान सेवक है। विधिवत् पूजा वर्ष की विभिन्न ऋतुओं में आने वाले सामाजिक पर्वो को विधिवत् मनाने के लिए, मठ के आध्यात्मिक वातावरण, पवित्रता और शान्ति की रक्षा के लिए, अतिथियों की सुविधाओं के लिए तथा तपस्वी जीवन के सभी क्षेत्रों से संबंधित कार्यो के उचित निर्वाह के लिए पूर्णतः श्री महंत ही इस उत्तरदायित्व का निष्ठा से निर्वहन करते हैं।

प्रतिवर्ष फाल्गुन में शुक्ल पक्ष की सप्तमी, अष्टमी व नवमी को श्री बाबा मस्तनाथ स्मृति उत्सव मनाया जाता है। इस उत्सव में लाखों की संख्या में भक्तगण दर्शन करने आते हैं और पुण्य फल प्राप्त करते हैं।

गुरू के दर्शन को चले, प्रजा के नर-नार।
दर्शन पाकर सब करे, संतों का सत्कार।।
संतों का सत्कार करके, सभी जीवन सफल बनायेंगें।
प्रताप आपके से हम भी, गुरू के दर्शन को जायेंगें।।

बाबा मस्तनाथ यदि कृपा करें, तो सब काज सफल हो जायेंगें।
भक्तों के सिर पर हाथ रख, वह आशीर्वाद अपना देवेंगें।।

अनेक साधु-संतों के दर्शन, ज्योतियों के दर्शन करके सभी गुरूजी के दर्शन कर उनसे आशीर्वाद लेते हैं।

समाधि पर श्रद्धा पूर्वक काला कम्बल, पुष्प, गुड़ और अखंड ज्योतियों में घी डालने की परम्परा है।

पूजा नमस्कार, आदेश के पश्चात् सभी साधु एक साथ पंगत में बैठकर भोजन करते हैं। सैकड़ों साधुओं को एक साथ भगवा वस्त्रों में देखकर लगता है कि यह तो कोई भगवा नगरी है। सभी भक्त एक साथ इतने साधु-महात्माओं के दर्शन करके अपने को धन्य समझते हैं।

दर्श भेरव के कर लिए, कोटि-कोटि कटे पाप।
एक कृपा गुरू और हो, मिटे सकल सन्ताप।।

पूरी पंगत को भोजन करने के पश्चात् प्रत्येक साधु को चिप्पी (दक्षिणा) दी जाती है।

भोजन कर लिया भेरव ने, जीम चुके सब सन्त।
निमटी जोग जमात सब, पूर्ण बारह पन्थ।।

पूर्ण बारह पन्थ आकर, भोजन सिहं नाद बजाते हैं।
जय अलख निरंजन अविनाशी, मुख आशीर्वाद सुनाते हैं।।
जय अलख निरंजन ध्वनि गूंजे, मुख से जय जाप बुलाते हैं
हो सबके सब एकदम खड़े, श्री आदिनाथ गुण गाते हैं।

यह मठ इस दृष्टि से बहुत भाग्यशाली रहा है, क्योंकि इसके महंतों की परम्परा में कुछ ऐसे महायोगी हुए हैं, जो अपने आध्यात्मिक ज्ञान तथा अद्वितीय योग शक्ति के लिए प्रख्यात रहे हैं।

मठ का प्रधान मन्दिर जिस रूप में आज स्थित है, निश्चय ही वह अत्यन्त प्राचीन हैं। संभव है कि मन्दिर की मरम्मत समय-समय पर होती रही है।

श्री बाबा मस्तनाथ सिद्ध पीठ, शिक्षण संस्थायें लगभग डेढ़ सौ एकड़ के सुविस्तृत क्षेत्र में स्थित है। श्री गुरूजी (महन्त चाँदनाथ योगी) आधुनिक शिक्षा प्राप्त, महान तेजस्वी उदार दृष्टिकोण एवं अद्‌भुत संगठन शक्ति से मन्दिर का कार्य एवं विश्वविद्यालय को बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से चला रहे हैं। श्री महंत जी को अपनी धर्म संस्कृति एवं शिक्षा से बहुत प्रेम है। इसलिए लोगों को गुरूजी से धर्म और शिक्षा से बड़ी-बड़ी आशायें है। शिक्षा और अपनी प्राचीन संस्कृति ही उनके जीवन का लक्ष्य है। सन् २००० में नारनौल हरियाणा निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय चुनाव लड़े। लेकिन हरियाणा राजनीति के द्वेषों के कारण गुरूजी को यह चुनाव हारना पड़ा।

वास्तव में यह सिद्ध मन्दिर हिन्दुओं का प्रेरणा केन्द्र और आश्रय स्थल है। जिससे हिन्दूओं को गौरवान्वित होना चाहिए। इस मन्दिर से सम्बन्धित अन्य कई मन्दिर कई राज्यों में स्थित हैं। दिल्ली में भी श्री बाबा मस्तनाथ जी का अत्यंत प्राचीन धूना आज भी ज्यों का त्यों विद्यमान है। इन सभी मन्दिरों की देख-रेख भी महंत जी के विचार-विमर्श से की जाती है। निश्चय ही यह सिद्ध मन्दिर हिन्दूओं का परम पवित्र दिव्य धाम है।

श्री बाबा मस्तनाथ शिक्षण संस्थान की ख्याति चरम सीमा पर

श्री सिद्ध योगी श्रेयोनाथ जी महराज के सुयोग्य शिष्य श्री चाँदनाथ जी योगी गुरू आदेश से आरम्भ में जब हनुमानगढ़ थेहड़ी गये तो वहां पर अपनी लग्न व मेहनत से अपनी खेती को आधुनिक उपकरणों की सहायता से चरम सीमा तक पहुंचा दिया। थोड़े ही समय में राजस्थान के लोगों में आपकी कृषि उपज की चर्चा होने लगी। आप अपने गुरूदेव के सबसे विश्वासपात्र और योग्य शिष्यों में से एक थे। आपकी सच्चाई, ईमानदारी परिश्रम, कर्त्तव्यपरायणता से आपके गुरूजी अत्यंत प्रभावित थे। राजस्थान के लोगों में आप बाबा चाँदनाथ जी के नाम से बहुत जल्द ही प्रसिद्ध हो गये। आपकी मेहनत, लग्न और गुरू भक्ति रंग लाई, उससे कृषि में पहले की अपेक्षा कई गुणा ज्यादा श्री वृद्धि हुई। कृषि से प्राप्त वही धनराशि मठ अस्थल बोहर संस्था में काम आने लगी, जिससे संस्था का कार्य और भी सुचारू रूप से चलने लगा।

गुरू आज्ञा से महंत पद पर आसीन होने के पश्चात् आपने बहुत कम समय में बड़े-बड़े कार्य करके अपने पूज्य गुरूदेव की आत्मा को बहुत शान्ति प्रदान की है। इतनी संख्या में शिक्षण सस्थाओं का संचालन कोई सरल कार्य नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि विद्यादायिनी माँ सरस्वती आपसे अत्यंत प्रसन्न है। कभी-कभी राजनीतिक विरोधियों के कारण और संस्था में पनप रहे कुछ गद्दारों के कारण शिक्षण संस्था में कुछ

अड़चने अवश्य आती है, किन्तु आपके परिश्रम से वे अड़चने शीघ्र ही समाप्त हो जाती है। क्योंकि आप सदैव से ही कर्म के पुजारी रहे हैं। आपका मानना है कि कर्म किए बिना कोई मनुष्य जीवित ही नहीं रह सकता। किसी भी असंभव कार्य को संभव करने के लिए तो हमें कार्य करना ही पड़ेगा। आवश्यकता है तो केवल कर्म के प्रति श्रद्धा की, विश्वास की। गुरूजी कहते हैं कि इतनी बड़ी संस्था है, कुछ न कुछ अड़चने तो आयेंगी ही, किन्तु बाबा की कृपा से समय आने पर सब ठीक हो जायेंगी।

संस्था के विरोधियों को भी गुरूजी सदैव आशीर्वाद देते हैं। उनके विषय में सदैव गुरूजी यही कहते हैं कि बाबा उनको भी सद्‌बुद्धि प्रदान करें, जिससे उनको भी शिक्षा के सही मायने समझ आ जायें।

श्री गुरूजी जैसे साधक, मनस्वी पुरूषों को भले ही कष्टों और विपत्तियों का सामना करना पड़े, मगर उन सबसे उनको कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरूजी जैसे कर्त्तव्यपरायण योगी अपने कर्त्तव्य का ही वरण करते हैं, सुख और दुःख को कदापि नहीं देखते।

श्री गुरूजी अपने शिष्यों व भक्तों को भी यही समझाते हैं कि यदि कभी कोई मुश्किल आ भी जाऐ, तो उससे भयभीत नहीं होना चाहिए। मुसीबत का डटकर मुकाबला करना चाहिए। तभी तो मार्ग सुरक्षित होगा, तभी तो समस्या का समाधान होगा और तभी तो हम सुरक्षित रह सकेंगे।

मठ अस्थल बोहर धार्मिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का

केन्द्र है संस्था की सफलता और दानशीलता ने गुरूजी की मान-प्रतिष्ठता को बढ़ाया है। इस सफलता के पीछे आपकी निष्ठा, भक्ति भावना, श्रद्धा और कर्त्तव्यपरायणता हैं। कितने ही सहस्त्रों विद्यार्थी आपके द्वारा चलाये गए शिक्षा के अभियान में विद्यादान ग्रहण कर चुके हैं। कितने ही विद्यार्थी विद्यादान ग्रहण कर रहें है।

इस शिक्षण संस्थान में अनुशासन का एक अद्वितीय उदाहरण देखने को मिलता है ।

गुरूजी के जीवन का लक्ष्य ही सबको साक्षर बनाना है। वह कहते हैं कि साक्षर व्यक्ति अपनी अच्छाई-बुराई अच्छी तरह समझ सकता है। अपनी पूजा-पाठ के पश्चात् गुरूजी शिक्षा सम्बन्धित कार्यों में लगे रहते हैं। कठोर परिश्रम, ईमानदारी व नेक नियति से आपने इस संस्था को चरम सीमा तक पहुंचा दिया है। समय-समय पर कभी बाढ़ पीड़ितों की, तो कभी भूकंप पीड़ितों की सहायता करने से भी पीछे नहीं हटते। गुरूजी की कथनी और करनी एक जैसी है। जिस कार्य को करने का निश्चय कर लिया उसे पूरा कर दिखाते है। मार्ग में चाहें कितनी भी रूकावटें आयें, लेकिन गुरूजी अपने पथ पर अडिग रहते हैं।

गुरूजी सभी शिष्यों व भक्तों को कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में चारित्रिक निष्ठा होना बहुत जरूरी है। अगर चरित्र ही चला गया, उसी पर दाग लग गया, तो समझ लो, सब कुछ ही समाप्त हो गया, कुछ बचा ही नहीं।

गुरूजी में वह सब चारित्रिक आदर्श विद्यमान हैं जो उच्कोटि के योगी में होने चाहिए। इन सब की वजह से ही आज

मठ अस्थल बोहर प्रगति के चरम शिखर पर है। यथा नाम-तथा गुण-''चाँदनाथ'' श्री गुरूजी ने बाबा मस्तनाथ शिक्षण संस्थान में वास्तव में ही चार चाँद लगा रखे हैं। पूरे हरियाणा व अन्य राज्यों में इस शिक्षण संस्थान की धूम मची हुई है।

शिक्षा के उद्‌देश्य

शिक्षा का अर्थ अक्षर ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र का विकास और धर्म भावना का भान है। योग का मूल दया दान है। सच्ची शिक्षा का पूर्ण लक्ष्य यह है कि न केवल वह सच्चाई को बतायें, अपितु उस पर आचरण भी करायें। बड़ी से बड़ी बात को सरल विधि से कहना उच्च संस्कृति का प्रमाण है। जो शिष्टाचार का पालन नहीं करता वह कभी संस्कारी मानव नहीं बन सकता। संकल्प धर्म की पहली साधना है और समर्पण अंतिम साधना। जिसे अपने ऊपर विश्वास नहीं, उसे भगवान पर विश्वास हो ही नहीं सकता। किसी की गलत बात को दबाना, उसे शक्ति देने का दूसरा नाम है। संसार में जितनी भी प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा उन सबसे बढ़कर है। अच्छी पुस्तकों के अध्ययन से सब कुचिन्तायें मिट जाती है। सफलता का पहला रहस्य आत्मज्ञान है।

आदमी

आश्रय देने पर, सिर चढ़ जाता है।
उपदेश देने पर, मुड़कर बैठता है।
आदर करने पर, खुशामंद समझता है।

उपकार करने पर, अस्वीकार करता है।
विश्वास करने पर, हानि पहुँचाता है।
क्षमा करने पर, दुर्बल समझता है।
प्यार करने पर, आघात करता है।
सुख के समय, ईर्ष्या करता है।

रोते हुए पैदा होता है, शिकायतें करते हुए मर जाता है।
इसी को आदमी कहते हैं।

इंसान बनो

जग में यदि भला किसी का कर न सको,
तो बुरा कभी भी न करना।
अमृत पिलाने को न हो अगर,
तो विष पिलाते भी डरना।
सत्य वचन यदि कह न सको,
तो झूठ कभी भी मत बोलो।
चुप रहो तो सबसे अच्छा,
कम से कम विष तो मत घोलो।
घर किसी का बना न सको,
तो झोपड़ियाँ न जला देना।
इस दुनियाँ में आए हो तो,
कम से कम इंसान बनो।
काम-कोध-मद-लोभ मोह त्याग कर,
प्रतिपल बाबा मस्तनाथ का नाम भजो।